

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

ग्रन्थाङ्क 35

गोरा बादल पदमिणी चउपई

1997

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक
पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्वाचार्य
(सामान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर)

ग्रन्थाङ्क 35

कवि हेमरतन कृत

गोरा बादल पदमिणी चउपई

सम्पादक
डॉ. उदयसिंह भटनागर, एम.ए., पी-एच.डी.
(प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन)

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज.)
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

द्वितीयावृत्ति 1997 मूल्य : 56.00

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक
पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्वाचार्य
(सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर)

ग्रन्थाङ्क : 35

कवि हेमरतन कृत

गोरा बादल पदमिणी चउपई

सम्पादक
डॉ. उदयसिंह भटनागर, एम.ए., पी.एच.डी.
(प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन)

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

द्वितीयावृत्ति 1997 मूल्य : 56.00

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषा निबद्ध
विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री मनीषी मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर;
ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी;
निवृत्त सम्मान्य नियामक (ऑनरेरि डायरेक्टर),
भारतीय विद्या भवन, बम्बई; प्रधान सम्पादक,
सिंघी जैन ग्रन्थमाला, इत्यादि

ग्रन्थाङ्क : 35

कवि हेमरतन कृत

गोरा बादल पदमिणी चउपई

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

प्रथमावृत्ति : 1966
द्वितीयावृत्ति : 1997 मूल्य : 56.00

प्रधान सम्पादकीयं

चित्तौड़ की पद्मिनी का कथानक गोरा बादल के आख्यान के बिना अधूरा है। इस इतिहास प्रसिद्ध आख्यान पर आधारित सम्भवतः यह पहली राजस्थानी भाषा की प्रस्तुति है हालांकि इससे पूर्व भी इस वृत्त पर आधारित कथ्य को अन्य भाषाओं के कवियों ने भी अपनी रचना का आधार बनाया था।

विगत तीन दशक पूर्व हेमरतन की यह रचना विभाग द्वारा प्रकाशित करवाई गई थी। विद्वानों एवं साहित्यरसिकों के आग्रह पर एक बार पुनः इसका नवीन संस्करण आपकी सेवा में प्रस्तुत करते हुये मुझे प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। आशा है गोरा बादल पद्मिणी चउपई का यह नवीन संस्करण आपके लिये उपादेय सिद्ध होगा।

आनन्द कुमार
आर.ए.एस.
निदेशक

सञ्चालकीय वक्तव्य

कोई ५० वर्ष पूर्व, जब हम पाटण के जैन-भण्डारों का अवलोकन कर रहे थे तब हमें हेमरत्न की इस रचना का प्रथम परिचय प्राप्त हुआ। मेवाड़ और चित्तौड़ के प्राचीन इतिहास को जानने की हमारी रुचि बचपन से ही बनी हुई थी। हमने हेमरत्न की इस रचना को भी प्रकाश में लाने का तभी मनोरथ कर लिया था। अपने देश के प्राचीन इतिहास के अज्ञात, अप्रकाशित, एवं अलभ्य ऐसे साधनों को-प्रबन्धों, ग्रन्थों, शिलालेखों, प्रशस्तियों आदि को प्रकाश में लाने का हमारा सतत लक्ष्य रहा और इस दृष्टि से आज तक अनेकानेक अप्रकाशित ऐतिहासिक साधन-सामग्री को प्रकाशित करने का प्रयत्न भी करते रहे हैं।

संवत १९३९ में उदयपुर में राजस्थान हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन में हमारा आना हुआ और हमने राजस्थान के प्राचीन इतिहास की सामग्री का अन्वेषण, संशोधन, प्रकाशन आदि कार्य के विषय में भी अपने राजस्थानी बंधुओं को समयोचित प्रेरणा दी। उसके बाद तुरन्त ही, प्रो० श्री उदयसिंहजी भटनागर बम्बई में हमारे पास भारतीय विद्या-भवन के एक शोधकर्ता विद्याभिलाषी के रूप में पहुंचे। मैंने इनको उसी समय पद्मिनी की चउपई जैसी रचना का अध्ययन और अनुसन्धान करने का सुझाव दिया। मेरे पास जो इसकी प्रतियां थीं वे इनको दीं। इन्होंने कार्य प्रारम्भ किया, परंतु बाद में ये वहां से चले गये और अपने अन्य कार्य-क्षेत्र में लग गये। सन् १९५० में जब राजस्थान के इस 'प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान' की मूल रूपरेखा बनी तो हमने इस प्रकार के राजस्थान के प्राचीन इतिहास के अनेक ग्रन्थ प्रसिद्धि में लाने का कार्यक्रम बनाया। कान्हड़दे प्रबन्ध, क्यामखां रासा, लावा रासा, वीरमायण, मुंहता नणसी री ख्यात, बांकीदास री ख्यात व सूरजप्रकाश आदि ग्रन्थ इसी कार्यक्रम के अनुसार यथा-समय प्रकाशित किये गए। प्रस्तुत 'पदमिणी चउपई' भी उसी कार्यक्रम में सम्मिलित थी। डॉ० भटनागर ने इस बीच अपना कार्य चालू रखा और उन्होंने इस रचना पर पी-एच० डी० की पदवी प्राप्त करने के लिये विस्तृत निबन्ध भी तैयार किया। जब मैंने पहले-पहल इनको यह कार्य करने की प्रेरणा दी थी उसके कोई १२ वर्ष अनन्तर ये मुझे जयपुर में मिले। मैंने इनके कार्यों को देखा और सूचित किया कि यदि ये इसकी सुसंपादित प्रति तैयार कर सकें तो उसको 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' द्वारा प्रकाशित कर दिया जाय। इन्होंने सहर्ष स्वीकार किया और तदनुसार मैंने तत्काल इसको बम्बई के सुप्रसिद्ध निर्णयसागर प्रेस में छपने दे दिया। परन्तु, श्री भटनागरजी की कुछ निजी

कठिनाइयों में उलझे रहना पड़ा, अतः इसका मुद्रण-कार्य बहुत धीरे धीरे चला। आखिर में, फिर १२ वर्ष बाद अब यह ग्रन्थ छपकर पूरा हुआ है और राजस्थानी साहित्य एवं इतिहास के प्रेमियों के करकमलों में उपस्थित हो रहा है।

हमारी मूल योजना तो थी कि हम इस हेमरत्न की रचना के साथ, लब्धोदय, भागविजय आदि की रचनाओं को भी एक ही संग्रह के रूप में प्रकाशित करें और उनका तुलनात्मक विवेचन भी उपस्थित किया जाय। परन्तु, उक्त रूप से हेमरत्न की रचना ही को पूर्ण होने में असाधारण विलम्ब हुआ देखकर हमें उक्त विचार को स्थगित रखना पड़ा। तथापि, हमें यह देख कर बहुत संतोष हुआ कि बीकानेर-निवासी नाहटा बंधुओं के सदुद्योग से लब्धोदय-रचित पद्मिनी चउपई की भी एक सुन्दर आवृत्ति प्रकाशित हो गई है।

डॉ० भटनागरजी ने प्रस्तुत संस्करण को सुसंपादित करने के लिए बहुत ही परिश्रम उठाया है। भिन्न-भिन्न प्रतियों के विविध पाठों का संकलन और सन्निवेश बड़े अच्छे ढंग से किया है। जिस प्रकार, इस ग्रन्थमाला में प्रकाशित 'कान्हड़दे प्रबन्ध' का उत्कृष्ट संस्करण हमारे परमप्रिय विद्वान् मित्र प्रो० के.बी. व्यास ने प्रस्तुत किया है, उसी प्रकार डॉ० भटनागर ने प्रस्तुत 'गोरा बादल पदमिणी चउपई' का यह सुन्दर संस्करण तैयार किया है। इस प्रकार की प्राचीन कृतियों के प्रमाणिक संस्करण तैयार करने वालों के लिए डॉ० भटनागर का यह सम्पादन आदर्श माना जाना चाहिए।

हम इसके लिए डॉ० भटनागरजी का अपना हार्दिक अभिवादन करते हैं। प्रस्तुत 'पदमिणी चउपई' की मूलभूत आदर्श प्रति जो संवत् १६४६ में लिखी हुई है वह स्वयं बनेड़ा निवासी स्वर्गीय बॅरिस्टर श्री रविशंकरजी देराश्री ने हमें जयपुर में दिखाई थी। हमारा विचार था कि उस प्रति के आद्यन्त पत्रों के ब्लॉक बना कर इस पुस्तक में दे दिए जावें, परन्तु बहुत कुछ प्रयत्न करने पर भी स्व० देराश्रीजी के वंशजों से हमें यह सुविधा प्राप्त नहीं हुई। आशा है राजस्थानी-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् इस प्रकाशन का यथोचित समादर करेंगे।

मुनि जिनविजय

चैत्र शुक्ला ९ (रामनवमी) सं० २०२३
दिनांक ३१ मार्च, १९६६
राजस्थान प्राच्य-विद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर

प्रस्तावना

आभार निवेदन

सन् १९४०-४१ में मैंने उदयपुर में और उसके आसपास के गांवों तथा ठिकानों में प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज कर लगभग २००० ग्रन्थों के विवरण लिये थे। इस खोज में मुझे पद्मिनी की कथा से सम्बन्धित अनेक रचना-प्रतियाँ देखने को मिलीं। इसी समय आचार्य मुनि जिनविजय जी से मेरा सम्पर्क हुआ। दो वर्ष तक बम्बई में भारतीय विद्या भवन में उनके साथ रह कर विद्याभ्यास कर ज्ञान से लाभान्वित हुआ। 'पदमिनी चउपई' भी उस कार्य-क्रम का एक प्रधान अंग रहा। इसका एक आलोचनात्मक संस्करण तैयार करने की प्रेरणा मुनिजी से प्राप्त हुई और इस कार्य को मैंने बम्बई में रहकर पी-एच० डी० के लिये थीसिस के रूप में अंग्रेजी में तैयार किया। हिन्दी के प्रति विशेष आग्रह होने के कारण मन न माना। मैंने बम्बई विश्वविद्यालय से हिन्दी में थीसिस प्रस्तुत करने की आज्ञा माँगी, पर आज्ञा न मिली; हाँ, इस बात की आज्ञा तो मिली कि मैं उसे हिन्दी में लिखित किसी अन्य-जो लेना चाहे उस-विश्वविद्यालय को प्रस्तुत करूँ तो बम्बई विश्वविद्यालय को कोई आपत्ति नहीं होगी। कार्य शिथिल पड़ गया। इस बीच हिन्दी में पुनः थीसिस लिखने के पूर्व किसी विश्वविद्यालय की खोज का प्रश्न सामने आ गया। कार्य चलता रहा। नवीन सामग्री नवीन अनुभवों के साथ जुड़ती रही। राजस्थान विश्व-विद्यालय स्थापित हुआ। १९६२ में मैंने 'हेमरतन कृत पदमिणि चउपई-एक परिपूर्ण आलोचनात्मक संस्करण तथा उसकी भाषा—राजस्थानी वि० सं० १६४५-का वैज्ञानिक अध्ययन'-थीसिस प्रस्तुत किया। वह स्वीकृत हो गया और मुझे पी-एच० डी० की डिग्री भी प्राप्त हो गई।

यह सब हुआ मुनिजी की प्रेरणा, प्रोत्साहन और प्रबोधन से। आभार मुझे प्रकट करना है—पर किन भावनाओं में, किन शब्दों में ? एक शिष्य जिसके पास वाणी नहीं, शब्द नहीं-वह अपनी वाणी की कंगाली को भी प्रकट करने में असमर्थ है, आभार तो उसके लिये बहुत भारी है—बलिहारी गुरु आपणै, जिन गुरु दियो बताय।'

काम कुछ जटिल हो गया—अनेक संकट और कठिनाइयाँ, जीवन की ऊबड़खाबड़ भूमियों के बीच जीवन और मरण, ये सब—

डेहली डोर साबाण सराचा, कटक तणा सिणगार ।
घड़िया जोणी, साँढ पलाणी, पूठ परठिया भार ।।

और मैं चला । कथा कुछ दुखद हो गई ।

बड़ौदा विश्वविद्यालय में जाने के पश्चात् मुनिश्री ने फिर स्मरण दिलाया कि मुझे यह करना है; और इसके प्रकाशन का आश्वासन भी मुझे मिला । हेमरतन की जितनी प्रतियाँ मुझे बम्बई तक प्राप्त हुईं उनका उपयोग मैंने बम्बई में ही कर लिया था । इसके बाद मुझे इसकी एक प्राचीनतम प्रति मिल गई जिसने इस संस्करण का आधार प्रस्तुत किया । अब प्रेस-प्रति तैयार करने में फिर से उतना ही कार्य बढ़ गया जितना किसी आलोचनात्मक संस्करण का आरम्भ से अन्त तक होता है । अतः जितना-जितना काम होता जाता उतना-उतना मैं मुनिजी को भेजता जाता और वह छपता जाता । इसी बीच में अनेक बाधाएं उपस्थित हुईं । मेरी पत्नी की निराशाजनक अवस्था ने मेरे संयम और मानसिक सन्तुलन को बिलकुल नष्ट कर दिया । मुनिजी की प्रेरणा और उनके उत्साहवर्द्धन ने इस कार्य को समाप्त करने में सहायता की । प्रूफ देखने तथा मूल पाठों को सुधारने का कार्य भी मुनिजी को ही करना पड़ा । कार्य समाप्त हो गया और इधर पत्नी की जीवन लीला भी समाप्त हो गई ।

भूमिका का कार्य रुक गया । प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रकाशन रुक गया । अतः इसका प्रकाशन देर से हो रहा है । आशा है पाठक मेरी विवशता को समझेंगे ।

मुनिजी इस अवस्था में भी अपने कार्य में संलग्न रहते हैं । अपने कार्य में व्यस्त रहते हुए भी उन्होंने मुझे प्रेरणा दी, उत्साहित किया और मार्ग-दर्शन भी । उनकी मुझ पर कृपा है, उनका आभारी हूँ । एक शिष्य पर गुरु की कृपा का भार तो जीवन भर ही रहता है, वह तो उसकी सम्पत्ति है, उसका प्रदर्शन कर वह उसको लौटाना नहीं चाहता ।

बैशाखी
मंगलवार, १३ अप्रेल, १९६५
विक्रम-विश्वविद्यालय, उज्जैन ।

उदयसिंह भटनागर

प्रस्तुत संस्करण

पद्मिनी की कथा को लेकर जायसी कृत 'पदमावत' हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में बहुत प्रसिद्ध है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने जायसी की अन्य रचनाओं के साथ इसका भी उद्धार किया। 'मिश्रबन्धु विनोद' तथा शुक्लजी के 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लब्धोदय (लक्षोदय) कृत 'पद्मिनी चरित्र' की सूचना मिलती है। इधर नागरी प्रचारिणी पत्रिका के पुराने अंकों में जटमल नाहर कृत 'गोरा बादल की कथा' के गद्य में लिखे जाने के विषय में भी विवाद चला था। राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज में मुझे अपनी यात्रा में इन रचनाओं की अनेक हाथ-पड़तों की छान-बीन में हेमरतन कृत 'गोरा बादल पदमिणि चउपई' के साथ भागविजय (और संग्रामसूरि) कृत 'गोरा बादल पदमिणि चउपई' की भी अनेक प्रतियाँ प्राप्त हुईं। इन सब में जायसी को छोड़ कर अन्य सभी रचनाओं के मूल में हेमरतन की रचना ही आधार रूप में बनी है। हेमरतन ही इस रचना का मूल लेखक है।

वि० सं० १६४५ में हेमरतन ने अपने इस काव्य की रचना की थी। वि० सं० १६८० में जटमल नाहर ने हेमरतन की रचना का एक विकृत रूप 'गोरा बादल की कथा' नाम से प्रस्तुत किया था। यह रचना गद्य में न होकर पद्य में लिखित है। फिर वि० सं० १७०६ में लब्धोदय ने हेमरतन की रचना को ही गेय रूप प्रदान कर 'पद्मिनी चरित्र' नाम से विविध ढालों में ढाला। वि० सं० १७६० में भागविजय ने और उसके कुछ वर्ष पूर्व संग्राम सूरि ने इसके परिवर्तित और परिवर्द्धित संस्करण तैयार किये। इस प्रकार पद्मिनी की कथा को लेकर रचित काव्यों को निम्न लिखित वर्गों में रखा जा सकता है :

१. **अज्ञात वर्ग :** सम्भवत: बैन अथवा अन्य कोई चारण कवि। बैन का उल्लेख जायसी ने 'पदमावत' में किया है—'कथा अरम्भ बैन कवि कहा'। इसी प्रकार हेमरतन की रचना में 'हेतंमदान कविमल्ल भणि' (२१।१५४) आया है।

२. **जायसी वर्ग :** आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'पदमावत' के प्रथम संस्करण में अपने पूर्व के चार संस्करणों का उल्लेख किया है। उक्त संस्करण को उन्होंने प्रामाणिक हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर तैयार किया था। इसके पश्चात् डा० माताप्रसाद गुप्त और डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के दो भिन्न (पर दूसरा पहले पर आधारित) प्रामाणिक संस्करण प्रकाशित हुए। मैंने इस संस्करण में तुलना के लिए इन तीनों का उपयोग किया है।

३. हेमरतन वर्ग : इस लेखक की अनेक रचनाएँ खोज में प्राप्त हुईं। प्रस्तुत रचना 'पदमिणी चउपई' की ही अनेक प्रतियाँ प्राप्त हुईं। उनमें से निम्न लिखित प्रतियाँ महत्वपूर्ण हैं—

(१) श्री रविशंकर देराश्री (बनेड़ा) की प्रति:—उक्त प्रति की एक फोटो प्रति श्री देराश्री ने मुझे उपयोग के लिये दी थी। इसमें रचना-काल वि० सं० १६४५ दिया गया है और लिपिकाल १६४६। इसमें प्रशस्ति सहित कुल ६१८ छन्द हैं। पर यह हेमरतन की मूल प्रति नहीं है और न सं० १६४६ में लिपीकृत मूल प्रति ही। इसमें जो क्षेपक दिये गये हैं उनसे लगता है कि यह उक्त संवत १६४६ में लिखित किसी हाथ-पड़त की प्रतिलिपि है। फिर भी यह मूल रचना के सबसे अधिक सन्निकट है और पाठ भी सबसे अधिक शुद्ध और मौलिक है।

(२) मुनि श्री जिनविजयजी की दो प्रतियाँ:—पहली प्रति में रचना-काल सं० १६४५ और लिपिकाल सं० १६६१ है। इसका आकार १० इंच लम्बा और ४·५ इंच चौड़ा है। इसमें २० पत्र और ६५४ छन्द हैं। पाठ की दृष्टि से उक्त भाषा के विकसित रूपों का प्रयोग इसमें मिलने लगता है। दूसरी प्रति जो ऊपरवाली (पहली) प्रति के अधिक सन्निकट है, वि० सं० १७२९ की लिखित है। इसका आकार पौने दस इंच लम्बा और साढ़े चार इन्च चौड़ा है। २९ पत्रों पर ६५१ छन्द हैं। इसमें पहली प्रति की भाषा के अधिक विकसित रूप मिलते हैं।

(३) वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर की प्रति:—यह प्रति वि० सं० १७८५ में ढाका में लिखी गई थी। इसका आकार ६ इंच लम्बा और ५ इंच चौड़ा हैं। इसमें १०२ पत्रों पर ६७५ छन्द दिये हैं। यह प्रति खण्डित है और आरम्भ के ६१ छन्द नष्ट होगये हैं। क्षेपक तथा पाठान्तर होने पर भी इसके छन्द मूल छन्दों के अधिक सन्निकट हैं।

(४) अन्य प्रतियों में माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर की कुछ प्रतियां और ऑरिएन्टल इन्स्टीटयूट, बड़ौदा की प्रतियां भी उल्लेखनीय हैं। ये पाठ की दृष्टि से उतनी शुद्ध नहीं हैं। गुजरात विद्या सभा, अहमदाबाद, भाण्डारकर इन्स्टीट्यूट, पूना, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी में भी इसकी प्रतियाँ सुरक्षित हैं।

४. जटमल वर्ग : इसकी अनेक प्रतियां मिलती हैं। कुछ में पाठान्तर और भाषान्तर भी हो गया है। ऐसी ही एक प्रति की नकल मुनि जिनविजयजी के

संग्रह में भी है। यह उन्होंने अपनी बीकानेर यात्रा में लिखवायी थी। इसका एक प्रकाशित संस्करण भी मिलता है। कुछ हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर पं० अयोध्याप्रसाद शर्मा ने इसका सम्पादन कर तरुण भारत ग्रन्थावली, दारागंज, प्रयाग में प्रकाशित करवाया था। प्रकाशित रचना खड़ी बोली के अधिक निकट है जो हस्तलिखित प्रतियों से भिन्न है।

५. **लब्धोदय वर्ग :** इस वर्ग की चार प्रतियां उल्लेखनीय हैं—

(१) संवत् १७५३ की लिखित प्रतिः—इसमें ७८० छन्द हैं। इस समय यह उदयपुर के सरस्वती सदन में सुरक्षित है।

(२) सं० १७६१ की लिखित प्रतिः—इसका आकार ९"×६·२" है। यह माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर (उदयपुर के पास) में सुरक्षित है। इसमें ६१ पत्र और ८११ छन्द हैं।

(३) संवत् १८२३ की लिखित प्रतिः—यह सरस्वती सदन, उदयपुर में सुरक्षित है। इसमें ८०३ छन्द हैं।

(४) संवत् १८६५ की लिखित प्रतिः—यह भी माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर के संग्रह में है। इसका आकार १३·५"×८·५" है। इसमें ८०० छन्द हैं। लिपि अधिक भ्रष्ट है।

६. **भागविजय वर्ग :** इस वर्ग में केवल वे ही रचनाएँ ली गई हैं, जिनमें संग्राम सूरि के क्षेपक भी सम्मिलित हैं। ऐसी कोई प्रति नहीं मिलती जिसमें केवल संग्राम सूरि अथवा केवल भागविजय के ही क्षेपक हों। इस वर्ग की निम्नलिखित प्रतियां महत्वपूर्ण हैं।

(१) माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर की दो प्रतियां:—इनमें पहली वि० सं०१७६० की लिखित है और दूसरी संवत् १७७१ की। इनमें पहली प्रति लेखक की मूल हाथ-पड़त लगती है और दूसरी उसी की प्रतिलिपि। पहली का आकार १०"×४" है। इसमें ३१ पृष्ठ और प्रशस्ति सहित ९१६ छन्द हैं। दूसरी का आकार १०"×४.५" है। इसमें ३८ पत्र हैं और ९१७ छन्द हैं।

(२) ऑरिएन्टल इन्स्टीट्यूट बड़ौदा की सं० १७८३ की लिखित प्रतिः—इसका पाठ अधिक शुद्ध नहीं है।

प्रस्तुत संस्करण के लिये हेमरतन वर्ग और भागविजय वर्ग ही अधिक उपयोगी सिद्ध हुए हैं। जायसी और जटमल की रचनाएँ प्रकाशित हैं। लब्धोदय

के 'पद्मिनी चरित्र' के एक स्वतन्त्र संस्करण का प्रकाशन अपेक्षित है। भागविजय की रचना हेमरतन की रचना का ही परिवर्तित और परिवर्द्धित संस्करण होने के कारण पाठालोचन और पाठशोधन के लिये उसका उपयोग करते हुए उसको नीचे पाठान्तर में रखा गया है। इस प्रकार उपर्युक्त प्रतियों में जिनका प्रयोग प्रस्तुत संस्करण में किया गया है उनका नामकरण निम्न प्रकार से किया गया है--

१. A प्रति – हेमरतन वर्ग की प्रति संख्या १ देराश्रीवाली प्रति वि० सं० १६४६ की लिखित।

२. B प्रति – हेमरतन वर्ग की प्रति संख्या २ में उल्लिखित पहली प्रति वि० सं० १६६१ की लिखित ।

३. C प्रति – हेमरतन वर्ग की प्रति संख्या २ में उल्लिखित दूसरी प्रति वि० सं० १७२६ की लिखित ।

४. D प्रति – हेमरतन वर्ग की प्रति संख्या ३ में उल्लिखित वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर की वि० सं० १७८५ की ढाका में लिखित खण्ड प्रति ।

५. E प्रति – भागविजय वर्ग की प्रति संख्या १ में उल्लिखित पहली प्रति वि० सं० १७६० में रचित और लिखित मूल प्रति ।

उपर्युक्त प्रतियों के छन्दों की तुलना और निरीक्षण से एक उलझन उपस्थित हुई। प्रत्येक प्रति में क्षेपकों के अतिरिक्त अनेक सुभाषित, उक्तियां, और प्रसंगानुसार अन्य अनेक कवियों की रचनाओं के उद्धरण भी थे। इन सभी पर एक ही क्रम में छन्द संख्या अंकित थी। यहां तक कि सबसे प्राचीन सं० १६४६ की लिखित प्रति में भी यही स्थिति थी। इधर कई प्रशस्तियों के अनुसार हेमरतन के मूल छन्दों की संख्या ६१६ (षटसित षोडस) होनो चाहिये, जब कि प्रत्येक प्रति में छन्द इससे अधिक संख्या में थे। सं० १६४६ वाली प्रति में भी यही स्थिति वर्त्तमान थी। प्रत्येक प्रति के छन्दों की पारस्परिक तुलना और सूक्ष्म निरीक्षण से हेमरतन के मूल छन्दों की खोज में बहुत सहायता मिली। इस तुलना से प्रत्येक प्रति की छन्द संख्या की स्थिति निम्नलिखित देख पड़ती है :—

प्रति	स्वीकृत छन्द	अस्वीकृत छन्द	प्रति के मूल छन्द
A	६०४	६	६१०
B	६१२	४२	६५४
C	६०९	४२	६५१
D	६०९	६६	६७५
E	५६२	३०२	८६४

स्वीकृत मूल छन्द इस प्रकार हैं—

A	प्रति में मूल स्वीकृत	(हेमरत्न कृत)	६१६ छन्दों	में	से	१२	छन्द	कम	हैं	(६१६-६०४)
B	,,	,,	,,	,,	,,	४	,,	,,		(६१६-६१२)
C	,,	,,	,,	,,	,,	७	,,	,,		(६१६-६०६)
D	,,	,,	,,	,,	,,	७	,,	,,		(६१६-६०६)
E	,,	,,	,,	,,	,,	५४	,,	,,		(६१६-५६२)

प्रत्येक प्रति में जो छन्द कारण विशेष से क्षेपक माने गये हैं, उन्हें नीचे टिप्पणी में दे दिया गया है। प्रत्येक प्रति के स्वीकृत तथा अस्वीकृत छन्दों में कई छन्द पूर्ण नहीं हैं। कहीं-कहीं क्षेपक रूप में एक एक अर्द्धाली जोड़ी गई है और कहीं क्षेपकों में मूल छन्द का कोई अंश है। अतः प्रत्येक प्रति में इस स्थिति की सूचना यथास्थान दे दी गई है।

छन्द-निर्णय के पश्चात् पाठ-निर्णय भी आवश्यक है। प्रस्तुत प्रतियों में कोई भी प्रति हेमरतन की मूल प्रति नहीं है। न तो किसी में हेमरतन द्वारा रचित पूरे ६१६ छन्द ही हैं और न कोई भी प्रति क्षेपकों से सर्वथा मुक्त ही है। पर विभिन्न प्रतियों में से हेमरतन के ६१६ छन्द अवश्य निकल जाते हैं। ऐसी स्थिति में उनके पाठों की समस्या सामने आ जाती है। अतः पाठ संशोधन के लिये निम्नलिखित आधार निश्चित किये गये—

१. **प्रतियों की प्राचीनता का आधार :** सामान्य रूप से सब से प्राचीन प्रति को आधार मान कर पाठ-निर्णय करने की एक शैली परम्परा से चली आती है। परन्तु कभी-कभी प्राचीनतम प्रति भी लिपिकार के आग्रह से मुक्त नहीं होती। ऐसी स्थिति में वह उतनी सहायक नहीं होती जितनी अन्य प्रतियाँ। यहाँ A प्रति मूल रचना के एक वर्ष पश्चात् लिखित प्रति की प्रतिलिपि है। परन्तु यह भी पाठान्तरों और क्षेपकों से मुक्त नहीं है। अन्य प्रतियों में पाठान्तर अधिक होने पर भी कहीं-कहीं पाठ-निर्णय में उनसे बड़ी सहायता मिली है। इस दृष्टि से E प्रति उल्लेखनीय है जिसमें सबसे अधिक पाठान्तर और क्षेपक होते हुए भी अनेक स्थलों पर A प्रति से मेल खाने से वह पाठ-निर्णय में सहायक हुई है; जैसे—

A	B	C	D	E
अबकइ	अबकइ	अबकिइ	अबकै	अबकइ
माजूणउे	माजूणउे	माजूणो	माजूणो	माजूणउे
माणिसुं	माणिसि	माणिसि	माणिसुं	माणिसुं

२. **मूल छन्दों की प्रतिशत संख्या का आधार :** प्रत्येक प्रति में मूल छन्दों की संख्या निकाल कर उसका निश्चित मूल छन्दों से प्रतिशत निकालने पर प्रतियों की क्रमगत श्रेष्ठता स्थापित हो जाती है और उसके आधार पर भी पाठ-निर्णय किया जाता है। पर कभी-कभी प्राचीन प्रति में मूल छन्दों की संख्या कम होने पर पाठ-निर्णय में कठिनाई होती है। उक्त रचना में यही स्थिति है।

प्रति में सब से कम मूल छन्द हैं :—

A	प्रति	में	मूल ६१६	में से ६०४	छन्द	होने से	उनका	प्रतिशत	९८·०५
B	,,	,,	,,	,, ६१२	,,	,,	,,	,,	९९·३५
C	,,	,,	,,	,, ६०९	,,	,,	,,	,,	९८·८६
D	,,	,,	,,	,, ६०९	,,	,,	,,	,,	९८·८६
E	,,	,,	,,	,, ५६२	,,	,,	,,	,,	९१·२३

इस दृष्टि से A प्रति में ९८·०५ प्रतिशत होने से उंसकी स्थिति B (९९·३५ प्र.श.) और C तथा D (९८-८६ प्र. श.) के नीचे आ जाती है। पर क्षेपकों और पाठान्तरों का प्रतिशंत उसकी स्थिति को बहुत ऊपर उठाये रहता है।

३. **क्षेपकों और मूल छन्दों के अनुपात का आधार :** प्रत्येक प्रति में क्षेपकों और मूल छन्दों का अनुपात निम्न प्रकार से है :

प्रति	कुल छन्द	— मूल छन्द	+ क्षेपक-मूल	छन्दों का प्रतिशत	क्षेपकों का प्रतिशत
A	६१०	— ६०६	+ ४	९९·१५	००·९८
B	६५४	— ६१२	+ ४२	९३·६१	०६·४२
G	६५१	— ६०९	+ ४२	९३·५५	०६·४५
D	६७५	— ६०९	+ ६६	९०·२२	०९·७७
E	८६४	— ५६२	+३०२	६५·४२	३४ ९५

४. **प्रत्येक प्रति में मिलनेवाले पाठान्तरों की प्रतिशत संख्या का आधार :** पाठ-निर्णय के लिये भिन्न पाठों और पाठान्तरों के तुलनात्मक अध्ययन से प्रत्येक प्रति और उसके पाठों की प्रामाणिकता सिद्ध हो जाती है और उससे पाठ-संशोधन तथा मूल पाठों के निर्णय में सुगमता हो जाती है। इन पाठों में से १००० ऐसे पाठ चुने गये जिनके विविध प्रतियों में भिन्न पाठ अथवा पाठान्तर मिलते हैं। उसके आधार पर भी प्रतियों की प्रामाणिकता क्रमबद्ध कर पाठ-निर्णय में सहायता ली गई। इस प्रकार प्रत्येक प्रति में पाठान्तरों का जो प्रतिशत प्राप्त हुआ वह इस प्रकार है—

A	प्रति में	१००० शब्दों में	१७	पाठान्तर हैं	=	१·७	प्रतिशत
B	,,	,,	,, ५८७	,,	=	५८·७	,,
C	,,	,,	,, ६८६	,,	=	६८.६	,,
D	,,	,,	,, ७३२	,,	=	७३.२	,,
E	,,	,,	,, ८४४	,,	=	८४.४	,,

५. **ऐतिहासिक आधार :** प्रतियों में आनेवाले कुछ ऐतिहासिक तथ्य भी पाठ-निर्णय में सहायक होते हैं। उक्त प्रतियों में दिये गये ऐतिहासिक उल्लेख ग्रन्थ के रचनाकाल तथा लिपिकाल प्रमाणित करने में सहायक हुए हैं। इनके आधार पर प्रतियों की प्राचीनता और कालगत भाषा-प्रवृत्तियों की खोज करने में सहायता मिली है। ये उल्लेख विशेष रूप में इन प्रतियों की प्रशस्तियों में मिले हैं। A प्रति की प्रशस्ति उसकी प्राचीनता सिद्ध करने में सबसे अधिक सहायक हुई है। यह प्रशस्ति मूल रचना की ही प्रशस्ति है। इसमें लेखक ने अपनी गुरु-परम्परा के साथ रचनाकाल (वि० सं० १६४५) और रचना-स्थान 'सादड़ी' (मारवाड़) के साथ महाराणा प्रताप और उनके मन्त्री भामाशाह का उल्लेख करते हुए सादड़ी के शासक ताराचन्द का भी उल्लेख किया है, जो ऐतिहासिक सत्य है। इस दृष्टि से इसका महत्त्व अधिक बढ़ जाता है कि यह मूल रचना के अधिक सन्निकट है। अतः इसके पाठ अन्य प्रतियों की अपेक्षा अधिक प्रामाणिक सिद्ध हुए हैं।

६. **साहित्यिक आधार :** किसी रचना के पाठ-निर्णय में साहित्यिक आधार भी अन्य आधारों के समान ही महत्त्वपूर्ण होता है। रचना-तत्त्वों में छन्द, अलंकार, भाव और रस के उपयुक्त भाषा के रूपों को विभिन्न प्रतियों से तुलना तथा शोध-संशोधन कर पाठ-निर्णय किया गया है। इनमें से कुछ का उल्लेख नीचे किया जाता है—

(१) प० च० में प्रधान रूप से दोहा और चौपई छन्दों का प्रयोग हुआ है। इन छन्दों में आदि से अन्त तक एक विशेष लय है। पाठान्तरों का तथा भिन्न पाठों का कहीं-कहीं इस लय में मेल नहीं बैठता। इसी प्रकार गति-भंग-दोष तथा न्यूनाधिक मात्रा-दोष भी पाठ-निर्णय में सहायक हुए हैं। निम्न लिखित उदाहरण देखिये:—

मूल – ब्रह्म-विष्णु-शिव सइं मुखइं, नितु समरइं जसु नाम (२)

यहाँ 'मुखइं' के स्थान पर E प्रति में 'मुखे' पाठ है। यह बहुवचन होने पर भी 'सइं मुखइं' तथा उसकी क्रिया 'समरइं' की लय में नहीं बैठता। 'मुखइं' के स्थान पर B प्रति का 'मुखि' पाठ मात्रा-दोष के कारण अमान्य

हो जाता है। इसी प्रकार दसवें पद में 'वसुधा लोचन जेसु विसाल' में 'जेसु विसाल' के स्थान पर B प्रति का पाठ जस 'सुविशाल' गति भंग दोष के कारण अमान्य है।

(२) इसी प्रकार पहले दोहे में वयणसगाई अलंकार पाठ-निर्णय में सहायक हुआ है :—

सुख संपति दायक सकल, सिधि बुधि सहित गणेस।
विघन विडारण विनयसुं, पहिली तुझ प्रणमेस ॥१॥

इसमें 'विघन विडारण विनयसुं' के स्थान पर B प्रति का पाठ 'विघन विडारण सुखकरन' अथवा E प्रति का पाठ 'विघन विडारण रिधिकरण' कर देने से उक्त अलंकार की स्थिति नष्ट हो जाती है, जब कवि ने वीर रस की रचना में वयणसगाई को प्राथमिकता देने की परम्परा का निर्वाह किया है।

(३) रस का आधार भाव है। अतः भाव-व्यञ्जना के लिये शब्द और अर्थ में सामंजस्य आवश्यक है। बादल के इन गाज भरे शब्दों में देखिये —

"सुणि बाबा" ! बादिल कहइ, "सुभटांसुं कुण कांम ?
सुभट सहू सूए रहउे, ए करिस्युं हुं कांम ॥४०८॥

इसमें 'सुभटां सु ं कुण कांम' के स्थान पर E प्रति के 'अवरां केहो कांम' तथा 'बैसि रहो सारा सुहड' में प्रत्यक्ष भावाभिव्यक्ति न होने से बादल के उत्साह का भाव सीधा ग्रहण नहीं होता।

७. **शैली और परम्परा का आधार :** वीर-रस की रचना होने पर भी कवि ने जैन-शैली की भाषा-परम्परा और लेखन-परिपाटी के प्रति आग्रह दिखाया है। इस सम्बन्ध में आगे प० च० की भाषा के अन्तर्गत सविस्तार वर्णन है। नीचे कुछ ऐसे प्राचीन रूपों को दिया जाता है जो आग्रह पूर्वक प० च० में रखे गये हैं, और जिनके प्रति अन्य प्रतिओं में यह आग्रह नहीं दीख पड़ता:—

मूल – अम्ह　B, C, D, E, – हम / D, – हंमनै } जबकि इसके विपरीत मूल 'अम्हि' के स्थान पर B, C, D, E, में 'अम्हे', B में 'अम्ह' C में 'अम्हे' और D, E में 'हम' भी मिलते हैं

आविड़े　B – आविओ,　C, D – आवियो

ऊतरीड़े　B – ऊतरीयो, ऊतर्‌यड़े }　C, D – ऊतरीयो, ऊतर्‌यो }　E ऊतरीयो

उदधि　B, C, D – जलद, दरिया }　B, C – समुद्र }　E सागर, जलधि }

८. भाषा का आधार : पाठ-निर्णय में भाषा का आधार सबसे महत्त्वपूर्ण आधार है। पाठ-निर्णय के लिये कुछ भाषा-सम्बन्धी आधारों का उल्लेख नीचे किया जाता है :—

(१) पाठ-भेद प्रवृत्ति : कुछ लिपिकारों तथा क्षेपककारों में मूल रचना से सर्वथा भिन्न पाठ कर देने की प्रवृत्ति होती है। इसके अनेक कारण होते हैं, पर मुख्यतः यह कभी तो अर्थ समझने में न आने पर किया जाता है और कभी प्रमाद या व्यक्तिगत रुचि के कारण :—

(क) अर्थ न समझने के कारण —

मूल–	अति सुकमाल पसम पडवडी (१५३)	(सं० सूकः=कमल)
B–	, शुकमाल पक्षम ,,	(शुक ... =तोते का पर)
E–	कोमल सबल पसम पडवडी	(अर्थ स्पष्ट है)

(ख) व्यक्तिगत प्रमाद या रुचि के कारण—

मूल – ऊषर खेत्र न लागइ बीज। विण झगडा नवि थापइ धीज (४२) यहां रेखांकित शब्द उपयुक्त हैं। यहां 'खेत्र' के स्थान पर B प्रति में 'क्षेत्र' (भिन्न अर्थ) 'लागइ' के स्थान पर E प्रति में 'उगै', 'झगडा' के स्थान पर G प्रति मे 'झगडइ' तथा E प्रति में 'झगडै' और, 'थापइ' के स्थान पर E प्रति में 'होवइ' पाठान्तर तथा पाठ-भेद हो गये हैं। इसी प्रकार 'ए ऊषाणुं अंख्या दीठ' (५८) में 'अंख्या दीठ' के स्थान पर E प्रति में 'साचो दीठ' पाठ लिपिकार की प्रमाद-प्रवृत्ति का द्योतक है।

(२) पाठान्तर प्रवृत्ति : भाषा के प्राचीन रूपों के व्यवहार से मुक्त हो जाने पर लिपिकाल के समय लिपिकार उनसे विकसित नवीन रूपों का प्रयोग कर लेता है। इसी प्रकार कभी तत्सम रूपों के प्रति उसकी रुचि तथा उसकी स्थानीय बोली का प्रभाव और उसकी उच्चारण प्रवृत्ति आदि अनेक कारणों से एक ही रचना की भिन्न-भिन्न प्रतियों में पाठान्तर हो जाते हैं। कुछ का उल्लेख यहाँ किया जाता है–

(क) अव्यवहृत प्राचीन रूपों के स्थान पर नवविकसित या प्रचलित रूपों का प्रयोग :

मूल—अवडा	–	B,C,D,	– एवडा, E इतने
करावउे	–	C,D	– करावो (–वौ)
कहवाडउे–		B,C	– कहवाडो (–डौ), D,E–कहावो (–वौ)
अजुआलइ-		B,	– उजवालइ, C–उजवालै, E उजालै

(ख) तत्सम रूपों के प्रति लगाव–

मूल—अउंर	B,C,D	अवर (< सं० अपर)
उछाह	D	उत्साह
ऊछेद	D	उच्छेद

(ग) स्थानीय बोली का प्रभाव–

मूल—कवित्त	B,C,D,E	किवित्त	मारवाड़ी की आदि इकार-प्रवृत्ति
कस्तूरी	E	किस्तूरी	
अवकइ	C	अवकिइ	मध्य राजस्थानी की मध्य इकार-प्रवृत्ति
अनइ	C	अनिइ	
अवनि	C	अविनि	

(घ) उच्चारण की मुखसुख प्रवृत्ति ('य' का निवेश)

मूल—करिसइं	B,C	करिस्यइं
कहीइ	B,C	कहियइ. D,E – कहियँ
उवेलीउे	C	उवेलीयउे

(च) व्याकरण सम्बन्धी भूलें—

(१) लिंग की भूल – मूल – आडी (स्त्री०)–B–आडउे, C,D,E–आडो (पुं०)
(२) वचन की भूल– मूल – आंणा (ब.व.)–B–आणउे, D,E –आणुं (ब.व.)

पदमणि चउपई की कथावस्तु का विस्तार दस खण्डों में हुआ है । प्रत्येक खण्ड की कथा संक्षेप में इस प्रकार है—

१. खण्ड – चित्तौड़ के राजा रतनसेन का अपनी पटरानी प्रभावती के व्यंग पर सिंहलद्वीप में जाकर वहाँ के राजा की बहिन पद्मिनी से विवाह कर के लौटना—(१-९३) ।

२. खण्ड – रतनसेन और पद्मिनी के प्रेम-प्रसंग के समय राघव का अन्तःपुर में प्रवेश और इस कारण रतनसेन का क्रोध में आकर उसकी आँखें निकलवाने का आदेश । राघव का डर से भाग जाना— (९४-१३५) ।

३. खण्ड – राघव का दिल्ली पहुँचना और वहाँ एक भाट की सहायता से अलाउद्दीन के दरबार में प्रवेश कर पद्मिनी स्त्री का प्रसंग छेड़ना । अलाउद्दीन का अपने हरम में पद्मिनी स्त्री की खोज के लिये राघव द्वारा निरीक्षण कराना और उसमें एक भी पद्मिनी स्त्री न होने पर राघव के संकेत पर पद्मिनी के लिये सिंहलद्वीप पर चढ़ाई करना—(१३६-१८६) ।

४. खण्ड – अलाउद्दीन द्वारा सिंहल पर आक्रमण और समुद्र में अनेक कठिनाइयों के कारण पीछा लौटना—(१८७-२२७) ।

५. खण्ड – दिल्ली लौटने पर अलाउद्दीन की बीवी का व्यंग्य करना। फिर राघव की सूचना और संकेत पर पद्मिनी प्राप्त करने के लिये चित्तौड़ पर आक्रमण का आदेश—(२२८-२४१)।

६. खण्ड – रतनसेन और अलाउद्दीन का युद्ध। अलाउद्दीन का गढ़ लेने में असफल रहने के कारण अपने मंत्री को भेजकर केवल क़िला और पद्मिनी को देखकर लौट जाने का छल-पूर्ण सन्धि-प्रस्ताव—(२४२-२८२)।

७. खण्ड – अलाउद्दीन का गढ़ में प्रवेश। भोजन के समय दासियों को देख कर उन्हें पद्मिनियाँ समझ कर बार-बार चौंकना और राघव का उसको सचेत करना। भोजनोपरान्त झरोखे की जाली से झांकती हुई पद्मिनी को देख कर उसका मूर्छित हो जाना और राघव का उसको समझाना। किला देख कर लौटते समय रतनसेन को बातों में लगा कर द्वार तक ले आना और वहाँ अपने छिपे हुए साथियों द्वारा उसे बन्दी बना लेना—(२८३-३४७)।

८. खण्ड – रतनसेन-प्रभावती का पुत्र वीरभांण पद्मिनी को उसकी माता का सौभाग्य छीनने वाली समझता है और इस कारण वह उसको अलाउद्दीन को सौंपकर उसके बदले में राजा को लेने का प्रस्ताव स्वीकार करता है। यह सुन कर पद्मिनी के मन में रोष, चिन्ता और ग्लानि तथा वहां न जाने का दृढ़ निश्चय—(३४८-४२१)।

९. खण्ड – पद्मिनी का सहायता के लिये गोरा-बादल के पास जाना। बादल द्वारा रतनसेन को छुड़ाने की प्रतिज्ञा सुन कर उसकी माता का उसको रोकना—(४२२-४६७)।

१०. खण्ड – अपनी बात न मानने पर बादल की माता का उसकी नव-विवाहित वधू को भेजना। अपने स्वामी के दृढ़ निश्चय तथा रणोल्लास को देखकर नव-वधू का उसको रणवेश से सज्जितकर आयुध देकर युद्ध के लिये विदा करना। बादल का वीरभांण को समझा कर अपने पक्ष में करना और अलाउद्दीन के पास जाकर उसको छलभरी बातों से पद्मिनी के आने का विश्वास दिला कर उसकी सेना को वहां से रवाना करवा देना। फिर गढ़ में आकर डोलों में दासियों के स्थान पर अपने सैनिकों को और पद्मिनी के स्थान पर गोरा को छिपा कर ले जाना; रतनसेन को छुड़ाना और अलाउद्दीन तथा उसके चुने हुए साथियों को मार भगाना। युद्ध में गोरा की मृत्यु और उसकी स्त्री का सती होना—(४६७-६२०)।

पदमरिए चउेपई में भाषा की सामान्य प्रवृत्तियां और उसकी शैली :—

पदमणि चउेपई कां रचनाकाल वि०सं० १६४५ है अतः इसकी भाषा वि०सं० १६०० और १७०० के बीच की विकसित भाषा का रूप है। विकास-काल की दृष्टि से इसको मध्यकालीन राजस्थानी तथा क्षेत्र की दृष्टि से इसको मध्य राजस्थान की भाषा मानना चाहिये । मध्य राजस्थानी क्षेत्र राजस्थान का गोड़वाड़ का प्रदेश, उसके पूर्व में अजमेर, अजमेर से जहाजपुर-मांडलगढ, वहाँ से भीलवाड़ा, गंगापुर, रायपुर, आमेट, कुम्भलगढ और पुनः गोड़वाड़ के बीच का विस्तृत भू-भाग है। उस काल की मध्य राजस्थानी का क्षेत्र भी लगभग इसी के अन्तर्गत मानना चाहिये । उक्त रचना का रचयिता हेमरतन गोड़वाड़ प्रदेश में स्थित सादड़ी का निवासी था। अतः इस ग्रन्थ की भाषा-प्रवृत्तियाँ सामान्य रूप से मध्य राजस्थान की उस काल की भाषा-प्रवृत्तियाँ हैं, जिसके भीतर कहीं-कहीं गोड़वाड़ी की स्थानीय प्रवृत्तियों का भी समावेश है। लेखक के जैन साहित्य की परम्पराओं में शिक्षित होने के कारए इस ग्रन्थ में जैन शैली की भाषा-परम्परा का निर्वाह भी देख पड़ता है। इसी प्रकार वीर-रस की रचना होने के कारए इसमें डिंगल शैली का भी समावेश है :—

१. मध्य राजस्थानी की भाषा-प्रवृत्तियां —

(१) शब्द के आदि में अ-कार के स्थान पर मारवाड़ी इ-कार की प्रवृत्ति :

इधकी (७८ D अधकी); इसउ (२२७); खिण (२४ = क्षण); खित्री (३८१ = क्षत्रीय); सिबद (४३९ = शब्द)

(२) कहीं-कहीं 'इ' तथा 'उ' के स्थान पर 'ए' तथा 'ओ' और 'ए' तथा 'ओ' के स्थान पर 'इ' तथा 'उ' की गुण-वृद्धि;

(क) जिसउे (४८६)–जेसु (१०); करियो (४)–करेयो (४३१) जीपिसुं (४६५)–जीपेशां (४०४); जीता (५९९)–जेत (५१४)

दिष्टें (१५५ B,C)–दीठ (६९)—द्रेठि (२७०)

(ख) सुहामणी (१६८)–सोहांमणी (DE); सुगंद (२६९)–सोगंध (E); फुजदार (२८६)–फौजदार; फोफल (३३०)–पुंगफल, पुष्पफल; बुल्लइ (३९७)–बोलइ (३८६); होई (१००)–होइ (३३), हूइ (३६४)

(३) तालव्य 'श्' और दन्त्य 'स्' का एक दूसरे के स्थान पर अनियमित प्रयोग : जीपेशां (४०४)-जीपिसुं (४६५), करशां (४०१)-करेसां (५३७ A,E), करेसुं (५३६)

(४) मध्यग -व्- के स्थान पर कहीं -य्- और कहीं -अ का अनियमित प्रयोग :

बहुअर (४४६), - बहूयर (B,C,E) - बहूवर (D)

खाआं (३९१) - खावां

जावइ (४७८) - जायइ (४६८)

(५) स्वर-लोप द्वारा शब्द - संयोग की प्रवृत्ति :

न + आवइ = नावइ (२५)

न + आदरी = नादरी (४८५)

म + आवइ = मावइ (४२२)

(६) मध्य अनुनासिक - एँ - का - आँ - में परिवर्त्तन :

(क) वात सहू बहू अर नां कही (४४६ A) स्त्री० ए०

(ख) सिंघलपति नां सिरपा दीउे (२२२ A) पु० ए०

(ग) मोटां नां परि दीघुं मान (२२३ A) ब० व०

उक्त रचना में इस प्रवृत्ति का प्रभाव कर्म कारक के चिन्ह 'ने' पर पड़ने से उसका 'नां' हो गया है। आधुनिक बोली में इस क्षेत्र में 'थने कह्यो' के स्थान पर 'थनां कियो' बोला जाता है। कर्म कारक में ही यह प्रवृत्ति सीमित नहीं है। मध्यस्थित स्वरों की यह प्रवृत्ति ध्यान देने योग्य है :

भांश ∠ भेंस; फांक्यो ∠ फेंक्यो, खांच्यो ∠ खेंच्यो आदि।

प०च० में खंची (५९३) ∠ खांची ∠ खेंची

३. पदमणि चउपई में मध्यराजस्थानी की गोड़वाड़ी बोली की स्थानीय प्रवृत्तियां :

(क) संख्यावाचक दो-तीन (२,३) के स्थान पर बे-त्रण तथा उसके रूपों का प्रयोग :

बि - च्यार (५४४), बी - सहस (१०१), बे (६७), बिवणउे (२०४) बेउ (५४), बेइ (३९) बेही (८०), बिहुं (७), बिहु (१५१), ब्युं (९२), ब्यउं (५०३), बिया (५४९), बीजा (३९६), बीजी (५०)।

त्रिगुण (१८७), त्रिहुं (३१९), त्रीजउं (१२९), त्रीजी (३०९), त्रीस (४१), त्रोसहस (३७३), त्रीसहजार (२८५)।

(ख) करण - अपादान कारकों में 'सुं' (सूं) के स्थान पर भीली 'थी' का प्रयोग :

१।—रतनसेन थी मन महि डरइ (८२)

२।—तुं सिंघल थी अविउं नासि (२५०)

(ग) भूतकाल 'हतो' (आधु० राज० 'हो') के स्थान पर 'थो' का प्रयोग:

१।—आगे --ई थो बंभण गुणी (१४५)

(घ) दो दीर्घ स्वरों के बीच वाले अक्षर में स्थित स्वर "अ" का "इ" में परिवर्तन : दोहिली (४५४); पाछिली (९४)

४. जैन शैली की भाषा-परम्पराओं का आग्रह :

(क) संयुक्त स्वर 'ऐ' तथा 'औ' के प्राचीन रूपों को ग्रहण कर उनको प्राचीन रूपों में ही लिखा गया है, जब कि अन्य प्रतियों में उनके नव विकसित रूप लिखे गये हैं :

वइसणइं (२९)-बैसणै (E); बेसणउे (५०३)-बैसणी (D)

(ख) आदि 'य्-' के स्थान पर 'ज्-' का प्रयोगः

जोअण (४१) ∠ योजन; जोगी (६०) ∠ योगी

इसी प्रकार अन्त्य '-ज्' के स्थान पर इसके विपरीत '-य्' का प्रयोग; आवयो (५३६) =आवजो;

(ग) कहीं-कहीं शब्दों के प्राचीन रूपों का निर्वाह;

(१) मध्य "त" के स्थान पर "प" : जीपण (७३) - जीतण

(२) आदि "ल" के स्थान पर "न" : निलवटि (४९८),- ललाटि (६०९)-, निलाटि (B,C,D,E), नालि (२८६)-लारि (१८४)

(३) आदि व- के स्थान पर म - : मोनती (१६१)-वीनती (२०९)

५. वीर-रस की अभिव्यक्ति के लिये भाषा में डिंगलत्व :

(क) व्यञ्जन द्वित्त्व : सावर्ण्य प्रवृत्ति के आधार पर विकसित प्राकृत-अपभ्रंश के द्वित्त-व्यञ्जन-युक्त शब्दों का प्रयोग डिंगल की प्रधान विशेषता है। इसी आधार पर उसमें अनेक प्रकार के द्वित्त-व्यञ्जन-युक्त रूपों की रचना हुई। इसमें से निम्नलिखित प्रवृत्तियां उक्त रचना में दीख पड़ती हैं :—

(१) प्राकृत-अपभ्रंश में स्वीकृत सवर्ण द्वित्व :

भट्ट (१६२) खग्ग (३६७)

(२) अपभ्रंश में द्वित्वव्यंजन वाले जो शब्द राजस्थानी में परिवर्तित हुए थे उनमें द्वित्वव्यंजन लोप होकर उसके पूर्व-वर्ण को दीर्घ करने की प्रवृत्ति देख पड़ती है। इसी नियम के विपरीत शब्द के मध्य में द्वित्व के आगमन के लिये पूर्व स्थित दीर्घ वर्ण को ह्रस्व करने का नियम डिंगल में देख पड़ता है। निम्नलिखित उदाहरणों में यह प्रवृत्ति देख पड़ती है :

अ < आ — झल्लई (३६७) < झालइ (३६६)
इ < ई — लिज्जइ (३७४) < लीजइ (२६७)
इ < ए — खिल्लुं (४३३) < खेलुं (७४)
उ < ऊ — फुट्टे (४४२) < देखो, फूटइं (२५६)
उ < ओ — बुल्लइ (३६७) < बोलइ (३३)

इसी प्रकार के द्वित्व में कहीं-कहीं पर-वर्ण भी ह्रस्व कर दिया जाता है :

सत्ति (४१६) < सती (२०)

(३) कभी-कभी पूर्व तथा पर-वर्ण को प्रभावित किये बिना ही द्वित्वव्यंजनागम हो जाता है :

फिट्टूं (४४२) < फिट (५६८);
सक्कइ (१३) < सकइ (१३)

(४) मध्यव्यंजन महाप्राण होने पर उसके साथ द्वित्व की स्थिति में अल्प-प्राण का ही संयोग होता है :

रक्खाविउं (४४२); पाउेद्धरइ (२८६)

(५) (क) द्वित्वव्यंजनागम के पूर्व उर्ध्व रेफ का अधोरेफ होना :

गंध्रव्व (१६३) < गंधर्व; स्रग्गि (२४१), स्रग्ग, < स्वर्ग

(ख) उच्चारण लाघवत्व अथवा छन्द-बन्धन के कारण अक्षर लोप की प्रवृत्ति :

संख (१६३) < सुंखिणी (१६३); रंभ (१६५) रंभा;
कंति (१६६) < कांति; नीद्र (१६९) < निद्रा;

(ग) सर्वनाम के प्राचीन रूपों का प्रयोग :

अम्ह (१७०, ५८२-संबंध-कर्त्ता), अम्हनि (५४२-कर्म-अधि०),
तूय (४४०), तूअ (४४३), तुज्झ (६०५)
ताणंचिय (१५६), तांम [५७० A (५५०)]
कवण (१८७)

(घ) प्राकृत 'हन्तो' के रूपों का विविध विभक्तियों में प्रयोग :

१. कर्म — वांसइ ए ओलोचह कीउे (३६८)
२. सम्प्रदान-संबंध — पोतुं बीतुं अमलह तणुं (४७)
सांमी सिंघल दीपह तणुं (६२)
३. अपादान — गढनी पोलि हुंति ऊतरिउे (४१८)

(च) अनुस्वार का विभक्ति के रूप में प्रयोग :

१. कर्त्ता-कर्म — खवासां उजासां (२८६)
२. कर्म — छत्रां धरइ (२८६)
३. करण — अंख्यां दीठ (५८)
४. संबंध — रायां घर (२८६), असुरां घेह (३६७)

(छ) 'न' के स्थान पर 'ण' का आग्रह :

विणास (३६२), खांण (२०२), समांणी (१६१), सांमिणी (४१६)

(ज) अन्य प्राचीन रूप :

पडसाद (पट+सद्द < शब्द-२४६), पायालइ-१८७ (पातालइ)
अछइं (३०६), अछां (४०२)

(झ) दृश्य साहश्य के लिये अनुरणन :

१. ढलकइं...ढीकली (२४४)
२. दुमकि दुममा....(२४५)

(ट) अपभ्रंश के 'अडडडुल्ल' से विकसित स्वार्थिक प्रत्यय :

इसडउ, इसडइ (४३५), वड्डुउे, प्रियड्डुउे (३९७), बोलडा (२४०) प्राहुणडां (२९५), गोरिल्ल (३९३)।

हेमरतन और उसकी रचनाएँ

१. कालनिर्णय :

वि० सं० १५०० और १७०० के बीच का युग राजस्थानी भाषा, साहित्य, संस्कृति और कला के चरम विकास का युग था। इस युग में राजस्थानी भाषा और साहित्य की बहुमुखी प्रवृत्तियों का विकास देख पड़ता है, जहां धर्म और सम्प्रदाय, भक्ति और साधना, लौकिक और पारलौकिक भावनाएं आदि का साहित्य के साथ-साथ सामंजस्य हो जाता है। साहित्य, नरक्षेत्र और आध्यात्मिक क्षेत्र में सामंजस्य स्थापित करता है। एक ओर वह मानव-व्यापारों में आदर्श

स्थापित करता है तो दूसरी ओर वह उन आदर्शों द्वारा भगवत्प्राप्ति की ओर संकेत करता हुआ साधना और भक्ति के स्थूल तथा सूक्ष्म तत्वों में भी प्रवेश करता है। जहाँ धर्म सम्बन्धी रचनाएँ धार्मिक तत्वों और सिद्धान्तों के सीमित क्षेत्र में ही देख पड़ती थी वे अब लौकिक चरित्रों और लौकिक व्यवहारों के साथ सामंजस्य स्थापित करने लगी।

जैन साहित्य की अनेक रचनाएं ऐसे ही पात्रों के चरित्र को लेकर सामने आईं, जो इन आदर्शों के कारण लोकप्रिय हो रहे थे। ये आदर्श पहले जैन धर्म तक ही सीमित थे। फिर जैनेतर चरित्र भी उन आदर्शों के साथ समाविष्ट हुए। धीरे-धीरे जैन लेखकों ने जैनेतर विषयों और चरित्रों को भी अपने काव्य का विषय बना लिया, और इस प्रकार अनेक जैन लेखकों द्वारा उत्तम कोटि के चरित-काव्य रचे गये, जो राजस्थानी भाषा और साहित्य की अमूल्य निधि बन गये। हेमरतन इसी प्रकार का एक कवि था, जिसने जैन होकर भी जैनेतर वस्तु और पात्रों को अपने काव्य का विषय बनाया। इस युग में इस प्रकार की अनेक रचनाएँ हुईं, जो जैन साहित्य की ही अमूल्य निधि नहीं हैं। उनको राजस्थानी भाषा और साहित्य से अलग नहीं किया जा सकता। राजस्थानी साहित्य के विविध रूपों की परम्परा और विकास की द्योतक ये जैन रचनाएँ ही हैं, जिनसे साहित्य के इतिहास के लिये सम्बन्धित सामग्री भी परिपूर्ण मात्रा में प्राप्त होती है। हेमरतन के अनेक ग्रन्थ पिछली खोज में प्राप्त हुए हैं, जिनसे उसके अपने युग का एक महत्वपूर्ण कवि होने का संकेत मिलता है। उसकी प्राप्त रचनाओं में 'पदमणि चउपई' यहाँ प्रस्तुत है।

हेमरतन के जीवन के विषय में बहुत कम सामग्री प्राप्त है। राजस्थानी लेखक इस दृष्टि से इतिहास लेखक की पोथी में बहुत बदनाम हुआ है। पर अपने महत्व की प्रशस्ति स्थापित करना राजस्थानी लेखक ने कभी अपने जीवन का उद्देश्य नहीं बनाया। उसका उदेश्य रचना और तद्गत विषय को प्रस्तुत करना था। इसीलिये उसने विषय और वस्तु की ओर अधिक ध्यान दिया। उसने ग्रन्थ के आरम्भ तथा अन्त में अपने आराध्य तथा आश्रय का उल्लेख कर उनके साथ अपना सम्बन्ध स्थापित किया है। चाहे वह धार्मिक क्षेत्र हो, चाहे साम्प्रदायिक, चाहे लौकिक क्षेत्र हो, चाहे पारलौकिक, सभी में राजस्थानी लेखक की यही स्थिति रही है कि उसने अपने व्यक्तित्व को अपनी कृति में कहीं उभरने नहीं दिया। इस कारण इतिहास-लेखक ने एक ओर उसकी रचनाओं को कृत्रिम कहा और दूसरी ओर उसकी सन्दर्भ-सामग्री का उपयोग भी किया। हेमरतन की रचनाओं में 'पदमणि चउपई' का विषय इतिहास से संबंध

रखता है। फिर भी उसका कोई अंश पूर्ण ऐतिहासिक नहीं है। पर वह किसी न किसी मात्रा में ऐतिहासिक सामग्री अवश्य प्रस्तुत करती है। इतना होने पर भी उसका उद्देश्य सहित्य रचना है, रस उत्पन्न करना है, इतिहास लिखना नहीं (देखो–खंड १।४।५)। अतः उसको इतिहास के क्षेत्र में लेजाकर कृत्रिम कहना उचित नहीं है। 'पदमणि चउपई' इतिहास नहीं, काव्य है। उसका रचयिता इतिहासकार नहीं, कवि है, जिसका उद्देश्य किसी आश्रयदाता को प्रसन्न करना नहीं, केवल लोकप्रिय चरित्रों को लोकप्रिय काव्य-शैली में चित्रित करके उनके आदर्शों को लोक-जीवन में स्थापित करना है।

हेमरतन की प्राप्त रचनाओं में उसके जीवन सम्बन्धी जो अन्तर्साक्ष्य सूत्र प्राप्त होते हैं, उनसे उसके रचनाकाल, गद्य-परम्परा, शिक्षा, ज्ञान, अनुभव, तत्सम्बन्धी इतिहास आदि की ओर संकेत-सूत्र प्राप्त हो जाते हैं। उनके आधार पर उनके व्यक्तित्व की शोध संभव है। जैन धर्म में दीक्षित हो जाने के पश्चात् माता-पिता आदि का सांसारिक सम्बन्ध टूट जाता है और गुरु-परम्परा से उसका सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। यही कारण है कि हेमरतन ने अपने माता-पिता का परिचय न देकर गुरू परम्परा का ही उल्लेख किया है।

बहिर्साक्ष्य सामग्री से हमें उसकी शिक्षा-परम्परा तथा तत्कालीन साहित्य और तत्संबंधी इतिहास का संकेत-सूत्र मिल जाता हैं। एक लेखक के विषय में इतनी तो जानकारी होनी ही चाहिये और इसके लिये प्राप्त अल्पतम सामग्री भी किसी सीमा तक पर्याप्त है। उसके आधार पर उसके जीवन और व्यक्तित्व का पता लगाने में तो हम सफल हो ही जाते हैं। अतः उसकी रचनाओं के आधार पर उसका जीवन निश्चित करेंगे। हेमरतन की अब तक जो रचनाएँ पिछली खोज में प्राप्त हुई हैं, वे निम्नलिखित हैं—

१. अभयकुमार चउपई	रचना काल वि०सं० १६३६
२. महीपाल ,,	,, ,, ,, १६३६
३. गोरा बादल पदमणि चउपई	,, ,, ,, १६४५
४. शीलवती कथा	,, ,, ,, १६७३
५. लीलावती	,, ,, ,, १६७३
६. रामरासो	
७. सीताचरित	
८. जदंबा बावनी	
९. शनिचर छंद	

इसमें से पहली पांच के तो रचनाकाल उपलब्ध हैं। शेष चार की खोज इन पाँच के आधार पर सम्भव है।

जिन पाँच रचनाओं पर रचनाकाल दिया गया है, वे सब प्रौढ़ रचनाएँ हैं। इनके आधार पर हेमरतन का रचनाकाल वि०स० १६३६ से १६७३ के बीच निश्चित हो जाता है। इस प्रकार पहली रचना (१६३६) और पाँचवीं रचना के बीच ३७ वर्षों का अन्तर है। इनके आधार पर इन ३७ वर्षों के समय के तीन कालों में-१६३६, १६४५ और १६७३ हेमरतन की सभी रचनाओं को स्थापित किया जा सकता है। हेमरतन के रचना-विकास (मानसिक-विकास) के ये आदि, मध्य और अन्तिम अथवा आरम्भ, विकास और उत्थान की स्थितियाँ मानी जा सकती हैं। आदि और मध्य के बीच लगभग दस वर्षों का और मध्य और अन्तिम के बीच २८ वर्षों का अन्तर है। २८ वर्षों का समय उसके चरम विकास का द्योतक है। इसी काल में हेमरतन की अन्तिम और महत्त्वपूर्ण रचनाएँ पूरी हुई होंगी।

कवि ने अपनी रचनाओं में कहीं-कहीं अपनी रचना सम्बन्धी योजना की ओर भी संकेत किया है; जैसे 'अभयकुमार चउपई' में उसने लगभग सात विषयों की रचनाएँ प्रस्तुत करने का संकेत किया है:—

दान, सील, तप, भावना, चारु, चरित्र, कहेस।
क्रोध, मान, माया, वली, लोभादिक, पभणेस ॥

इसमें दान, शील, तप, मान, क्रोध, माया और लोभ ये सात विषय स्पष्ठ हो जाते हैं। लोभादिक कहने से चारों विकारों में शेष काम भी आ जाता है। इस प्रकार ये आठ विषय आठ रचनाओं की ओर संकेत करते हैं। इस आधार को देखते हुए वि० स० १६३६ की प्रथम दो रचनाओं में भी यह स्पष्ठ हो जाता है कि 'अभयकुमार चउपई' उसके पहले की और 'महिपाल चउपई' उसके बाद की रचना है। ऐसा लगता है कि कवि ने इन्हीं विषयों को अपनी काव्य-रचना का आधार मानकर एक-एक विषय पर एक या अधिक रचनाएँ प्रस्तुत कीं। इनमें से एक रचना 'शीलवती कथा' का रचना काल जैन गुर्जर कविओ (भाग १. पृ० २०७-२०८) के लेखक ने वि० सं० १६०३ दिया है। पर यह ठीक नहीं लगता। लेखक की मान्यता का आधार उक्त प्रति में दिया गया यह रचनाकाल है:

संवत सोल त्रिरोत्तरे, पाली नयर मझारि।
सील कथा साचो रची, प्रवचन वचन विचारि ॥

विद्वान लेखक ने 'त्रिरोत्तर' का अर्थ तीन (३) मान लिया है, जो ठीक नहीं है। वैसे भी 'त्रिरोत्तर' का अर्थ त्रिदशोत्तर होता है। पर यह पाठ ही अशुद्ध है। शुद्ध पाठ "त्रिहोत्तरे" है जिसका अर्थ ७३ होता है।

हेमरतन का रचनाकाल वि० स० १६३६ और १६७३ के बीच मानने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि वि० स० १६३६ में उसकी आयु २५ वर्ष के लगभग होगी। इस दृष्टि से उसका जन्म वि० स० १६११ के आसपास हुआ होगा। हेमरतन के एक शिष्य कुँवरसी की एक रचना 'नवपल्लवपार्श्वनाथ' श्री अगरचन्द नाहटा के संग्रह में है। उसके अनुसार हेमरतन का वि० स० १६८१ में होना पाया जाता है। इस दृष्टि से वि० स० १६८१ में हेमरतन की आयु ७० वर्ष के लगभग होगी। इसके बाद वे ९।१० वर्ष और जीवित रहे होंगे। अतः हेमरतन का निधन वि० स० १६९० के आस पास ठहरता है। इस प्रकार हेमरतन का जीवन काल वि० स० १६११ और १६९० के बीच निश्चित होता है।

पदमणि चउपई की ख्याति और महत्त्व :

चित्तौड़ की प्रसिद्ध रानी पद्मिनी को इतिहास-प्रसिद्ध कथा को लेकर लिखी जाने वाली यह प्रथम उपलब्ध राजस्थानी रचना है। इसकी रचना के ४८ वर्ष पूर्व मियाँ जायसी अपना पदमावत अवधी बोली में रच चुके थे।

स्पष्ट है कि युग की परिस्थितियों ने ही हेमरतन को इस रचना की प्रेरणा प्रदान की थी। वि० स० १६३३ में हल्दीघाटी का प्रसिद्ध युद्ध हो चुका था, जिसमें महाराणा प्रताप के अटल धैर्य और कुल की मान-मर्यादा की परीक्षा हुई थी। वे न तो अकबर के आगे झुके और न अपनी बहन-बेटी को अकबर के हरम में पहुंचा कर राज्य-सुख ही भोगा। कठिन संघर्ष और रक्त-प्रवाह तथा त्याग और बलिदान के द्वारा वि० स० १६४३ में उन्होंने अपने खोये हुए राज्य को पुनः अपने अधिकृत कर लिया था। रह गया केवल चित्तौड़! जिसकी प्राप्ति के लिये अन्तिम प्रयत्नों में वि० स० १६५३ में उन्होंने अपने प्राण त्याग किये। महाराणा प्रताप की यह आदर्श गौरव गाथा देश में दूर दूर तक गायी जाने लगी। उनकी यह प्रणबद्ध अटलता, अडिगता और अणनमता सभी के लिये एक आदर्श उदाहरण बन गई थी। साहित्य में भी यह नवीन आदर्श एक नवीन उत्साह लेकर खड़ा हुआ था, जिसने लोगों के मन में देशभक्ति की भावना प्रतिष्ठित की। लोग इस त्याग पर अभिमान करने लगे। जैन लेखकों पर भी इसका प्रभाव कम नहीं पड़ा। पद्मसागर ने तो अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ

'जगद्गुरु काव्य' (वि० सं० १६४६) में अकबर के आगे अपनी आन बेचने वाले राजाओं की भर्त्सना करते हुए राणा प्रताप के प्रति श्रद्धा प्रकट की थी:—

केचिद् हिन्दुनृपा बलश्रवणतस्तस्य स्वपुत्रीगणं,
गाढाभ्यर्थनया ददत्यविकला राज्यं निजं रक्षितुम् ।
केचित्प्राभृतमिन्दुकान्तरचनं मुक्त्वा पुरः पादयोः,
पेतुः केचिदिवानुगाः परमिमे सर्वेऽपि तत्सेविनः ।।

सं० १६४६ में पद्मसागर कृत जगद्गुरुकाव्य, ८८

कितने ही हिन्दू राजा उस (अकबर) के बल को सुन कर स्वयं के राज्य को बचाने के लिए अपनी पुत्रियों के समुदाय को बड़ी अभ्यर्थना के साथ उसे निरन्तर प्रस्तुत करते हैं। कितने हो चन्द्रकान्तमणि आदि जवाहरात देकर उसके पैरों पड़ते हैं और कितने ही उसके गाढ़ अनुयायी बन कर उसके सच्चे सेवक कहलाने की कामना करते हैं। (परन्तु एकमात्र मेदपाट का राणा प्रताप जो हिन्दू जाति का कलशभूत माना जाता है वह उस (अकबर)का तिरस्कार करता रहता है और अपने पूर्वजों की आन को निभाने के लिये दृढ़तापूर्वक अणनम बन रहा है।)

हेमरतन ने भी प०च० की प्रशस्ति में महाराणा प्रताप का उल्लेख किया है:

पृथ्वी परगट राण प्रताप । प्रतपई दिन दिन अधिक प्रताप ।

अपने युग की प्रेरणा ने ही हेमरतन को इस वीर रस की रचना की ओर प्रवृत्त किया था। कोई आश्चर्य नहीं कि पदमणि चउपई के अतिरिक्त भी उसने कोई वीर रस की रचना की हो। पदमणी चउपई में रतनसेन के पुत्र वीरभांण की कल्पना इसी प्रकार के आन बेचने वाले राजाओं का प्रतिनिधित्व करती है। गोरा और बादल उस आन की रक्षा के लिये प्राण देने वाले वीरों के प्रतीक हैं। बड़े ही उपयुक्त समय में हेमरतन ने अपना यह चरितकाव्य प्रस्तुत किया था। इसमें भारतीय नारी के सतीत्व और कुल मर्यादा की रक्षा हेतु प्राण देने वाले लोक-प्रसिद्ध चरितों को अंकित किया है। ऐसी रचना का महत्व भी उसी समय प्रकट हो गया था। मेवाड़ के पुनरुद्धार (वि० सं० १६४३) के साथ ही इसकी आधार की भूमि तैयार हुई और दो वर्षों में उस जनता के सम्मुख प्रकाशित कर दी गई जो ऐसे ही त्याग का दिन-रात अनुभव कर रही थी। उसी समय यह रचना इतनी लोकप्रिय भी हो गई कि कवि के जीवन-काल में ही इसकी अनेक प्रतियां दूर-दूर तक पहुँच गईं। अनेक लिपिकारों और क्षेपककारों ने इसमें क्षेपक जोड़े, संशोधन परिवर्तन और परिवर्द्धन करके इसकी लोक-प्रियता

में वृद्धि की। लोक-प्रिय काव्य की आत्मा का कलेवर इसी प्रकार घटता-बढ़ता रहता है। इसकी लोक-प्रियता के अन्य कारण भी हैं :

१. अन्य जैन रचनाओं के समान यह एकांकी नहीं है। अन्य जैन चरित-काव्यों के समान इसके आधार में कोई धार्मिक-सिद्धान्त या प्रचार की भावना नहीं है।

२. रचना के विषय, वस्तु और पात्र सभी ख्याति-प्राप्त और लोक-प्रिय हैं।

३. कथा ऐतिहासक है तथा उसी राजवंश से सम्बन्धित है, जिसमें महाराणा प्रताप जैसे वीर ने इसकी रचना के समय ही अपने मान, मर्यादा और स्वतन्त्रता-प्रेम का परिचय दिया था। उन्हीं के त्याग और बलिदान की प्रेरणा से इसकी रचना हुई है।

४. इसमें धार्मिक परम्पराओं के स्थान पर साहित्यिक परम्पराओं का निर्वाह दीख पड़ता है। इस रचना में उस काल के लोक साहित्यिक परम्पराओं का निर्वाह हुआ है। यह वीर रस का एक सुन्दर लोक काव्य है।

उदयसिंह भटनागर



कवि हेमरतन कृत

गोरा वादल पदमणी चउपई

[पहलो खंड]

॥ दूहा ॥

[1]सुख संपति दायक सकल[1], सिधि वुधि सहित गणेस[2] ।
विघन विडारण [3]विनयसुं[3], पहिली[4] तुझ प्रणमेस[5] ॥ १ ॥
ब्रह्म[1] विष्णु[2] शिव सइँ[3] मुखइँ[4], नितु समरइँ[5] जसु[6] नाँम[7] ।
तें[8] देवी सरसति[9] तणइ[10], पद[11] युगि[12] करुं[13] प्रणाँम ॥ २ ॥
पदमराज वाचक[1] प्रभृति[2], प्रणमी[3] निज[4] गुरु पाइ[5] ।
केळवस्युं[6] साची कथा, काँणि[7] न आवइ[8] काइ[9] ॥ ३ ॥
नवरस दाखइँ[1] नव-नवा, सयण सभा सिणगार[2] ।
कवियण मुझ करियो[3] कृपा, वदताँ वचन[4] विचार ॥ ४ ॥
वीरा रस सिणगार[1] रस, हासा रस हित हेज।
सामि[2]-धरम-रस[3] साँभलउं[4], [5]जिम हुइ तनि अति तेज[5] ॥ ५ ॥
सामि-[1]धरम जिणि[2] साचविउं[3], वीरा रस सविसेष[4] ।
सुभटाँ[5] महिं[6] सीमा[7] लही, राखी खित्रवट रेख ॥ ६ ॥

॥ १ ॥ १ सकल सुख-दायक सदा E। २ गणेश B। ३ सुख-करन B, रिधि करण E। ४ पहिलुं B, पहिलो C, पहिलि D। ५ प्रणमेश B, प्रणमेसु C।

॥ २ ॥ १ ब्रह्मा B। २ विष्नु B। ३ सइ C, सै E। ४ मुखि C, मुखें E। ५ समरइ B, समरैं B। ६ जस E। ७ नाम B। ८ तेण B, तिण E। ९ सरसती E। १० तणै E। ११ पय E। १२ युग B, जुग E। १३ प्रणाम B।

॥ ३ ॥ १ वाचिक B। २ प्रभति E। ३ प्रणमुं E। ४ सद E। ५ पाय BCE। ६ केळविसुं B, केळविसु C, केळवताँ E। ७ काणि BC, तथा E। ८ लागैं E। ९ काय BCE।

॥ ४ ॥ १ दाखइ BC, दाखै E। २ शिणगार B। ३ करिजो B, करिज्यो C। ४ वयण E।

॥ ५ ॥ १ सिंगार E। २ साँमि B, साम C, साँम E। ३ ते C, विधि E। ४ संभलु A, संभलउं C, साँभलो E। ५ ज्युं वाधैं तन तेज E।

॥ E ६ ॥ सील साच जगि भाषिइं, जसु प्रसाद सुख होइ।
पदमणि जिणपरि पालियो, साँभलियो सहु कोइ ॥ E ६ ॥

॥ ६ ॥ १ सांम E। २ जिम C, जां E। ३ साचिव्यउं BC, साचव्यो E। ४ सुविशेष B, सविशेष E। ५ सुभडाँ B, सुहडाँ E। ६ माँहि BC, मै E। ७ सोमा CE।

गोरा[१] रावत[२] अति गुणी, वादल[३] अति बलवंत ।
बोलिसु[४] वात बिहुं तणी[५], सुणियों[६] सगला[७] संत ॥ ७ ॥

रतनसैंन राजा तणइ[१], छलि हूआ[२] अति[३] छेक[४] ।
गोरउं[५] वादल[६] [७]बैं गुणी[७], सत्तवंत[८] सविवेक[९] ॥ ८ ॥

युद्ध[१] करी जिम जस लीउं[२], वसुहा[३] हूआ[४] विख्यात ।
चित्रकोट[५] चावउं[६] कीउं[७], ते निसणउं[८] सहु[९] वात ॥ ९ ॥

॥ चोपई ॥

चित्रकूट[१] पर्वत चउंसाल[२], वसुधा-लोचन [३]जैंसु विसाल[३] ।
सुर-नर-किंनर तणउं [४]निवास, राँम रह्या था जिहाँ वनवास ॥ १० ॥
गिरवर ऊपरि[१] दूढ[२] दुरंग, विषम ठाम गढ अति[३] हि उतंग ।
गयणह[४] पडण विधाता डरी, जाणि कि थंभ दीउं[५] थिर करी ॥ ११ ॥
विषम[१] घाट गढ विसमी पोँलि, अति उंची कोसीसाँ[२] ओँलि ।
संचा माँहि[३] घणा[४] साँसता[५], अंणभंग[६] कोट घणी आसता ॥ १२ ॥
वाँक[१] दुवारा विसमी[२] गली[३], विकट[४] कोट[५] अति विसमउं[६] वली[७] ।
[८]अणजाणिउं न सकइ नीकली[८], [९]कद ही कोइ न सकइ कली[९] ॥ १३ ॥
माँहि मनोहर[१] महल[२] अनेक, सगला[३] लोक वसइँ[४] सविवेक[५] ।
त्याग भोग सहु[६] लाभइँ[७] तिहाँ[८], सुर [९]इम जाँणइ इणि गढि रहाँ[९] ॥ १४ ॥

॥७॥ १ गोरो BC । २ राउंत B, रावति C । ३ वादिल A, वादल B । ४ °सुं C । ५ बेहूँ C ६ सुणिज्यो C । ७ सघला BC ।

गोरा वादल रिण गहिल, विन्है सुहड बलिवंत ।
बोलिस वात हुई यथा, सुणयो सगला संत ॥ E ७ ॥

॥८॥ १ तणै E । २ हूया C, राखी E । ३ कुल E । ४ टेक E । ५ गोरो BCE । ६ बादिल A । ७ सूरिमा E । ८ सतधारी E । ९ सुविवेक CE ।

॥९॥ १ जुद्ध BC । २ लीयउं B, लीन्नो C । ३ वसुहाँ B, वसुधा C । ४ हुयउं B, हूया C । ५ चित्रकोटि C । ६ चावु A, चावो C । ७ कियउं B, कीयो C । ८ निसुणो C । ९ सहु B, सवि C ।

जुध जीतो जस खाटीयो, वसु-पुडि हुआ विख्यात ।
चित्रंकोट चावो कीयो, सुणयो ते अवदात ॥ E १० ॥
नर नरपति पंडित सभा, साँभलियो सहु कोइ ।
परचाव्याँ तन धन दिये, भ्रम सतधारी कोइ ॥ E ११ ॥

॥१०॥ १ चित्रकूट B । २ चौसाल E । ३ जस सुविशाल B, जे सुविशाल E । ४ तणो C, तणे D, राम BOE ।

॥११॥ १ ऊपर E । २ दूठ BC । ३ तिहाँ C । ४ गयणा C । ५ दीयउं B, दीयो C, कीयो E ।

॥१२॥ १ विषमी BOE । २ कोसीसा BOE । ३ माहिं B, नीर E । ४ घणाँ C, तणा E । ५ सासता BOE । ६ अभंग C ।

॥१३॥ १ वाघ E । २ विसमा E । ३ घाट E । ४ विसमो C । ५ कोटि C । ६ विसमु A, विसमो C, विसमी E । ७ वाट E । ८ जाणि पुरुष भूलइ पणि वली C, अणजाणग न सकइ नीकली E । ९ अणजांणउ न सकइ नीकली B, जांण पुरष पिण भूलै गली D ।

॥१४॥ १ अनोपम CE । २ महुल C, महिल E । ३ सघला B । ४ वसै E । ५ सुविवेक C । ६ सवि C, सुख E । ७ संपति E । ८ जहाँ E । ९ सुर पिण जांणे वसीयै इहाँ E ।

चउरासी[1] चोहटा हटसाल[2], मणिमय[3] तोरण झाक-झमाल ।
[4]गोख घणा उंचा आवास[4], राजभवणि[5] संधिउ[6] आकास[7] ॥ १५ ॥
घरि-घरि गोख घणा[1] पाखती, रंगि[2] रमइं[3] बेठी दंपती ।
गोखइं-गोखि घणी जालिका, तिहाँ बेठी दीसइं वालिका ॥ १६ ॥
कमल-वदन गज-गति-गामिणी[1], कोमल तन[2] दीसइं [3] कामिनी ।
सात[4] भुँया[5] उंचा आवास, लोक वसइं[6] सहु लील विलास ॥ १७ ॥
[1]तिणि गढि राज करइ गहिलौंत्त[1]; रतनसैंन [2]राजा जस-जौंत्त[2] ।
प्रबल पराक्रम पूर[3] प्रताप, [4]पेसी न सकइ[4] जसु[5] घटि पाप ॥ १८ ॥
अवनि घणी लग[1] अविचल आण[2], भालि[3] तपइं[4] जसु[5] वारइ[6] भाँण[7] ।
वेरी[8] कंद तणउ[9] कुद्दाल[10], रण[11]-रसीउ[12] नइ[13] अति रंढाल ॥ १९ ॥
पटराणी[1] तसु[2] परभावती, रूपइं[3] रंभा सीलइं[4] सती ।
इंद्र तणइ [5] इंद्राणी जिसी, तेहनइ[6] ते[7] पटराणी[8] तिसी ॥ २० ॥
अवर अनेक अछइं[1] तसु[2] नारि, अपछर रंभ तणइ[3] अणुहारि ।
पिण[4] मन-मानी[5] परभावती, तिणि पिणि[6] मोहि लीउ[7] निज पती ॥ २१ ॥
सतर भेद भोजन रसवती, केळवि[1] जांणइ[2] ते गुणवती[3] ।
राजा[4] तिणि[5] रीझवीउ[6] घणुं[7], किसुं[8] घणुं[9] हिव[10] ते हुं[11] भणुं[12] ॥ २२ ॥
भोजन भगति करइ[1] ते[2] नारि, तउ ते भूप करइ आहार ।
अवर तणउ[3] कीधउ[4] अनपाक[5], रतनसैंन नइं[6] लागइ[7] खाक[8] ॥ २३ ॥

॥ १५ ॥ १ चोरासी E । २ सुविसाल C, सुविशाल E । ३ मणिमइ C, मणिमै E । ४ जाली गोख अनोप आवास E । ५ भुवणि C, राजभुवन E । ६ सुरिज E । ७ परगांस E ।

॥ १६ ॥ १ घणाँ B । २ रंग B । ३ रमइ B,
घरि घरि गोख चिहुं दिस घणा, देखण ख्याल बाजाराँ तणाँ ।
गोखे जडित गुपत जालिका, वैठि तिहाँ खेलै बालिका ॥ E १८ ॥
C प्रति में यह चौपई नहीं है ।

॥ १७ ॥ १ गामणी B, दामिनी C, गामिनी E । २ चतुर E । ३ दीसइ C, सरस E । ४ सप्त E । ५ भुमिया BC । ६ वसै E ।

॥ १८ ॥ १ तिण गढ राज करे गहिलैंत्त E,……गहलोत C । २ रिण प्रिसणाँ मैंत्त E,……राजा संजोत C । ३ तेज E । ४ पैसि सकै नहि E । ५ तसु C ।

॥ १९ ॥ १ तस E । २ आण BC । ३ भाल CE । ४ तपइ BC, तपै E । ५ जस E । ६ बारह E । ७ भाण B, बाँण C । ८ वयरी BE, केवी A । ९ तणो CE । १० कुद्दार C, कोदाल E । ११ रिण CE । १२ रसियो E । १३ भड E ।

॥ २० ॥ १ पटरांणी E । २ तस E । ३ रूपइ BC, रूपै E । ४ सीलइ BC, सीलै E । ५ तणी CE । ६ रतन E । ७ तणै E । ८ पटराँणिं E ।

॥ २१ ॥ १ अछै E । २ तस E । ३ तणै E । ४ पणि CE । ५ मनि-मानी BC, मांनि E । ६ पणि CE । ७ लीयो CE ।

॥ २२ ॥ १ ते केलवी E । २ जाणिइ B, जांणें E । ३ रसवती B । ४ राण BCE । ५ तणो चित E । ६ रीझवीयो C, रीझ्यो E । ७ घणु C, इसो E । ८ किसउ B । ९ घणु B । १० तेहनो C । ११ हिव C । १२ भणु C; ८ से १२– चातुरता नुं कहिवो किसो E ।

॥ २३ ॥ १ करि C । २ निज C; १-२ राणी करै रसोडो हाथ, तव ते आरोगे नरनाथ ॥ ३ तणो C । ४ कीधो CE । ५ अंनपाक B । ६ नइ C, नै E । ७ लागिइ B, लागे E । ८ खाख E ।

माहो-माहि[1] घणुं[2] मनि-मोह[3], सहि न सकइ[4] खिण एक विछोह ।
वीरभाँण[5] तसु सुत अति सूर, प्रतपइ[6] तेज तणुं[7] घट पूर[7] ॥ २४ ॥
चतुरंग सैंन सँपूरण[1] साथ, नीतइँ राज करइ नरनाथ ।
अरि सगला नाँख्या ऊछेद[2], खिति धरताँ तसु ना'वइ खेंद[3] ॥ २५ ॥
सबल सूर साचा ससनेह, छल न करइँ नवि दाखइँ[1] छेह ।
सुरपति दियइ[2] जिणाँरी[3] साखि, "[4]इसा सुभट तसु घरि ऍक लाख[4]" ॥ २६ ॥
हय गय पायक[1] रथ नीसंख, करे न सकइ को आकंख ।
इण[2] परि परिगह तणइ[3] पडूरि, रतनसैंन राजा भरपूरि ॥ २७ ॥
एक दिवस भोजन नइ[1] समइ[2], आवी दासी इम वीनमइ[3] ।
"सांमि[4] ! पधारउ[5] भोजन भणी[6], पाक हूआ हुई वेला[7] घणी" ॥ २८ ॥
आवी वइठो[1] नृप बइसणइँ[2], पटराणीसुं[3] प्रेमइँ[4] घणइँ[5] ।
थाल कचोला कनकह तणा[6], सोवन पाटि पथराव्या[7] घणा[8] ॥ २९ ॥
प्रीसइ[1] भोजन भगति भँडार[2], नारी[3] रंभ तणइँ[4] अणुहारि[5] ।
राजा भोजन जीमइ[6] रंगि[7], विचि-विचि वात करइ[8] कणयंगि[9] ॥ ३० ॥
[1]कदली दलसुं घालइ वाउ[1], जिमतउ[2] जंपइ ते नर-राउ[3] ।
"आज न भोजन भावइ[4] कोइ, नितु[5] निसवादा[6] जीमण [7]होइ ॥ ३१ ॥
शाक-पाक[1] सगला पकवांन[2], धुरि निसवादा[3] लागा[4] धांन[5] ।
रूडी जुगति[6] करउ[7] रसवती[8]", तव ते पभणइ[9] परभावती ॥ ३२ ॥

॥ २४ ॥ १ माहिं E । २ घणो O, प्रेम E । ३ मन-मोह O, समोह E । ४ सकइँ BO, खिणं इक न खमै विरह विछोह E । ५ वीरमाण B । ६ प्रतपै E । ७ तणो O, प्रताप पंडूर E ।

॥ २५ ॥ १ संपूरी O । २ उछ्छेद O । ३ खेध O;
सबल सेन सझाइ घणी, न्याय राज पालै गढ़-धणी ।
अरि नासै जेहने भडवाव, जिम गेवर दीठै वनराव ॥ E २८ ॥

॥ २६ ॥ १ दाखइ B । २ वायइ O । ३ जिणरी O । ४ इसा सुभट घरि वसइ क लाख B ।
सामंत सकल वडा रजपूत, सांम-भ्रमी वांका रिण-धूत ।
महिपति मोटा चित्त उदार, दोइ लाख सेवे दरबार ॥ E २९ ॥

॥ २७ ॥ १ पायक B । २ इणि B । ३ तणइँ B । २-३ अवर परिग्गहतणो पडूर ।
है गै रथ पाइक अणपार, नीत-रीत पट भ्रम आधार ।
रिद्धि-सिद्धि पूरित भंडार, दरबारे नित दै-दैकार ॥ E ३० ॥

॥ २८ ॥ १ °नइँ B, °नै E । २ समइँ B, समै E । ३ वीनवइँ B, वीनवइ O वीनवै E । ४ स्वामि E । ५ पधारो O, पधारो E । ६ काजि E । ७ वेल B, भोजन ढील न कीजे राज E ।

॥ २९ ॥ १ बइठउ B, बेठो O । २ बइसणइ O । ३ सूं A, सू O । ४ प्रेमइ BO । ५ घणइ O । ६ °तणाँ B ७ पथराव्या A । ८ घणाँ O ।
नृप आवी बैठा बैसणै, दासी वाय करे वीझणै ।
थाल कचोला सोवन तणा, कनक कपाट पथराया घणा ॥ E ३१ ॥

॥ ३० ॥ १ प्रीसै E । २ अपार E । ३ रँणी E । ४ तणै E । ५ अनुहार O । ६ जीमै E । ७ रंग O । ८ करे E । ९ पिण चंग O ।

॥ ३१ ॥ १-१ राजा मित्र कदे न कहाइ E । २ जिमतों O; २-३ भोजन विचि बोल्यो न रहाय ॥ E । ४ भावै E । ५ नित E । ६ निसिवादा O; ७ जीवणि O ।

॥ ३२ ॥ १ सकल E । २ पकवान BO । ३ निसिवादा BO, सुंसवादा E । ४ लागइ O, होता E । ५ धान B । ६ युगति O । ७ करो E । ८ अनपांन E । ९ जंपइ O, मान तणो मूकी अभिमान E ।

[1]आसंगइ आणी अभिमाँन, राँणी बोलइ-"सुणि राजाँन[1] !
भगति न भावइ[2] मुझ कँळवी, तउ[3] काइ नारी आणउ[4] नवी ॥ ३३ ॥
परणउ काइ जई[1] पदमिणी[2], ते जिम भगति करइ[3] तुम्ह[4] तणी ।
अम्हें[5] जिमाडी[6] जांणां[7] नही", कोप[8] कीउ[9] कामणि इम कही ॥ ३४ ॥
माणवती[1] हुइ महिला मूल[2], माण[3] गमाडइ[4] विनय[5] समूल[6] ।
विनय[7] गयइ[8] न रहई[9] सोहाग[10], विण सोहाग[11] न लाभइ[12] भाग ॥ ३५ ॥
रतनसैंन राजा रंढाल, तिजि[1] भोजन ऊठिउ[2] ततकाल ।
"तउ[3] हुं जउ[4] आणुं[5] पदमिणी[6], भगति जुगति जीमुं ते[7] तणी ॥ ३६ ॥
ए इम गरवी नारी किसुं, नारी आगलि हुं किम[1] खिसुं ।
असक्य[2] नही हुं आणण[3] नारि[4], क्युं[5] ए[6] अवला कहइ[7] अविचारि[8]" ॥ ३७ ॥
मुंछ[1] मरोडी ऊभउ[2] थयउ[3], [4]गरव ग्रही घर वाहर गयउ[4] ।
रतनसैंन राजा एकलउ[5], साथि खवास करी इक भलउ[6] ॥ ३८ ॥
सबल[1] खजीनउ[2] साथइ[3] लेइ[4], [5]असि चढि चाल्या छाना बेइ[5] ।
कोइ न जाणइ[6] ए विरतंत[7], [8]खिति-पति मनि अति लागी खंति[8] ॥ ३९ ॥

॥ ३३ ॥ १-१ आसंगै छोडी मुख लाज, राँणि कहै साँभलि महाराज E ।
२ भावै E । ३ तमे कांइ C । ४ आणो C, आंणो E ।

॥ ३४ ॥ १ जाई B । २ पदमणी B; १-२ परणो नारी जे पदमिणी E । ३ करै E । ४ तुम C ।
५ अम्है E । ६ जीमाडुं E । ७ जाणुं D । ८ मांण C । ९ कीयो E ।

॥ ३५ ॥ १ माणवती E । २ मूलि E । ३ माणि C, मांनै E । ४ गमाडि C, हुई E । ५ विनष्य B, विणसइ C । ६ सवि धूलि E । ७ विनइ B । ८ गयै E । ९ रहै E । १० सोभाग C ।
११ सउभाग C । १२ लाग न A, लाभै E ।

॥ ३६ ॥ १ तजि CE । २ ऊठ्यउ C, उठ्या E । ३ तो CE । ४ जो CE । ५ आणु C, परणुं E ।
६ पदमणी E । ७ तस C, तेह E ।

॥ ३७ ॥ १ किँम E । २ असक CE । ३ आंणिवा E । ४ हार C । ५ किम CE । ६ इ C ।
७ वदि C, जंपे E । ८ अविचार CE । BCE प्रतियों में निम्नलिखित दो दोहे और एक गाथा क्षेपक हैं:—

(१) वचेउ[1] वचन अति आकेरउ[2], राणी माण गहिल्लि ।
तेजी न सहइ ताजणउ[3], सहइ त' टॅाइर ढिल्लि ॥ B ३७ अ ॥
[१ वचो, २ आकरो, ३ जिणो, ४ तट्टाइर ॥ C ॥]
वचन कहिउ अणभावतो, राँणी माँन गहिल्ल ।
तेजी न सहै ताजणो, सहैय त' टारर ढिल्ल ॥ E ४१ ॥

(२) सुहड सपुरसाँ सिंह नृप, ए प्रहैरइ[1] वलवंत ।
अनइ वकारया[2] माणै[3] वदि[4], ते नवि कदा खमंति ॥ B ३७ आ ॥
[१ प्राहिइ; २ वकारया; ३ माँण ४ वदि ॥ C ॥]
सीह सुहड नृप सापुरस, एह सदा वंलवंत ।
वाकारंतां माण वसि, कदिहि न वयण खमंत ॥ E ४२ ॥

गाहा

(३) माया पियाइ वंधू, भज्जा गेहं धणं च धन्नं च ।
अविमाणया य पुरिसा, देसं दूरेण छड्डुंति ॥ B ३७ इ ॥ C ॥

॥ ३८ ॥ १ मूछ E । २ ऊभो C, उभा E । ३ थया E । ४-४ गमर करी निज महिले गया E ।
५ एकलो CE । ६ भलो CE ।

॥ ३९ ॥ १ खरच E । २ खजीना CE । ३ साथे E । ४ लेह E । ५ है चढि छांना चाल्या तेह E, अश्व B, अश्वि C । ६ जाणै E । ७ वरतंत B । ८ राजा मनि लागी अति खंति E ।

"पदमिणि[1] परणी[2] आवुं[3] घरे, नहिं[4] तरि रहिस्युं[5] गिरि-कंदरे।
विण पदमिणि[6] नवि पोढुं[7] सेज, विण पदमिणि[6] न हसुं हित हेज" ॥ ४० ॥
[1]एम प्रतिज्ञा कीधी पूर[1], राजा चालिउं[2] साहस सूर[3]।
बीस त्रीस जोअण वउलिया[4], तव ते बेही[5] इम[6] बोलिया ॥ ४१ ॥
"ऊपर खेत्र[1] न लागइ[2] बीज, विण झगडा[3] नवि थापइ[4] धीज।
विण वादल नवि वरसइ[5] मेह, एक पखउं[6] नवि हुई[7] सनेह[8] ॥ ४२ ॥
गाम नही तउं[1] केही सीम, अगनि माहिं[2] नवि[3] जाँमइँ[4] हीम।"
सेवक जंपइ[5] "साँमी[6], सुणउं[7], प्रगट प्रकासउं[8] मुझ मंत्रणउं[9] ॥ ४३ ॥
मरम पखे[1] किम लहीइ[2] माग, ताण्या[3] विण किम[4] लाभइ[5] ताग[6]"।
[7]राजा जंपइ "पदमिणि भणी[8], मइँ ए अवनि उलंघी घणी[8] ॥ ४४ ॥
पदमिणि[1] तणा[2] पठंगा जिहाँ[3], ठावी ठोड वतावउं[4] तिहाँ[5]"।
सेवक जंपइ[6] "सामी[7], सुणउं[8], खरच-वरच[9] साथइ[10] छइ घणउं[11] ॥ ४५ ॥
पिणि[1] नवि जाणी[2] जाँ लगि पंथ[2], ताँ लगि सगलउं[3] गोरख-कंथ[4]"।
वइठउं[5] भूप जई तरु तलइ[6], पंथी आविउं[7] इक[8] तेतलइ[9] ॥ ४६ ॥
भूख त्रिसइ[1] भेदाणुं[2] घणुं[3], पोतुं[4] बीतुं[5] अमलह[6] तणुं[7]।
पंथ[8] तणुं[9] वलि पूरउं[10] खेद, घटि सगलइ[11] हूउं[12] परसेद ॥ ४७ ॥
अटवी माहिं[1] घणुं[2] आफलइ[3], पिणि[4] नवि[5] कोई[6] माँणस[7] मिलइ[8]।
तिणि[9] ते[10] दीठउं[11] भूपति जिसइ[12], पगतलि[13] आंवी[14] पडीउं[15] तिसइ[16] ॥ ४८ ॥

॥ ४० ॥ १ पदमनि E। २ परणी B। ३ आविस E। ४ नहिंतर E। ५ रहिसूं E। ६ पदमणि E। ७ पुढु C, पोढौ E।

॥ ४१ ॥ १ मनसुं पहवो पण आदरी E। २ चाल्यो C, चाल्या E। ३ धरी E। ४ जोयण B, बोलिया A, राति-दिवस चाले इम राव E। ५ बेऊ C। ६ एम C। ५-६ पथ न लगै हैवर पाव E ४७।

॥ ४२ ॥ E में यह अधिक है-
राजा भेद प्रकासै नहीं, सेवक बोल्यो अवसर लही ॥
१ क्षेत्र B। २ उगै E। ३ झगडइ C, झगडै E। ४ होवइ E। ५ वरसि C, वरसै E। ६ पखो CE। ७ हुइसइ B, होइ C, हुयै E। ८ नेह B।

॥ ४३ ॥ १ तो CE। २ माँहि E। ३ नमि B, किम E। ४ जामइँ B, जामइ C जांमै E। ५ बोलइ C, बोलै E। ६ स्वामी B C E। ७ सुणो C E। ८ प्रगासउं B, प्रकासो C E। ९ मंत्रणो C, मंत्रिणो E।

॥ ४४ ॥ १ पखइ C, पखै E। २ लहीयै E। ३ तांणा E। ४ जिम E। ५ लभ्यइ C, न लहै E। ६ त्राग E। ७ तव वलतो जंपइ नर-राज E। ८ हु चाल्यो छु पदमिण काज E।

॥ ४५ ॥ १ पदमणी C। पदमण E। २ तणी B। ३ होइ E। ४ वतावो C, करेवी E। ५ सोइ E। ६ जंपै E। ७ स्वामी CE। ८ सुणो C E। ९ विरच C, लीयो E। १० साथि छइं B C, छै साथै E। ११ घणो C E।

॥ ४६ ॥ १ पणि C E। २ जाँणउं C, जाँण्यो जा संबंध E। ३ सगलो C E। ४ धंध E। ५ बेठो C। ६ ते तलइँ B ते तलिइँ C; ५-६ वृखछाया राजा बीसमै E। ८ आयो C, आव्यो E। ८ एक C E। ९ समै E।

॥ ४७ ॥ १ त्रिषा B, त्रिसा C E। २ भेदाणो C, भेदांणो E। ३ घणो C E। ४ पोतो C E। ५ बीतो C E। ६ अमली C। ७ तणो C E। ८ पंथि B C E। ९ तणो C, करंता E। १० पूरो C, उपनो E। ११ सघलै E। १२ प्रगट्यौ E।

॥ ४८ ॥ १ माहिय B, माहै E। २ घणो C। ३ आफलै E। ४ पणि E। ५ नवी E। ६ कोइ E। ७ माणस B। ८ मिलै E। ९ ति E। १० वलि C, तलै D। ११ दीठो C, दीठौ E। १२ जिसइँ B जिसै E। १३ आगलि E। १४ आवि E। १५ पडीयो E। १६ तिसइँ B, तिसै E।

राइ कीआ सीतल उपचार, वाली[1] चेतन[2] पायुं[3] वारि।
अमल "[4]अमोलिक देई करी, भाँजी भूख गई नीसरी[4]" ॥ ४९ ॥
सावधांन हूउ[1] पंथी[2] तेह[3], कर जोडी[4] जंपइ[5] ससनेह।
"तइँ मुझ कीधउ[6] अति उपगार, जनम[7] दीउ[8] मुझ बीजी वार ॥ ५० ॥
मुझ सरिखउ[1] को[2] कहियो[3] काम, हुं सेवक नइ[4] तुं मुझ साँमि[5]"।
वलतुं[6] राइ भणइ सविसेस[6], "[7]तइं दीठा बहु देस विदेस[7] ॥ ५१ ॥
[1]पुहवि फिरंतइ तइं पदमिणी, काई नारि कठेई सुणी[1]"।
तव ते जंपइ[2] "सुणि मुझ [3]धणी[3]! सिंघल[4] दीपि[5] घणी[6] पदमिणी[7]" ॥ ५२ ॥
[1]दक्षिण दिसि छइ सिंघल दीप[1], सगलाँ दीपाँ माहि प्रदीप[2]।
आडउ[3] आवइ[4] उदधि[5] अथाह[6], तिणि तसु[7] कोइ न लाभइ[8] माह[9] ॥ ५३ ॥
इम निसुणी राजा रंजीउ[1], सिंघल दीप दिसी[2] चालीउ[3]।
पवन-वेग चंचल चतुरंग, अंबरि ऊड्या बेउ[4] तुरंग[5] ॥ ५४ ॥
गाम नगर पुर पाटण तणा[1], मारग माहि[2] उलंघ्या[3] घणा[4]।
[5]अखलित गति ऊलंघी मही[5], समुद्र समीपइँ[6] आव्या[7] वही[8] ॥ ५५ ॥
आगलि[1] उदधि करइं[2] कल्लोल, [3]छिटकि रही चिहुँ दिसि जलछोलि[3]।
पवहण[4] तिकोई पइसइ नही, तउ कुण[5] माणस जाई वही[6] ॥ ५६ ॥
पाँणीसुं[1] नवि चालइ[2] प्राँण[3], [4]उदधि तणा आवइ ऊधाँण[4]।
रतनसैंन चिति[5] चिंतइ[6] इसुं, हिव[7] जगदीस करीजइ[8] किसुं[9] ॥ ५७ ॥

॥ ४९ ॥ १ वाल्यो E। २ चेतनइ C। ३ पायो C, प्याइ E।
४-४...गालि पायो ततकाल, तब प्रगट्यो बल तेज विलास। E
॥ ५० ॥ १ हुयो CE। २ सवि E। ३ देह E। ४ जोडीइ B, जोडी इम E। ५ जपै E। ६ करतां E
७ जन्म B। ८ दीयो CE।
॥ ५१ ॥ १ सरिखो CE। २ कोइ BCE। ३ कहयो B, कहज्यो C, भापो E। ४ नइं B ५ स्वामि E।
६-६... पभणै पैंम नरेस E। ७ तें दीठा होस्यै बहु देस E।
॥ ५२ ॥ १-१ प्रथवी पीठ सिरे पदमणि, किण देसैं उतपति तेह तणां।
यह भेद जे मुझ नै कहै, लाखपसाव वधाइ लहै ॥ E ॥
२ जंपे E। ३ अरदास E। ४ संघल BCD। ५ देसे E। ६ अछइ C, उतपति E।
७ तास ॥ E ६० ॥
॥ ५३ ॥ १-१ शंघल BCD, छै दखिण दिसि सिंधं E। २ प्रसिध E। ३ आडो CE। ४ आवे E। ५ समुद्र B, जलधि E। ६ अथाग E। ७ तसुनो B, तेहनां CE। ८ लहइ C, लहे E। ९ माग E।
॥ ५४ ॥ १ रंजीयो C। २ दिसा C। ३ चालीयो C। ४ जाइ C। ५ कुरंग C।
१-५ वात सुणत राजा मिन चढी, दीधी रतन-जडित मुद्रडी।
पूछी सवि मारग विवहार, चढीया राजा हय असवार ॥ E ६१ ॥
॥ ५५ ॥ १ जेह D। २ वहतां E। ३ देख E। ४ तेह E। ५ राजा मारग लंघ्यो जिसै E।
६ समीपइ C, समीपे E। ७ आया E। ८ तिसै E।
॥ ५६ ॥ १ आगे E। २ करइ BC, करे E। ३ छलकि रही C, छिलना दीसे पांणी छोलि E। ४ पवन B, प्रवहण न सकै चालि जिहाँ E। ५ किन E। ६ निहां ॥ E ६५ ॥
॥ ५७ ॥ १ पाणी B। २ चालिइ B, चालै E। ३ प्राण B। ४-४ लागे नहि कोइ बुधि विनांण E।
५ चित E। ६ चिंते E। ७ हिवइ [illegible] ८ करीसि C, करीजे E। ९ किस्यउं C।

भूपति चिति[१] चमकइ[२] पदमणी[३], जलधि वेल पिण बीहामणी[४] ।
'नइ[५] पिण[६] उंडी[७] गुल पिण[८] मीठ,' ए ऊखाणुं[९] अंख्या[१०] दीठ ॥ ५८ ॥

वाघ अनइ[१] दोतडिनउ[२] न्याइ[३], ए मुझ आज पहूतउ[४] आइ[५] ।
केम करुं[६] हिव चिंतुं[७] काइ, मंडुं[८] कोई अधिक[९] उपाइ' ॥ ५९ ॥

फिरतइ[१] ऍम पयोनिधि पास, दीठउ[२] जोगी एक उदास ।
साधइ[३] पवन सदाई[४] तेह, जंगम जोग तणउ[५] गुण-गेह ॥ ६० ॥

सिध साधक[१] जोगेसर[२] जती[३], पणमी[४] पासि गयउ[५] भूपति ।
विनय[६] करी राजा वीनवइ[७], वलि-वलि सिर तसु चरणे ठवइ[८] ॥ ६१ ॥

"सॉंमी[१] सिंघल[२] दीपह[३] तणुं[४], मुझ मनि[५] हरष अछइ[६] अति घणुं ।
तुम्ह भेट्याँ हिव भावटि टलइ, पदमिणि नारि किसी परि मिलइ ॥ ६२ ॥

[१]'मुझसुं सॉंमि करउ हिव मया[१], दुख देखंताँ वहु[२] दिन थया" ।
विनय-वचन[३] वीनवीया[४] जिसइ[५], सुप्रसंन हूउ[६] जोगी तिसइ ॥ ६३ ॥

नेत्र उघाडी निरखइ[१] नूर, आयस मनि[२] हूउ[३] आणँद पूर ।
"आवउ[४] रतनसेंन[५] राजाँन"! नाँम कही [६]'तसु दीधुं मान[६] ॥ ६४ ॥

विसमय[१] हूअउ[२] राजा भणी, 'आँ किम वात लही मुझ तणी'।
जोगी जंपइ[४], "सुणि[५] राजाँन! [६]'जउ तु आयउ इणि मुझ थाँनि[६] ॥ ६५ ॥

॥५८॥ १ मन E। २ चाहै E। ३ पदमणी CE। ४ सोहामणी B। ५ नय D। ६ पणि C। ७ ऊँडी C। ८ ऊँडी C। ९ उपाणो C। १० साचो E।

॥५९॥ १ अनै E। २ तडिनो CE। ३ न्याय B। ४ पहुतुं B, पहुतो CE। ५ आय C। ६ करो C। ७ च्यंतो C। ८ माडो C। ९ अपर C, अवर E; ६-७ राजा इम चिंतै मन माहि E।

काने मुद्रा रयणं झलकंति, लाइ विभूति वइठो तपसंत।
चित्रा-तच आसनि मृगचर्म, ध्यान मौन ध्यावइ शिवसर्म ॥ BC ६१ ॥
मुद्रा नाहि विभूत लगाइ, वैठो शिवसुं ताली लाय।
ध्यॉन मौन ध्यॉंवै शिवसर्म, चीत्र-तुचा आसन मृगचर्म ॥ E ७० ॥

॥६०॥ १ विरतइ B, फिरतो C, फिरतां E। २ दीठो CE। ३ साधै E। ४ सदाही C, साधना E। ५ तणो CE।

॥६१॥ १ साधिक C। २ योगेसर C, जोगीसर E। ३ जती CE। ४ प्रणमी E। ५ गयो CE। ६ विनै E। ७ विनवै E। ८ ठवै E।

॥६२॥ १ स्वामी DE। २ शंघल AB, सीघल DE। ३ दीपाँ C। ४ तणो CE। ५ मुझि मन C। ६ अछै CE।

॥६३॥ १ मुझसुं महिर करो हिवे मया C, महिर करी मुझ कीजै मया E। २ वोहो C, सेवक ऊपरि आणी दया E। ३ बचन C। ४ वीनवीयो C, वीनवीया E। ५ जिसै CE। ६ हुवो C, हुओ D; ॥ D ६४ ॥ C ७१ ॥ E ७३ ॥

॥६४॥ १ निरख्यो CE। २ मन E। ३ हुंवौ C, हुयो E। ४ राँवौ D, आवो E। ५ रतनसेन B, रतनसेनि C। ६...दीधो...B,......मॉन C, दीधो बहु मॉन D ॥

॥६५॥ १ विसमइ। २ हूवो, हुंवौ D, हुयो E। ३ किम इणि D, इण E, वात B, वात C, लही B, कही C......, किम ए जाँणै परि......D। ४ जंपै C कहै D। ५ सुणो D। ६......आव्यउ......थानि B, जो...आयां मुझनइ...C, जो तु आयो [illegible] थानि D, जो तुम्ह आए माहरै...E ॥

तउ[1] हिव[2] सगलउ[3] होसी[4] भलउ[5], मत[6] मनि जाणइ[7] छुं[8] एकलउ[9] ।
वीघा[10] अंबरि[11] ऊडण तणी, समरी साही करि समरणी ॥ ६६ ॥

वे असवार धरी निज बाथ[1], सिंघल[2] दीप गयउ[3] गुरुनाथ[4] ।
नगर समीपइ[5] आया[6] जिसइ[7], आयस[8] हूउ[9] अलोपी तिसइ[10] ॥ ६७ ॥

राजा रंजिउ[1] देखी दीप[2], जो जोवइ[3] ते अतिहि उंदीप[4] ।
कोलाहल अति कसबउ[5] घणउ[6], वणज[7] अनइ[8] व्यापाराँ[9] तणउ[10] ॥ ६८ ॥

[1]हीयइ-हीयउ[1] दलाइ[2] सही[3], विरलउ[4] कोइक[5] जायइ[6] वही[7] ।
आगलि पडहउ[8] फिरतउ[9] दीठ[10], [11]तास लगइ ते आव्या नीठ[11] ॥ ६९ ॥

पूछण लागा पडह विचार[1], [2]तव ते जंपइ "सुणि असवार[2] ।
सिंघल[3] दीप तणउ[4] राजीउ[5], गुणे करी महिमा गाजीउ[6] ॥ ७० ॥

॥६६॥ १ तो C। २ हिवइ E, हिवै D। ३ सगलो D, सवही E। ४ होसइ C। ५ भलो CD, भला E। ६ मति C। ७ जांणो C, जांणै D। ८ छु C, मै D, छइ E। ९ एकलो CD, एकला E। १० विघा C। ११ अंवर D।

॥६७॥ १ हाथि C, हाथ D। २ शंघल AB। ३ गयो C, गया D। ४ सुधरनाथ C, गुरनाथ D। ५ समीपै CD। ६ आव्या B, आयो C। ७ जिसै CD। ८ आइस C। ९ हुवो C, थया D। १० तिसै ED।

॥६८॥ १ रंज्यौ C, रंज्या D। २ रूप D। ३ जोवै CD। ४ उदीप B सरूप CD। ५ कसुवट B, कलहट CD। ६ घणो CD। ७ विणज B, वीणज C। ८ अनै CD। ९ व्यापारी C, व्यापारी D। १० तणो D।

॥६९॥ १ हीयै-हीयो B। हीयो-हीयै E। २ दलायइ CD। ३ थकै D। ४ विरलौ D, विरलो E ५ कोई CD। ६ जायै C, जाई D। ७ सके D। इस अर्द्धाली के पश्चात् BCDE प्रतियों में ये क्षेपक हैं–

सोवन-कलस सोहइ (सोहै D) सवि (सहु E) गेह।
नर-नारी वहु (सहु C) चतुर सनेह (संनेह C) ॥ B ७० ॥
मणिमय (°मै CD) गउख (गोख CD) जड्या अतिसार।
माहे (माँहि BC) वइठी (वैठी C, वैठा D) राजकुमारि (°कुवारि E, °कुआर D) ॥
थानकि थानकि (थाँनिक २ D), दीसइ (दीसै C) चरी।
जाणे (जाँणि क D) इंद्रपुरी अवतरी ॥ B ७१ ॥
चतुरा नारी मोहन वेलि (वेल C, वेलि D)।
सहियाँ स्यूँ (सूं B. सुं DE) हीडइ (हीडै CD) गयगेलि (गजगेलि CD) ॥
नव-नव नाटक (नाटिक D) जोवइ (जोवै DE) भूप।
थानकि थानकि (थाँनिक २ D) अकल सरूप ॥ B ७२ ॥
हाट पटण (वाजार E) सहु देखइ (देखिइ E, देखै D) राइ (राय D)।
मध्य भाग ते नयरें (नयरइ DE) जाइ ॥

इससे आगे शेष अर्द्धाली (६९) आरम्भ होती है :–

८ पडहो DE। ९ वाणतउ C, वाजंतो D, मुणयो E। १० सुणइ C, सुणै D, जिसै E। ११ तेह वहि आवइ नृप हित घणइ C, तिहाँ वहि आवै अति घणै D, राजा देखण पहुंता तिसै E ॥ A ६९ ॥ BC ७३ ॥ D ८० ॥ E ८२ ॥

॥७०॥ १ विचार D। २...जंपै...D, ते जंपै "सुणिहो असवार !" E। ३ संघिल C। ४ तणो DE। ५ राजीयो D, राजान E। ६...गाजीयो D, लील-विलासी इंद्र-समान ॥ A ७० ॥ BC ७३ ॥ D ८१ ॥ E ८३ ॥

तास बहिनि[1] परतिख[2] पदमिणी[3], त्रिभुवनि[4] ओपम[5] नही तसु तणी।
अह निसि[6] पदमिणि[7] ते[8] इम बकइ[9], 'मुझ भाई[10] जे[11] जीपी सकइ[12] ॥ ७१ ॥
तेह नइ[1] कंठि[2] ठवुं[3] वरमाल[4], इम जंपइ[5] ते अबला[6] बाल।'
"हिव ते पडह वजावइ इसउं[7], मुझनइ जीपइ नही को[8] तिसउ ॥ ७२ ॥
जीपण तणाँ घणा परकार, रिण-रामति[1] किनाँ[2] मल्लाकार।
[3]किण ते वात करइ खँति घणी[3]"? वलतउं[4] वोलइ[5] पडसद-धणी[6] ॥ ७३ ॥
"रिणवट[1] तणी रहउं[2] हिव[3] वात[4], संतरंज[5] रामति[6] खेलुं[7] घात[8]।
जउं[9] कोई मुझ[10] जीपइ[11] सही, [12]तउं मइं वात इसी छइ कही[12] ॥ ७४ ॥
अरध देस अरधउं[1] भंडार, विहची आपुं[2] अधिक[3] उदार।
भगिनी[4] वली[5] परतिख[6] पदमिणी[7], परणावी द्युं[8] पहिरामणी[9] ॥ ७५ ॥
ए मुझ वाचा अविचल[1] अछइ[2], इम म[3] कहेज्यो[4] न कहिउं[5] पछइ[6]"।
ऍम[7] सुणी[8] रंजिउं[9] नर-राइ[10], संतरंज[11] रामति आवइ[12] दाइ[13] ॥ ७६ ॥
भूप भणइ[1]-"संभलि[2] मुझ वात, संतरंज[3] रामति[4] केही मात[5]।
जे जाणउं[6] ते लेज्यो[7] दाण, पिण[8] तुम्ह[9] वात[10] अछइ[11] परमाँण[12]" ॥ ७७ ॥
ऍम कही ते[1] मेल्हिउं[2] माहि[3], रामति[4] ऊपरि अधिकी[5] चाहि।
तिणि[6] जाई[7] सिंघलपति[8] पासि, वीनवीउं[9] सहु वचन[10] विलास[11] ॥ ७८ ॥

॥७१॥ १ वहिनि B, बहिन DE। २ परतखि DE। ३ पदमणी D। ४ त्रिभुवन DE। ५ उपम D, ओप E। ६ अहनिस E। ७ पदमणि D, पदमिनि E। ८ मुहडइ C, मुहडै D, एहवुं E। ९ वकै DE। १० बंधव DE। ११ को D, कोई E। १२ सकै DE ॥ A ७१ ॥
॥७२॥ १ तेहने C, तेहनै D, तेहनें E। २ कंठ C। ३ ठवो C, ठउं D। ४ वरमाल E। ५ जंपै D, जंपे E। ६ सुंदरि DE। ७ इसो C। ८ कोइ B ॥ A ७२ ॥
॥७३॥ A प्रति में यह चौपई नहीं है। १ रिण...C,...राँमति D, रिणवटि E। २ किना C, कै E, खगमुजि E। ३ किण ते वात करै खाति घणी D, किण परि हुंस असै तेहतणी E। ४ वलतो CE, वलतो D। ५ बोलै D, जंपै E। ६ पडहा E।
॥७४॥ १ रिणपट C। २ रही CD, नही E। ३ हिवे D। ४ बात D, माहिं E। ५ सतरिंज C। ६ राँमति D। ७ खेलइ C, खेलण DE। ८ धात D, चाहि E। ९ जे C, जै को D। १० मुझसुं B, मुझनइ C, मुझनै D। ११ जीपै D; ९-११ रमताँ मुझसुं जीपै जेह E। १२ तउं मिइ वात इसी कही सही C, तो मैं वात कहा-इम कही D, मुंह माँग्यो फल पाँमे तेह E ॥ A७३ ॥
॥७५॥ १ अरधो CDE। २ आपउं C, बिहची आपु D। ३ अरध D; २-३, है गै मणि मोती अणपार E। ४ भगनी D, बहिन E। ५ पणि C बल D, मुझ E। ६ परतखि D। ७ पदमणी DE। ८ दिउं C, द्यों D। ९ पहिरावणी B।
॥७६॥ १ अविचल D। २ अछै CD। ३ मति C। ४ कहियो C, कहिज्यो D, कहयो E। ५ कहियो CDE। ६ पछै DE। ७ तव E। ८ निसुणी E। ९ रंज्यो CDE। १० नरनाथ E। ११ सतरंज C। १२ आवै D, माहरै E। १३ हाथ E।
॥७७॥ १ भणै DE। २ साँभलि DE। ३ सतरंज C। ४ राँमति E। ५ माति E। ६ जाण्यउं B, जाणो CD. जाँणो E। ७ लेज्यो B, लेयो C, लेवो D, माँडो E। ८ ए DE। ९ मुझ DE। १० वाच D। ११ अछै DE। १२ परिमाँण D।
॥७८॥ १ तस E। २ मेल्हयो C, मेल्हो D, मुंक्यो E। ३ मांहि CE। ४ राँमति DE। ५ इधकी D। ६ तिण E। ७ जाय D, जाइं E। ८ संघल° ACD, सींघल° E। ९ वीनवीयो DE। १० वचन D। ११ विलास D, विलासि E।

सिंघलपति[1] मनि[2] हरखिउं[3] घणुं[4], [5]तेडावी दीधुं बेसणुं[5] ।
आगति सागति करि[6] अति[6] घणी, वात बिहुं[7] रमवानी वणी ॥ ७९ ॥
बेठा[1] बेही[2] रमवा[3] भणी, जाणि[4] कि[5] सिसहर[6] नइ[7] दिनमणी ।
पासइँ[8] बेठी[9] ते पदमिणी[10], कोमल कमल वदन[11] कामिणी[12] ॥ ८० ॥
रतनसैंन[1] सतरंजइ[2] रमइ[3], तिम-तिम नारि तणइ[4] मनि गमइ[5] ।
जुउं[6] किमई[7] ए जीपइ[8] दाण[9], तउं[10] मुझ वखत[11] सही[12] सुप्रमाँण[13] ॥ ८१ ॥
सिंघल[1]-पति मनि शंका[2] करइ[3], रतनसैंन[4] थी[5] मन महि[6] डरइ[7] ।
मनमथ रूप मनोहर वेस[8], ए कोइक छइ[9] सबल नरेस ॥ ८२ ॥
केलि करंताँ रामति[1] रंग, सिंघल[2] भूपति पाँमिउं[3] भंग ।
[4]जैत्र अनइ जस हूउं घणउं[4], [5]परतउं पुहतउं पदमिणी तणउं[5] ॥ ८३ ॥
कंठ[1] ठवी कोमल[2] वरमाल[3], जय-जय शबद[4] जगावइ[5] बाल ।
सिंघल[6] दीप तणउं[7] हिव[8] धणी, भगति करइ[9] ते[10] भूपति तणी ॥ ८४ ॥
सामहणी अति मेली घणी, परणावी बहिनर पदमिणी ।
अरध देस[1] अरधा[2] भंडार, [3]विहची दीधा अधिक उदार[3] ॥ ८५ ॥
परिघल दीधी पहिरामणी[1], हरषित नारि हूई[2] पदमिणी ।
वि सहस बाँदी रूप-निधाँन[3], पदमिणि[4] पासि रहइ[5] सुविधाँन[6] ॥ ८६ ॥

॥७९॥ १ शंघल° AC, सिंघलि E । २ मन BD, तव E । ३ हरख्यउं B, हरख्यो C, हरख्यौ D, हरखत E । ४ घणो CD, थाय E । ५ तेडावी दीथो C, वैसणौ वइसउं C, मेल्हि प्रधाँन तेडाया माहिं E । ६ कीधी DE । ७ वेहु C ।

॥८०॥ १ वयठा B, बैठा D । २ बेई C, वेइ D, विन्है E । ३ रमिवा C, रंमिवा D, रमेवा E । ४ जाँणि CE । ५ किं E, क D । ६ शशिहर DE । ७ नै E । ८ पासि C । ९ बइठी C । १० पदिमणी C । ८-१० पासै आइ बैठी ते पदमणी D, पासै आइ बैठी पदमिणी E । ११ बदन D । १२ कामणी B, कामनी D, काँमिनी E ।

॥८१॥ १ रतनसेनि D । २ सेत्रंजइ C, सेत्रंजै D, सतरंजें E । ३ रमै DE । ४ तणे C, तणै DE । ५ गमै DE । ६ जइ C । ७ °ही CDE । ८ जीपै DE । ९ दांण CE । १० तो DE । ११ बखत D, पेखरा E । १२ चढै E । १३ प्रमाण B, परमाँणं DE ।

॥८२॥ १ शंघल° ADE, संघल° C । २ संका CE, संक्या D । ३ करै D करे E । ४ रतनसेनि D । ५ तैD, नवि C । ६ माहि D, मै C । ७ डरै DE । ८ वेस D । ९ छै DE ।

॥८३॥ १ राँमति ADE । २ शंघल A । ३ पम्यो C, पम्यौ D, पाँम्यो C । ४ जीती नइ जस लीधो घणो C, जीपी नै जस लीधो घणौ D, जीपे ऊठ्यो रयण नरिंद E । ५ परतो पहुतो पदमिणी तणो C, परत्यो पहुतो पदमणि तणौ D, पदमण मनि हुयो आँणंद E ॥

॥८४॥ १ कंठि E । २ काँमिणि C, कामणि D । काँमणि E । ३ बरमाल E । ४ शब्द B, सबद CDE । ५ गावइं B, पयंपइ C, पयंपै E । ६ शंघल A, सीघल E । ७ तणो CDE । ८ हिवें B, हिवै D । ९ करै D, करे E । १० तेण B, तिण E ।

॥८५॥ १ अरधि देसि C,...राज DE । २ अरधो CD । ३-३ विहची आप्यो अरधोदार C, विहची आप्यौ अरध उधार C, मणिमाँणिक मुगताफल सार E ।

॥८६॥ १ पहिराँवणी D, पहिरांमणी E । २ थई E । ३ विलास E । ४ पदिमणि C, पदमणि D । ५ रहै D । ६ सावधाँन C, सावधान D, । ४-६ सेवा सारे पदमिण पास ।

भमर घणा[१] गुंजारव[२] करइँ[३], पदमिणि[४]-परिमल मोह्या फिरइँ[५] ।
पदमिणि[५] तणउं[६] पटंतर एह[७], भूला[८] भमर न छंडइँ[९] देह[१०] ॥ ८७ ॥

पदमिणि[१] रूप कही कुण सकइ[२], इंद्राणीथी[३] अधिकी[४] जकइ[५] ।
रतनसैंन[६] परणी[७] पदमिणि[८], [९]आस सँपूरण हुई मन तणी[९] ॥ ८८ ॥

दिन दस पंच[१] तिहाँ[२] सुखि[२] रही, रतनसैंन[३] नृप[३] अवसर लही ।
[४]सिंघलपतिसुं[५] शिष्या[६] करइ[६], [७]विनय-वचन मुख अति उच्चरइ[७] ॥ ८९ ॥

सिंघलपति[१] साचउं[२] भूपाल[३], [४]आदर अधिक करी सुविशाल[४] ।
[५]रंगरली वहिनडनी वहू, सिंघलनउं पति पूरइ सहू[५] ॥ ९० ॥

[१]सैंन घणी ले सिंघलनाथ, रतनसैंन नइ हूओ साथि[१] ।
सैंना सगली[२] समुद्र मझारि[३], प्रवहण[४] पूरि करायउं[५] पारि[६] ॥ ९१ ॥

समुद्र परइँ[१] पुहचावी करी, सिंघलनाथइँ[२] शिष्या[३] करी ।
प्रीति रीति पालिउं[४] पडिवनउं[४], ज्युं[५] ही अधिक वधारिउं[६] विनउं[७] ॥ ९२ ॥

[१]सिंघलपति पाछा संचर्‍या[१], [२]रतनसैंन डेरइ ऊतर्‍या[२] ।
भाट कला भुंजाई[३] तणा,[४] डेरइ[५] डेरइ[५] दीसइँ[६] घणा ॥ ९३ ॥

॥ ८७ ॥ १ सदा E, । २ गुंजारवि D । ३ करै DE । ४ पदमणि D, पदमिण E । ५ फिरै DE । ६ तणो CDE । ७ एइ C । ८ भोगी E । ९ छंडै D, छाँडै E । १० देइ C ।

॥ ८८ ॥ १ पदमणि D, पदमिण E । २ सकै DE । ३ हुती E । ४ अधिकाँ C, इधकी D । ५ जिकइ C, जेकइ D; जकै E । ६ रतनसेनि D । ७ ते परणी E । ८ पदिमणी C, पदमणी D, नारि E । ९-९ आसा हुइ पूरी मन तणी C, आस पूर हूई मन तणी D, साइँ सवाडौ पूरण हार E । ॥ A ८८ । BC ९२ । D १०१ । E १०३ ।*

॥ ८९ ॥ १ पाँच DE । २-२ तीहा सुख D, लगै तिहाँ E । ३ रतनसेनि ग्रप D । ४ सिंहल° CE । ५ स्यूं C । ६ शिष्या B, सिप्या C, माँगी सीख E । ७ 'अति' के स्थान पर 'इम' C, विनय-वचन मुखि इंम उचरै D, कहेज्यो कारज अम्ह सारीख E ॥ A ८९ । BC ९३ । D १०४ । E १०६ ।

॥ ९० ॥ १ सिंहल DE । २ साचो C, साचौ D, मोटो E । ३ राजान E । ४ हित दाख्यो देई वहु माँन E । ५-५ यह अर्द्धाली D और E प्रतियोंमें नहीं है ।

॥ ९१ ॥ १-१ यह अर्द्धाली CD प्रतियों में नहीं है । २ सघली CDE । ३ मंझारि D । ४ प्रवहणि C, प्रहुघण D । ५ करि आया C, कराया DE । ६ पारि D ॥ A ९१ । BC ९५ । D १०५ । E १०७ ॥

॥ ९२ ॥ यह चोपई E प्रति में नहीं है । १ परै D । २ सिंघलनाथै D । ३ सिप्या C । ४ पाल्यो पडिवन्यो C, पालि पडवनो D । ५ वउं ही B, विहु मनि CE ॥ ६ वधारिनउं B, वधारयो C, धारयो E । ७ विनो BD, वनो C, विनो E ॥ D १०६ ॥

॥ ९३ ॥ १ सिंघल° BC, पाल्यो पडिवन्यो C । १-२ यह अर्द्धाली D प्रति में नहीं है,
सिंहलपति पाछा जवल्या, रतनसेन आगा नीकल्या E ११८ ।
३ भुजाइ° DE । ४ तेणा C । ५ डेरै डेरै DE । ६ दीसै DE ॥ A ९३ । BC ९७ । D १०७
E ११९ ॥

* साहसीयाँ सतवादियाँ धीराँ एक मनाँह । देश करेसी चींतडी, लहिरी न्वित जिहाँह । D १०२ । E १०४ ॥ (दई D) (चंतडी D) (अरट फवेसी त्याँह D)
साहसीयाँ लच्छी मिलै (हुवै D), नह (नहु D) कायर-पुरसाँह (पुरीसाँह D) ।
काने कुंडल रयणमै, मिलि कज्जल नैणाँह ॥ (अंजणसम नयणाँह D) ॥ D १०३ । E १०४॥

[दूजो खण्ड]

वात[1] सुणउं[2] हिंव[3] तें[4] पाछिली[5], रतनसैंन[6] राजानी भली।
छानउं[7] छिटकिउं[8] भूपति जेह[9], मरम न जाणइ[10] कोई तेह ॥ ९४ ॥
सॉंझ हुई[1] नवि दीसइ[2] राइ, सॉंमी[3] विण[3] किम सभा भराइ[4]।
बाहरि[5] भीतरि कीधउं[6] सोझ[7], नृपनुं[8] कोइ[9] न लाभइ[10] खोज[11] ॥ ९५ ॥
माहिं[1] जई[2] रॉंणी[3] वीनवी[4], तव[5] तिणि[5] वात हती[6] तें[7] चवी।
"सांमि[8] सकइ[9] तउं[10] रीसइ[11] घणी, परणेवा चालिउं[12] पद्मिणी[13]" ॥ ९६ ॥
वीरभॉंण[1] सुत सकज सनूर, सुभट सभा महिं[2] बेठउं[3] सूर।
कपट[4] बात[5] कूडी केलवी, वीरभॉंण[1] भापइ[6] नव नवी ॥ ९७ ॥
"राजा माहि जपइ[1] छइ जाप, जिणथी[2] प्रवल वधइ[3] परताप"।
एम कही आघुं[4] जोगवइ,[5] भूप तणी परि भुंइ[6] भोगवइ[7] ॥ ९८ ॥
इम करतॉं दिन हूआ[1] घणा, संकॉंणा[2] मन सुभटॉं[3] तणा[4]।
"नितु-नितु[5] वाहरि[6] करतउं[7] केलि, नृप[8] हिव[9] महल[10] न घइ[11] किण[12] मेलि[13] ॥९९॥
कुसल अछइ[1] कइ[2] काई[3] वात[4], मत[5] सुति[6] मारिउं[7] होई[8] तात"।
एहवी वात[4] करईं तें[9] जिसइ[10], रतनसैंन[11] नृप[12] आविउं[13] तिसइ[14] ॥ १०० ॥
च्यारि[1] सहस हयवर[2] हीसता, बी सहस[3] गयवर अति गाजता[4]।
बी सहस[5] विहुं[6] दिसे[7] पालखी[8], त्यॉं[9] माहे बेठी[10] तसु सखी ॥ १०१ ॥

॥ ९४ ॥ १ बात D। २ सुणो CDE। ३ हिवि C, हिवै D। ४ सवि E। ५ पाछली B। ६ रतनसेनि E ११८। ७ छानो CD, छॅंने E। ८ छिटक्यो C, छिटक्यौ D, चाल्या E। ९ तेह C। १० जाणइ BC, जाणै D, जॉंण्यो E। C १०९।

॥ ९५ ॥ १ हुवै D। २ दीसै D, दीठा E। ३ राय वीणि D, स्वामी...E। ४ भराय D। E ११९। ५ बाहिरि CE। ६ कीधो C, कीधौं D, पूछया E। ७ सोज D, सही E। ८ नृपनो C, न्रपनो D, नृपनी E। ९ काइ E। १० लाभै D, मालम E। ११ लही E।

॥ ९६ ॥ १ मॉंहे C, माहे D, मॉंहि E। २ जाइ CE, जाय D। ३ रागी BC। ४ वीनवी D। ५ तव तिण D, तिण ते E। ६ हुती BD, हुती C, हुइ E। ७ तिम CD, तेम E। ८ स्वामि DE। ९ सकै DE। १० तो DE। ११ रीसै DE। १२ चल्या CDE। १३ पद्मणी E।

॥ ९७ ॥ १ वीरभाण BC। २ माहि B, मइ C, मॉंहि D। ३ बेठो CE, बैठो D। ४ कटक E। ५ वात D। ६ भाषै DE।

॥ ९८ ॥ १ जपै D, जंपै छै E। २ जीहा D, जेह E। ३ वधइ BC, वधै D, वधै E। ४ आघो C E, आघौ D। ५ गवै DE। ६ परिभूं C, परिभुइ D, परिधर E। ७ भोगवै DE ॥

॥ ९९ ॥ १ हूया BC। २ सक्काणा C। ३ सुहडां D। ४ तणॉं B। ५ नित-नित E। ६ वाहिरि C, वाहिर E। ७ करतो C, करता E। ८, न्रप D। ९ हिवे D। १० महिले D। ११ दिये D, घै E। १२ किणि D। १३ मेल B।

॥ १०० ॥ १ अछै CD। २ कॉंई C, कै DE। ३ छइ C, कोइ छइ D, काइक E। ४ वात D। ५ मति D। ६ सुतइ B, सुत D, बेटे E। ७ मार्‍यो CDE। ८ हुवइ C, होवै DE। ९ करेइ C, करै D, हुई E। १० जिसइँ B, जिसै DE। ११ रतनसेनि D। १२ न्रप D। १३ आव्यो C, आयो D, आया E। १४ तिसइँ B, तिसै DE।

॥ १०१ ॥ १ च्यार° E। २ हइवर E। ३ बीस सहस DE। ४ गरजता E। ५ बीस° E। ६ विहु C, विहुयै D। ७ दिसि D दिस E। ८ पलिखी E। ९ त्यॉं माहिं D, त्यॉं मॉंहे E। १० बैठी DE।

विचि[1] पालंखी[2] पदमिणि[3] तणी, चिहुं[4] दिसि[5] भमर[6] रह्या रुणझणी[7] ॥
ऊपरि कंचण[8] कलस अनेक, [9]एक थकी वलि[9] अधिकउं[10] एक[11] ॥ १०२ ॥

सुभट[1] तणा नवि[2] लाभइ[3] पार, [4]गज-गरजारव हय-हीसार[4] ॥
पंच शवद वाजइ[5] वाजित्र[6], जे[7] सुणतां सवि[8] नासइं[9] शत्र[10] ॥ १०३ ॥

इम[1] तसु[2] साथइं[3] सवली[4] सेण[5], गयणंगणि[6] बहु[7] ऊडई[8] रेण ॥
आव्या[9] चित्रकोट[10] तलहटी, हुवउ[11] कोलाहल[12] अति कलहटी ॥ १०४ ॥

वीरभाँण[1] संकाणउं[2] माहि[3], [4]सुभट सहू धाया असि-साहि[4] ॥
परदल आविउं[5] जांणी करी[6], [7]हाटे हलफल हूई खरी[7] ॥ १०५ ॥

तितरइ[1] आविउं[2] नृपनउ[3] दूत, कागल लेई[4] माहि[5] पहूत[6] ॥
वीरभाँण[7] वाची[8] सहु[9] वात[10], "धन्य[11] दिवस मुझ आविउं[12] तात" ॥ १०६ ॥

विनयवंत[1] साँम्हउं[2] दोडीउं,[3] [4]कपट तणउं पडदउं छोडीउं[4] ॥
[5]सुभट सहू धाया ससनेह[5], [6]जोअण आया लोक अछेह[6] ॥ १०७ ॥

सकल[1] लोक[2] जई[3] लागा पाइ[4], कुसल[5] खेम पूछइ[6] नरराइ ॥
रतनसेँन[7] चडीउं[8] गजगाहि[9], महा महोछवि आविउं माहि[10] ॥ १०८ ॥

॥ १०२ ॥ १ विचइ C, विचि D, विचै E। २ पालखी BCDE। ३ पदमणि C, पदमिण D, पदिमणि E। ४ चिहूं CD, चिहूं E। ५ दिस B। ६ भ्रमर B। ७ रणझणी B। ८ कचन E। ९ एक थकि वलि B, एक एक थी CD, एक एक थी बल E। १० इधकौ C, अधिकी D, अधिको E। ११ रेख D।

॥ १०३ ॥ १ सुभटाँ तणाँ E। २ न E। ३ लाभै DE। ४-४ गय गंजारव हय हंसार B, हिंसार C, गै गरजारव हय हीसार D, गय...हींसार E। ५ बाजै D, वाजै E। ६ वाजीत्र D। ७ जइ BC। ८ सहु D। ९ नासइ BC, नासै DE। १० शित्र B, सत्रु C शत्रु B, सित्र E।

॥ १०४ ॥ १ इण CD। २ परि D, तस E। ३ साथै CD, साथि E। ४ वहुली D। ५ सेणि C, सेन D। ६ गयणाँगण B, गयणाँगणि C, गयांगण D। ७ लगि D। ८ ऊडी CDE। ९ आया CD। १० चित्रकोटि E। ११ हुई A, हुवो CE, हुयो D। १२ कुलाहल E।

॥ १०५ ॥ १ वीरमाण BD। २ साक्यउ BC, साक्यौ D, संक्यो E। ३ मनमांहि BCE, मनमाहि D। ४-४ ...असू...BE,...अस...C, सुहडाँ तेड्या सिल्ह कराइ D। ५ आव्यउ B, आव्यौ C, आयो D, आव्यो E। ६ बारि D। ७-७...हुइ घरी घरि C, हलबल पडी सारे बाजारि D, हाटे हल हूई अति घणी E।

॥ १०६ ॥ १ ततरइ A, तितरै C। २ आव्यउं B, आयो। ३ न्रपनो C। १-३ तितर नृप मूंक्यो एक दूत D, ...आव्यो...E। ४ देइ D। ५ मांहि BC, रूडो D। ६ पहुत्त BCE, रजपूत D। ७ वीरभाण EC, वीरभाँण B। ८ वाची C, पूटी D, वाँची E। ९ सब BE, सवि C, सवि D। १० बात CD। ११ धन्नि B।

॥ १०७ ॥ १ विनैवंत C, °करि D। २ साम्हौ C, साँम्हा D। ३ दउडीयउं B, दोडीयौ C, आवीया D, दोडीयो E। ४-४...छोडीयउं B,...तणौ पडदो छोडीयो C, कही भेद सहु परचावीया D,...तणो पडदो छोडीयो E। ५-६ D प्रतिमें नहीं है E। ६ जोवण B।

॥ १०८ ॥ १ शकल B, नगर D। २ जाइ B, जाय C, सहु D। ३ लागइ B। ४ पाय CD। ५ कुशल BCE। ६ पूछै DE। ७ रतनसेँनि D। ८ चढीयो D चढीया E। ९ गजगाह BC, गजराज E। १०-१० महामहोछव आयो माँहि D, माहा...°माहि D, ढाले चमर धरै छत्र सात E।

हूउं[१] पइसारउं[२] पूगी रली[३], ठोडि-ठोडि[४] गूडी ऊछली ॥
पदमिणि[५] नारी परणी तणउं[६], जय जयकार[७] हूउं[८] अति घणउं[९] ॥ १०९ ॥
महल[१] मनोहर[२] दीधी[३] माहि[४], तिणि[५] ते पदमिणि[६] करइ[७] उछाह[८] ।
वि सहस[९] पासि रहइँ[१०] छोकरी, चंचल चपल रूप सुंदरी[११] ॥ ११० ॥
रतनसैंन[१] गयो[२] राणी[३] पासि,[४] "पदमिणि[५] आँणी[६] द्यउ[७] सावासि[८] ।
भोजन हिवे[९] जीमेस्याँ स्वादि[१०], तइँ[११] मुझ[१२] वोल वद्यो[१३] वडवादि[१४]" ॥ १११ ॥
संभलि राणी[१] विलखी[२] थई[३], "माहरी[४] जिह्वा[५] वैरिणि[६] हुई[७] ।
निज करिस्युं[८] मइँ[९] भाग्यों रतन्न,[१०] पश्चाताप[११] करइ[१२] क्या[१३] मन्न" ॥ ११२ ॥

॥ दूहा ॥

हिव[१] पदमिणी[२] सुं[३] प्रेम-रस, सुखि झीलइँ[४] ससनेह[५] ।
पंच विषय[६] सुख भोगवइ[७], गय-गमणी गुणगेह ॥ ११३ ॥
वादल[१] महि[२] जिम वीजली[३], चंचल अति चमकंति[४] ।
महल[५] माहि[६] तिम[७] ते तणउं, झलहल तनु झलकंति[८] ॥ ११४ ॥
पान प्रहीस्यइँ[१] पदमिणी[२], गलि तंवोल गिलंति[३] ।
निरमल तनि तंवोल ते, देह महिय[४] दीसंति[५] ॥ ११५ ॥
हंस-गमणि हेजइँ[१] हसइँ[२], वदन-कमल[४] विहसंति[५] ।
दंतकुली दीसइ[६] जिसी[७], जाणि कि हीरा[८] हुंति ॥ ११६ ॥
प्रेम संपूरण पदमिणी,[१] सामि[२] घणउं[३] ससनेह[४] ।
विलसइँ[५] जे सुख[६] विषयना,[७] कहि कुण जाणइ[८] तेह ॥ ११७ ॥

॥ १०९ ॥ १ हुयो C, हुवौ D, हूयो E। २ पइसारो C, पैसारो D, पेसारो E। ३ रुली BC। ४ ठउडि° B, ठोडि° C, ठामि° D, ठाँम E। ५ पदिमणी C, पदमणी D, पदमिण E। ६ तणो CDE। ७ जइ जइ° BC, जै जै° E। ८ हुवउ B, हूयो CE, हुवौ D। ९ जस° B, घणो CE, घणौ D।

॥ ११० ॥ १ महिल DE। २ मनोरथ D। ३ दीधउ A। ४ माँहि C। ५ तिणि BDE। ६ पदमणि CD, पदमिण E। ७ करइँ B, करि C, करै D, रहै E। ८ उछाहि E। ९ वेसहस D। १० रहि C, रहैं DE। ११ सूँदरी C॥ A १०९। B ११४। C १२१ D १२५। E १३४॥

॥ १११ ॥ १ रतनसैंनि D, राजा E। २ पहुता E। ३ राँणी E। ४ पास DE। ५ पदमणि C, पदमिण DE। ६ आणी DE। ७ द्यो CE, दौ D। ८ आवास D। ९ हवि C, हिवै D, हिव E। १० जीमिस्याँ C, जिमैस्याँ D, जिमैसाँ E। ११ तै DE। १२ मुझि D। १३ वदो D, कह्यो E। १४ वडवादी D, थो वादि D। यह चोपई A प्रति में नहीं है।

॥ ११२ ॥ १ राँणी DE। २ बिलखी C। ३ गई E। ४ माहारी D। ५ जिब्बा DE। ६ वैरण C, बयरणि D। ७ थई E। ८ °सुं D। ९ मै D। १० भागउ C। ११ पस्याताप C। १२ करै D। १३ क्याँ C॥ यह चोपई A प्रति में नहीं है। B ११६। C १२३। D १२३। D १२७। E १३६।

॥ ११३ ॥ १ हिवि C, हिवै D। २ पदमणि D। ३ स्यूं BC। ४ झीलै D। ५ ससनेह D। ६ विषै D। ७ भोगवि C, भोगवै D। ये दोहे ११३ से १२० तक A प्रति में नहीं हैं।

॥ ११४ ॥ १ बादिल B, बादल CD। २ माहि BD, माँहे C। ३ बीजुली D। ४ चमकंत D। ५ महुल C, महिषल D। ६ माँहि C,। ७-७ तेहनउ B, तेहनो C, तेहनौ D। ८ झलकंत D।

॥ ११५ ॥ १ प्रहीसै D। २ पदिमणी C। ३ गिलंत D। ४ माहि BD, माँहे C। ५ दीसंत D।

॥ ११६ ॥ १ हेजइ B, हेजै D। २ हसइ C, हसै D। ३ बदन D। ४ कवल D। ५ वीकसंति D। ६ दांति C, दीसै D। ७ तिसी C। ८ हीराँ B।

॥ ११७ ॥ १ पदिमणी C, पदमणी D। २ स्वामि BCD। ३ घणौ D। ४ संसनेह D। ५ बिलसइ C, बिलसै D। ६ सुखी C। ७ °नाँ B। ८ जाणइँ B, जाँणि C, जाँणै D।

राति-दिवस[1] रूँधो[2] रहइ,[3] नरपति पदमिणि[4] पासि ।
भमर तणी परि भूपति, अलुझि[5] रहिउं[6] आवासि ॥ ११८ ॥

चंदन तरवरि[1] जिम[2] चडी, वीटइ[3] नागर वेलि[4] ।
तिम ते कामिणि[5] कंतसुं[6], विलगि[7] रहइ[8] गुण-गेलि[9] ॥ ११९ ॥

कवित कथा-रस काम-रस[1], गाह[2] गूढ[3] गुण गोठि[4] ॥
पदमिणि[5] प्रीतम रीझिवा[6], जाणि कि[7] वास्या[8] होठि[9] ॥ १२० ॥

नारी[1] निरमल[2] नेहरस, सुधा-सरोवर-सार ।
[3]तास माहि नृप झीलतउं, पाँमि न सक्कइ पार[3] ॥ १२१ ॥

॥ चोपई ॥

राजा रमलि[1] करंतउ[2] रहइ[3], इम केताइक[4] दिन निरवहइ[5] ॥
सगला लोक वसइँ[6] सुखवास[7], आवासे[8] लागा आवास ॥ १२२ ॥

तिणि[1] पुरि[2] राघवचेतन व्यास[3], विद्यासुं[4] अधिकउं[5] अभ्यास ॥
राजा तिणि रीझवीउं घणुं, मुहत घणुं द्यइ व्यासाँ तणुं ॥ १२३ ॥

[1]राय भवणि नितु प्रति संचरइ[1], [2]भारत-वात विचख्यण करइ[2] ॥
अमहलि[3] महलि[4] सदा संचरइ[5], राजलोक[6] महि[7] हीडइ[8] फिरइ[9] ॥ १२४ ॥

एक दिवसि[1] पदमिणि[2] नइ पासि[3], राजा बेठउं[4] करइ[5] विलास[6] ॥
नेह[7] नितंवनि[8] चुंबनि करइ[9], [10]राजा आलिंगन आचरइ[10] ॥ १२५ ॥

॥ ११८ ॥ १ दिवसि D। २ रूंधउं B, रूधो AC, लुधौ D। ३ रहइँ B, रहै D। ४ पदमणि CD। ५ अलुझ B, अलज C। ६ रह्यूउ B, रह्यो C, रहै D।

॥ ११९ ॥ १ तरुवर B, तरवर CD। २ चढी CD। ३ वींटी B, वीटी C, बीटी D। ४ वेलि D। ५ काँमणि CD। ६ °सउँ B, °स्यु C, °सौ D। ७ विलग C, विलगि D। ८ रही BCD। ९ गेल C। A ११६। B १२३। C १३२। D १३५॥

॥ १२० ॥ १ काँम C। २ गाहा D। ३ गूढा B, गूँढा C, गुढा D। ४ गोठ BC। ५ पदमणि D। ६ रींझिवा B, रिझवा D। ७ क BCD। ८ वेस्या C, वास्या D। ९ होठ BC।

॥ १२१ ॥ १ नारि B। २ निरम्मल B। ३-३...°झीलतो, पामि...°पारि C, तासु माहि त्रप झीलतौ। पामि न सकै पार D; नृपति केलि रस झीलतो, सकै न पामि पार E। A ११८। B १२५। C १३४। D १३७। E १६२॥

॥ १२२ ॥ १ रमल BCD। २ करंतो CD। ३ रहै D। ४ केताएक D। ५ बरवहइ C, निरवहै D। ६ वसइ B, वसै D। ७ °धास D। ८ आवासइ B।

॥ १२३ ॥ १ तिण D, तिन E। २ पुर C, गढ़ E। ३ ब्यास D। ४ विद्यासु C, °सु E। ५ अधिको CDE।

॥ १२४ ॥ १ राइभुवण नित...B, रायभुवण नित...C, राय...निति...संचरै D, राजभुवन नितप्रति ते जाइ E। २ भारथ-वात वखाणइ करइ A, भारथ-वात विचक्षण करइ B, भारथ-वात बिचिखिण करै D, भारथ-कथा सुणवै राइ E। ३ अमुहल BC, अमहल DE। ४ मुहल BC, महल DE। ५ संचरै D, संचरे E। ६ राजमुहल BC, राजभुवन D, राजमहिल E। ७ माँहिं B, माँहि C, मै DE। ८ हींडइ B, हीडै DE। ९ फिरै D, फिरे E।

॥ १२५ ॥ १ दिवस E। २ पदिमणि° C, पदमणिनै D, पदमिणसुं E। ३ सेज E। ४ बइठो C, बैठो D, बयठा E। ५ करि C, करै D. छे E। ६ विलास D, हित-हेज E। ७ नेहा D, नेहें E। ८ नितंबन CDE। ९ करै D करें E। १० राजा निज आलिंगन आचरै D, आलिंगन रति सुख आचरे E।

तिणि[1] प्रस्तावइँ[2] राघव व्यास[3], पुहतउ[4] पदमिणि[5] तणइ[6] आवास[7] ।
ते देखी राजा खुणसीउ[8], राघव ऊपरि कोप ज कीउ[9] ॥ १२६ ॥

भमह[1] चडाव्री[2] कीउ[3] त्रिसूल[3], कोप तणउ[4] जे कहीइ[5] मूल[6] ॥
राघव पिण[7] मन[8] माहे डरिउ, 'विण[9] प्रस्तावइँ[10] हुं संचरिउ[11]' ॥ १२७ ॥

चतुर तणी ए नही चातुरी, अण तेडिउ[1] आवइ[2] फिरि-फिरी[3] ।
वात[4] गोठि[5] अण[6] रुचती[7] करइ[8], [9]काढंताँई नवि नीसरइ[9] ॥ १२८ ॥

विहुं जणाँ[1] विचि[2] त्रीजउ[3] थाइ[4], अमहल[5] माहे[6] आघउ[7] जाइ[8] ।
अण बोलायउ[9] वोलइ[10] घणुं[11], अण दीधुं[12] वलि[13] ल्यइ[14] बेसणुं[15] ॥ १२९ ॥

डीलइँ-डील[1] लिगाडी[2] धसइ[3], वात[4] करंतउ[5] आपे[6] हसइ[7] ॥
मनि[8] जाँणइ[9] हुं खरउ[10] सुजाण,[11] मूरिख[12] जनरा ए अहिनाँण[13] ॥ १३० ॥

एकंतइ[1] अस्त्री[2]-भरतार, [3]रामति रमताँ हुइं अपार[3] ।
कन्हइँ[4] जई[5] ऊपावइ[6] काणि,[7] मूरिख[8] जन[9]रा ए अहिनाँण ॥ १३१ ॥

[1]इम मनि खुणसिउ राजा घणुं[1], माँन[2] मरोड्युं[3] व्यासाँ[4] तणुं[5] ।
कीधी रीस घणी ते[6] राइ[7], जिणथी[8] तन-धन[9] जीवित[10] जाइ[11] ॥ १३२ ॥

॥ १२६ ॥ १ तिण DE । २ प्रस्तावि C, प्रस्तावै DE । ३ ब्यास D । ४ पुहतो C, पहुतो DE । ५ पदमणि C, पदमिण DE । ६ तणि C, नैर D, रै E । ७ आवासि CD । ८ खुणसीयो BCDE । ९ कीयो BCDE ।

॥ १२७ ॥ १ भमुह BD । २ चढावी DE । ३ कीयो BCDE । ४ तणौ DE । ५ ते D, जे E । ६ कहीयो B, कहिइ C, कहीयै DE । ७ पणि B । ८ मनि° B, मंन D, मन माँहे C, माहे CD । ९ विणि D । १० प्रस्तावें B, प्रस्तावि C, प्रस्तावै DE । ११ संचरयो BDE, संचरयौ E ।

॥ १२८ ॥ १ °तेड्यो B । २ आवै CDE । ३ फिर फिरी BC । ४ बात D । ५ गोठ BC । ६ अर D । ७ रुचिती B, जुगती C । ८ करइँ B करै D, करे E । ९ काढै तोइ ते...B, काढिइ तोइ ते...C, काढंता पणि नवि नीसरै D, सीख दीयंताँ नवि नीसरै E । A १२५ । B १३२ । C १४२ D १४८ । E १७० ॥

॥ १२९ ॥ १ विहु° DE । २ बिचि D । ३ त्रीजुं A, त्रीजो CDE । ४ थाय D । ५ नृप अमुहल BC, न्रप अमहिल D । ६ माहि BC, मै D, मैं E । ७ आघो CDE । ८ जाय D । ९ बोलायउ B, बोल्या C, बोलाव्यौ D, बोलाव्यो E । १० बोलै DE । ११ घणउं B, घणो CE, घणौ D । १२ दीधउं B, दीधो CE, दीधा D । १३ निज BDE, णिजि D । १४ लेइं B C, लै D, ल्यै E । १५ वइसणउं B, बेसणो, C बैसणो DE ।

॥ १३० ॥ १ डील-इ-डीलै CD । २ लगाडी BCD । ३ धसइँ B, धसै DE । ४ बात D । ५ करता BC करंतो DE । ६ आफे A, आपज E । ७ हसइँ B, हसै DE । ८ मन E । ९ जाणे C जाँणै D, जाँनै E । १० खरो BCD, घणो E । ११ सुजाँण DE । १२-१३ मूरख नरनाँ ए अहिन्नाण B, मूरख नरनाँ ए अहिनाण C, ए उत्तमना नहि सहिनांण E ।

॥ १३१ ॥ १ एकंतइँ B, एकांति C, एकंतै D, एकंते E । २ स्त्री BC, नारी DE । ३...होइ...BC,...रंमता ...D, बैठा होवै रंग मझार E । ४ कन्हि C, पासि D, पासै E । ५ जाइ BC जाय D, जइ E । ६ ऊपजावइ BC, उपजावै DE । ७ काँणि DE । ८ मूरख BC, नर BCDE, नाँ B । ९ अहिन्नाण B अहिनाण CD ।

॥ १३२ ॥ १ राजा मन माहि (माइ C, माहे DE) खुणसउं छणउं B, घणो C, घणौ D । २ माँण E । ३ मरोड्यो BC, मरोड्यौ D, मरथो E । ४ व्यासा C, ब्यासाँ D । ५ तणउं B, तणो CD । ६ तब E । ७ राय CD । ८ जेहथी BCDE । ९ तंन-धंन D । १० जीवति C, जीवत D, जीवन E । ११ जाय C ।

विलखउ[१] हुइ[२] ऊतरीउ[३] व्यास[४], नीठ[५] पहूतउ[६] निज आवास[७]।
सामी[८] तणी जव[९] थाइ[१०] रीस[११], तव जाँणे[११] रूठउ[१२] जगदीस ॥ १३३ ॥
[१]वलता व्यास न तेड्या माहि[१], माँन[२] मुहतथी[३] मुंक्या[४] ठाहि[५]।
इणि मुझ दीठी ए पद्मिणी[६], आँखि हरावुं[७] हुं ए[८] तणी ॥ १३४ ॥
व्यास[१] सुणी इम[२] मनि[३] वीहनउ[४], कुण वेसास[५] करइ[६] सीहनउ।
राजा मित्र[८] कदी नवि[९] होइ, नवि दीठउ[१०] नवि सुणीउ[११] कोई[१२] ॥ १३५ ॥

[तीजो खण्ड]

इम चिंति[१] राघव मनि डरइ[२], [३]नृप-खुणसाँणइ खिण न विसरइ[३]।
[४]"नृपनी खुणस न होइ भली[४], [५]नितु नितु हाणि हुई एकली"[५] ॥ १३६ ॥
इम आलोची राघव-व्यास[१], चित्रकोट[२] नउ छाँडिउ[३] वास[४]।
माणस[५] मुहरइ[६] लेई करी, गढथी छानउ[७] गउ[८] नीसरी ॥ १३७ ॥
जातउ जातउ[१] डिल्ली[२] गयउ[३]; तिहाँ जाईनइ[४] परगट[५] थयउ[६]।
गामि[७] माहि हूउ[८] परसिद्ध[९], ज्योतिष[१०] निमित[११] घणउ[१२] जस लीध[१३] ॥ १३८ ॥
भणइ[१] भणावइ[२] शास्त्र[३] अनेक, वात[४] वखाण[५] करइ[६] सविवेक[७]।
नवरस[८] सयण[९]-सभा[१०] रीझवइ,[११] सित[१२]-सित अरथ[१३] करी सीझवइ[१४] ॥ १३९ ॥

॥ १३३ ॥ १ विलखो CDE। २ होइ CDE। ३ ऊतरयउ B, ऊतरयो C, ऊतरयौ D, उतरीयौ E। ४ ब्यास D। ५ नीठिं B, नीठि C। ६ पहुतो C, पहुतो D, पहुंतो E। ७ आवासि B। ८ सामि BCDE। ९ जब D। १० थायइ B, थायै DE। ११ जाणे (जाँणै E) करि BCDE। १२ रूठो CDE।

॥ १३४ ॥ १ वलतउ ब्यास न ते गयो माहि BCD, ब्यास D, "न पहुतो" D, माँहि C। २ मान BD। ३ तै D। ४ काढ्यउ B, काढ्यो C, काढ्यौ D। ५ साहि BCD। ६ पदिमणी C, पद्मणी D। ७ कढावउं B, कढावु C, कढाउ D। ८ एह BCDE।

॥ १३५ ॥ १ ब्यास D। २ एम C। ३ मन C। ४ वीहनो C, विनहो D। १-४ वात सुणी मनि वन्हो ब्यास E। ५ वेसास D। ६ करि C, करै D। ७ सीहनो C D। ५-७ सीहाँ तणा केहा विसवास E। ८ मींत्र D। ९ कदे न D, न केहनो E। १० दीठो CDE। ११ सुणीयो BCDE। १२ लोइ E।

॥ १३६ ॥ १ चिंता B, चंता C, चितवतो DE। २ डरइँ BC। डरै D, डरे E। ३ नृपनी खुणस न खिण वीसरइँ B, नृपनी खुणस न ख्यण वीसरइ C, ऋपनी खुणस न खिण वीसरै D, नृपनी शंका न वीसरै E। ४...होवइ...B, ऋपनी...होइ नही...D, ऋपनी रीसैं भलो न होइ। E। ५ नित नित ...हुवइ...B, निति निति...हुवइ C, नित-नित हाँणि हुवै...D, मरण नही तो गंलण होइ E। A १३३। B १४०। C १५२। D १५९। E १८० ॥

॥ १३७ ॥ १ ब्यास D। २ चित्रकूट BCDE नो CDE। ३ छोड्यउ B, छोडो CD, छाँड्यो E। ४ वास D। ५ माँणव E। ६ मुहरइँ BC, महरै D, साथै E। ७ छाँनो DE। ८ गयो BC, गियो E।

॥ १३८ ॥ १ जातो जातो CDE। २ दिल्ली BCDE। ३ गयो BDE, गियो C। ४ जाइनइ BC, जाइनै D, जाइने E। ५ परगटि BCDE। ६ थयो BDE, थियो C। ७ गाम B, ग्राम D, सिहर E। ८ हूयउ B, हूअउ C, हुवो D, हूयो E। ९ परसीध CD। १० जोतिष BCD, जोतिक E। ११ निमत C, निमति D। १२ घणो BCDE। १३ लिद्ध E।

॥ १३९ ॥ १ भणै D, भणे E। २ भँणावै D, भणावै E। ३ सास्त्र C, सासत्र D, वाल E। ४ वास D। ५ वखाण D, वखाँण E। ६ करै DE। ७ सुविवेक BC, सुविवेक D। ८ नवसत D। ९ वयण E। १० सुभा C। ११ रीझवइँ B, रीझवै D, रीझँवे E। १२ सिति-सिति C। १३ अर्थ BC। १४ सीझवइँ BC, सीझवै D। १२-१३ [illegible] बूझवै E।

पूरउ[1] घट[2] विद्या[3] परवेस, तेहनइ[4] केहा[5] देस-विदेस[6] ।
विद्या[7] माता विद्या[7] पिता, विद्या[7] सयण सगा[8] सासता[9] ॥ १४० ॥
विद्या[1] वित्त तणउ[2] भंडार, विद्या[1] घटि[3] सोलइ[4] सिणगार, ।
माँन[5] मुहत[6] जस विद्या थकी, वित्तथी[7] विद्या[1] अधिकी जकी[8] ॥ १४१ ॥
डिल्लीपति[1] पतिसाह[2] प्रचंड, अवनि[3] एक[4] तसु[5] आण[6] अखंड ।
अलावदीन नव खंडे नाम, नृप सहु तेहनइं[7] करइ[8] सिलाँम[9] ॥ १४२ ॥
एक छत्र धर सगली धरइ[1], सुर नर सहु को तिणथी[2] डरइ[3] ।
अवनि तणउ[4] अधिकउ[5] अभिलाष, लसकर तसु[6] नव त्रिगुणा लाख[7] ॥ १४३ ॥
तिणि ते[1] सुणीउ[2] बंभण गुणी, तेडाविउ[3] डिल्लीनइ[4] धणी[5] ।
व्यासि[6] जईं[7] दीधी आसीस, जाँणि[8] की बेठो[9] छइ[10] जगदीस ॥ १४४ ॥
व्यासि[1] कह्या तसु[2] कवित[3] अनेक, सभा सहित[4] रीझिउ[5] सविवेक[6] ॥
आग[7]ईं[8] थो[9] बंभण[10] गुणी, पातिसाहि[11] दी[12] पहिरामणी[13] ॥ १४५ ॥
माँन[1] मुहत[2] वधीउ[3] पुर माँहि[4], पूछइ[5] तेड़ी नित पतिसाहि ।
उलगताँ[6] तूठउ[7] अवनीस, पूगी राघव तणी जगीस ॥ १४६ ॥
वास्या[1] गाम[2] ग्रास दइ[3] घणा, राघव चेतन बेहीं[4] (?) जणा[5] ।
पातिसाह[6] पासइ[7] नितु[8] रहइ[9], राघव कवित कथा नितु[10] कहइ[11] ॥ १४७ ॥

॥ १४० ॥ १ पूरो C । २ घटि पूरो DE । ३ विद्या D । ४ तेहनइ B, तेहवै D, तेहनैं E । ५ केहाँ B । ६ विदेसि C, बदेस D । ७ विद्या D । ८ सदा BCD, सदाइत E । ९ हिता E ।

॥ १४१ ॥ १ विद्या D । २ तणो CD, वित्त तणो E । ३ घट BC । ४ सोलह BC, सोलै D । ५ मान BCDE । ६ महत DE । ७ वित्तथी अधिकी D । ८ जिकी B ।

॥ १४२ ॥ १ दिल्लीपति BCDE । २ पतिसाहि D । ३ अविनि C, अवनी E । ४ तसि E । ५ जस E । ६ आणि BC । ७ तेहनइ B । तइनइ C, तेहने D, अवर राइ सवि E । ८ करइँ BC, करै DE । ९ सलाँम DE । A १३९ ॥ B १४६ ॥ C १६१ ॥ D १६९ ॥ E १८८ ॥

॥ १४३ ॥ १ धरै D, धरे E । २ तिसथी D, जेहंथी E । ३ डरै D, टरें E । ४ तणो CDE । ५ अधिको CDE । ६ मिलै E । ७ सतावीस E ।

॥ १४४ ॥ १ तिण BDE, तेण C । २ सुणीयो B, सुणीया CD । ३ तेडाव्या BCD । ४ दिल्ली° BC, °नेC, °नै D । ५ धनी B । ६ व्यास B, ब्यास D । ७ जाइ BCDE । ८ जाणि क B, जाँणि क D । ९ वइठउ B, बेठा C, बैठो D । १० छै D ।

॥ १४५ ॥ १ ब्यास D । २ इम B । ३ कवित D । ४ राय E । ५ रीझयउ BC, रीझ्यौ D, रीझ्या E । ६ सुविवेक BC, सुबिबेक D । ७ आगइ BC, आगै D । ८ हीं BC । ९ थी BC । १० बाँभण BC । ११ पातिसाह CD । १२ दीधी B, दीय D । १३ पहिरावणी BD । ७-१३ देखी चातुरता कवि-भाव, पातिसाहि दीधो सरपाव E ।

॥ १४६ ॥ १ मान B । २ महुत BC, महत DE । ३ वाध्यउ B, वाध्यो C, वाध्यौ D, व्याध्यो E । ४ माहिं DE । ५ पूछि C, पूछै D, नित प्रति तेडावे···E । ६ ओलगताँ E । ७ तूठो C, तूठौ D ।
॥ १४७ ॥ १ न्यासाँ BCE, ब्यासाँ D । २ ग्राम BC, ग्राँम D । ३ दे DE । ४ बेईं BCD । ५ जंणा D । १-५ दीधो ग्रास सात गाँमनो मोटाँ सेव्याँ वाध्यो विनो E । ६ पातसाह BC । ७ पासै D, पासैं E । ८ नित DE । ९ रहै DE । १० निति CD, रस E । ११ कहै DE ।

इक[1] दिन[2] आविउ[3] ए अभिमाँन, 'रतनसैंन[4] मुझ मलीउ[5] माँन[6]
वालुं[7] वयर[8] किसी परि एह, साँमि धरम नइ[9] दीधउ[10] छेह ॥ १४८ ॥
"तउ[1] हुं[2] जउ[3] पदमिणि[4] अपहरुं, चित्रकोटथी[6] अलगउ[7] करुं[8] ।
पदमिणि[4] नारि खरी पड़वड़ी[9], लगि पातिसाह[10] करुं[11] परगडी[12]" ॥ १४९ ॥
राघव चिंतइ[1] अधिक उपाइ, प्रगट[2] वात[3] मुखि न कहइ[4] काइ ।
भाट एकसुं[5] भाईपणुं[6], कीधुं[7] मान[8]-मुहत[9] दे[10] घणुं[11] ॥ १५० ॥
हीआ[1] माहि[2] आलोची[3] हेत, खोजासुं[4] कीधउ[5] संकेत ।
'वित्त विहुनइ दीधुं घणुं[6], मित्र[7] करी कीधुं[8] मंत्रणुं[9] ॥ १५१ ॥
"सभा माहि[1] काढेयो[2] घणी, वात किसी परि पदमिणी[3] तणी[4]" ।
अन्न[5] दिवसि[6] बेठउ[7] सुलितांण,[8] मिली सभा सहु[9] रॉणो-रॉण[9] ॥ १५२ ॥
अति[1] सुकमाल पसम पड़वड़ी[1], कलहंस पंखि[2] तणी पंखड़ी[3] ।
अतिसुंदर करि धरी[4] सभाउ[5], तव[6] तिणि भाटि दियउ ब्रह्माउ[6] ॥ १५३ ॥
भाटवाक्यं-

एक छत्र जिणि पृथी, धरी निश्चल धर ऊपरि ।
आणि किंत्ति नवखंडी, अदल कीधी दुनि भीतरि ।
नल विन्नल विध्याड़ि, उदधि कर पाउ पखालिय ।
अंतेउर रति रंभ, रूप रंभा सुर टालिय ।

॥ १४८ ॥ १ एक BCD । २ दिवसि BD । ३ आयो BC, आयौ D । ४ रतनसेनि D । ५ मलीयो D, लीयो C, टाल्यो D । ६ माण B, माँण C । ७ वालउं B, बालो C, बालु D, वालु E । ८ वइर BC, बयर D । ९ सामिधरम नइ BC, सामिधरमनै D साँम धरमने E । १० दीधो C, दाखुं E।
A. १४५ । B १५२ । C १७० । D १७८ । E १९६ ॥

॥ १४९ ॥ १ तो CDE । २ हु D । ३ जो CDE । ४ पदमणि CD, पदमिण E । ५ अपरउं B । ६ चित्रकूट B चित्रकोटि C । ७ अलगो CE, अलगौ D । ८ करउं B । ९ परवडी C । १० पातिसाहि B । ११ करउं B, करो C । १२ पगगडी C ।

॥ १५० ॥ १ चितै DE । २ प्रगटि BC । ३ वाति BC, बात DE । ४ कहै DE । ५ स्यूं B, सो C । ६ °पणउ B °पणो CD, °चार E । ७ कीधउ B, कीधो CDE । ८ माँन E । ९ महत D, महुत E । १०-११ मनुहार E ।

॥ १५१ ॥ १ हीया BDE । २ माँहि B । ३ आलोचइ BC, आलोचै D, आलोची E । ४ °स्युं B, °सो C । ५ कीधो CE, कीधौ D । ६ ···विहूनइ दीधउ घणउं B, ······दीधो घणो C, बित्त बिहुनै दीधौ घणो D, बिहुनै धन देइ आपणो E । ७ मंत्र B, मंत्रि C । ८ कीधउ B, कीधो CDE । ९ मंत्रणउं B, मंत्रिणो C, मंत्रणा DE ।

॥ १५२ ॥ १ माँहि BCDE । २ काढेय्यो B, काढिज्यो C, काढेज्यौ D, काढेज्यो E ३ पदिमणी C, पदमणि D, पदमिण E । ४ भणी D । ५ अन्नि B, अन C, अनि DE । ६ दिवस E । ७ बइठउ B, बेठो C, बैठो D, बैठा E । ८ सुलतान BCD, सुलताँण E । ९ °राणो राण B, °राणो-राणि C, °राणो-राण D, सहूये दिवाँण E ।

॥ १५३ ॥ १···सुकमाल पशम···B, कोमल सद्दल···D । २ पंख BC, पंखिणनी E । ३ पंखुडी BC । ४ धरीय BC, ग्रही DE । ५ सहाउ D, सुभाइ E । ६···तणि···दीयो···C, तव तिण···दीयो ब्रह्माव D, भाटैं आइ दीयो ब्रह्माइ E ।

हेतंमदान कवि मल्ल भणि, अमर किति ते वखत गिणि ।
दीठउ न को रवि-चक्र तलि, अलावदीन सुलिताण विण ॥ १५४ ॥

॥ चोपई ॥

कवित सुणी रीझउं सुलिताँन, भाट प्रतइँ दीधउं वहु मानं ।
"हाथि किसुं ?" पूछइ पतिसाह, तव ते भाट भणइ गुण गाह ॥ १५५ ॥

॥ गाथा ॥

भाटवाक्यं-
माणसरोवर[1] मध्ये[2] निवसइँ[3] कल[4] हंस पंखीया[5] वहवे[6]
ताणं[7] चियं सुकमाला एसा पंखी करे[8] मज्झ[9] ॥ १५६ ॥

॥ चोपई ॥

इम निसुणी[1] लेईं[2] सुलिताँण[3], नव-नव[4] मउंज[5] महा[6] असमाँन ।
सोहइ[7] पसम महा[8] सुकमाल, ते[9] देखी-जंपइ भूपाल[9] ॥ १५७ ॥
"इसी[1] सकोमल काई वली[1], किण[2] ही वस्त कठे संभली ?"
तव[3] ते भाट भणइ[4] सुविचार, "हाँ,[5] सुलिताँण[5] ! कहुं अवधारि[5] ॥ १५८ ॥
पदमिणि[1] नारि इसी पातली, अति सुकुमाल[2] सकोमल[3] वली[4] ।
एह[5] थकी वलि अधिकी तेह[5], सगुण[6] सकोमल[6] नइ[7] ससनेह" ॥ १५९ ॥

॥ १५४ ॥ यह कवित्त BODE प्रतियोंमें नहीं है, परन्तु संग्रामसूरि द्वारा सम्पादित प्रतिमें तथा लब्धोदय गणि द्वारा सम्पादिन 'पद्मिनी चरित्र' की प्रतियोंमें मिलता है ।

॥ १५५ ॥ इस चोपईके स्थान पर BCDE प्रतियोंमें निम्नलिखित चोपई है-

B, पातिसाहि पंख दिट्टें पडी । 'क्या वे हाथि तेरइ पंखुडी ॥
C, पातिस्याहि पंखि ,, ,, । ,, ,, ,, तेरे ,, ॥
D, पातिसाहि द्रिष्टी पंखज पडी । ,, ,, ,, तेरै ,, ॥
E, पातिसाहीकी द्रिष्टिइ पडी । यह किसकी है वे पंखडी ॥
B, जीवइ पतिसाह हुकम जइ लहुं । आलमसाह सलामति कहुं ॥
C, ,, ,, ,, ,, ,, । , ,, ,, ॥
D, जीवै पतिसा ,, जो ,, । आलसाहि सलामति ,, ॥
E, जीवै हजरत ,, ज ,, । ,, ,, ,, ॥

A. १५२ । B १५८ । C १७६ । D १८४ । E २०२ ।

॥ १५६ ॥ १ मानसरोवर D । २ मझे BCD, मद्दै E । ३ निवसइ BODE । ४ कलि BO । ५ पंखीया E । ६ बहुवे BC, वहवो D, वहवे E । ७ °चा BO, ताणी तो D, ताण तणो E । ८-९ करे मुझ BO, कर मझ D, ममं हत्थे E ।

॥ १५७ ॥ १ नसुणी D । २ जोई BD । ३ सुलताण BOD, सुलतान E । ४ नवसत BOD । देखी E । ५ मोज BO, मौज DE । ६ महा असमान BCD । ७ सोहे D, सोहै E । ८ माहा D, घणउं E । ९…जंपै पतिसाह D, हरषित थइ पूछे…E ।

॥ १५८ ॥ १ ऐसी कोमलता कोइ ओर E । २ °वसन कठे साँभली B, …वसत…साँभली O, …वसत कहाँ साँभली D, वस्तु होती है किनही ठोर E । ३ तब D । ४ भणि O, भणै DE । ५ आलमस्याह…B, आलमसाह C, आलमसाहि D, एक वस्तु इसकै अणुहार E । A १५५ । B १६१ । O, १७९ । D १८७ । E २०५ ।

॥ १५९ ॥ १ पदिमणि O, पदमणि D, पदमिण E । २ सुकमाल BOD, ऐसी पसम E । ३ सुकोमल CD । ४ बली B । ५ इसथै यादा (ज्यादा) कछु इक तेह E । ६ सुगुण CDE । ७ नै DE ।

तव ते भूप भणइ-"पदमिणी, काई नारि कठेई सुणी" ।
भाट भणई ए अवसर लही, गोरीपति निसुणइ गही गही ॥ १६० ॥

भाटवाक्यं-

॥ कवित्त ॥

भाट भणइ[१]-"सुणि[२] भूप, रूप अति रंभ समाणि[३] ।
हइँ[४] तुझ[५] हरम हजार, संख[६] कुण लहइ समांणी[६] ।
ता महि[७] पद्मिणि काइ[७], हउंसि[८] तुरकिणी हिँदुआणी[८] ।
अदल[९] आज तू राज, अवर कोइ[१०] राउ[११] न रांणी[१२] ॥
तुझ[१३] महल[१४] माहि[१५] पदमावती, गिणत[१६] नारि होसी घणी[१६] ।
सुणि[१७] मीनती सुलितांण विण[१७], मइँ[१८] न काइ वीजी सुणी[१८]" ॥ १६१ ॥

॥ चोपई ॥

इम निसुणी[१] खोजउ[२] खलभलइ[३], पातिसाह[४] वइठउ[५] संभलइ[६] ॥
आसंगाइत[७] बोलइ इसुं[७] "तइं[८] रे भाट ! कहिउं किसुं[८] ?" ॥ १६२ ॥

खोजा वाक्यं-

॥ कवित्त ॥

"मम भणि[१] भट्ट[२] सुकवित्त,[३] खुंद[४] खोजउ[५] घइ[६] पूरउ[७] ।
रे ! रे ! सवद[८] फरोस ! 'सिवद हरमां लगि सूरउ[९] ।
कहां[१०] सु नारि पदमिणी[११], सेज[१२] रायनकी सोहइ[१२] ।
सुर-नर-गण[१३]-गंध्रव्व[१४], पेखि[१५] त्रिभुवन[१६] मन मोहइ[१७] ।

॥ १६० ॥ BODE प्रतियोंमें यह चोपई है ॥

B, "इसी सकोमल अति पदमिणी । तइं रे भट्ट किहाँ-किहाँ सुणी ?
C, „ सकोमलि „ पदिमणी । ति रे „ „ „ „ ?
D, „ सकोमल „ पदमणी । तै रे „ किहाँ ई „ „ „ ?
E, „ „ „ „ । कहिवै „ कहाँ ते „ „ „ ?
B, हमस्युं खूब कहउ वे साच । तुझ उपरि खुसी बहुत मुझ वाच ॥
C, हमसुं „ कहू „ „ । „ „ „ „ „ „ ॥
D, हिमसुं „ कहौ वो „ । „ „ „ „ „ „ ॥
E, हमसे „ कहै वे „ । „ „ खुस मेरीय „ ॥

॥ १६१ ॥ १ भणे BOD, भणहिं भट्ट E । २ सुनि E । ३ समाँणी D, समानी E । ४ हइ BC, है D, हैं E । ५ तुह E । ६ सब कुण लहै…D, दिवमै रूप जुवाँनी E । ७ तामइ…BC, तामै पदमणि काई मुगलानी पारसी D । ८ होसी तुरकणि…B, होसी तुरकाणि…C, होसी तुरकणि हिंदवाँणी D । ९ अदिलराज तू आज B, अदलराज तू आज C, अदलिराज तू आज D । १० को BC । ११ राव DE । १२ रौंनी E । १३ तुज्झि D । १४ मुहल BC, महिल E । १५ माँहि E । १६ गिणित… BD, गणिति…C, न्है है नारि इंद्रायनी E । १७…वीनती सुलितानजी B,…वीनवी सुलतानजी C, सुणोइ अरज मुझि सुलिताँणजी D, अल्लावदीन सुलतान सुनि E । १८ और ठौरमैं नहु सुंणि E ।

॥ १६२ ॥ १ नसुणी D । २ खोजो CDE । ३ पलभलै D, जलफलै E । ४ आलिमसाह BC, आलमसाहि DE । ५ बेठो C, वैठो D, बैठो E । ६ साँभलै DE । ७ आसंगइ तब B, आसंगि तब बोलै इसुं C, बोलै उछक आसंग लही D । ८ क्यउं रे भाट ! कसउं तिंह ते C, किसउं B, क्युं रे भाट कह्यो तै किसु D, कहे भट्ट ऐसी क्युं कही E । [illegible] B १६१ । C, २८३ । D २११ । E २०९ ।

सुंखिणि[18] सवइं[19] सुलितांण[20] नारि[?], कोपि[?] हूउ वंदि इसइ[21]।
"रे[?] खोजा ला इतवार तूं"[22], सुणि[?] पातस्याह मुलकइ हसइ[23] ॥ १६३ ॥

॥ चोपई ॥

आगलि[1] बेठउ[2] राघव व्यास[3], पुस्तक[4] ऊपरि अधिक[5] प्रयास[6]।
सइं[7] मुखि पूछइ[8] इम[9] सुलितांण[10], पदमिणि[11] नारि तणा अहिनांण[12] ॥ १६४ ॥

॥ कुंडलीउ ॥

आलिमसाह[1] अलावदी, पूछइ[2] व्यास[3] प्रभाति।
"रतन-परीक्षा[4] तुम्हि[5] करो[6], त्रीकी केती जाति?"।
"त्रीकी केती[7] जाति!" कहइ[8] राघव सुविचारी[9]।
"रूपवंत पतिव्रता,[10] प्रिय सां[11] होइ पियारी।
हस्तिणि[12] कि चित्रिणि सुंखिणी,[13] पुहवि[14] वडी[15] पदमावती।"
इम भणइ[16] विप्र साचउ[17] वचन, आलिमसाहि[18] अलावदी ॥ १६५ ॥

रूपवंत रतिरंभ कमल, जिम काय[1] सुकोमल[2]।
परिमल पुहप[3] सुगंध, भमर[4] बहु भमइ[5] वलावल[6]।
चंपकली[7] जिम चंग रंग, गति गयंद समांणी[8]।
सिसि-वयणी[9] सुकमाल[10], मधुर मुखि[11] जंपइ[12] वाणी[13]।

...

॥ १६३ ॥ १ अगांम B, अगांम C। २ भट्ट BCDE। ३ किवित्त BCDE। ४ खूँद BC। ५ खोजइ A, खोजो CDE। ६ दे D, कहे E। ७ पूरो C, पूरौ D, झूठौ E। ८ वाद C, बात D, वात E। ९ सब कल माहि हुइ पूरउ B, सबइ माँहि हइ पूरो C, तू ही बाजारी नूरो D, करही बाजार बयठो E। १० कहाँनु B, किंहाँसू C, काहाँसु D, कहाँ नारि E। ११ पदिमिणी C, पदमणी D, पदननी E। १२...रावण...BC,...रावणरी सोहै D, लछिन ताका कहि मोहै E। १३ गंण D। १४ गंधर्व BC, गंधरब D, ग्रंधव E। १५ पिंखि E। १६ त्रिभोवनC, त्रिभवन D। १७ मोहै DE। १८ सुंखिणी BC, संखणी D, संखनी E। १९ सवि BC, सहु D, सबही E। २०पतिसाह BC, पतिसाहि D, साह E। २१ कोपि हूउ बंदिण इसइ A, कोपीयो एम बंदण रसइ BC, कोपीयो एम बोलै रसै D, क्या है दुरावनि हम्मसे E, २२...इतवार...BC, लायतबार D; जिहाँन-खाँन दरगहिं सुनहिं E। २३...पातिसाइ मुलकं हसइ C,...पातिसाह मुलकै हसै D,...पातिसाह मुलकित हसै E।

॥ १६४ ॥ १ आगल C। २ वइठा B, बेठो C, बैठा D, बयठा E। ३ ब्यास D। ४ पुसतग D। ५ प्रेम E। ६ प्रकास E। ७ सै D श्री E। ८ पूछिइ C, पूछे DE। ९ नव E। १० सुलताण B, सुलतान C, सुलताँन E। ११ पदमणि CD, पदमिण E। १२ इहनाण A, सहिनाँण D।

॥ १६५ ॥ १ आलमसाह BC, आलमसाहि D। २ पूछिइ B, पूछै C। ३ ब्यास D। ४ परीख्या BC परख्या D। ५ तुम्ह BD, तमे C। ६ करउ B, करो C, करौ D। ७ केही D। ८ कहि C, कहै D। ९ अविचारी D। १० पतिभ्रता D। ११ प्रियस्युं B, प्रीयसु C, प्रीतसु D। १२ हसतण D। १३, शंखणी B, संखणीं D। १४ पुहिवि C, पुहवि D। १५ वडी B। १६ भणे C, भणै D। १७ साचो C, साचौ D। आलमसाह BC, आलमसाहि D। E प्रतिमें यह पद नहीं है। A १६२। B १६८। C १८६। D १९४॥

चंचल चपल चकोर जिम, नयण[१४] कंति सोहइ[१५] घणी।
कहि[१६] राघव सुलिताँण[१७] सुणि[१८]! पुहवि[१९] इसी हुइ[२०] पदमिणी[२१] ॥ १६६ ॥

कुच जुग[१] कठिन कठोर[२], रूप अति रूड़ी राँमा[३]।
हसित[४] वदन[५] हित हेज, सेज[६] नितु[६] रहइ[७] सकांमा[८]।
रूसइ[९] तूसइ[१०] रंगि[११], संगि सुख[१२] अधिक उपावइ[१३]।
राग रंग छत्रीस गीत, गुण[१४] गांन[१५] सुणावइ[१६]।
स्नाँन[१७] माँन[१८] तंबोल[१९] रस, रहइ[२०] अहोनिसि[२१] रागिणी[२२]।
कहि राघव सुलिताँण सुणि! पुहवि इसी हुइ पदमिणी ॥ १६७ ॥

वीज[१] जेम झवकंति[२], कंति[३] कुंदण ज्युं[४] सोहइ[५]।
सुर नर गण[६] गंध्रव्व[७], पेखि[८] त्रिभवन मन मोहइ[९]।
त्रिवली तलि[१०] तनुलंक, वंक[११] वहु[१२] वयण[१३] पयंपइ[१४]।
पतिसुं[१५] प्रेम सनेह[१६], अवरसुं[१७] जीह न जंपइ[१८]।
साँमि[१९] भगत ससनेहली, अति सुकमाल सुहामणी[२०]।
कहि राघव सुलिताँण सुणि पुहवि इसी हुइ पदमिणी ॥ १६८ ॥

धवल-कुसुम[१]-सिणगार, धवल वहु वस्त्र सुहावइँ[२]।
मोताहल[३] मणि रयण, हार हृदय[४]स्थलि भावइँ[५]।
अलप भूख त्रिस[६] अलप, नयणि[७] वहु नीद्र[८] न आवइ[९]।
आसणि[१०] अंग सुरंग[११], जुगतिसुं[१२] काम जगावइ[१३]।
भगति जुगति[१४] भरतारसुं[१५], करइ[१६] अहोनिसि[१७] कांमिणी[१८]।
कहि राघव सुलितांण सुणि! पुहवि इसी हुइ पदमिणी ॥ १६९ ॥

॥ १६६ ॥ १-२ काइ सकोमल BDE, काय स° C। ३ पुहव D, पुहोप E। ४ भंमर D। ५ भमै DE। ६ बलावलि BCD। ७ °कुली B। ८ समाणी B। ९ शिश B, °बयणी D, °बदनी E। १० सुकमालि BC। ११ मुख CE। १२ जंपै DE। १३ वाँणी CE, वाँणी D। १४ नयन DE। १५ सोहै D, सोहे E १६ कहइ B, कहै D। १७ सुलतानि C, सुलताण D, सुलताँन E। १८ सुनि E। १९ पुहुवि C, पुहवि D। २० होइ C, हुवै DE। २१ पद्मिणी C, पदमणी D, पदमिनी E।

॥ १६७ ॥ १ युग C: २ कठोरि C, सरूप DE। ३ रामा BC। ४ हसति BCD। ५ वदन BD। ६ निति निति D। ७ रमइ BC, रमै DE। ८ सुकामा BE। ९ रूसै DE। १० तूसै DE। ११ रंग C। १२ सुखि C। १३ अधिको पावइ C, अधिक उपावै DE। १४ गुन E। १५ ग्यान BCD, ग्याँन E। १६ सुणावै D, सुनावै E। १७ सनाँन D। १८ मज्जन B, मजन CE, मंजन D। १९ स्युं B, स्यु C, सुं D। २० रहि C, रहै DE। २१ अहोनिस E। २२ रागणी।

॥ १६८ ॥ १ वीज C, वीजू D। २ झलकंति BCDE। ३ कंत D। ४ कुंदन D। ५ सोहइँ B। ६ गुण B। ७ गंधर्व BCD, गंध्रव E। ८ रूप DE। ९ मोहइँ B, मोहि C, मोहै DE। १० तन नउ B, तननो CD, मय तज E। ११ बंक D। १२ नहुं D, नहु E। १३ वयण न B, बयण D। १४ पयंपै DE। १५ °स्युं B, सुं CE, सु D। १६ अपार DE। १७ स्युं B, सु CD। १८ जपइँ B, जंपै DE। १९ सामि BC, साँम E। २० सोहाँमणी D, सुहाँमणी E।

॥ १६९ ॥ १ कुसम C। २ सुहावइ AC, सुहावै DE। ३ मुत्ताहल BCD, मुगताहल E। ४ रिदस्थल E। ५ भावइ AC, भावै DE। ६ त्रिसि A, त्रिष E। ७ नयण BCDE। ८ नीद BCD, नींद E। ९ आवइँ B, आवै DE। १० आसण BCDE। ११ सुनंग E। १२ युगतिस्युं B, युगतिसु C, जुगतिस्यौ D, जुगति करि E। १३ जगावइँ B, जगावै DE। १४ युगति BC, हेत E। १५ स्युं B, सु C, स्यौ D। १६ रहइं B, रहइ C, रहै DE। १७ अहोनिस E। १८ रागणी E।

॥ चोपई ॥

इणि परि पदमिणिना[१] अहिनाँण[२], निसुणी[३] हरष धरइ सुलिताँण[३]।
"अम्ह[४] घरि[५] हरम परीक्षा[६] करउं[७], पदमिणि[८] हुइ[९] ते जूदी[१०] धरउं[११]" ॥ १७० ॥
व्यास[१] भणइ[२]-"संभलि[३] सुलिताँण[४], तूं[५] मुझ साहिब सुगुण[६] सुजाँण।
हुं[७] तुझ हरम निरखुं नही[७], विण[८] निरख्या क्युं परखुं सही[८]? ॥ १७१ ॥
"म[१] कहसि[२] वात[३] निहालण तणी", तब ते जंपइ[४] डिल्ली[५] धणी।
साहि[६] कहइ[७]-"संभलि[८] हो व्यास, मणिमय[९] एक करउं[१०] आवास[११] ॥ १७२ ॥
तिण[१] माहे[२] तेहना प्रतिबिंब[३], निरखी परख करउं[४] अविलंब[५]।"
सामगरी[६] सहु[७] मेली करी, राघव माहे[८] आणिउं[९] धरी ॥ १७३ ॥
मणिमय[१] मंडप[२] माहे[३] व्यास[४], परखइ[५] हरम[६] तणउं परगास[७]।
हस्तिणि[८] चित्रिणि[९] नइं[१०] संखिणी[११], निरखी नारी न का पदमिणी[१२] ॥ १७४ ॥

॥ कवित्त ॥

रयण महलि[१] अलावदी, साहि[२] राघव हक्कारी[३]।
नयणि[४] नारि निरखेवि[५], परखि[६] अब[७] हरम हमारी[८]।
हंस[९]-गमणि हँसि[१०] चली[११], नारि निरमल[१२] मयमत्ती[१३]।
सुर-नर-गण[१४]-गंध्रव्व, पेखि भूले[१५] अनिरूत्ती[१६]।
अइसी[१७] सवे[१८] अंतेउरी[१९], पभणि[२०] व्यास[२१] पेखी[२२] घणी।
हस्तिणि[२३] कि चित्रिणि[२४] संखिणी[२५], नही साहि घरि पदमिणी[२६] ॥ १७५ ॥

॥ १७० ॥ १ पदमणी DE। २ अहिनाण BC। ३...सुलताण B,...सुलताँणि C, निरखी हरिष धरै सुलताँण D, सुणी चित हरख्या सुलताँन E। ४ इम BC, हंम CD। ५ घर E। ६ परीख्या BC, परिख्या D, परिखा E। ७ करो C, करौ D, धरो E। ८ पदमणि D, पदमिन E। ९ होइ BCE, होय D। १० पासइ BC, पासै D, तो मालिम E। ११ धरो C, धरौ D, करो E।
॥ १७१ ॥ १ ब्यास D। २ भणै DE। ३ साँभलि DE। ४ सुलताण B, सुलताँण CD, सुलताँन E। ५ तूं B, तू CD। ६ सुगण E। ७ हउं......नरीखउं नही B, हउं......नरीखो C, हु...निरखु...D, हुरमाँ निरखण हुकम न मोहि E। ८...निरख्याँ...परखो C, बिणु निरख्याँ...परखु...D निरख्याँ विण किम पारिख होइ E।
॥ १७२ ॥ १ इम BCDE। २ कही BCDE। ३ वात D। ४ जंपइं BCE, जंपै D। ५ दिल्ली CDE। ६ साहु BC। ७ कहै D। ८ संभल C। ९ मणिमइ C, मणिमै D। १० करूं AB, करो C, करौ D। ११ आवासि C।
॥ १७३ ॥ १ तिणि CD। २ माँहि C। ३ प्रतिबंब C, प्रतिब्यंब D। ४ करुं AB, करो C, करौ D। ५ अबिलंब D। ६ सामग्री BC, सामग्रही D। ७ सबि C, सब D। ८ माँहे C। ९ आण्यउ B, मेल्यो C, आण्यौ D, E प्रतिमें यह चोपई नहीं है।
॥ १७४ ॥ १ मणिमइ BC। २ मंडिप C। ३ माँहि C। ४ ब्यास D। ५ परखि C, परखै D। ६ °तणो C, हरमा तणौ D। ७ परकास C, प्रकास D। ८ हस्तणी D। ९ चित्रणी BCDE। १० नै D। ११ शंखणी B, संखणी DE। १२ पदमणी D।
॥ १७५ ॥ १ मुहल BC, महिल D। २ साह C। ३ हकारी ACD। ४ नयण D। ५ नरखेव C। ६ परख C। ७ इब C। ८ हमाँरी A, हंनारी D। ९ हंसि गमगि C, हंस गमणी D। १० हसि A। ११ चलि B। १२ निमल A। १३ मयमंती D। १४ गंधरव C, गंण गंधर्व। १५ भूलइ B, भूलि C, भूलै D। १६ अनुरत्ती BCDE। १७ अैसी D। १८ सबै D। १९ अंतेवरी D। २० भणइ BD, भणै C। २१ ब्यास D। २२ देखी BCD। २३ हस्तिनी BCD। २४ चित्रणी BCD। २५ संखणी BC, संखणी D। २६ पदमणी CD। E प्रतिमें यह नहीं है।

॥ चोपई ॥

इम निसुणी[१] पभणइ[२] पतिसाह,- "विण पदमिणि केहउं[३] उच्छाह ।
पातसाही[४] पदमिणि[५] विण[६] किसी, पदमिणि[७] नारि हीया[८] महि[९] वसी[१०] ॥ १७६ ॥
तउं[१] हुं जउं[२] परणुं[३] पदमिणी[४], केथी[५] कीजइ ए पदमिणी[५] ।
हस्तिणि[६] चित्रिणि[७] नइ[८] सुंखिणी,[९] घरि घरि नारि लहीजइ[१०] घणी ॥ १७७ ॥
विण[१] पदमिणि[२] नवि[३] पोढुं[४] सेज,[५] विण[१] पदमिणि[२] न हसुं[६] हित हेज ।
विण[१] पदमिणि[२] न करूं[७] सुख-संग, विण[१] पदमिणि[२] न रमुं[८] रति[९]-रंग ॥ १७८ ॥
चमकइ[१] चित महि नितु पदमिणी[१], वलतउं[२] जंपइ[३] डिल्ली[४]-धणी ।
"कहि[५] राघव[६] ! किहां[७] छइ[८] पदमिणी[९] ? जेहनइ[१०] हुइ[११] ते[१२] आणुं[१३] हणी ॥ १७९ ॥
ठावी ठोड[१] वतावउं[२] तेह,[३] जिम[४] जई ल्यावुं पदमिंणि गेह[४]" ।
वलतउं[५] व्यास[६] पयंपइ[७] ऍम-"पदमिणी[८] नारि लहीजइ[९] कॅम? ॥ १८० ॥
सिंघलदीप[१] अछइ[२] पदमिणी,[३] दक्षिण[४] दिसि[५] विचि[६] धरती घणी ।
आडउं[७] आवइ[८] उदधि[९] अथाग,[१०] तिणि[११] तेहनउ[१२] कोइ[१३] न लहइ[१४] माग"[१५] ॥ १८१ ॥
साहि[१] भणइ-"संभलि मुझ वात,[२] मो[२] आगलि[३] सिंघल[४] कुण मात ।
सरग पताल[५] समेतउं[६] खणी ! काढुं[७] नारि[८] जई[८] पदमिणी"[९] ॥ १८२ ॥

॥ १७६ ॥ १ नसुणी D । २ प्रभणै D, जंपै E । ३ केहवउं BD, कहो CE । ४ पतिसाही BDE । ५ पदमणि CE, पदमणी D । ६ विणु B, बिणि D । ७ पदिमणि C, पदमणि D, पदमिण E । ८ हीय D । ९ मॉहिँ B, माहि C, मै D, माहिँ E । १० बसी D ।

॥ १७७ ॥ १ तो CE, तौ D । २ जो CE, जौ D । ३ परणउं B, परणु D । ४ पदमणी D । ५... कॉमिणी C,...कीजे...कॉमणी D, अवर न मन रीझै कामनी E । ६ हस्तनी B, हस्तिनी E । ७ चित्रणी BCD, चित्रनी E । ८ नइ BC, नै D, ने E । ९ संखणी BD, सुंखणी C, शंखिनी E । १० लहीजे C, लहीजै DE ।

॥ १७८ ॥ १ बिणि D । २ पदिमणि C, पदमणि D, पदमिन E । ३ नवि E । ४ पउंढउं B, पोढो C, पौढौ E । ५ सेझ D । ६ हसउं BC, हसु D, हसुं E । ७ करउं B, करौँ C, करु DE । ८ रमउ B, रमु CD । ९ रित B, रिति C । A १७५ । B २०९ । C २१५ । D २२१ । E २४९ ।

॥ १७९ ॥ १ चमकइ चित्त मांहि...B, चमकि चित्त माहि...C, चमकै चित्त माहै पदमणी D, वसि नारी चित्तमैं पदमिनी E । २ बलतउं B, बलतो CE, बलतौ DE । ३ जंपै DE । ४ डिली नउं B, डिलीनो C, दीली DE । ५ कहउं B, कहो C, कहौ DE । ६ व्यास BCE, ब्यास D । ७ किहा D, कहाँ E । ८ होइ BC, है DE । ९ पदमणि CD, पदमिनी E । १० जेहणइ B, जेहनै D, किसकै E । ११ होइ BCD, है D । १२ तिस E । १३ आणउ B, आँणो C, आणौ E ।

॥ १८० ॥ १ ठउड B । २ वतावो CE, वतावौ C । ३ जेह BCD, सोइ E । ४...जाइ ल्यावउं...गेह B, जिमि जाइ ल्यावो... C,...जाय ल्याउं पदमणि...D, पदमिण नारि जिहाँ किण होइ E । ५ बलतउं B, वलतो CD, बलतो E । ६ ब्यास D । ७ पयंपै DE । ८ पदिमिणि C, पदमणि D, पदमिण E । ९ लहीजै DE ।

॥ १८१ ॥ १ सिंहल दीपि BC, सीघल दीप D, संघल दीप E । २ अछै DE । ३ पदमणी CD । पदमिनि E । ४ दख्यण C, दखिणि D, दखिण D । ५ दिस E । ६ बिचि D । ७ आडो CE, आडौ D । ८ आवै DE । ९ समुद्र BC, जलद D, जलधि E । १० अथाह D । ११ तिण E । १२ तेहनो CE, तेहनौ D । १३ कोई C, को D । १४ लहइ DE । १५ माह D ।

॥ १८२ ॥ १ साह कहइ... B, साह कहि... C ।...कहे साँभलि...बात D, 'सुणो व्यास!' हजरत कहै बात । २ मुझ BCDE । ३ आगल E । ४ दरीया BCD, दरिया E । ५ पयाल BDE, पयालि C । ६ सबेउ BD, सबऊ C, सबैउ E । ७ काढउ B, काढो C, काढु DE । ८-८ नारि जाइ B, नार जिई C, नारि जाय D, ब्यास नारी E । ९ पदमणी D, पदमिनि E ।

हय-गय-पाखरि[1] सहु सज किया, घोर दमामा[2] नोवत[3] दिया।
वाहरि[4] डेरा दीया[5] सही, लसकर सहुवइ[6] आया वही ॥ १८३ ॥
सिंघल[1] ऊपरि चडीउं[2] साहि,[3] कोपाटोप [4]कीउं पतिसाहि[4]।
पदमिणिसुं मनि अति अभिलाष[5], लसकर[6] लारि सतावीस लाख[6] ॥ १८४ ॥
असि[1] चडि[2] चालिउं[3] आलिम[4] जिसइ[5], दह दिसि देस[6] संकाणा[7] तिसइ[8]।
गयणंगणि[9] बहु ऊडइ[10] रेण, सूर[11] न सिसिहर सूझइ तेण[11] ॥ १८५ ॥
सेषनाग[1] सहि सकइ[2] न भार, आलिम[3] चालिउं[4] हुइ[5] असवार।
घण जिम गाजइ[6] गयवर[7] घणा[8], पार न लाभइ[9] सुभटां तणा[10] ॥ १८६ ॥

[चोथो खण्ड]

॥ कवित्त ॥

असपति[1] कीउं[2] आरंभ, चडवि[3] चंचल दक्षण[4] धर।
पतिसाहि[5] कोपीउ[6], कवण[7] छूटइ[8] सिंघल[9] नर[10]।
दल-वादल[11] पतिसाह[12], जुडीउं[13] संग्राम सुहड भड।
नव लख त्रिगुण[14] तुरंग, सहस सोलह[15] मयगल[16] घड।
सुरिज्ज[17] खेह लोपी गयउं[18], पायालइं[19] वासुगि[20] डुल्यिउं[21]।
चिहुं[22] चक्कराइ[23] संसय[24] पड्यउं, पातिसाहि[25] किसु[26] परि चड्यउं[27] ॥ १८७ ॥

॥ १८३ ॥ १ पाखर DE। २ दमाँमा DE। ३ नोबति DE। ४ वाहिरि DE। ५ दीधा D। ६ लारसइ B, सहुवै D, सहुयै E, A प्रतिमें यह चोपई नहीं है। B २१४। C २२०। D २२६। E २५३।

॥ १८४ ॥ १ सिंहल B, सीहल C, संघल A। २ चढीयउं BC। ३ साह BCE। ४...कीयो पतिसाह BC, ...कीयो...D, दिलीपति रिणवर रिमराह E। ५...स्युं...B, पदमणि...CD, जीतवाद जैत जस हाथ E। ६ जगत जीत विरद है तास E।

॥ १८५ ॥ १ असु BC, अस्व D। २ चढि D। ३ चाल्यउं B, चाल्यो CDE। ४ आलम BE, असपति D। ५ जिसै DE। ६ लोक BCDE। ७ संकाँणी E। ८ जिसै D, तिसै E। ९ गयणंगण B, गयणाँगिण C, गयणागणि D। १० उडइ B, बहू उडइ C, बहु उडी D। ११...ससिहर...BC, पार न रवि तसु सूझै रेणि D, अंबरि भाँण न सूझे तेण E।

॥ १८६ ॥ १ शेश्नाग BC। २ सकै D, सके E। ३ आलम DE। ४ चाल्यउं B, चाल्यो CE, चाल्यौ D। ५ होइ BC, होय D। ६ गाजै D। ७ गयंवर B, गैवर D। ८ घणाँ C। ९ लाभै D। १० तणाँ C, A १८२। B २१६। C २२२। D २२८। E २५६-२५७।

॥ १८७ ॥ १ अस्व° D। २ कीयो B, कीधो C, कींयौ D, कीय E। ३ चढवि B, चढिवि C। ४ दख्यण C, दखिण DE। ५ पातसाह BC, पातिसाह D, दलीपती E। ६ कोपीयउ B, कोपीयो CE, कोपीयौ D। ७ कहाँ E। ८ छटइं B, छुटै DE। ९ सिंहल BC, सीघल D, सिंघल E। १० धर A। ११ गोरी ? A, दलबादल D। १२ पतिसाहि D, रिमराह E। १३ जुडी BCD, भिडण E। १४ तिगुग BC। १५ सोलह BC। १६ संगल B, संघल CD, सिंघल E। १७ सूरज BC, सुरिज D, सूरजि E। १८ लोपवि गई A, लोपी गयो C, लोपी गयौ D, लुकवि गयो E। १९ पायालइ BCD, पयालै D, पयालहि E। २० वासिग BC, वासिग D, वासिंग E। २१ डुडउं B, डुल्यो C, डुडो D, गड्यो E। २२ चउ BC। २२-२४ चौ धराय सासै पडो D, ...पडे E। २५ पातसाह B, पातिसाह CDE। २६ किस B, ... CD। २७ चढ्यो BC, चढ्यौ CD।

॥ चोपई ॥

आलिमसाहि[1] कीउं[2] इलगार[3], साथइँ[4] सवला[5] जोध[6] जुझार[7]।
अखलित[8] गति उलंघी मही[8], समुद्र[9] समीपइँ[10] आव्या[11] वही[12] ॥ १८८ ॥
रण[1]-रसीउं नइ[2] अति[2] रंढाल, [3]आलिमसाह करइ धख चाल[3]।
"बूरी[4] समुद्र करुं[5] थल[6]-खंड, सिंघलदीप[7] करूं[8] सित[9] खंड ॥ १८९ ॥
पकडुं[1] सिंघलपति[2] जीवतउं[3], पदमिणि[4] आणुं[5] तउं[6] हुं[7] हतउं[8]"।
ऐम[9] कही ऊतरीउं[10] साहि[11], लसकर दीधउं[12] ले[13] जल माहि[15] ॥ १९० ॥
"छडे[1] पयाणे[2] जाउं[3] छंडि, सिंघलदीप[4] करउं[5] सित[6] खंडि"।
ऐम[7] हुकम आलिम नउं हूउं[7], लसकर बूडी[8] माहे[9] मूउं[10] ॥ १९१ ॥
आलिम[1] नइ अति[2] चडीउं[3] कोप, [4]कोप तणउं कीधउं आटोप[4] ॥
प्रवहण[5]-नाव घडाव्या[6] नवा, चडीया[7] जोध[8] वली[9] जूझिवा[10] ॥ १९२ ॥
लाख-लाख एकीकउं[1] लहइ,[2] रण-[3]रसीउं कुण[4] वाँसइँ[5] रहइ[6] ॥
आगलि[7] ऐम कहइ वलि धणी, ए वेलाँ[8] छइँ[9] सुभटाँ[10] तणी ॥ १९३ ॥

॥ १८८ ॥ १ आलमसाह BC, आलमसाहि DE। २ कीयो BCDE। ३ अलगार D। ४ साथे BC, साथै CE। ५ सबल BCD, बडा E। ६ योध BC। ७ झूझार BCDE। ८ एलायति…B, एलायति… उलंगी…C, पातसाहि औलंघी मही D, वडे पयाणे लंघी मही E। ९ समद D, समुंद्र E। १० समीपइ C, समीपे B, समीपै DE। ११ आव्या BCE, आयौ D। १२ सही CDE। A १८४। B २१९। C २२५। D २३१। E २५९।

॥ १८९ ॥ १ रिण-रसीयो BCE, रणरसीयो D। २ नै D, आलम E। ३…ढिग…BC,…करै धक…D, पोरस चढि माँडी धक चाल E। ४ बूरउं B, बूरो CDE। ५ करउं B, करो C, करौ D, खिण E। ६ खल-खड BCD, धर-मंड E। ७ सिंहल BC, सीघल D, संघल A। ८ करउ B, करो CE। ९ सत CDE।

॥ १९० ॥ १ पकडउ B, पकडो CE। २ सिंहल BC, सिंघल D, सीघल E। ३ जीवतो CE, जीवतौ E। ४ पदमणि CD, पदमिण E। ५ आँणउ B, आँणो C। ६ तो CE, तौ D। ७ जीत BCD, मै E। ८ हथउ BC, हथौ D, छतो E। ९ इम कही E। १० उतरीयो BCE, उतरीयौ D। ११ साह BCE। १२ लीधो C, दीधी D, दीधो E। १३ लेइ B, लें CE, ते D। १५ माँहि C, माहिँ E।

॥ १९१ ॥ १ छंडै E। २ पियाणे C, पयाँणे D, प्रयाँणै E। ३ जाजो BC, जाजौ D, आयो E। ४ सिंहल BC, सीघल D, शंघल A। ५ करो B, करु D, कीयो E। ६ सितखंड B सतखंड CDE। ७ इमते BC, इंमते D, इमेते E, हुकम हुवउं C, हूवो C, हुवो D, कीयो E, पतिसाह B, पतिसाहि E। ८ बूडण BCDE। ९ लागउं C, लागो CE, लागा D। १० माहि BCD, माहिँ E।

॥ १९२ ॥ १ नइँ B, आलमनै D, तव आलम E। २ मनि BCD, वलि E। ३ चडीयउं B, चडीयो CE, चढियो D। ४…वलि कीधउं टोप B,…तणो बलि कीधो…C,…तणौ कीधौ अटोप D, मुज्झ वयणनो किम हुइ लोप E। ५ प्रहुंवण D। ६ घडाया E। ७ चाड्या BC, चाल्या D, चड्या E। ८ जूथ C। ९ बलि B, बले D, तिणै E। १० झूझिवा BC, झूझवा DE।

॥ १९३ ॥ १ एकीको CD, एकेको E। २ लहइँ B, लहै DE। ३ रिण-रसीयो BC, रसीयौ D, रिण वेला E। ४ किम E। ५ वासइँ BC, वासै D, वाँसै E। ६ रहइँ BC, रहै DE। ७…वलि…B,…कहै बलि D, इम जंपइ ऊभो निज धणी E। ८ वेलाँ BD, वेला AD। ९ छइ BC, छे DE। १० मुजरा E।

लडी-भिडी सिंघल[१] मेलयो[२], माहि[३] जई[४] माझी झेलयो[५]।
चाल्या जोध घणा जूझार[६], पांणी[७] माहि[८] कीउं[९] पइसार[१०] ॥ १९४ ॥
आगलि कहर[१] भमइ[२] भ्रमरीउं,[३] जाणि कि[४] सिंघलि[५]-सुर समरीउं[६]।
[७]ते माहे प्रवहण गिया जिसइ,[७] खंडो-खंड[८] हूआ[९] सहु[१०] तिसइ[११] ॥ १९५ ॥
फरीआदे[१] लागी फरीआदि[२], ऊगारउं[३] आलिम[४] अवलादि[५]।
दरीउं[६] दूठ[७] महा दुरदंत, उदधि[८] तणउं[९] नवि लाभइ[१०] अंत ॥ १९६ ॥
वड-वड[१] सुभट[२] रह्या जल माहि[३], [४]अंबुधि न सकइ को अवगाहि[४]।
पदमिणि[५] नारि पडउं[६] पातालि, [७]आलिम ए तुम्ह छंडउं आलि[७] ॥ १९७ ॥
वलतउं[१] आलिम[२] इणि[३] परि कहइ[४], [५]मो आगलि क्युं दरीउं रहिइ[५]?।
सुभट मूआ ते गई वलाइ[६], [७]अवर घणेरा आणुं जाइ[७] ॥ ॥ १९८ ॥
वरस सहस-[१]इक रहिस्युं[२] इहाँ, विण[३] पदमिणि[४] किम[५] जाउं[६] तिहाँ।
असपति कीधउं[७] वलि[८] आरंभ, तेड्या सुभट[९] घणा सारंभ[९] ॥ १९९ ॥
[१]सुभट सहू संकाणा हीइ,[१] फोकट दरीआ[२] माहे[३] दीइ[४]।
[५]काम-काज नवि सीझइ कोइ,[५] [६]हठीउं आलिम[७] न रहइ[८] तोइ ॥ २०० ॥

॥ १९४ ॥ १ सिंहल BC, सीघल D, सींघल E। २ भेळिज्यो C, भेलज्यो CE, भेलज्यौ D। ३ माहे BD। ४ जाइ BC, जाय D। ५ झेलिज्यो B, झालिजो C, जेलजौ D। ६ झूझार BCD, झूँझार E। ७ पाणी BCD। ८ माँहि BD। ९ कीयउं B, कीयो C, कीयौ D, कीया E। १० पइसारि C, पैसारि D, पयसार E। A १९० । B २२५ । C २३१ । D २३७ । E २६६ ।

॥ १९५ ॥ १ कहइ B, कहि C, कहै D, एक E। २ भमे C, भमै D, भमें E। ३ भमरीयउं B, भमरीयो CE, भमरीयौ D। ४ क BC, जाँणि क D। ५ सिंहल BC, सिंघल D, सीघल E। ६ मेल्हीयउं B, मेलीयो C, मेल्हीयौ D, मेल्हीयो E। ७…माँहिं गया प्रवहण… B,…माँहि गया प्रवहण… C, …महे गया प्रह्रुवण जिसै D,…माँहि प्रह्रुवण पहुता जिसै E। ८ खंडि B। ९ हुवा BCDE। १० सवि E। ११ तिसै DE।

॥ १९६ ॥ १ फरीयादे BCDE। २ फरीयाद BCE। ३ ऊगारो BCE, ऊगारौ D। ४ आलम DE। ५ अवलाद E। ६ दरीयउं B, दरीयो C, दरीया DE। ७ दुद्द BCD। ८ जलद BC। ९ तणो CE, तणौ D। १० लाभै D, लाभे E।

॥ १९७ ॥ १ वड-वड BC। २ खान E। ३ माँहि B। ४ अबुंध…कोउ अवगाह BC…न सकै को…D, …कोई न सकै अवगाहिं D। ५ पदिमिणि C, पदमणि D, पदमिण E। ६ पडो CE, पडौ D। ७…तुह्म ढूंडो…C, आलम…छंडो…D, आलम छांडो ए हठ आलि E।

॥ १९८ ॥ १ वलतउ B, वलतो C, वलतौ D, वलता E। २ आलम BDE। ३ इण E। ४ कहै DE। ५…किम…BC, मुझ…किम दरीया रहै D, हम आगै दरीया क्युं रहै E। ६…मूवा…वलाइ B, मूवा …C,…मूवा तौ…D, सुभट मुयैका क्या पछताव E। ७…घणा आणउं बोलाइ B,…घणा आणो C, …घणा आणौ बेजाय D, दिल्लीका घर भी दरीयावौं E।

॥ १९९ ॥ १…एक लगि BCDE। २ रहेस्यउं B, रहेस्यों C, रहिसां D, रहैंगे E। ३ विणि D। ४ पदमणि D, पदमिनी E। ५ मै E। ६ जावै E। ७ कीधो C, कीधौ D, चिंत्यो E। ८ अति BCD। ९ सुहड घणा गज खंभ E।

॥ २०० ॥ १…हीयइ BC,… सहुं संकाँणा हीयै D, लसकर हू संकाणा हीयै E। २ दरिया BCDE। ३ माहिं CDE। ४ दीयइ BC, दीयै DE। ५…सीझै…D, तिल-इक कारिज सरै न कोइ E। ६ हठीयउं BCE, हठयौ D। ७ आलम BDE। ८ रहै DE। A १९६ । B २३१ । C २३७ । D २४३ । E २७१ ।

आलिम[1] मनि[2] अति अमरस[3] घणउ[4], पार न पांमइ[5] दरीआ[6] तणउ[7] ।
खाण[8] पीण[9] निद्रा परिहरी,[10] [11]असपति मनि हूई चिंता खरी[11] ॥ २०१ ॥

॥ कवित्त ॥

[1]कोपि चडिउ[2] सुलिताँण[3], खांण[4] अर[5] पांन[6] न भावइ[7] ।
[8]ला इतमार ज नार[8] दार[9] पदमिणि[10] दिखलावइ[11] ।
[12]करि सिलांम वहु दुवाहि,[12] [13]खोदि यन जो इस ऊपरि[13] ।
[14]सिंघल दीपि सुमुद्र[14] [15]अछइ, पदमिणी घराघरि[15] ।
[16]हुसियार हू अरदास सुणि,[16] [17]एक अद्ध पेखाँ जहाँ[17] ।
[18]पेखवि समुद्र सासइ पडिउं,[18] [19]कुण खुदाइ खूदे कहाँ[19] ॥ २०२ ॥
सुभट[1] घणा सज कीधा वली,[2] नाव[3]-इँ-नाव घणी[4] सांकली[5] ।
इणि[6] परि आलिम[7] ऊभउ[8] कहइ,[9] "लाख तुरी [10]जाई ते लहइ[11] ॥ २०३ ॥
सिंघल[1] मेलइ[2] जे उंवराउं,[3] विवणउं[4] तेहनइ करुं पसाउं ।
माहि[5] जई जे[6] माझी[7] हणइ,[8] त्रिगुण[9] पसाउं[10] करुं[11] तेहनइ ॥ २०४ ॥

॥२०१॥ १ आलम BDE। २ मन D। ३ अमरष E। ४ घणो CE, घणौ D। ५ पामइ BD, पामै D, पाँमै E। ६ दरीया BCDE। ७ तणौ D, तणो CE। ८ खाँणा C, खाँन DE। ९ आव B, अनइ C, पाँन DE। १० परहरी BCD। ११ असपति हूई…BC, असपति…D,… चिंता धरी E।

इसके पश्चात् BC और D प्रतियोंमें यह दोहा है–

B. चिंता निद्रा परिहरइ , चिंता लेजाइ सुख ।
C. „ „ परहरइ , „ „ „ ।
D. „ „ पारहरै , „ लेजाय „ ।
B. चिंता अहनिशि तन दहइ, चिंता फेडइ सुख ॥
C. „ अहिनिशि तन दहति, „ „ „ ॥
D. „ „ „ दहै , „ फँडै फुक्क ॥

A और E प्रतियोंमें यह दोहा नहीं है ।

॥२०२॥ १ कोप BCE। २ चड्यउ BD, चड्यो C, चड्यौ E। ३ सुलतान B, सुलतानि C, सुलताँन E। ४ खान B, खाण C, खाँन DE। ५ अरु DE। ६ पान BC। ७ भावै DE। ८ 'अबे याराँ! D करो निहाल BC,…करू D, तिसकुं करहु निहाल E। ९ जो नार BC, जु नार D, जु पै नार E। १० पदमणि D, पदमिन E। ११ दिखलावै DE। १२…सलाम…धुंड चाहि B,…सलाँम बहु धुं…C,…सलाँम हुँ…D, सुनत हुकम सब सूर E। १३ खोदि जल करो दरीया दूर B, खोदि जल करो दरीया दूरि C, खोदि जल करि दरियादर D, प्रबल प्रगटे सूरातन E। १४ शंघल°…D, उलटे दल असमाँन E। १५ अछै…C, अछै पदमणी D, मनहुँ वन वन सिर रावन E। १६…हू…B,…हू अरदासि…CD, हुलसे सुभट करि करि हलाँ E। १७… अध न पेखइ जिहाँ BC, …अध न पेखै जिहाँ D, संमुँद्र तट आए जब्बहि C। १८…सासउ पडइ B,…साँसै पडौ D, दरीयव छैल विपवि दहल E। १९…खोदइ…BC,…खोदै जिहाँ D, तन गुमान छूटहि तवहि E।

॥२०३॥ १ शुभट B। २ वली D। ३ नावै° D, नाव° E। ४ घाली E। ५ शांकली B। ६ इण परि BE एण° C। ७ आलम BDE। ८ ऊभौ C, ऊभाँ D, ऊभा E। ९ कहै D। १० जायइ B, जाय D, जाअै E। ११ लहै DE। A १९९। B २३५। C २४१। D २४८। E २७८।

॥२०४॥ १ संगल B, शिंघल DE। २ भेले C, मेलै DE। ३ उमरउं B, ऊबरो C, उमराव DE। ४ विमण पसाउ तेहनइ करउं B, विमणो पसाउ तेह नइ करो C, विमण पसाव तेहनै कराव D, सुभट लहै ते दूण पसाव E। ५ माहे BD, माहिँ C। ६ जाइ BCD। ७-७ माझी नइ BC, माझीने D पकडै लहै E। ८ हणै D, सिरदार E। ९ तिगुण BC, तिवण E। १० पसाव D। ११ सही BCD। १२ ते लहइ BC, तसु तणै D। इंकार E।

पेसी आणइ जे पदमिणी, घर वहुली नउं हुइ ते धणी ।
लालच लोभ दिखाडइ घणा, मन्न मनावइ सुभटाँ तणाँ ॥ २०५ ॥
पदमिणि नउं अधिकउं अभिलाप, सज्ज कीया सुभटाँ नव लाख ।
सुभट सहू मनि शंका करइँ, आलिमथी वलि अधिका डरइँ ॥ २०६ ॥
वाघ अनइ दो तडिनउं न्याइ, लसकरीआँ नइ पुहनउ आइ ।
जिणि परि तिणि परि मरिवउ सही, सुभट सहू आव्या सांमही ॥ २०७ ॥
सुभटे छानउं तेड्यउं व्यास, "रे पापी ! तइँ घाल्लिउं पास ।
कुमति किसी तइँ कीधी एह, सुभट सहूनउं कीधउं छेह ॥ २०८ ॥
हिव तेइँ कोई हुसी उपाइ, जिणथी आलिम निज घरि जाइ" ।
व्यास कहइ- "निसुणउं वीनती, सहुइ सुभट होवउं इकं मती ॥ २०९ ॥

॥२०५॥ १ पइसी···B, पइसी···पदमणी C, ऐसी आणेजे पदमणी D, आणीछै मुझनें··· E। २ होइते···B, ···वोहलानो···C,···बहुल्लानो होवै धणी D, तेह करू दक्षिण दिस धणी E। ३ लालिच BC। ४ एम E। ५ दिखाडै D, पैमारे E। ६ धणं E। ७ मान···BC, मंत्र न मानै···D, मन नवि मानै सुहडाँ तणं E।

॥२०६॥ १ पदमणि कउं···B, पदिमिणिकौ अधिको···C, पदमणिनो अधिको···D, पातिसाह मनि पदमिणि चाह E। २ सज कीधा सुभट···BC, सुभट सजे कीया···D, सुहड विचारे निज कुल राह E। ३···संका···BC,···संक्या करै D, समुद्र थकी मृत संका धरे E। ४ आलमथी मनि···B,···मनि ···C, आलमथी मनि···डरै D, आलमथी पणि···डरै E।

॥२०७॥ १ वाघ D। २ अनिइ C, अनै DE। ३ नट नउं B, दोतडिनो CE, दोतडिनै D। ४ न्याय E। ५ लसकरीयाँ BCDE। ६ नै D, ने E। ७ पुहूतो C, पहुतो DE। ८ आय D। ९-१० जिण° तिण° BE। ११ मरीवो C, मरिवो D। १२ धाया BCD। १३ सामुही B। ११-१२ यह अंतिम पाद E प्रतिमें नहीं है ।

॥ २०८ ॥ १ सुभटइ C। २ छाँनो CD। ३ तेड्यो C, तेडौ D.। ४ व्यास D। ५ तै D। ६ घाल्यो C, घाल्यौ D। ७···कीधौ···C। ८ सफल सुभटनी कीधी छेह D, यह चोपई E प्रतिमें नहीं है ।
इस चोपईके पश्चात् BCD प्रतियोंमें निम्न लिखित दोहे हैं-

B. वचन विमासी बोलीए , ए पंडित नउं न्याइ ।
C. ,, विमासी बोलीइ , ए पंडितनो न्याय ।
D. वचन विमासी बोलीयो , ,, ,, ,, ,, ।
B. अविमास्या कार्य करइ , मूरीख ते नर थाइ ॥
C. अणविमासी कार्य जे कहि , ,, ,, ,, थाय ॥
D. अविमासी कारिज करै , ,, ,, ,, थाइ ॥
२, B. लघु बालक पुहवी धणी , ए विहुं एक सुहाउ ।
C. ,, ,, ,, ,, ,, ,, वेहू ,, ,, ।
D. ,, ,, पोहोवी ,, , ,, विहुं ,, सहाउ ।
B. रीढ न छंडइ आपणी , भावइ ते घर जाउ ॥
C. रीढ ,, छाडि ,, , ,, ,, घरि ,, ॥
D. रंढ नवि छंडै ,, , भावै जौ घर ,, ॥
A और E प्रतियोंमें ये दोहे नहीं हैं ।

॥२०९॥ १···ते···होइ···B,···ते···होइ उपाउ C, हिव पहवो कोइ करो उपाइ E। २ जिणि D, जिण परि E। ३ आलम BDE। ४ फिरि C, पाछो D। ५ जाय D। ६ व्यासि C, व्यास D। ७ कहै DE। ८ निसुणो CE, निसुणौ D। ९ बीनती E। १० सहू BCDE। ११ हुवउ D, हूवो C, होवो D, होवो E। १२ एक BCDE। A २०५ । B २४४ । C २४८ । D २४८ । E २०२ ॥

हिकमति[1] हेक[2] हलावाँ[3] नवी, [4]व्यासइँ साची मती[5] सीखवी ।
सहस एक साकतिसुं[6] तुरी, आधा[6] आणउं[7] गज-पाखरी ॥ २१० ॥
पहिरावउं[1] सोवन सिणगार[2], कोडि एक आणउं[3] दीनार ।
नाव भरावउं[4] बहु नव नवी, पट्टकूल बहु ऊपरि ठवी ॥ २११ ॥
कंचण[1]-कलस घणा सिरि[2] ठवउं[3], अण दीठा[4] नर इम[5] सीखवउ[6] ।
'सिंघल[7] पति मेल्हउं[8] छइ[9] डंड[10], [11]आलिम! अवकइ[12] मुझ नइ[13] छंडि[14] ॥ २१२ ॥
नाक[1]-नमणि[2] मइँ[3] कीधी एह, हुं[4] छुं[5] तुम्हनी[6] पगनी खेह' ।
ऍम[7] कही राखउं[8] अभिमाँन[9], जिम [10]वाहुडि जायइ[11] सुलिताँन[12]" ॥ २१३ ॥
अवर उपाइ[1] न दीसइ[2] कोइ[3], हरषित[4] सुभट[5] हूआ[6] सहु कोइ ।
रातो[7]-राति कीया[8] परपंच[9], छांना[10] मेल्या[11] सगला संच ॥ २१४ ॥
आलिम[1] साहि न जाणइ[2] वाति[3], आविउ[4] डंड[5] हूउं[6] परभात[7] ।
जागिउं[8] आलिम[9] जगती[10]-धणी, मन माहे थी[11] चिंता घणी ॥ २१५ ॥
आगलि[1] वाविउं वाहणि जिसइ[1], जलधि[2] माहि ते दीठा तिसइ[2] ।
साहिब कहइ "किसुं छइ एह?" तव ते[4] व्यास कहइ ससनेह[4] ॥ २१६ ॥

॥ २१० ॥ १ हीकमति BC, हुकमति D। २ एक्क BCDE। ३ चलावउं B, चलावो C, चलाँउ D, चलावी E। ४ व्यासइ BC, व्यासे D, व्यासै E। ५ मुली D। ६ °रथुं B, सागतिस्यु C, साखतिसुं, °सुं E। ६ पाँचसइ BC, पाँचसह BC, पाँचसै DE। ७ आणो C, आणौ D आँणो E।

॥ २११ ॥ १ पहिरावो CE, पहिरवौ D। २ शोवर शिणगार D, सिंणगार E। ३ आणो C, आँणो DE। ४ भरावी CE, भरावौ D।

॥ २१२ ॥ १ कंचन E। २ शिरि B, सिर E। ३ ठके C, ठवौ DE। ४ जाण्याँ BC, जाँण्या D, सिंधा E। ५ °नइ BC, नै DE। ६ शीखवउ B, सीखवो C, सीखवौ DE। ७ सिंहल° BC, सीघल° D, सिंघल° E। ८ मेल्ह B, मेल्यो C, मेल्हे D, मूंकी E। ९ छै D, ए E। १० दंड BCD, पेसे E। ११ आलम DE। १२ अवकइ B, अवकि C, अवकै D, मुझकुं E। १३ मुझनइं BC, °नै D, म दियो E। १४ रेस E।

॥ २१३ ॥ १ नाकि C। २ नमणं C। ३ मइ BC, मै DE। ४ हू CD। ५ छउं BC, छु DE। ६ तुमारा C, आलम DE। ७ इम C। ८ राखो C, राखौ D, राख्यौ E। ९ अभिमान B। १० वाहुडि B। ११ जाइ BC, जाए D, जायै E। १२ सुलताण B, सुलताँण C, सुलताँन E।

॥ २१४ ॥ १ उपाव B, उपाय CDE। २ दीसै DE। ३ कोय E। ४, ५, ६ साँभलि रीझ्या मनि···E। ७ रातोराति D। ८ करी E। ९ प्रपंच B। १० छाना CD। ११ मेल्हा D।

॥ २१५ ॥ १ आलिमसाह BC, आलमसाहि D। २ जाणइं BC, जाँणै D। ३ बात D। ४ आव्या BC, आया D। ५ दंड B। ६ हूयो C, हुवै D। ७ परभाति D। ८ जाग्यो C, जागो D। ९ आलम D। १० जगनो CD। ११ °माहि C, °माहे D। यह चोपई E प्रतिमें नहीं है A २११। B २५०। C २५४। D २६४॥

॥ २१६ ॥ १ वाहिरि...A, ...आव्या...जिसइँ B, ...वाहण...C, ...आया वाहण जिसै D, तितरे प्रवहण आया जेह E। २ दरीया...तिसइँ B, दरीया माहे दीठा तेह D, दरीया माहिं दीठा तेह E। ३ साहबजी कहइँ किस्युं छइ एह B, साहबजी कहि किसु छइ एह C, साहबजी'र कहे किसु एह D, साह वजीर कहै क्या एह E। ४ [illegible]...B, वलतो...C, वलतो व्यास कहै...D, वलता...कहै ससनेह E।

"सॉंमि[1] सकइ[2] तउ[3] सिंघल[4] तणी, परिघल[5] आवी पहिरामणी[5]"।
झलकईं[6] तोरण चूनी चंग, ऊपरि कंचण[7]-कलस उतंग ॥ २१७ ॥

फरहर नेजा धज फरहरईं[1], उदधि[2] माहि[3] [4]आवईं इणि परईं[5]।
आलिम[6] मनि[7] हूउ[8] आणंद, देखी प्रवहण-वाहण[9]-वृंद ॥ २१८ ॥

ते पिण[1] आव्या[2] वाहरि[3] तरी[3], [4]साकति [5]सगली आगलि करी[6]।
असि[7] नाँखी नइ[8] आव्या[9] धाइ[10], पातिसाहि[11] नइ[12] लागा[13] पाइ[14] ॥ २१९ ॥

डंड-डोर हय-हाथी घणा[1], सेवक[2] आव्या सिंघल[3] तणा[4]।
विनय[5] करी भापइ[6] वीनती[7], "[8]तुं मोटउ छइ डिल्लीपती[8] ॥ २२० ॥

सिंघल[1]पति तुम्ह[2] पगनी खेह, तिणि[3] महिमाँनी[4] मेल्ही[5] एह।
[6]ए चूनउ होसी तुम्ह पॉनि[6], मया करी हिवकइ[7] दिउ मॉंन ॥ २२१ ॥

"[1]तुं मोटउ जाणे जगदीस[1], नमताँसुं[2] न[3] करउ[3] हिव[3] रीस"।
विनय[4]-[5]वचन राजा[6] रीझीउ[7], सिंघलपति[8] नइ[9] सिरिपाउ[10] दीउं[11] ॥ २२२ ॥

पहिराव्या[1] सगला परधाँन,[2] मोटाँ नइ[3] परि दीधुं[4] मॉंन[5]।
सिंघलपति[6] [7]युं जे मेल्हउं[8], ते सुभटाँ नइ[9] विहची [10]दीउ ॥ २२३ ॥

॥२१७॥ १ स्वामि BCE, सामि D। २ सकईं B, सकै, DE। ३ तो BCDE। ४ सिंहल BC, सिघल धणी DE। ५...पहिरावणी BD, मेल्ही पेस एह हजरत भणी E। ६ झलकइ BC, झलकत D, झलकै E। ७ कंचन D।

॥२१८॥ १ फरहरै D, फरहरें E। दरिया BCD, सागर E। ३ विचि D, विचि E। ४ आवइ BC, आवै DE। ५ °परि C, °परै DE। ६ आलम DE। ७ मन E। ८ हूवउ B। हुवा C, हुयो E। ९ वाहण-वृंद D।

॥२१९॥ १ परि B, पणि CD, तितरै E। २ आया DE। ३ बहिरि C, वाहण तिरी D, वाहण तिरी E। ४ साँकलि B, साखति D, सागत E। ५ शगली B, सघली E। ६ धरी E। ७ अस B, खडग CD। ८ नाखि नइ B, नाखइ नइ C, नाखिने D, नाँखिनै E। ९ आया DE। १० धाय D। ११ पातसाह BC, पातिसाह E। १२ नइँ B, नै D, के E। १३ लागइँ BC। १४ पाय BE।

॥२२०॥ १ घणाँ BCD। २ आव्याँ B, आया D। ३ सिंहल BC, सिंघल D। ४ तणाँ B। ५ बिनै D। ६ माषइँ B, भाषै D। ७ वीनती D। ८ तउ (तूँ C) छइं मोटो BC, तुम्ह छो मोटा साहिब दिलीपती D, तुम्ह हो मोटा दिलीपती E। प्रथम अर्द्धाली E प्रतिमें नहीं है।

॥२२१॥ १ संगल° B, संघल° C, सीघल° D, सिघल° E। २ तुम C। ३ तिण D। ४ महिमानी B। ५ बोली BC, भेजी DE। ६...पान B, ...हूँ चूनो...तुम पान C, ...तुम पाँन D, यहुं चूना हैगा तुम पाँन E। ७...द्यो मान B, हिवकि द्यो मान C, हिवै दौ मुझि मान D, लीजै हग माँन E। A २१७। B २५६। C २६०। D २७०। E ३०७-३०८।

॥२२२॥ १...मोटो...C, तू मोटो...D, तुम हो दुनियाँ सिर जगदीस E। २ °स्युं B, नमतासु D, °सुं CE। ३ हिव केही B, हिवि केही C, हिवै केही D। ४ बिनै D। ५ बचन D। ६ आलम DE। ७ रंजीयो BC, रंजीयौ D, रीझीयो E। ८-९ °ना A, सिंहल पति नइँ B, सिंहल पति...C, सिघलजी नै D, सिंघल हुं E। १० सिरिपा A, सिरपाउ B, सिरपाऊ C, सिरपाव D, सिरपावज E। ११ दीयो CE, दीयौ D।

॥२२३॥ १ पहिराया DE। २ परधान BCD। ३ नाँ A, नी BCDE। ४ दीधउ B। ५ मान BCD। ६ सिंहल° BC, सीघल D, सिंघल E। ७ जेइ जे B, जेइ जि C, जे जे DE। ८ मेल्हउं A, मेल्हीयो BCDE। ९ °नाँ A, °नां B, °नै D, [illegible] E। १० [illegible] A, दीयो BCDE।

[१]मान मुहतसुं[२] मेल्ह्या[३] तेह, सिंघलपतिसुं[४] कीउ सनेह ।
[६]व्यास तणी सहु समरी वात[६], [७]मेली धीगडि धातइँ-धात[७] ॥ २२४ ॥

॥ दूहा ॥

[जेह नइ[१] घटि [२]बहु [३]बुद्धि वसइ[४], [५]ते सारइ सहु काम[५] ।
[६]भंजइ गंजइ वलि घडइ[६], [७]वलि आणइ निज ठाम[७] ॥ २२५ ॥]
कूच [१]कीउ असपति[१] पतिसाहि[२], [३]आविउ डिल्लीपुरि[४] निज माहि[५] ।
ठोडि[६]-ठोडि[६] गूडी ऊछली, गोखि[७]-गोखि[७] बहु नारी मिली ॥ २२६ ॥

॥ कवित्त ॥

मिलीया[१] मीर मलिक[२], साहिजादा हिंदू[३] सहि ।
[४]कहाँ सु रे पदमिणी[५], खारि [६]खाधउं लसकर सहि ।
राघव जंपइ[७] इसउं[८], "कहिउं[९] हमाँरउं[१०] कीजइ[११] ।
आणउं[१२] माल बहुत्त[१३], साहि[१४] पाछउं[१५] वालीजइ[१६]" ।
अछइ[१७] लाछि[१८] अरदास[१९] सुणि, असिपति डंड भराईउं[२०] ।
सुलिताँण[२१] ताँम[२२] सब[२३] झाइ[२३] करि, बाहुडि डिल्ली[२४] आईउं[२५] ॥ २२७ ॥

॥ २२४ ॥ १ माँन DE । २ महुतस्युं B, °स्युं C, महतसुं D, महुतसुं E । ३ मेल्या C, मेल्हा DE । ४ सिंहलपतिस्युं B, संघल C, सीघल° D, सिंघल° E । ५ कीयउं B, कीयो CD, करी E । ६ व्यास°…बात D, व्यास तणी पर सुबरी वात E । ७…धातो-धात B,…धाते धात C, मेली जिम-तिम धातौ-ध्रात D, जिम-तिम मेली धाते-धात E ।

॥ २२५ ॥ १ जिहनइ BC, जेहनै D, ज्याँ E । २-३ बुद्धि बहु BD, बुधि बहु C, बहुली बुधि E । ४ वसइ B, बसै D । ५…बहु…C,…सारै…काँम D, नीत रीत परिणाम E । ६ भंजि गंजि…C, भंजै गंजै बलि घडै D, घडि भंजै, भाँजै घडै E । ७…ठामि C, बलि आणै…ठामि D, सकल सुधारै काँम E । A प्रतिमें यह दोहा नहीं है ।

॥ २२६ ॥ १ कीयउं B, कीयो C, कीयौ D । २ पतिसाह B, पतसाह C, पतिसाहि D । ३ आव्यउं B, आव्यो C, आयौ D । ४ डिलीपुर C, दिलीपती D । ५ निज माँहि BC, निज माहि D । ६ ठउंडि-ठउंडि B, ठोडि-ठोडि C, ठाँमि-ठाँमि D । ७ गउंखि-गउंखि B, गोखि-गोखि CD । E प्रतिमें यह चोपई नहीं है । A २२६ । B २६१ । C २६५ । D २७६ ।

॥ २२७ ॥ १ मिलीमा C । २ मिलक D । ३ हींदूं D । ४ काहाँ C, काहा D । ५ पदमणी D । ६ खाधो C, खाधौ D । ७ जंपै D । ८ इसु D । ९ कह्यूउ B, कह्यो C, कहीयौ D । १० हमारउ B, हमारो C, हमाँरौ D । ११ कीजइँ B, कीजै D । १२ आणो C, आणौ D । १३ बहूत C । १४ साह BC । १५ पाछो C, पाछौ CD । १६ वालीजइँ B, बालीजै D । १७ अछै D । १८ पेस BCD । १९ अरदासि D । २० भराइयउं B, भराइयो C, भरावीयौ D । २१ सुरिताँण A, सुलताण B, सुलताणि C, सुरताण D । २२ ताम BD । २३ भूलाइ करि BCD । २४ दिल्ली B, डिली C, दीली D । २५ आइयउ B, आईयो C, आईयौ D । E प्रतिमें यह चोपई नहीं है । A २२२ । B २६२ । C २६६ । D २७० ।

[पाँचमो खण्ड]

॥ चोपई ॥

असिपति आविउ[१] निज पुरि[२] जिसइ[३], ठोडि-ठोडि[४] नर भापइँ[५] तिसइ[६] ।
पदमिणि[७] नारि [८]पखइँ पतिसाह, [९]किम [१०]आविउ [११]विण कीइ[१२] विवाह[१३] ॥ २२८ ॥
आलिमसाहि[१] [२]हतउ आकरउ[३], [४]पिण हिव[५] सरल हूउ[६] पाधरउ[७] ।
विण[८] परणी[९] आविउ[१०] पदमिणी[११], ठोडि-ठोडि[१२] भापइँ[१३] काँमिणी[१४] ॥ २२९ ॥
आलिम[१] आविउ[२] निज आवासि[३], लेइ[४] शस्त्र महि गयउ खवास[४] ।
माहि[५] मेल्हि ते[६] वलीउ[७] जिसइ[८], वडकणि[९] बीबी बोलइ[१०] तिसइ[११] ॥ २३० ॥
"पातिसाहि[१] परणी पदमिणी[२], ते[३] दिखलावउ[४] अब हम भणी[५] ।
जात्तकराँ[६] जोवाँ[७] दीदार, निजरि[८] निहालाँ[९] हम[१०] इक[११] वार ॥ २३१ ॥
जसु[१] घरि पदमिणि[२] नही दोइ च्यार[३], सगलउ[४] सूनउ तसु संसार[४] ।
तेह[५] तणी सुलिताँणी किसी[५]? जेहसुं पदमिणि न रमइ हसी[६] ॥ २३२ ॥
पातिसाहि[१] हिव[२] पदमिणि[३] पखे[४], ठालउ[५] आयउ[६] हुइ[७] घरि रखे" ।
बीबी विलखउं[८] कीउ[९] खवास[१०], आवी[११] पुहतउ[१२] आलिम[१३] पासि[१४] ॥ २३३ ॥

॥ २२८ ॥ १ आव्यउ B, आयो C, आयौ D, आया E। २ निज तखतइँ BDE, निज तखतइ C। ३ जिसइँ B, तिसइ C, तिसै D, जिसै E। ४ ठउडि-ठउडि BC, ठामि-ठामि D, ठोडि-ठोडि E। ५ भापइ C, भाखै DE। ६ तिसइँ BE, जिसइ C, इसइ D। ७ पदिमिणि C, पदमणि D, पदमिण E। ८ पखइ C, पखै D, सरिसै E। ९ क्युं E। १० आयउ B, आयो C, आयौ D, आए E। ११ विणि D, विनुं E। १२ कीयइ BC, कीया D, कीधे E। १३ ब्याह E।

॥ २२९ ॥ १ आलिमसाह B, आलमसाह CE, आलमसाहि D। २ हुतो C, हुतौ D, हुते E। ३ आकरो C, आकरौ D, आकरे E। ४ पिण C, पणि DE। ५ हिवि C, हिवै D, अबकै E। ६ हवौ C, हुवो D, हुयै E। ७ पाधरो C, पाधरौ D, पाधरे E। ८ विण D, विनुं E। ९ परण्या E। १० आव्यउ B, आव्यो C, आयो D, आयै E। ११ पदमणी D, पदमिनी E। १२ ठउडि-ठउडि B, ठोडि-ठोडि C, ठामि-ठामि D, ठाँम-ठाँम E। १३ भाषि C, भाखै DE। १४ कामिणी B, काँमनी D, काँमनी E।

॥ २३० ॥ १ आलम BDE। २ आव्यउ B, आव्यो C, आयौ D, पहुंता E। ३ आवास BE, आव्यासि C। ४ शस्त्र लेईं गयो माहि खवास B, सस्त्र लेईं गयो माँहि खवास C, ससत्र लेइ गयो माहे खवास D, खड्ग छुडायो आइ खवास E। ५ माहे D। ६ नइ BE, मेलि नइ C, मुकीनै D। ७ वलीयउ B, वलीयो C, बलीयो D, वलियौ E। ८ जिसइँ B। ९ वडकण BCD, बडकत E। १० बोलै D, बोली E। ११ तिसइँ B, तिसै DE।

॥ २३१ ॥ १ पतिसाह CE। २ पदमणी D। ३ ति B, सो E। ४ दिखलावो CE। ५ तणी D। ६ जातिकरा C, जातकरा D, जातिकराँ E। ७ देखाँ BCDE। ८ नजरि B, नजर C। ९ निहालउं B, निहालाँ CDE। १० हुक BCDE। ११ एक वार BCD।

॥ २३२ ॥ १ जस B। २ पदमणि D, पदमिन E। ३ दोइ-च्यारि BCD, दुइ च्यार E। ४ सब ही ऊजड तसु संसार BC, अब ही ऊजड तसु घर बार C, है तिसका कैसा अवतार D। ५...सुलताणी ...B, अब तेरी पतिसाही किसी DE। ६ जेहस्युं...रमइँ...B, जेहस्यु...C, जेहस्यो पदमणि D, जे पदमनि सुन-सुन में हसी E।

॥ २३३ ॥ १ पातसाह BCE, पातिसाह D। २ अबे BE, अब C, आप D। ३ पदमणि D। ४ पखइ C, पखै D। ५ ठालो BCDE। ६ आयो BCDE। ७ होइ BCDE। ८ बिलखो CDE। ९ कीयो BCDE। १० खवास C। ११ आवि D। १२ पहुंतो D। १३ आलम BDE। १४ पास E। A २२८। B २६७। C २७१। D १८२। E ३२१

[1]वात सहू सविवेकी कही[1], असपति[2] रीस हीया[3] महि ग्रही[4] ।
आलिम[5] मंडिउ[6] अधिक अभ्यास[7], [8]ततखिणि तेडिउ वलि ते व्यास[8] ॥ २३४ ॥
"सिंघलदीप[1] [2]पखे पदमिणी[3], [4]वले किहाँ छइ कहि मुझ भणी[4]" ।
[5]व्यास कहइ- "संभलि सुलिताँण[5], [6]इक वलि पदमिणिनुं अहिठाँण[6] ॥ २३५ ॥
[1]चिंहु[1] दिसि[2] चविउ[3] गढ चीतोड[4], वींझाचल[5] [6]महि विसमइ[7] ठोडि[8] ।
रतनसेन राजा रंढाल[9], [10]कलह करूर महा कंधाल[10] ॥ २३६ ॥
तसु घरि नारि अछइ[1] पदमिणी[2], [3]सेषनाग सिरि जिम हुइ मणी[3] ।
[4]लेई न सकइ कोई तेह[4], तिणि[5] कारणि सुं[6] [7]भाखुं 'एह"[7] ॥ २३७ ॥
साह[1] कहइ[2]-"संभलि[3] हो[4] बंभ,[5] एवडुउ[6] फोकट[7] कीउ[8] आरंभ[9] ।
बीजी[10] वात सहू हिव तिजउ[10], गढ चीतोड[11] तणउ[12] सुं[13] गजउ[14] ॥ २३८
ऊभा-[1]ऊभि लीउं[2] पदमिणी, [3]जीवतउ पकडुं गढनउ धणी[3]" ।
[4]सबल सेन ले आलिम चडिउ[4], [5]धर धूजी वासिग धडहडिउ[5] ॥ २३९ ॥

॥ २३४ ॥ इसके पूर्व निम्नलिखित चोपई BCDE प्रतियोंमें क्षेपक रूपमें मिलती है–

B "पातिसाह जीवउ कोडि वरीस , बीबी हासा मिसि करि रीस ।
C पातसाह जीवो „ „ , „ „ „ कीधी „ ।
D पातिसाहि जीवौ . „ वरीस , „ हासौं „ „ „ ।
E हजरत जीवो „ वरीस , „ हमसुं कीन्ही „ ।
B हासा मिसि मुझ कहीया घणाँ , नाजक बोल पदमिणी तणाँ ।
C „ „ „ „ घणा , नाजिक „ पदमणि तणा ।
D „ मिस मुखि „ „ , नजक „ पदमिणी तणौं ।
E „ मिसि घणा कह्या „ , जोसा पदमिन नारी तणा ।

१ वात…सविवेकी D, नगर वात पणि सगली लही E । २ असुपति B । ३ हीया माहि BE, हीया माँहि C, °मै D । ४ गृही BCDE । ५ आलम DE । ६ माड्यउ B, माड्यो C, माडौ D, माँड्यो E । ७ प्रयास E । ८ ततखिण तेडाव्यो ते व्यास B, ततिखिण तेडाव्यो ते व्यास C, ततखिण तेडायो ते व्यास D, तेडायो वलि राघव-व्यास E ।
सूचनिका– इसके नीचे एक कवित है, देखो सं० २४० ।

॥ २३५ ॥ १ सिंघल° BCD, सींघल E । २ पखइ BCD, पखें E । ३ पदमिनी E । ४ बहुरि किहाँ बे कहि मुझ भणी BD, वहू…C, कहि वे व्यास कहाँ तें सुनी E । ५…भणई…सुलताण B, …भणई…C, जीवै हजरत इस दुनियाँन E । ६ एक वले पदमिणि अहि ठाण BD, एक वले पदमणि अहि ठाण C, है पदमिन एक हींदूस्थान E ।

॥ २३६ ॥ १ च्यिहू C, च्यिहु E । २ च्यिक E । ३ चावो CE । ४ चीत्रोड BCD । ५ वींझाचल A, वींझाचल B । ६ माँहि C, मै E । ७ विसमी BCDE । ८ ठउडि B, ठोड E । ९ रिणधीर E । १०…कुद्दाल BCD, रजवट सिरै चढावै नीर E ।

॥ २३७ ॥ १ अछै E । २ पदमिनी E । ३…सोहइ जिम…BD, सेष-सीस जिम सोहइ मणी C, रजवट सिरै चढावै नीर E । ४…तिहाँ BCD, ले न सकीजै किण ही तिहाँ E । ५ तिण BDE । ६ °स्युं BCDE । ७ भाषउं BD, भाषों C, कहीयै E । ८ जिहाँ BCB ।

॥ २३८ ॥ १ साहि D । २ कहइँ B, कहि C, कहै DE । ३ साँभलि DE । ४ वे E । ५ व्यास E । ६ एवड A, एवडो C, पहिली E । ७ फोगट E । ८ कीयउ B, कीयो CE । ९ प्रयास E । ६-८ यह पाद D प्रतिमें नहीं है । १०…अब तजउ BCD, अब दूजी सही वातो तजो E । ११ चित्रोडि BC (?) १२ तणो CE, तणौ D । १३ शुं A, स्युं BD, क्या D । १४ गजो CD, गजौ E ।

॥ २३९ ॥ १ ऊभाँ-ऊभ D, ऊभा-ऊभा E । २ लेवउं B, लेऊ C, लेदं (?) D, ल्याउं E । ३ जीवत…A, …पकडउं…B, जीवतो पकडो गढनो धणी C, जीवतो…गढनो…D, पकडि जीवतो गढको धणी E । ४-५ के स्थान पर यह अर्द्धाली क्षेपक है - दिन दस-पाँच रही ते करी BCDE, सबल सनाखति (सनापति B) सावति (सावति B) करी BCDE ।

॥ कवित्त ॥

सलहक्षार हथीयार, लेइ आगलि अवधारी ।
सभाली सर-सेलि, माहि[1] भेजी[2] भंडारी ।
बीबी तव पूछीउ[3], "कहाँ पद्मिणि[4] तुम्हि[5] आँणी[6] ।
च्यारि-पंच[7] नही पद्मिणि[8], किसी तिसकी सुल्तिाँणी[9] ।
तेडावि व्यास[10] तत्तखिणिहि[11], पूछइ[12] वात विगति वहु[12] ।
सिंघलाँ[13] टालि[14] जिणि[15] ठाणि[16] हइ[17], कहाँ[18] राघव [19]पद्मिणि [20]कहू ॥ २४० ॥
हसि वोलइ[1] सुलताँण[2], [3]माण [4]धरि मूछ[5] मरोडी[6] ।
"रतनसेन[7] [8]करुं वंदि[9], चित्रगढ[10] [11]भाजुं त्रोडी[12] ।
पलाण्याँ[13] पतिसाह,[14] [15]जलय-थल वहु अकुलाँणइ[15] ।
स्त्रगि[16] इंद्र खलभलिउ[17], पड्या[18] दह-[19]देस भगाँणइ[20] ।
[21]फणिवइ पयालि वासुगि डुल्यउ[21], [22]कहइ साहि विग्रह करुं[22] ।
[23]मारुं सदेस हिंदूआण कउ[23], [24]एक-एक जीवित धरुं[24] ॥ २४१ ॥

इसके पश्चात् BCDE प्रतियोंमें यह अर्द्धाली क्षेपक रूपमें है –
B मीर-मुगल वाढुडि सज थया , आधी राति दमाँमा हुया ।
C „ मूंगल वहुडि सजि „ , „ „ „ हूआ ।
D „ जोधा वाहुडि जस कीया , „ „ „ दीया ।
E „ „ „ „ कीया , „ „ „ „ ।
४-४…चड्यउ B,…चड्यो C,…सेनि ले आलम चडौ D,…सेनसु आलम चढ्यो E । ५-५… धडहड्यउ B,…धडहड्यो C,…वासिग धडहड्यौ D,…वासिंग धडहड्यो E । A २३४ । B २७७ । C २७९ । D २९२ । E ३३२ ।

॥ २४० ॥ सूचना– यह कवित्त BCD प्रतियोंमें चोपई संख्या २३४ के नीचे दिया है और E प्रतिमें नहीं है । १ मैंाहि BCD । २ भेज्यउ BD, भेज्यो C । ३ पूछीयो BCD । ४ पदमणी D । ५ तुम C । ६ आणी B । ७ दोइ-च्यारि BCD । ८ पदमणी D । ९ सुलतानी B, सुलताँनी CD । १० ब्यास D । ११ ततखिणइँ B, तितखिणइ CD । १२ पूछै बात विगती बहु D । १३ सिंहलि B, सिंहल C, सीवल D । १४ वगइरि BC, विगर D । १५ जिहि BCD । १६ ठउरि B, ठोर CD । १७ हय D । १८ किहाँ BC, किहा D । १९ पदमिणि C, पदमणि D । २० कहो C, कहुं D । BCD प्रतियोंमें यह कवित्त चोपई संख्या २३४ के नीचे दिया है । E प्रतिमें यह नही है ।

॥ २४१ ॥ १ बोलै C, बोल्यो D । २ सुलताण B, सुलताणि C, सुरताँण D, सुलताँन E । ३–६ कहाँ राघव । पदमिणि कहु A । ३ माँण C, माँन E । ७–९ रतनसैंन गढ चित्रकोट A । ७ रतनसैंनि D । ८ करौं B, कुं E । ९ वंदि D, पकडि E । १०–१२ गहिलोत राइ पहु A । १० चीत्रगढ D । ११ भाजउं B, भाजौं C, नाखहुं E । १२ तोडी DE । १३–१४ पलाँणीया अलावदी A, पलाण्या पतिसाहि D, हय कंपे चक च्यार E । १५ जल-थल अकुलाँणइ A, जल-थल बहू अकुलाणे C, जलय-थल बहुं अकुलाँणे D, थरकि जलनिधि अकुलाँणौ E । १६ सरग BCD, सरगि E । १७ खलभली BCD, खलभल्यो E । १८ पड्यउ B, पड्यो CE, पडी E । १९ दस-देस BC, देस-देस D, दस-दिसिहि E । २० भंगाणै D, भंगाणो E । २१…वासिग…B,वासिग डर्‌यो C, फण वय पयाल वासिग डर्‌यो D, फरमान देस देसहि फटे E । २२…करउं B,…करौं C, कहै…बिग्रह…C, सब दुनियाँ अैसी सुनी E । २३ मारउं B…हिंदूवाण…B, मारू देस हिंदवाणको C, यो पहु देस हिंदवाण सब D, मारि हैं रतन हींदुआँन पति E । २४ कोइ-कोइ जीवतउ धरउ B, कोई-कोई जीवतो धरू C, कोइक हु जीवतो धरु D, साहिं पकडि है पदमिनी E । BCDE प्रतियोंमें यह चोपई संख्या २३९ के नीचे दिया है । A २३६, B २७८, C २८०, D २९३, E ३३३ ।

[छठो खण्ड]

गढ चीतोड[1] तणी तलहटी, आविउ[2] असिपति इणि परि हठी[2] ।
लाख सतावीस लसकर लार, [3]हथीयारे लागा हथियार[3] ॥ २४२ ॥
मइगल[1] सबल [2]करइँ सारसी, हय हीसारव[3] भट[4] पारसी ।
आतसबाजी अधिक[5] अगाज[6], गोला-नालि रह्या बहु गाजि ॥ २४३ ॥
दह दिसि[1] मंड्या[2] बहु दुमदमा[3], [4]सुभट सहू दीसइँ ऊजमा[4] ।
[5]ढलकइं चिहुँ दिसि बहु ढीकुली[5], [6]न सकइ कोइ पइसी नीकली[6] ॥ २४४ ॥
दुमकि[1] दुमामा घूमइँ घणा[1], [2]वाजइ ढोल घण-साँघिणा[2] ।
भभकइ[3] भुंगल[4] भेरी भूर[5], रणकइ[6] रोस भरया[7] रण-तूर[8] ॥ २४५ ॥
हुइ[1] सरणाई सिंधू[2] साद, परवत[3] माहि[4] पडइँ[5] पडसाद[6] ।
हठीउ[7] आलिम[8] साहि अभंग[9], जुद्ध[10] तणा करि जाँणइ जंग[10] ॥ २४६ ॥
रतनसेन[1] पिण[2] रोसइँ[3] चडिउ[4], दीठउ[5] आलिम[6] आवी पडिउ[7] ।
सुभट सैंन सज कीधी[8] सहू[9], बलवँत बोलइ[10] बहसे बहू[11] ॥ २४७ ॥
“[1]साहि भलइँ तुं आविउ सही[1], [2]पिणि हिव नासि म जाए वही[2] ।
[3]नासंतौं छइ[4] नर नइ[5] खोडि[6], हुं[7] ठावउ[8] छुं[9] इण[10] हिजि ठोडि[11] ॥ २४८ ॥

॥ २४२ ॥ १ चीत्रोड BC, चीतौड E । २ अनुक्रमि आया असपति हठी B, अनुक्रमि आयो असपति...C, अनुक्रमि आयौ असपति हठी D, अनुक्रमि आयौ आलम हठी E । ३ हथियारैँ दीसइ...B, ...दीसइ हथीयार C, ...दीसै...D, डेरा दीया अति विस्तार E ।

॥ २४३ ॥ १ मइँगल B, मयगल D, मैंगल E । २ करै D, करैं E । ३ हींसारव B, हीसै D, हींसैं E । ४ मुगल BCD, मूँगल E । ५ अति E । ६ अगास D । ७ अग्राज E ।

॥ २४४ ॥ १ दिस E । २ माँड्याँ C, माड्याँ E । ३ दमदमा BCDE । ४ सुभट्या सहू दीसइ ऊजमा B, ...दीसइँ ऊजमा C, ...सहुं दीसै उजमा D, माँडी नालि वलि च्चिहुयै गमा E । ५ ढलकइ विहुं दिसि बहु ढींकुली B, ढलकइ चिहु दिसि बहु ढीकली C, ढलकै...ढीकली D, ढलकै ठाँम ठाँम ढीकँली E । ६...नीकली BCD, न सकै को पैसी नीकली E ।

॥ २४५ ॥ १...दमाँमा घूमइँ...B, दुमकइ दमाँमा धूमइँ...C, ...दमाँमा घूमै...D, धैसैं नगरै धूजै धरा E । २ ...घणा हू घणा BC, बाजै ढोल नही काइ मणा D, गूँज्या गयण अनै गिरवराँ E । ३ भभकै DE । ४ मूंगल B, मूगल C, मुंगल DE । ५ भूरि D । ६ रणकइँ B, रणकै DE । ७-८ भरायइ तूर BC, भराया तूरि D, भराणाँ तूर E ।

॥ २४६ ॥ १ सुर BCDE । २ सीधू D, सींधू E । ३ परवति B । ४ माँहि BC । ५ पडइ B, पडै DE । ६ परसाद A । ७ हठीयो BCD, हठीयौ E । ८ आलमसाह BC, आलमसाहि DE । ९ ऽलाव (अलाव) E । १० जुध...जाणइ...B, जोधि...जाणइ...C, जुध जुड्या करि जाँणै जंग D, गढ भाँजण भनि चिंतैं दाव E ।

॥ २४७ ॥ १ रतनसेनि BD । २ पणि BCDE । ३ रोसइ B, रोसि C, रोसै D, रोसैं E । ४ चड्यउ B, चड्यो C, चढ्यौ D, चड्यौ E । ५ दीठो CE, दीठौ D । ६ आलम CD । ७ पड्यउ BC, पडौ D, अड्यौ E । ८ तेडाया E । ९ बहू BCE, सहुं D । १० बोलै D, आया E । ११ सहू E ।
A २४२ । B २८४ । C २८५ । D २९९ । E ३३९ ।

राणा रतनसेनजी दूत मोकली एम कहायो – B

॥ २४८ ॥ १...आव्यउ...B, ...भलइ तू आव्यो...C, साँहि भलै तू आयो सही D, अम्ह उपरि आया छौ सही E । २ पणि नासि म जाजो जी धिप मही BC, नाँसि म जाजो खिमजो रही D, नासि म जाजो खमयो रही E । ३ नासंता BCDE । ४ छै D । ५ नरने । C, नरनै D । ३-६ नासंता हींदू नै खौडि E । ७ हूँ B, हू CDE । ८ ठावो C, ठावौ DE । ९ छवं B, छु CD । १० इण हीं B, इण हीज C, इणि हीज E । ११ ठउडि B, ठोडि C, ठोड D, ठौडि E ।

हिवइँ[1] दिखाडिसु[2] माहरा हाथ, तुं[3] पिणि[4] सज्ज[5] करे[6] निज साथ।
ढीलीपति[7] मत[8] ढीलउ[9] रहइ[10], सुभट[11] तिको[12] जे[13] पहिली[14] कहइ[15] ॥ २४९ ॥

तुं[1] सिंघलथी[2] आविउ[3] नासि, तिणि[4] कारणि[5] तोनइ[6] शाबासि[7]।
तोनइ[8] छइ[9] नासणनी[9] टेव, दीठइ[10] मुंहि[11] मत[12] नासइ[13] हेव[14]" ॥ २५० ॥

कीधउ[1] कोट सजे सावतउ[2], [3]फिरतां दीसइ अति फावतउ[3]।
पोलि[4] जडावी पेठा[5] माहि[6], सुभट[7] घणा साह्या गज-गाहि[8] ॥ २५१ ॥

[1]आगलि पतिसाह अराति कराल[1], तेल पड्यउ[2] बलि[3] ऊठी झाल।
हिंदू बोल[4] बधा[5] बे [6]वडा, अब क्या [7]सुभटो देखो[8] खडा ॥ २५२ ॥

गढ रोहउ[1] मंडाणउ[2] घणउ[3], तिम-तिम कोप वधइ[4] विहुं तणउ[5]।
बेही[6] बलवँत बेही[6] दूठ, पूरउ[7] परिगह[8] बिहुंनी[9] पूठि[10] ॥ २५३ ॥

जे [1]भाजइ ते लाजइँ[2] [3]घणुं, कुल अजूआलइँ[4] बे[5] [6]आपणुं।
गोला-नालि वहइ[7] ढीकली[8], [9]बाहरि को[10] न सकइ[11] नीकली ॥ २५४ ॥

गोफणि गयणि[1] वहइँ[2] अति घणी, रीठ पडइँ[3] अति[4] रोढाँ[5] तणी।
कुहक बाण[6] करडाटा[7] करइँ[8], [9]लसकर लंघी जाई परइँ ॥ २५५ ॥

॥ २४९ ॥ १ हिवइ BC, हिवै D, हिवे E। २ दिखाडिसि BC, दिखडसि D, दिखाडिस E। ३ तूं B, तू CD, तुम्ह E। ४ पिण BC, पणि DE। ५ सज CD, सझ E। ६ कीयौ E। ७ डिल्ली° B, डिलीपती C। ८ मति BCE। ९ ढीलो C, ढीलौ DE। १० रहइँ D, रहै DE। ११ शुभट B, सकज B। १२ तिकउ BC, तिकौ D, तेह E। १३ जो BCDE। १४ पहिलौ D। १५ कहइँ B, कहै DE।

॥ २५० ॥ १ तूँ BE, तू CD। २ सिंघल° B, सिंघलि C, सीवलतै D, सींवलदै E। ३ आव्यउ B, आव्यो C, आयो D, आयौ E। ४ तिण BDE, तिणि तो C। ५ वातैं E। ६ तों° B, तुझ° C, तोनै D, तुझनें E। ७ साबासि BCD, स्याबासि E। ८ तुझनै DE। ९ नासणरी छइ B, नासणरी छैं CE, नासणरी छै D। १० दीठै DE। ११ मुहि B, मुहइ C, मुखि DE। १२ मति BCD। १३ जाप्ते B, जाइ C, जाज्यो D, भाजो E।

॥ २५१ ॥ १ कीधो CDE। २ सावतो CDE ३ फिरतउ...B, फिरतो...फावतो...फिरतौ दीसै C, फावतौ D, बुरज भीत च्चिहुं दिसि फबतौ E। ४ पउलि B। ५ पइठउ B, पेठो C, पैठो D। ६ माँहि C ७ शुभट C। ८ गाह BCD। अंतिम अर्द्धाली E प्रतिमें नहीं है।

॥ २५२ ॥ १...अति विकराल C, ...आलम अति असराल D, आलिम आगि सदा असराल E। २ पडो C, पड्यो D। ३ नै E। ४ बोलइ C। ५ विधा C, कह्या E। ६ बे वडा B, बि वडा E। ७ याएँ DE। ८ देखो CE, देखौ D।

॥ २५३ ॥ १ गढरो हो CD, गढरो हौ E। २ मंडाणो B, मंडांणौ C, मंडाणौ D। ३ घणो C, घणौ DE। ४ वधइ A, वधै D, वध्यौ E। ५ विहू तणो E, °तणौ DE। ६ वे वै E, बेई BCDE। ७ पूरो CDE। ८ परिग्रह B, परिग्रिह C। ९ विहनी B, विहूनी C, वेहई D, विहु अै E। १० पूठ E।

॥ २५४ ॥ १ भाजै DE। २ लाजइ BC, लाजै DE। ३ घणउ B, घणो C, घणौ DE। ४ उंजवालइ B, उजवालै D, ऊजालै E। ५ ते D। ६ आपणउ B, आपणो C, आपणौ DE। ७ वहइँ B, वहि C, बहै D, वहै E। ८ ढींकुली B, ढीकुली C, ढींकली E। ९ बाहिरि B, बाहिर E। १० कोइ B, कोई C, कौ D। ११ सकै DE। A २४८। B २९१। C २९२। D ३१३। E ३८२।

॥ २५५ ॥ १ गयण CDE। २ वहइ C, वहै D, वहै E। ३ पडइ C, पडै DE। ४ गिर D, सिर E। ५ रौढाँ E। ६ कोहोक बाण D, कुहक बाँण E। ७ कडडाटा D, गडडाहा E। ८ करै DE। ९...जाय परइ C, ...भाजी जाय परै D, गैवर घोडा मूंगल भरै E।

वाण विछूटइँ त्रूटइँ तणी, फूटइँ फोज चिहुं दिसि घणी ।
झूझइँ-वूझइँ सघली कला, भुरजि-भुरजि भड ऊछाँछला ॥ २५६ ॥
झाडइ झंडा पाडइँ पाघ, ऊडाडइँ धज गयणि अथाग ।
ताकइ हाकइ वाहइ तीर, मारइ मयगल मुंगल मीर ॥ २५७ ॥
फाडइ डेरा हेरा करी, न सकइ को पेसी नीसरी ।
कलली कोप करइँ कँधाल, फारक मारि करइँ घइँ फाल ॥ २५८ ॥
कोट तणा सगला काँगुरा, बीटी वइसइँ जिम वाँनरा ।
वालइँ वाधी कवडी हणइँ, मरण तणउं भय मनि नवि गिणइँ ॥ २५९ ॥
रतनसेँन वाँसइ राजाँन, पूरइ पाणी नइ पकवाँन ।
जूझइँ सुभट सनेहा सहू, आलिम मनि हुई चिंता बहू ॥ २६० ॥
आलिमसाहि कहइ-"साँभलउं, सुभट सहू को भेला मिलउं ।
गढ ऊपाडउं द्यउं सीघडा, पाडउं भुरज त्रिहंडउं घडा ॥ २६१ ॥
सबल सुरंग दीउं गढ हेठि, देखी न सकइ जिम को द्रेठि ।
कोट तणा ढाहउं काँगुरा, पाडउं खाँणि धकावउं धरा ॥ २६२ ॥

॥ २५६ ॥ १ वाँण E । २ वछूटइ C, विछूटे D, विछूटे E । ३ त्रूटइ C, त्रूटे D, फूटे E । ४ [illegible] E । ५ फूटइ C, फूटे D, फाटे E । ६ फोजां E । ७ चिहू B, चिहू C, चिहु E । ८ दिस E । ९ तणी E । १० झूझइ-वूझइ...C, मारे घण मुगलां विण भीच E । ११ भुरज-भुरज भिडइँ उछाछला B, भुरज-भुरज भिडइँ उछांछला C, भुरजि-भुरजि भिडै उछाछला D, भुरजे-भुरजे ऊभा भीड E ।

॥ २५७ ॥ १ झाडइँ B, झाडे DE । २ पाडइ C, पाडे DE । ३ पाथ BCD, पाग E । ४ उडाडइँ B, उडावइ C, उडाडे D, ऊडाडे E । ५ गयण BCDE । ६ अवाथ BC, अवाथ D । ताकइँ हाकइँ वाहइँ...B, ताकइं हाकइं वाहि...C, ताकै हाकै वाहै...D, ताकि हाकि इम वहै तीर E । ७ मारइ ...मुगला...B, मारइँ मइँगल...C, मारे मुगल सबली भीर C, पाडै खाँन निबावां मीर E ।

॥ २५८ ॥ १ फाडै DE । २ डेरा D । ३ सकइँ B, सकै DE । ४ पइसी BC, पैसी D, कटक तणा E । ५ नीकली D । ६ करइ C, करै D । ७ वहु BC, देइ D । E प्रतिमें यह अर्द्धाली नहीं है ।

॥ २५९ ॥ १ ...तणाँ B, कोटि तणाँ C । २ सवला DE । ३ काँगरा E । ४ बीटी D, वींटी E । ५ वइठा B, बैठा DE । ६ वानरा BC, वाँनरा D । ७ वालइ BC, वाले D, वाले E । ८ वाधी B, बाँधी CDE । ९ कउडी B, कोडी CD । १० हणइ BC, हणै DE । ११ तणो CE, तणी D । १२ तिल E । १३ गणइ BC, गणै DE ।

॥ २६० ॥ १ रतनसेनि D । २ वाँसइँ B, वासे C, वासे D । वाँसे E । ३ राजान B । ४...पकवान B, ...पाँणी...C, अन्न-पाँन पूरं पकवाँन D, दिये वधारा करि सम्माँन E । ५ झूझइ BC, झूझे D, झूझे E । ६ सनेहा BCDE । ७ आलम DE । A २५४ । B २९७ । C २९८ । D ३२३ । E ३९२ ।

॥ २६१ ॥ १ अलिमसाह BC, आलम साह E । २ कहै DE । ३ साँभलो CE, साँभलौ D । ४ सुहड E । ५ सबै E । ६ कोउ BC, अब DE । ७ ले ले E । ८ मिलो CE, मिलौ D । ९ ऊपाडो C, ऊपाडौं D, उडाडो E । १० द्यो C, दौं D, दे E । ११ पाडो CE, पाडौ D । १२ बुरज BCDE । १३ हुवउं B, हुयो C, होइ D, लागो E ।

॥ २६२ ॥ १...दीयउ...B,...दीयो...C,...दियो गढ हेठ D, सुरँग लगावो गढने हेठ E । २ देखि न E । ३ सकै DE । ४ कोइ CE, कोई D । ५ द्रेठ E । ६ तणाँ C । ७ पाडो C, पाडै D । ८ कागराँ C, कागुरा D, काँगरा E । ९ पाडो C, पाडौ DE । १० खाणि BC । ११ धकावो C, धुखावौ DE ।

आसि-[1]पासि पइसारउ[2] करउ[3], कासुं[4] मरण थकी [5]मनि डरउ[6]?
लाँबी ले नीसरणी ठवउ[7], एकी [8]कउ रोढउ[9] खेसवउ[10] ॥ २६३ ॥
लाख लाख ल्यउ[1] रोढा[2] तणउ[3], गढ ऊपाडि करउ[4] आँगणउ[5],[7] ।
सुभट सहू को[6] धाया धसी, आलिमसाहि[7] हूउ[8] मनि[9] खुसी ॥ २६४ ॥
रण-रसीउ[1] जोवइ[2] रमि[3] राह, हलकारइ[4] पूठइँ[5] पतिसाह ।
ढीलीपति[6] ढोवउ[7] माँडीउ[8], [9]पिण नवि कोट चिनी खाँडीउ[9] ॥ २६५ ॥
साँझ लगइ[1] हूउ[2] संग्राम[3], पिण नवि सीधउ[4] कोइ काँम[5] ।
घणा मराव्या[6] मुंगल[7] मीर, असिपति[8] माँनी[9] हीयइ[10] हीर[11] ॥ २६६ ॥
[1]आलिमसाहि करइ आलोच[1], लसकर [2]माहिँ [3]हूउ संकोच ।
व्यास[4] कहइ[5]-"संभलि सुलिताँण[6], कोट[7] न लीजइ[8] किम[9] ही प्राँण[10] ॥ २६७ ॥
[1]छानउ कोइ करउ[2] छल-भेद, [3]मत परगासउ[4] मरम मजेद ।
[5]वात करावउ[6] कपटइँ[7] इसी, [8]साहि हूउ हिव तुमसुं खुसी[8] ॥ २६८ ॥
बोल-बंध [1]दियउ माँगइ[2] तिके, [3]करउ सुगंद[4] करावइ[5] जिके[6] ।
विचलइ[7] नहीं[8] हमाँरी[9] वाच[10], ऍम कही ऊपावउ[11] साच ॥ २६९ ॥

॥ २६३ ॥ १ आस-पास E। २ पइसारो C, पवसारौ D, पैसारा E। ३ करो CD, करौ E। ४ काशु BC, क्या वे D। ५ अब DE। ६ डरयो C, डरौ DE। ७ ठवो C, ठवौ D। ८ एकेको D, एकैको E। ९ रोढो C, रोढे D, रोढौ E। १० खेसवौ DE।

॥ २६४ ॥ १ ल्यो CE, लेहु D। २ रोढाँ BC, रोडा E। ३ तणो C, तणौ DE,। ४ करो CDE। ५ आँगणो C, आँगणौ D। ६ सहुंके D, सुणी सहु E। ७ आलिमसाह B, आलमसाहि D। ८ हूवा B, हूआ CE, हुवौ D। ९ मन BC।

॥ २६५ ॥ १ रिण-रसीयो BC, रिण-रसीयौ DE। २ जोवै DE। ३ रिण॰ BC, रिम॰ DE। ४ सिलकारइ BC, हलकारै DE। ५ पूठइ BC, पूठे D, ऊभौ E। ६ दिल्लीपति B, ढिलीपति C, दिलीपति D, ढिलीपति E। ७ ढोवौ E। ८ माँडीयउं B, माडीयो C, माडीयो D, माँडीयौ E। ९ पणि...खाँडीयउ B, पणि...कोटि...खाँडीयो C, पणि...चिन्हि खाँडीयो D, तिलइक गढ खाँडियौ E।

॥ २६६ ॥ १ ॰लगौ D, साझि लगौ E। २ हूवा B, हूया C, होवै D, हौवै E। ३ संग्राँम D। ४ सीधो C, सीझै DE। ५ काम BCD। ६ मराया E। ७ मुगल'न B, मूगल'न C, मुगलइ D, मूंगल E। ८ असुपति B, असपति DE। ९ मानी BCD। १० हीयडइ BC, हारि DE। ११ अधीर D, अहीर E। A २६० । B ३०३ । C ३०४ । D ३३० । E ३९९ ।

॥ २६७ ॥ १ 'आल्मसाह काइ करउ आलोच' B,...करो...C, आलम साहि पछ्यौ...आलोच D। २ माहि BDE। ३ हूवउ B, हूयो C, हुवौ D, हूयौ E। ४ ब्यास D। ५ कहि C, कहै D, भणे E। ६ सुल्ताण B, सुलताणि C, सुलताँन E। ७ कोटि C। ८ लीजे D, लीजै E। ९ किणही DE। १० प्राणि BD, प्राण C।

॥ २६८ ॥ १ छानो CE, छाँनो D। २ रचो C, करो D, करौ E। ३ मति D। ४ परगासो BC, परगासौ D, परकासौ E। ५ बात D। ६ करावो CD, कहावौ E। ७ कपइ B, कपटे D, कपटैं E। ८ साह हुवउ...स्युं...B, ...हुयो...॰सु...C, ...हुयो हिवै...D, आलिम हूआ छै...E।

॥ २६९ ॥ १ थउ B, थो C, देउ D, थौ E। २ मागइ B, मागि C, माँगे D। ३ करो C, करौ E। ४ सुगंधि B, सुगंध CD, सौगंध E। ५ करावो D, करावै E। ६ जिके E। ७ विचले D, विचलै E। ८ नहीं E। ९ हमारी B, अमारी C, हमारी D। १० वात B, वाच D। ११ उपावओ B, उपावो C, उपावो D, ऊपावौ E।

मुंकउ[1] माहिँ[2] पाका[3] परधाँन[4], इम[5] कहवाडउ[6] दिउ[7] इम माँन[8] ।
तेडी माहि खवाडउ[9] खाँण[10], द्रेठि[11] दिखाडउ[12] तुम्ह अहिठाँण[13] ॥ २७० ॥
पद्मिणि[1] हाथइँ[2] जीमण[3] तणी, मुझ [4]मनि खंति[5] अछइ[6] अति घणी ।
अवर न काई[7] मागइ[8] साहि[9], [10]अलप सेनसुं[11] आवइ[12] माहि ॥ २७१ ॥
एक वार[1] देखी पद्मिणी[2], साहि[3] सिधावइ[4] ढीली[5] भणी[6] ।
ऍम कही मुंक्या[7] परधाँन[8], [9]रतनसैंन पूछ्या दे माँन[9] ॥ २७२ ॥
"[1]कहउ किम आव्यउ तुम्हि परधाँन[1]?" तव[2] ते वोलइँ[3]-"[4]सुंणि राजाँन[5] ।
आलिमसाहि[6] कहइ[7] छइ[8] ऍम,- "माहो-[9]माहि करउ[10] हिव[11] प्रेम" ॥ २७३ ॥

॥ कवित्त ॥

"[1]हमसुं साहि परठव्या[1], करणकुं[2] वाताँ[3] भल्ली ।
[4]जइ तुम्हि[5] मानउ[6] वात[7], साहि[8] वहि[9] [10]जावइ डिल्ली[11] ।
[12]करि पद्मावति दृष्टि[12], [13]फेरि चीतोड जि देखुं[13] ।
[14]विग्रह कोई नवि करूं[14], [15]बाँह देइ सब ही रखुं[15] ।
[16]गलि-लाइ कंठि पहिराइ करि[16], बहुत मया आलिम[17] करइ[18] ।
[19]राउ रतनसैंन ! सुणि वीनती[19], पुहर माहि[20] दुत्तर तरइ[21] ॥ २७४ ॥

॥ २७० ॥ १ मूको BOD, मेल्हो E । २ माँहि BOE, माहि D । ३ पक्का E । ४ परधान BO । ५ एम DE । ६ कहवाडो B, कहिवाडो O, कहावौ DE । ७ द्यउ B, द्यो C, दो D, दियौ E । ८ मान BD । ९ खवाडो O, खवाडौ D, खवावौ E । १० खाण B । ११ नजरि B, नजर C, निजरि D, निजर E । १२ दिखाडो O, दिखाडौ D, दिखावौ E । १३ ठाण BE ।

॥ २७१ ॥ १ पदमणि D, पदमिन E । २ हाथि O, हाथै D, हाथिं E । ३ जीमणि BO । ४ मंनि D । ५ खाँति DE । ६ अछि O, अछै DE । ७ काँई BE । ८ मागइँ B, मागै D, मागे E । ९ साह BO । १० अल्प O । ११ °स्युं B, °सुं O, सेंनि° D । १२ आवइँ B, आवे O, आवै DE ।

॥ २७२ ॥ १ बार D । २ पदमणी D । ३ साह BOE । ४ सिधावै DE । ५ दिल्ली B, दीली O, डिल्ली D । ६ धणी BOD, भणी E । ७ मूँक्यउ B, मूक्यो O, मूक्यौ D, मुक्या E । ८ परधान BOD । ९...पूछइ राजान BO, रतनसेनि पूछै राजान D, मिल्या जाइ रतन राजान्न E । A २६६ । B ३०९ । O ३१० । D ३३६ । E ३०५ ।

॥ २७३ ॥ १ कहु...आयो तू परधान B, कहु...आयो तू...O, कहो...आयो तू...D, कहोजी क्युं आया...E । २ तब D । ३ बोलइ BO, बोलै DE । ४ चतुर BODE । ५ सुजाण BD । ६ आलमसाह BO, आलिमसाहि D, आलिम वला E । ७ कहै E । ८ छै DE । ९ माहो-माँहि E । १० करो BO, करौ D । ११ हिवि O, हिवै D ।

॥ २७४ ॥ १"'पठाव्या B,"'पठावीया O, हंम...D, हमहिँ पठाए साहि E । २ कौ D । ३ बाताँ D, वातोँ E । ४ जे BO, जै D, जो E । ५ तुम्ह BDE, तुम O । ६ मानो O, मानौ D, मानहुं E । ७ बात D, वाच E । ८ साह BOE । ९ वलि BO, बलि D, फिरि E । १० जाइ AD, जावै E । ११ दिल्ली OD । १२...दीठि E, दिखलावौ पदमिनी E । १३ फिरि सहू गढ कउ देखुं B, फिरि सहू...कूँ...O, फिरि सब गढकूँ...D, और सब गढहि दिखावौ E । १४...कोइ...करो B, ...कोइ...कराँ O, विग्रह को ...E । १५ बाह देउ सवहि हरपुं B, वाह देओ सवही हरषाँ O, बाह दे सवही हरपुं D, बाँह दे प्रीत वढावौ E । १६...कंठ...A,...°लाइं...B,...°लाय...पहिराव ...D,...मिलहि सिरपाव दे E । १७ आलम D । १८ करइं B, करै D, करहि E । १९ राव रतनसैंनि...बीनती D,...सुनि...E । २० माँहि O, माहिँ E । २१ तरइं B, तरै D, तरहि E । A प्रतिमें यह कवित्तके नीचे दिया है ।

“[1]वाँकउ गढ चीतोड[2] [3]सकति सुरताँण[4] न लीजइ[5] ।
ऊठाईइ[6] मुलाफ बोलि[7] ज्युं [8]राउ पतीजइ[9] ।
दंड [10]द्रव्य न[11] लीउं[12] देस पर दल नवि[13] गाहुं ।
नही हम[14] गढकी[15] चाउं[16] राउंकुमरी[17] नवि[18] [19]व्याहुं” ॥
अलावदीन सुरतांण[20] कहि[21]- “राज [22]माहि नवि[23] आहुडुं[23] ।
राउ रतनसेंन[24] मुझकुं मिलइ[25], नाक[26]- नमणि करि [27]वाहुडुं ॥ २७५ ॥
“[1]कीउं उपंग सुलिताँण[1], [2]मंत्र एइ सु उपाई[2] ।
मुझकुं[3] गढ दिखलाउं,[4] आप[5] जनमंतर[6] भाई ।
हुं[7] कृत कम्मज[8] [9]जम्म, [10]सत्रु असुराँ [11]घर पाँमी[12] ।
[13]तु पूरव[14] पुन्य[15] प्रमाण,[16] [17]हुउं चित्रकोटह[18] स्वामी[19] ।
[20]दोइ काइ अछइ इक आतमा,[20] [21]आवि जंम मेलउ थयउ[21] ।
[22]खीमकरण-भुज-मंत्रसुं[22] [23]राजा-वयण तिम भयउ[23] ॥ २७६ ॥

॥ चोपई ॥

बोल[1] बंध द्युं[2] साचा सही, विचलइ[3] वात[4] हमाँरी[5] नही ।
नाक-नमणि[6] करि कोट[7] दिखाडि[8], पदमिणि[9]-हाथई[10] मुझ[11] जीमाडि[12] ॥ २७७ ॥
पदमिणि[1] नारि निहालण तणउ[2], मुझ मनि हरष[3] अछइ[4] अति घणउ[5] ।
अवर न काँई[6] मागइ[7] आथि, जीमें[8] जाऊँ[9] पदमिणि[1] हाथि ॥ २७८ ॥

॥ २७५ ॥ १ बाँको BC, बाकौ D। २ चीत्रोड BC, चीतौड D। ३ सगति BCD। ४ सुलताणि B, सलताँनि C, सुलताँण D। ५ लीजै D। ६ ऊठाइयइ B, उठाईजै D। ७ जु B, °ज C, °तो D। ८ राज D, ९ पतीजइं BE, पतीजै D। १० द्रब्य D। ११ नहुं BCD। १२ लीयुं B, लीयु CD। १३ नहि D। १४ हंमं D। १५ °को BC, °कुं D। १६ चाओ B। १७ राजकुमरी BC, राजकुंमरी D। १८ नहि BCD। १९ व्याहूँ D। २० सुलतान B, सुलतानि C, सुलताँन D। २१ कहइ BCD। २२ राजमहल D। २३ आहुडउं B। २४ रतनसेँनि D। २५ मिलइं B, भिलइ C, भिलै D। २६ तउ नाक...B, तो नाक...C, तौ नाक...D। २७ वाहुडउं B। E प्रतिमें यह पद नहीं है। BCD प्रतियोंमें यह पद चोपई संख्या २७८ के नीचे दिया गया है। A २७१। B ३१५। C ३१६। D ३४२।

॥ २७६ ॥ १ कहइ राण सुलताण B, कहि राण सुलताण C, कहै रॉण सुलताँणँ D। २ वात तुम्ह एम कहाई B, वात तुम एम कहाई C, वात तुम्ह कहाई D। ३ °कउं BC। ४ दिखलाइं B, दिखलाइ C, दिखलाय D। ५ आप A, आपि C। ६ जनमंतरि B, जनममिंतर C। ७ मइ BC, मै D। ८ कृत कर्म BC, कृतकर्म D। ९ अमिहर BCD। १० जनम BCD। ११ घरि BCD। १२ पाम्यौ D, १३ तू B, तूं C। १४ पूर्व C, पुरव D। १५ पुण्य CD, पुंन्य B। १६ प्रमाणि B, प्रमाँणि CD। १७ हूउं AC, हूवउं B, हुवौ D। १८ चित्रकूट BC। १९ स्वांमी C, सांमी D। २० दोई काई एक आतमा B, दोई काइं एक जीव आतमा C, दोई काइ जीव एक आतमा D, दोय काया एक हंम आतमा E। २१ दुनिया माहि मेल्उ थयउ B, दुनियाँ माहि मेलो थयो C, दुनिया माहि मेलौ भयौ D। २२...मुझ-मंत्र सुणि BC, खेम करण मुझ मंत्र सुणि D। २३ राजि वयण तव मानीयउं B, राजि वयण तव मानीयो C, राज-वयण तव मॉनीयौ D।

॥ २७७ ॥ १ बोल D। २ धुं B, द्यो C, देउ D, द्यौ E। ३ विचलि C, विचलै D, विचले E। ४ वात D। ५ हमारी BCE। ६ नाँकि° C। ७ कोटि C। ८ दिखालि BC, दिखाउं E। ९ पदमणि D, पदमिन E। १० हाथइ B, हाथि C, हाथै DE। ११ मुझह DE। १२ जीमाड E।

॥ २७८ ॥ १ पदमिन C, पदमणि D। २ तणो C, तणौ DE। ३ हरषि C, हर्ष D। ४ अछै DE। ५ घणो B, घणौ DE। ६ काइ CD। ७ माँगे DE। ८ खाणा BCD, खाँणा E। ९ खुरदंम BC, खुरम D, खुस है E। E प्रतिमें यह पद नहीं है।

माहो-माहि करउ[१] संतोष,[२] राखउ हिव ए वधतउ रोष[२]।"
वलतउ[३] भूपति[४] बोलइ राण,[४] माहरा[५] कथन कहउ[६] सुलताण[७] ॥ २७९ ॥
रतनसैंन[१] कहि[२]-"सुणि[३] परधाँन,[४] वाताँ[५] करताँ[६] वाधइ[७] वाँन[८]।
पिणि[९] जउ[१०] प्राँण[११] दिखाडइ[१२] भूप,[१३] तउ[१४] नवि कोई रहइ रस-रूप[१४] ॥ २८० ॥
वात[१] करइ[२] जउ[३] आलिमसाह[४], तउ[५] हम मिलवा घणउ उछाह[५]।
[६]असपति आवइ अंगणि वही,[६] [७]प्रापति विण क्युं पामाँ सही[७] ॥ २८१ ॥
[१]बोल बंध थइ साचा साहि,[१] [२]अलप सेनसुं आवहि माहि[२]।
अम्ह[३] घरि आइ [४]अरोगउ धाँन, माहो-माहि[५] वधइ[६] ज्युं[७] माँन" ॥ २८२ ॥

[सातमो खण्ड]

परधाँनै[१] पूछिउ[२] पतिसाह, "वात[३] वणे[४] दीधी[५] निज [६]वाह"[६]?
आलिम[७] सुंस[८] करइ[९] सहि झूठ[१०], मुँहि[११] मीठउ[१२] मन माहे दूठ ॥ २८३ ॥
राघव व्यास कीउ[१] मंत्रणउ,[२] रतनसैंन[३] नृप[४] झालण[५] तणउ[६]।
नृप[४]-मनि कोइ नही छल-भेद, खुरसानी[७] मनि अधिकउ[८] खेद ॥ २८४ ॥
[१]ऊघाडी मेल्ही गढ-पोलि,[१] मिलीया[२] माँणस[३] टोला-टोलि[४]।
आलिम[५] साथि लीया[६] असवार, लोहइ[७] लुंब्या[८] त्रीस[९] हजार ॥ २८५ ॥

॥ २७९ ॥ १ करो C, करौ DE। २...हिवइ वधंता रोस B, राखो हिवि वधतो रोस C, राखौ हिवै वधंता रोस D, हिव मेटी अति वधतौ रोष E। ३ वलतो C, वलतौ D, वलता E। ४...बोलै राँण D, कहै रतन राजाँन E। ५ माहरी CDE। ६ कहो C, कहौ D, सुणौ E। ७ सुलताणि C, सुलतांण D, परधाँन E। A प्रतिमें यह अर्द्धाली नहीं है। A२७० । B ३१४ । C ३१५ । D ३४१ । E ४१० ।

॥ २८० ॥ १ रतनसैंनि D। २ कहइ BC, कहै CD। ३ सुण C, सुनि E। ४ परधान B। ५ वात BC, बात D। ६ करंतां BCD। ७ वांधै D। ८ वान B, बान D। ५-८ इण वातै बहु वाधै वाँन E। ९ पणि BCD, परि E। १० जो CDE। ११ प्राण BC, जोर DE। १२ दिखाडै D, दिखावै E। १३ साह E। १४ तो...C, ते...रहै...D, रस न रहै वलि लागै दाह E।

॥ २८१ ॥ १ वात D, इम E। २ करै C, करताँ E। ३ जो CDE। ४ आलिमसाहि B, आलम साहि DE। ५-५ चो० २८१ का दूसरा पाद-अलप...BCDE। ५-६ और ७ पाद BCDE प्रतियोंमें नहीं है।

॥ २८२ ॥ १ BCD प्रतिमें यह पाद नहीं है। २ BCDE प्रतियोंमें यह २८० का अंतिम पाद है।...°स्युं आवइ...B,...°सु आवइ...C,...सेनिसुं आवै...D,...°सुं आवै...E। ३ अह्म C। ४ आरोगइं B, आरोगइ C. आरौगै D, आरोगे E। ५ माँहो-माँहि CE। ६ वधइं B, वधै D, वधै E। ७ जउं B, ज्युं C, वोहौ D, वहु E। A २७६ । B ३१८ । C ३१९ । D ३४५ । E ४२६ ।

॥ २८३ ॥ १ परधाने B, परधानि C। २ पूछ्यउ B, पूछ्यो C, पूछै D। १-२ तेडी राँण तणा परधाँन E। ३ बात CD। ४ वणी BC, बणी D। ५ दीन्ही D। वाहिC, बाँहिं D। ३-६ दीधा बोल बाँह सुलतान। ७ आलम BD। ८ स्युंस B। ९ करै DE। १० आझूठ BC, सहु झूठ D। ११ मुह BC, मुखि D, मुख E। १२ मीठो AC, मीठा D, मीठौ E। १३ माहि C, माँहि E।

॥ २८४ ॥ १ कीयो C, कीयौ DE। २ मंत्रिणो CE, मंत्रणौ D। ३ रतनसैंनि D। ४ भूप D, नै E। ५ झेलण BCDE। ६ तणो CE, तणौ E। ७ खुरसाणी B, खुरसाँणी CDE। ८ अधिको CE, इधको D।

॥ २८५ ॥ १ उघाडी मेल्ही गढनी पउलि B, उघाडी मेल्ही गढनी पोलि C, उघाडी तब गढनी पौलि D। २ मिलिया D। ३ माणस BD। ४टोल D। ५ आलम D। ६ लिया BCD। ७ लोहै D। ८ लूंब्या BC, [illegible] D। [illegible] BCD। यह चौपई E प्रतिमें नहीं है।

॥ कवित्त ॥

गढइँ[1] चड्यउ[2] सुलिताण,[3] नालि[4] उंवरां[5] खवासाँ[6] ।
भमर एक[7] भुल्लि[8] गउ,[9] चंद ज्युं[10] भयउ[11] उजासाँ ।
[12]ए चंदा खाइक्क,[12] [13]दान उर मानस मंगल[13] ।
[14]एक चंद चंदणउ,[14] [15]सेज सोहइ रायाँ घर[15] ॥
फुजदार[16] सवे[17] हाजरि खडे, गिरि[18] पदमिणि[19] पाउद्धरइ[20] ।
अलावदीन सुलिताण[21] सुणि, आलिम[22] सिरि छत्राँ[23] धरइ[24] ॥ २८६ ॥

॥ चोपई ॥

रतनसैंन[1] सरलउ मन मांहि[2], मंत्री तेडण[3] मेल्यउ[4] साहि ।
"साहिब ! आज[5] पधारउ[6] सहि", रतनसैंन[1] तेडइ[7] गहगही[8] ॥ २८७ ॥
व्यास[1] सहित साथइं[2] ततकाल[3], माहे[4] पेठा[5] सहु समकाल ।
कला[6] इसी[7] का[8] कीधी सोइ, पइसंतउ[9] नवि दीठउ[10] कोइ ॥ २८८ ॥
आवी माहि[1] हूआ[2] एकठा, तव[3] सगला[4] दीठा सामठा[5] ।
रतनसैंन[6] मनि खुणसिउ[7] सही, आलिम[8] आविउ[9] अंगणि[10] वही[11] ॥ २८९ ॥
नृप[1] पिण[2] सेना सगली[3] सार, असवारे[4] मेल्ह्या[5] असवार ।
तुंगे-तुंग मिल्या[6] एकठा, जाणि[7] कि दीसइ[8] वादल[9] घटा ॥ २९० ॥
आलिम पिण[1] न सकइ[2] आगमी[3], न सकइ[2] नृप[4] पिण[1] आलिम[5] गमी ।
आलिमसाहि[6] कहइ[7] "सुणि भूप, कांइ[8] तुम्ह[9] मेलउ[10] कटक सरूप ॥ २९१ ॥

॥ २८६ ॥ १ गढ BCD । २ चडीयो C, चडीयौ D । ३ सुलताँण BD । ४ साथि D । ५ उमराव BC, अमराव D । ६ खवासा D । ७ जेम BCD । ८ भूलि BC, भुली D । ९ गयउ B, गयो CD । १० जो D । ११ भयो C, भयौ D । १२-१२ पंच लाख इक दीयउ BC, पंच लाख एक दीयौ D । १३-१३ जोति तसु अतिहिं सुदिनकर BCD । १४-१४ चाँदणउ जणु अफताब BC, चंद जेम अफुताब D । १५'''राय घरि BC, सेझ सोहै राय घरि D । १६ फुजदार BCD । १७ सवै D । १८ गिर BCD । १९ पदमणि D । २० पाउ उधरइ BC, पाव उधरै D । २१ सुलताण BC, सुलताँन D । २२ आलम D । २३ छत्र ए BCD । २४ धरै D । BCD प्रतियोंमें यह चोपई संख्या २८७ के नीचे दी गयी है, E प्रतिमें नहीं है । A २८० । B ३२४ । C ३२५ । D ३५१ ।

॥ २८७ ॥ १ रतनसेनि D । २ °माँहिं C, °माहिं D । ३ तेडन D । ४ मेल्यो C, मेल्हो D । ५ आजि D । ६ पधारो C, पधारौ D, ७ तेडै D । ८ गहिगही E । A प्रतिमें यह चोपई नहीं है ।

॥ २८८ ॥ १ ब्यास D । २ साथे BCD । ३ ततकालि D । ४ माँहे B, माँहि C । ५ पइठा BC, पैठा D । ६ कली B, किलि C, कल D । ७ एहवी D । ८ काई BCD । ९ पइसंता BC, पैसंता D । १० दीठो C, दीठौ D । E प्रतिमें यह नहीं है ।

॥ २८९ ॥ १ माहिं E । २ हुवा BE, हुया C । ३ तब D । ४ सगले BCDE । ५ साँमठा E । ६ रतनसैंनि D । ७ खुणस्यो BC, खुणस्यौ DE । ८ आलम D । ९ आव्यउ B, आव्यो C, आयो DE । १० अगणे B, अगंण C । ११ बही BD ।

॥ २९० ॥ १ नृप D । २ पणि BCDE । ३ सघल E । ४ असवारें B, असवारि C । ५ मिलीया BCD । ६ हुआ E । ७ जाण कि B, जाणिक CE, जाँणिक D । ८ दीसै D, उतरी E । ९ बादल BD, वादिल C ।

॥ २९१ ॥ १ पणि BCDE । २ सकै DE । ३ आँगमी A । ४ नृप D । ५ आलम DE । ६ °साह BCD । ७ कहै DE । ८ काइ BD, काँए C, क्युं E । ९ तुम्हि BD, तुम्हि C, तुम्हे D । १० मेल्यउ B, मेल्यो C, मेलो B, [illegible]

हुं[1] इहाँ विढवा आविउ नही[1], गढ[2] जोएवइ जाइसु सही[2] ।
म[3] धरउं[4] मन महि[5] खोटउं[6] खेद, मुझ[7] मनि कोइ नही छल-छेद[7]" ॥ २९२ ॥
नृप[1] जंपइ-[2] "आलिम[3]! अवधारि[4], कटक[5] कोइ मेलुं न लिगार[5] ।
जइ[6] तुम्ह वचन हूउं हिव इसुं[6], कटक[7] करी नइ करिवुं किसुं[7]? ॥ २९३ ॥
पिण[1] तइँ आण्या त्रीस हजार[1], किणि[2] कारणि[3] एवडा[4] असवार?
तुझ[5] मनि काँइ सही छइ वात[5], धूत पणारी[6] दीसइ धात[6]" ॥ २९४ ॥
आलिम[1] जंपइ[2]- "नृप[3]! अवधारि[4], प्राँहुणडाँ[5] नइ इम म पचारि[5] ।
थोडा[6] हो अथवा हो घणा[6], झेली लीजइँ[7] निज प्राँहुणा[8] ॥ २९५ ॥
धँान[1] तणउं[2] छइ[3] आज[4] सुगाल[5], घणा-घणा काँइ[6] कहउं[7] भूआल[8] ।
अम्हि[9] आव्या था जिमवा सही[9], विढवा कारणि आव्या नही[10] ॥ २९६ ॥
जीमण[1] रउं जाणउं[2] संकोच, खरच[3] करंताँ आवइ खोच[3] ।
तउ[4] वलि पाछा मेल्हाँ एह[4], जिम[5] भाखउं तिम राखाँ तेह[5]" ॥ २९७ ॥
भूप[1] भणइ[2]- "संभलि पतिसाह[3], भलइ[4] पधार्या[5] आलिमसाह[6] ।
वलि[7] तेडाव्युं[8] जाँणउं[9] जिके, पिण[10] लघु बोल म[11] बोलउं[12] तिके[13] ॥ २९८ ॥

॥ २९२ ॥ १...आयउ...B, हू...आयो...C, हू...विढवा आव्यो...D, मैं लडनेकुं आया नही E । २...जोइ... जाइस्यु...B,...जोइ...C,...जोइ नै जासु...D, गढ देखणकी है दिल सही E । ३ न E । ४ धरो CDE । ५ माहि B, माँहि C, मै DE । ६ खोटो CD, खोटा E । ७...भेद BCD, मेरे मनं नांही छल-भेद E ।

॥ २९३ ॥ १ न्रप D । २ जंपै DE । ३ आलम D । ४ अवधार D । ५ एवडउं कटस्युं नगर मझारि B, एवडो कटसुं नगर मझारि C, एवड़ौ कटस्युं नगर मंझारि D, लसकर क्युं लाए हो लारि E । ६ जो...हूवउं ...इसउं B, जे तुझ...हूयो इसा C, जो तुम्हे वचन हुउं हिवै इसउ D, पहिली तुम्ह फुरमाया साहि E । ७ करिस्यो किसउं B,...करिस्यौ किस्यो C,...करीनै करिसी किसौ D, अलप सेनसें आवुं माँहि E ।

॥ २९४ ॥ १ ए...तीस...B । ए तइ आँण्या तीस...C, ए तै...तीस D, अब तुम ल्याए तीस...E । २ किण CD, किस E । ३ कारण C, खातर E । ४ एवडा BCD, इतने E । ५...काइँ...कूडी ...B,...कूडी...C,...काइ कूडी छै वात D, है तुम्ह मन कूडा असमाँन E । ६ धुर्त्त...दीसै...D, दिल्लीके ठग हो सुलताँन E ।

॥ २९५ ॥ १ आलम DE । २ जंपै D, जंपहि E । ३ न्रिप D । ४ अवधार D, राजाँन E । ५ प्राहुणडाँ...BC, पाहुणडाने मती पचारि D, घरि आयाँ दीजै बहुमान E । ६ थोडा होइ होइ अथ घणा BC, थोडा होवै होवै घणा DE । ७ लीजइ BC, लीजै DE । ८ प्राहुणा BCE, पाहुणा D ।

॥ २९६ ॥ १ धान BC । २ तणो C, तणा DE । ३ छै DE । ४ आजि D । ५ सुगाल CE । ६ कूया DE । ७ करो C, करै D, कहो E । ८ भूपाल BCDE । ९ अम्ह...B, अह्मे C, हंम आया...D, हम मिलवा आए ऊवही E । १० बिढवा...आया...D, लडवाकुं आए है नही E ।

॥ २९७ ॥ १ °रो CE, रौ E । २ जाणे C, जाणौं D, जाणो E । ३...उपजै...D, ...तणौ आँणौ मन...E । ४ तउं पाछा मेल्हावउं एह B, तो पाछा मेलावो एह C, तौ पाछा मेल्हाँउं एह D, कहो जितने फिरि लसकर जाइ E । ५...राखउं तेह B, ...भाखो...राखो तेह C, ...भाषौ...राखु...D, राखौ सोइ तुम्हैं दिल भाइ E ।

॥ २९८ ॥ १ राणाँ BC, राँण D, राई E । २ भणि C, भणै D, कहै E । ३ पतिसाहि D । ४ भलि C, भलै DE । ५ पधारै E । ६ आलमसाहि D, आलिमसाहि E । ७ वलि B । ८ तेडावउं B, तेडावो C, तेडावौ DE । ९ जाणउं B, जाणो C, जाणौ D, जाँणौ E । १० पिणि B, [illegible] CDE । ११ न D । १२ बोले CDE । १३ [illegible] BD, वके CE । A २९२ । B ३३४ । C ३३५ । D ३६५ । E ४३९ ।

परिघल पाणी परिघल धाँन, परिघल घोल घणा पकवाँन।
जीमउं भोजन भावइ जिके, पिण लघु बोल न बोलउं वके" ॥ २९९ ॥
बोलि[1]-बोलि बे हूआ[2] खुसी, हाथे ताली दीधी हसी।
माहो-माहि[3] हूउं[4] संतोष, टलीया[5] सगला मनना दोष[5] ॥ ३०० ॥
रतनसैंन[1] हिव निज घरि घणी[1], भगति[2] करावइ[3] भोजन तणी।
पदमिणि नारि[4] प्रतइँ जई कहइ[4],-"आलिमसुं[5] हिव जिम रस रहइ[5] ॥ ३०१ ॥
तिण[1] परि भोजन भगतइं करउं[1], जिम[2] आलिम मनि हरषइ खरउं[2]" ।
पदमिणि नारि[3] कहइ[4]- "प्री[5]! सुणउं[6], निज[7] करि न करिसु हुं प्रीसणउं[7]" ॥ ३०२ ॥
षट रस[1] सरस[2] करुं[3] रसवती, प्रीसेसी[4] दासी[5] गुणवती।
सिणगारउं[6] सगली[7] छोकरी[8], षाँति अछइ[9] जउं[10] तुम्ह[11] मनि खरी" ॥ ३०३ ॥
बि[1] सहस दासी रूप निधाँन[2], पदमिणि[3] पासि रहइँ[4] सुविधाँन[5]।
रूप अनोपम रंभा जिसी, काम तणी सेना हुइ[6] तिसी ॥ ३०४ ॥
आसण[1]-बेसण सगला तेह[1], करसी[2] कॉम सहू ससनेह[2]।
सगली[3] साकति करि सावती[3], माँहि[4] तेंडाविउ[5] डिल्लीपती[6] ॥ ३०५ ॥
परिघल[1] परठा दीसइ घणा[1], जाणि[2] विमान[3] अछइँ[4] सुर तणा[5]।
ठउंडि ठउंडि[6] दीसइँ[7] पूतली[8], घालइँ[9] वाउ[10] चिहुं[11] दिसि वली[12] ॥ ३०६ ॥

॥ २९९ ॥ BCDE प्रतियोंमें यह चोपई नहीं है।

॥ ३०० ॥ १ बोल...E। २ हूया B, हूँया C, हुवा D। ३ °माँहि C। ४ हूवउ B, हूयो CD, हुवो E। ५ राइ तणै मनि मिटियो रोष E।

॥ ३०१ ॥ १ रतनसैंनि घरि विधि-विधि घणी D, रतनसैंन गया महिलाँ भणी E। २ जुगति E। ३ करावी BCD, करावण E। ४...प्रति इमि...C, पदमणि...प्रतै...कहै D, पदमिण प्रति राजा...कह्यो E। ५...स्युं...B,...°सु...C, आलमसुं हिवै...रहै D।

॥ ३०२ ॥ १ तिणि...भगति...B, तिणि...भगति करो C,...भगति करु D, भोजन भगति करो हिव इसी E। २...थणउं BC, आलम...हरिपै घणुं D, जिण दलीपति होवै खुसी E। ३ पदिमणि C, पदमणि D, पदमिण E। ४ कहै DE। ५ प्रीय CD। ६ सुणो CE, सुणौ D। ७...करुं...B,...करू...प्रीसणो C,...करहु प्रीसणौ D, हुं हाथै न करू प्रीसणो E।

॥ ३०३ ॥ १ नवरस ABCD। २ सरिस E। ३ करउं B, करो C, करू D, करिस E। ४ प्रीसेसइँ B, प्रीसइ C, प्रीसेसै D, प्रीसैसै E। ५ नारी C। ६ सिणगारू C, सिणगारौ D, सिंणगारो E। ७ सघली DE। ८ छौकरी D। ९ अछइँ B, अछै DE। १० जे BCD, जो E। ११ तुम C।

॥ ३०४ ॥ १ दो BC, बे D। २ निधान BCD। ३ पदमणि D, पदमिण E। ४ रहै DE। ५ सावधान BCD, सावधाँन E। ६ होइ BCD, हुयै E। A २९७। B ३३९। C ३४०। D ३७०। E ४४६।

॥ ३०५ ॥ १...बइसण...B,...बैसण...D, आसण बैसण विधि विधि किया E। २...काम...B,...कॉम-काज...D, ऊपरि छाया डेरा दिया E। ३...रिसवती B,...साखति...E। ४ माहि B। ५ तेडाव्या BCDE। ६ दिल्लीपती BC, दीलीपती D, दीलीधणी E।

॥ ३०६ ॥ १ परघल परिगह...B, परघल परिगह...घणाँ C,...परिगह दीसै...D, देखे साहि महिल सतखणा E। २ ताँणि C, जाँणि E। ३ विमाँन C, विमाण D, विमाँण E। ४ अछइ AB, अछै DE। ५ सुरतणाँ CDE। ६ ठोडि-ठोडि ACDE। ७ दीसइ BC, दीसै DE। ८ फूतली E। ९ घालइ B, घालि C, घालै DE। १० वाव D, वाव E। ११ विहुँ C। १२ मिली BCDE।

अनुपम[1] रतन-जडित आवास,[2] अगर[3] कपूर अनोपम वास[3] ।
चिहुं[4] दिसि दीसइँ चित्र अनेक[4], मंडप[5] महल महा सुविवेक[5] ॥ ३०७ ॥

तिहाँ आवी बेठो[1] पतिसाह, मन महि[2] आवइ[3] अधिक उछाह[4] ।
पदमिणि[5] पाँहइँ[6] अधिक पडूर[7], दासी आवि[8] दिखाडइ[9] नूर ॥ ३०८ ॥

इक[1] आवी वइसण दे जाइ[1], बीजी[2] थाल मँडावइ ठाइ[2] ।
त्रीजी[3] आवि धोंवाडइ हाथ[3], चोथी[4] ढालइ[5] चमर सनाथ ॥ ३०९ ॥

दासी आवइँ[1] इम जू जूई[2], आलिम मति अति विह्वल हुई[3] ।
"पदमिणि[4] आ कइ, आ पदमिणि, सरिखी दीसइ सहु कामिणी[5]" ॥ ३१० ॥

व्यास कहइ[1]-"संभलि[2] मुझ धणी[2]! ए सहु[3] दासी पदमिणि[4] तणी ।
वार-वार[5] स्युं[6] झबकउ[7] ऍम? पदमिणि[8] इहाँ पधारइ[9] कॅम"? ॥ ३११ ॥

"मुष्टि[1] करी रहउ[2] साहि[3] सुजाँण[4]", "म[5] हवउं वलि-वलि विकल अयाँण[5] ।
ए आवइँ[6] ते सगली दासि, प्रमदा पदमिणि[7] तणी खवासि" ॥ ३१२ ॥

देखी[1] दासी रंभ समाँन[1], आलिम[2]-मनि अति हुउं गुमाँन[2] ।
"जेहनइ[3] दासि अछइँ एहवी[3], तें[4] कहउं आप हुसी केहवी[4]"? ॥ ३१३ ॥

॥ ३०७ ॥ १ अनोपम C, अनौपम D, 'नूपम E । २ आवासि C । ३...अनूपम...B, ...अनौपम...D, अगर धूप कपूर सुवास E । ४...दीसइ... BC,...दीसै...D, चित्रसाली रंगित चित्राँम E । ५...महिल महा सुविवेक D, विचि-विचि मीनाकारी काँम E ।

॥ ३०८ ॥ १ बइठउ B, बइठो C, बैठो D । २ °मइ BC, मन माहि D । ३ आवै D । ४ उत्साह C । ५ पदमणि D । ६ पासइँ B, पासइ D, पासै E । ७ पुंडूर D । ८ आवइ B, आवि C, आइ D । ९ दिखावै CD । E प्रतिमें यह नहीं है ।

॥ ३०९ ॥ १ एक...बैसण दे जाय D । २...मंडावै थाय D । ३...धुवाडइ...BC, तीजी आय धुवाडै D । ४ चउथी BC, चोथी D । ५ ढोलइ B, ढालै D । E प्रतिमें यह नहीं है । इसके नीचे BC प्रतियोंमे ये दो चोपइयाँ अधिक हैं–

(१) इक सखि मेवा मिठाई घणी, इक सखि भाँति बहु (बहू C) सालण (साल C) तणी ।
इक सखि साग सगपती (सगोनी C) थाल, लेइ-लेइ ऊभी सुंदरि बालि ॥
(२) इक आणइ खूब घणाँ (घणा C) पकवान, इक आणइ गुरडी देवजीर धान (धाँन C) ॥
इक आणइ हलुआ साकर तणा, पातसाह (पातिसाह C) मनि रंज्या घणा ।

॥ ३१० ॥ १ आवइ BC । २ जू जूई B । ३ विकलत थई BC । ४ पदिमणि C । कॉमिणी C । A ३०३ । B ३४७ । C ३४८ । DE प्रतियोंमें यह नहीं है ।

॥ ३११ ॥ १ कहइँ B, कहि C, कहै DE । २ सुणि दिली-धणी E । ३ सुइ BC, सब DE । ४ पदमणी D, पदमिण E । ५ वार वार D । ६ सु C, सुं D, क्या E । ७ झबको B, जबको C, झबकौ E । ८ पदमणि D, पदमिण E । ९ पधारै CD, पधारें E ।

॥ ३१२ ॥ १ मुष्ट BC । २ हो C, रहो DE । ३ साह BCE । ४ सुजाण B, सुजाँन E । ५ मम होवउ वलि विकल अजाण BE, मम होवो वलि विकल अजाँण C, मति हो बलि-बलि विकल अजाँण D । ६ आवइ BCDE । ७ पदमणि D, पदमिण E ।

॥ ३१३ ॥ १...रूप-निधान BCE,...रूप-निधाँन D, दासी रूप-विलासी देख E । २...हूवउं गुमान B, हुवो गुमान D, वार-वार चितै अनिमेप E । ३...अछइ...AC, जेहनै...छै... D, जेहनी दासी छै एहवी E । ४...कहु...A,...आपि हुस्यइ...BE,...कहो आपि हुस्यइ...C,...कहौ...D । इसके नीचे BCD प्रतियोंमें यह कवित्त है ।

आगलि बहुत खवासि, नारि बहु पोड़स करंती ।
पाछलि सई पंच-च्यारि, च्यारिसित चिहुं दिसि रंती ।

व्यास कहइ[१]-"सांभलि[२] सुलिताँण[३]! पदमिणि[४] नारि तणा[५] अहिनाँण[६]।
झलकंती[७] जाणे बीजली[८], कुंदण-कंति जिसी ऊजली ॥ ३१४ ॥
अंधारइ[१] अजूआलउं[२] करइ[३], देखंताँ[४] त्रिभुवन मन[५] हरइ[६]।
परिमल कमल सरीखउं[७] तास[८], भूला भमर न छंडइ[९] पास[१०] ॥ ३१५ ॥
ते आवी छानी किम रहइं[१], सुणि आलिम[२]!" इम राघव कहइं[३]।
आलिम[२] एम कहइं[३]-"सुणि व्यास[४]! धन्य! धन्य[५]! ए[६] सगली दासि ॥ ३१६ ॥
पदमिणि[१] पासि[२] रहइ[३] नितु जेह[४], निजरि[५] निहालई पदमिणि[६] देह।
किण[७] परि निजरि हुइसी पदमिणी[७]"? व्यास[८] कहइ -"सांभलि मुझ धणी[८] ॥ ३१७ ॥
उंचउं[१] दीसइ[२] ए आवास, इहाँ[३] छइ[४] पदमिणि[५] तणउं[६] निवास।
रतनसैंन राजा इहाँ[३] रहइ[७], पदमिणि[८] विरह खिण इक नवि सहइ[८] ॥ ३१८ ॥

॥ कवित्त ॥

लखदह[१] लहइ[२] पल्यंग[३], संउडि[४] सतलाख[५] सुणिज्जइ[६]।
गाल-मसूरी[७] सहस, सहस गंदूआ[८] भणिज्जइ[९]।
तस[१०] ऊपरि दोवटी[११], मोलि दस[१२] लाखे लीधी[१३]।
अगर कुसुम[१४] पटकूल[१५], सेजि[१६] कुंकुम पुट दीधी[१७]।
अलावदीन सुरिताण[१८] सुणि[१९], विरह[२०] विथा[२१] खिण [२२] नवि खमइ[२३]।
पदमिणि[२५] नारि सिणगार करि[२६], रतनसैंन सेजइँ[२७] रमइ[२८] ॥ ३१९ ॥

चमर ढलइ चिंहुं पासि, भमर बहु रुणझुण मंडइ।
सुर-नर पिष्यिय रूप, गरव मनि ततखिण छंडइ।
हंस गमणि गय गेलिस्युं, ठमकि ठमकि पग ते ठवइँ।
कहइँ राघव-"सुलताण सुणि, पदमिणि गति इणि परि हुवइँ ॥

१ बहूत C, बोहुत D। २ खवास CD। ३ बहू C। ४ पोईस B। ५ करंती B। ६ पाछिल D। ७ सइपँच B, सयपँच D। चिहु CD।

॥ ३१४ ॥ १ कहि C, कहै D। २ संभलि C। ३ सुलताण B, सुलताणि C। ४ पदमणि D। ५ तणाँ D। ६ अहिनाण BCD। ७ झबकंती D। ८ बीजुली B, बीजुली C, बीजली D। E प्रतिमें यह नहीं है।

॥ ३१५ ॥ १ अंधारे C, अंधारै D। २ ऊजवालो C, ओजवालो D। ३ करइं B, करै D। ४ देखता BD। ५ मनि D। ६ हरइँ B, हरै D। ७ सरीखो CD। ८ बास D। ९ छंडि C, छंडै D। १० पाँस BC, खास D। E प्रतिमें यह नहीं है।

॥ ३१६ ॥ १ रहइँ B, रहै D। २ आलम D। ३ कहइं B, कहै D। ४ ब्यास D। ५ धनि-धनि BD, धन-धन C। ६ एते BCD। A ३०९। B ३५३। C ३५४। D ३८५। E प्रतिमें यह नहीं है।

॥ ३१७ ॥ १ पदिमणि C, पदमणि D, पदमिण E। २ पासइ C। ३ रहई BC, रहै DE। ४ निति D, नित E ५ नजरि B, नजर C। ६ निहालइं AC, निहालै DE। ७...नजरि होसी...B,...होइसी ...C, किणि...होसी...D, किस विधि...हूहै...E। ८...कहि-'संभलि...C, ब्यास कहै...D, ...कहै-"सुनि दिली...E।

॥ ३१८ ॥ १ ऊचउं B, ऊचो C, उचौ D, उच्चो E। २ दीखइं B, दीसै DE। ३ ईहाँ B, ईहा C, तिहाँ E ४ छइँ B, छै DE। ५ पदिमणि C, पदमणि D, पदमिन E। ६ तणो CE, तणौ D। ७ रहइँ B, रहै D, जाइ E। ८...विरह क्षिणइक...सहइँ B, पदमिणि विण इक खिण नवि रहइ A, पदमणि विरह खिण एक न सहै D, भमर कमल जिम प्रेम सुखइ E।

॥ ३१९ ॥ १-दश B, दस CE, दल D। २ लहै DE। ३ सेज C, पिलंग D, पलिंग E। ४ सोडि DE। ५ सतलक्ष B, सतलख्य C, सत्तलख D, सतलख E। ६ सुणीजइँ B, सुणिजइ C, सुणीजै DE। ७

॥ चोपई ॥

अउर[1] न देखइ[2] पदमिणि[3] कोइ, जो[4] देखइ[5] सो[6] गहिलउ[7] होइ।
पदमिणि[3] पुण्य[8] पखे[9] क्युं[10] मिलइ[11], जिणि[12] दीठी[13] नारी[14] ग्रव[15] गलइ[16]" ॥ ३२० ॥
इम ते व्यास अनइ[1] सुलिताँण[2], वात[3] करइँ[4] वे चतुर सुजाँण[5]।
तिणि[6] अवसरि[7] पदमिणि[8] चीतवइ[9], "देखुं[10] असुर किसउ?"- इम चवइ[10] ॥ ३२१ ॥
तितरइ[1] जंपइ[2] दासी एक, "गउख हेठि वइठउ[4] सुविवेक[5]"।
तें[6] देखण गउखइ गज-गती[6], आवी[7] वेठी[8] पदमावती ॥ ३२२ ॥
जाली[1] माहे जोवइ जिसइं[1], व्यासइँ[2] दीठी पदमिणि तिसइं।
ततखिण[3] व्यास वली[4] वीनवइ[5], "साँमी[6]! पदमिणि देखउं[7] हवइ[8] ॥ ३२३ ॥
रतन-जडी[1] देखउं[2] जालिका, तें माहे[3] दीसइ[4] वालिका।
आलिम[5] उंचुं[6] जोवइ[7] जिसइ[8], परतिख[9] दीठी पदमिणि[10] तिसइ[11] ॥ ३२४ ॥
"अहो[1]! अहो! ए कहुं पदमिणि[1]? रंभ[2] कहुं, कइ क़हुं रुखमिणी[2]?
नागकुमरि कइ[3] का[4] किंनरी[5]? इंद्राणी[6] आँणी अपहरी[6]? ॥ ३२५ ॥

---

७ मसूरया BCD। ८ गिंद्रूआ B, गिदूया C, गीदवा D। ९ भणिज्जइ B, भणांजइ C, भणांजै DE। १० तसु BCE। ११ दोवडी D, दुपटी E। १२ दसलखें B, दसलखे C, दुहलखे D, दहलखं E। १३ लिद्धी BE, लद्धी C, लधी D। १४ कुसम BCD.। १५ प्रदकूल D। १६ सेज BCDE। १७ दिद्धी BCE, दिधी D। १८ सुलताण BC, सुलतांन DE। १९ सुनि E। २० बिरह D। २१ विथा BE, वृथा C, विथा D। २२ क्षिण BCDE। २३ खमै DE। २४ पदिमिणि C, पदमणि D। २५ सिंगार BC। २६ सजि E। २७ सेजें B, सेजइ C, सेजै DE। २८ रमैं DE। A ३१२। B ३५५। C ३५६। D ३८८। E ४६५।

॥ ३२० ॥ १ ओर C। २ देखै DE। ३ पदिमिणि C, पदमणि D, पदमिन E। ४ जे BCDE। ५ देखै DE। ६ ते D। ७ गहिलो CE, गहिलै D। ८ पुन्य BE, पुनि D। ९ पखइ B, पखै DE। १० किम BCDE। ११ मिलै DE। १२ जिण CE। १३ दीठइं B, दीठइ C, दीठै DE। १४ अपछर E। १५ ग्रव DE। १६ गलै DE।

॥ ३२१ ॥ १ अनै D, अने E। २ सुलताण B, सुलतानि C, सुलतान D। ३ वात D। ४ करैं D, करे E। ५ सुजाण BD। ६ तिण DE। ७ अवसिरि C। ८ पदमणि D, पदमिन E। ९ चीँतवइ B, चितवै D, चींतवै E। १० देखउं...चवइं B, देखो... किसुं...C,...किसो...हुवै D, आलम केहवेजे इम चवै E।

॥ ३२२ ॥ १ तितरइं B, तितरै D, तितरे E। २ जंपै DE। ३ गोखि CD, गोख E। ४ वेठो C, वैठो D, वेठो E। ५ सुविवेक D। ६...गोखि...C,...गोखइ... D, तसु मुख देखण तव गज-गती E। ७ आवइ C, आवे DE। ८ वयठी B, वइठी C, वैठी D, गोखै E।

॥ ३२३ ॥ १ जालिका माहइ जोवइं जिसइं B, जालिका माँहि...C, जाली माहे जोवै जिसै D, जाली माहिँ जोवै जिसै E। २ व्यासइ B, व्यासि C, व्यासै D, व्यासै E। ३ तत खिणि D। ४ वली D। ५ वीनवइं B, विनवै D, वीनवै E। ६ स्वामी BCDE। ७ देखो CE, देखौ D। ८ हिवइं B, हिवै DE।

॥ ३२४ ॥ १ जडित BCDE। २ देखो C, देखौं D, जे छै E। ३ माही BE, माहिं D। ४ वइठी BC, वैठी D, वेठी E। ५ आलम D। ६ ऊँचउं B, ऊचो C, ऊचौं D, उंचो E। ७ जोवइं B, जोइं C, जोवै DE। ८ तिसइं B, जिसै DE। ९ परतखि D, परितिख E। १० पदमणि D, पदमिन E। ११ तिसइं B, तिसै DE।

॥ ३२५ ॥ १ वाहि ! वाहि ! याराँ ए पदमिणी B, वाहि ! वाहि! याराँ ए पदिमणी C, वाहि ! वाहि! याराँ ए पदमणी D, वाहि ! वाहि ! यारो ये पदमिनी E। २ रंभ किताँ ए छइ रूकमिणी B, रंभ कन्या ए छइ रुकमिणी C, रंभ किनाँ ए छै रुकमणी DE, रुखमणी E। ३.४ कि ना BCDE। ५ किनरी CDE। ६ कइ इंद्राणि आणि (आँणि C)...B, कै इंद्राणी आणी हरी D, इंद्राणी आणी अपहरी E। A ३१८। B ३६०। C ३६१। D ३९३। D ४७२।

एहनउं[1] रूप अनोपम एह,[1] रूप तणी इणि[2] लाधी रेह ।
एहना एक अँगूठा जिसी, अवर नारि नहु दीसइ[3] इसी[4] ॥ ३२६ ॥

एहनी बात[1] कहीजइ[2] किसी, पदमिणि[3] नारि हीया महि[4] वसी[5] ।
मूर्छित चित्त हुउं[6] पतिसाह, धरणि ढलइ[7] वलि[8] मेल्हइ[9] धाह ॥ ३२७ ॥

व्यास[1] कहइ[2]- "सांभलि[3] नर-राज,[4] फोकट[5] काँइ[6] गमाडउं[7] लाज[8] ।
धीर[9] धरउं साहस आदरउं,[9] अवर उपाय[10] वली[11] के[12] करउं[13] ॥ ३२८ ॥

रतनसेंन[1] जउं[2] पाँनइ[3] पडइ[4], तउं[5] ए पदमिणि[6] हाथइ[7] चढइ[8] ।
इम आलोची[9] मेल्ही[10] वात[11], धीरपणा विण[12] मिलइ[13] न धात[14]" ॥ ३२९ ॥

मौन[1] करी सहु जीमिउं साथ[1], भगति घणी कीधी नर-नाथ[2] ।
फल[3] फोफल देई तंबोल[3], माहों-माहि[4] कीउं[5] रँग-रोल ॥ ३३० ॥

चोआ[1] चंदण[2] अगर कपूर, करि कसतूरी[3] केसर[4] पूर ।
माहो-माहि[5] कीया छाँटणा, ऊपरि दीधा वागा[6] घणा ॥ ३३१ ॥

परिघल दीधी पहिरामणी[1], भगति[2]- जुगति अति कीधी घणी[3] ।
हाथी-घोडा देई घणा[3], संतोष्या सगला प्राँहुणा[4] ॥ ३३२ ॥

हिव इम जंपइ[1] आलिमसाह[2], माहो-माही[3] साही[4] बाह[5] ।
"कोट दिखाडउं[6] अब हम[7] भणी, हम[8] आयाँ हुई वेला घणी[9]" ॥ ३३३ ॥

॥ ३२६ ॥ १…अनूपम…B, एहनो…C, एहनौ…अनौपम…D, अति ही अनूपम नारी एह E । २ इम BE, एह C । ३ दीसै DE । ४ किसी BCD ।

॥ ३२७ ॥ १ बात D । २ कहीजै D । ३ पदिमणि C, पदमणी D । ४ माहि BCD । ५ वसी D । ६ हूवउं B, हूयो C, हूवौ D । ७ ढल्यो BC, ढल्यौ D । ८ वलि BD । ९ मेलइ C, मूकै D । E प्रतिमें यह नहीं है ।

॥ ३२८ ॥ १ ब्यास B । २ कहइँ B, कहि C, कहै DE । ३ संभळि DE । ४ पतिसाह BCD, सुलताँन E । ५ फोकटि C, फौकट D, फोगट E । ६ काय D । ७ गमाडइ BC, गँमावै D, गमावो E । ८ साह BCD, माँण E । ९…धरो…आदरो C, धीरज धरि…आदरौ D, धीरज धरि…आदरो E । १० अवरोपाव C, उपाय DE । ११ वली BE । १२ को BCDE । १३ करो CE, करौ D ।

॥ ३२९ ॥ १ रतनसेंनि D । २ जे B, जो C, जौ D । ३ पानइ B, पाँनै C, पाँने E । ४ पडइँ B, पडै C, पड़ैं E । ५ तो CE, तौ D । ६ पदमणि D, पदमिन E । ७ हाथइ C, हाथै D, हाथै E । ८ चडइँ B, चडइ C, चढै D, भडै E । ९ आलौची D । १० मेलइ BC, मेलै D, मेले E । ११ बात D । १२ विणि D, विनु E । १३ मिलै DE । १४ घात E ।

॥ ३३० ॥ १…जीमो…C, मून…जीमौ…D, इम करताँ जीम्यो…E । २ नाथि B । ३ फल-फोफल वलि देइ तंबोल B, फल-फोफल बलि देइ तंबोल C, श्रीफल देइ दीधा तंबोल E । ४ माँहि DE । ५ कीया BCDE ।

॥ ३३१ ॥ १ चोवा BCDE । २ चंदन BCDE । ३ कस्तूरी BC, किसतूरी D । ४ केशरि B, केशर C, केसरि D । ५ माँहो-माँहि C । ६ बागा D । A ३२४ । B ३६६ । C ३६७ । D ४०० । E ४७७ ।

॥ ३३२ ॥ १ पहिरौंमणी E । २…युगति…B …जोगति…C, जरकस ने पाटंबर तणी E । ३ घणाँ B । ४ प्राहुणाँ B, प्रहुणा CE ।

॥ ३३३ ॥ १ जंपइँ B, जपै DE । २ आलमसाह CE, आलिमसाहि D । ३ माहे-माहे BD, माँहो-माँहि C, माहो-माहिँ E । ४ झाली DE, ५ बाँह CE, बाहि D । ६ दिखलावउं B, दिखलावो C, दीखावो D, दिखावो E । ७ अम्ह BD । ८ तुम महिमानी कीधी घणी B, तुम महिमाँनी कीधी घणी CDE ।

रतनसैंन[1] नृप साथइ[2] थयउं, कोट[4] दिखाडण[5] लेई गयउं[6]।
विसमी[7] जे-जे हुंती ठोड[7], फेरि[8] दिखायउं[9] गढ चीतोड[10] ॥ ३३४ ॥
विसम घाट[1] अति वाँकउं[2] कोट, माहि[3] न देखइ[4] काई[5] खोट।
गोला-नालि घणी[6] ढीकली[7], कदही कोई[8] न सकइ[9] कली[10] ॥ ३३५ ॥
गढ[1] देखंता ग्रब सब गलइ[1], इसडउं[2] कोट कदे नवि मिलइ[2]।
हिव[3] इम जंपइ आलिमसाह[3], माहों[4]-माहे अधिक उछाह[4] ॥ ३३६ ॥
"काम[1] काज कह्यो[2] हम भगी; तुम[3] महिमाँनी[4] कीधी घणी।
सीख दिउं[5] हिव[6] ऊभा रही", आलिमसाह कहइ[7] गहगही ॥ ३३७ ॥
भूप भणइ[1]- "आघेरा[2] चलउं[3]! जिम अम्ह[4] जीव हुइ[5] अति भलउं"।
एम कही आघउं[6] संचरिउं,[7] गढथी वाहरि[8] नृप नीसरिउं[9] ॥ ३३८ ॥
नृप मनि कोइ नही वलवेध[1], खुरसाणी मनि अधिकउं[2] खेध[3]।
व्यास कहइ- "ए अवसर अछइ, इम म[4] कहेज्यो[5] न कहिउं[6] पछइ[7]" ॥ ३३९ ॥

॥ दूहा ॥

["अवसर चुक्का मेहला[1], वरसी काह[2] करेस।
खड सुक्का गोरू मुआ[3], वाल्हा गया विदेस" ॥] ३४० ॥

॥ चोपई ॥

हलकारया आलिम[1] असवार, माहों-माहि[2] मिल्या जूझार[3]।
रतनसैंन झाल्यउं[4] ततकाल, विलली[5] वात[6] हुई[7] विसराल[8] ॥ ३४१ ॥

॥ ३३४ ॥ १ रतनसैंनि भ्रप D। २ साथे BC, साथै DE। ३ थयो BC, थयौ D, थया E। ४ गढ BCDE। ५ दिखलावण BDE, देखलावण C। ६ गयो BC, गयौ D, गया E। ७ विषम-विषम जे हुंती (हूंती C) ठोड BCDE। ८ फिरी BCDE। ९ दिखाड्यो BCD, देखाड्यो E। १० चीत्रोड BC।
॥ ३३५ ॥ १ घाटि C। २ वाँको BCDE। ३ नाँहि E। ४ देखै DE। ५ काँई BCDE। ६ धरी D, वहै E। ७ ढीँकुली B, ढीकुल C। ८ कोई ABCDE। ९ सकइ B, सकै DE। १० नीकली D।
॥ ३३६ ॥ १...गरब...गल्यउं BC, गढ देख्याँ गढपति ग्रब गलै DE। २...मिलउं BC, इसडौ कोट कदे नहु मिलै D, एहवो कोट न कदहि मिलै E। ३...जंपइँ...B, जंपै...D, हिवै इम जंपै आलमसाह E। ४ माहो-माहे...BCD, तुम्ह रतन हो भेरी वाह E।
॥ ३३७ ॥ १ काँम CDE। २ कहिय्यो B, कहियो CE, कहिज्यो D। ३ तुम्हि BC, तुम्ह E। ४ महिमानी BCDE। ५ दीयउं BD, देउ C, दीयै E। ६ हिवे BD, हिवइ C, वलि E। ७ कहिइ C, कहै D। A ३३० । B ३७६ । C ३८६ । D ४०७ । E ४८४ ।
॥ ३३८ ॥ १ कहइ BCDE। २ आघेराँ B। ३ वलउं B, चलो CDE। ४ हम BCDE। ५ होवइ BC, होइ D, हुइ E। ६ आघो CE, आघौ D। ७ संचर्‌यउं B, संचर्‌यो CE, संचर्‌यौ D। ८ बाहिर CE। ९ नीसर्‌यउं BE, नीसर्‌यो CD।
॥ ३३९ ॥ १ छल-भेद BCDE। २ अधिको CDE। ३ खेद BCDE। ४ न C, मत DE। ५ कहय्यो B, कहिज्यो C कहिज्यौ D, कहज्यो E। ६ कहियउं B, कहीयो C, कह्यो E। ७ पछै DE।
॥ ३४० ॥ १ मेहडा C। २ काहु D, कहा E। ३ मुया C, मुवा D। A प्रतिमें यह दोहा नहीं है।
॥ ३४१ ॥ १ आलम DE। २ °माँहे B, माँहि C °माहिँ E। ३ झूझार BCDE। ४ झाल्यो BCDE। ५ विचली BCDE। ६ वाच BC, वात CD। ७ ... हुया C, हुई E। ८ विकराल D।

॥ सोरठा ॥

रूखाँ माहे[1] राउ[2], आँवा[3] भणी परसंसियइ[3] ।
मुहि रस[4] हीयइ[5] कसाउ[6], कहु[7] किम हीयइ पतीजियइ[7] ॥ ३४२ ॥

॥ दूहा ॥

"नृप[1], वयरी[2], वाघा तणउ, जे विश्वास करंत[3] ।
ते नर कच्चा जाणिए-" आलिम एम कहंत[4] ॥ ३४३ ॥
"वयरी[1] विसहर व्याध वघ, ग्रासी गढपति राउ[2] ।
छल-बलि गृहिए दाउ धरि, लग्गइ[3] कोइ न पाउ[4] ॥ ३४४ ॥
तइं[1] महिमांनी हम करी, अब तूं हम महिमान ।
[2]पदमिणि देइ करि छूटस्यउ[2], रतनसेंन राजान[3]" ॥ ३४५ ॥

॥ चोपई ॥

साथि हुता जे सुभट[1] सनेह, तियाँ[2] तणउ तिणि कीधउ छेह[2] ।
नरपति[3] आणिउ लसकर माहि[3], जाणि[4] कि सूरिज गिलीउ[5] राहि ॥ ३४६ ॥
बेडी[1] घालि बेसारिउ राउ[1], आलिम[2] जुलम कीउ अन्याउ[2] ।
भूप[3] हतउ अति सबलउ सही[3], अबल हुउ[4] जब लीधउ[5] ग्रही ॥ ३४७ ॥

[आठमो खण्ड]

सुणी सहू गढ माहे वकी, वात तणी विणठी वाँनकी ।
[1]गढ माहे हुइ हलफल घणी,[1] [2]साही लीधउ जब गढ-धणी[2] ॥ ३४८ ॥

॥ ३४२ ॥ १ माँहेँ C, हंदा E । २ राव DE । ३ °प्रसंसीइ C, °प्रसंसीयै D, आँवा तुज्झ सराहियै E । ४ मुख E । ५ हिंयै DE । ६ कसाव DE । ७ कहो किम हियै पतीजियैं D, अवराँ केम पतीजियै E । A प्रतिमें यह सोरठा नहीं है । B ३८१ । C ३९१ । D ४१५ । E ४८८ ।

॥ ३४३ ॥ १ न्रप D । २ वइरी C । ३ करंति B । ४ कहंति B । A प्रतिमें नहीं है ।

॥ ३४४ ॥ १ वैरी B । २ आप BE । ३ लागै DE । ४ पाप BE । A प्रतिमें नहीं है ।

॥ ३४५ ॥ १ तैं DE । २ पदमणि देईं छूटस्यौ D, पदमिन दीधो छूटि हो E । ३ राजाँन CDE । A प्रतिमें नहीं है ।

॥ ३४६ ॥ १ सुहड E । २ तीयाँ...A, तियाँ (तिआँ E) चढाई रजनी (रजवट E) रेह BCDE । ३...आण्यो ...BC, ग्रहि आंण्यौ न्रप (आंण्यां नृप E) लसकर मांहि DE । ४ जाणे BC, जांणै DE । ५ गलियो BCD, ग्रहीयो E ।

॥ ३४७ ॥ १ बेडि घालि बइसार्‍यउ...B, बेडि घालि बइसारयो राय C, बेडि घालि बैसारयो राय D, बेडि घालि बैसार्‍यो.राइ E । २ आलिम जिम कीधउ (कीधा D) अन्याय BC, आलम जुल्म कीयौ अन्याय (कीयो अन्याइ E) DE । ३ राणउ हुंतउ...B, राणो CD, राजा E, हुंतो BE, हुंतौ D, सबलो CE, सबलौ D । ४ हुवउ B, हुयो C, हुवौ D, हुऔ E । ५ लीधो CE, लीधौ D । A ३३५ । B ३८६ । C ३९६ । D ४२० । E ४९३ ॥

॥ ३४८ ॥ १ हुलबल हूई सहिर वाजार E । २ साही लीधउ गढ नउ धणी B,...लीधो गढनो...C, पकडे लीधे गढनो...D, पकडांणो राजा सिरदार E ।

मिलिया[1] सुभट दहो[2] दिसि वली[3], सेना सगली गढ महि मिली।
[5]मिलिया[1] माणस टोला टोलि[5], सबल जडावी गढनी पोलि ॥ ३४९ ॥

[1]वीरभाँण सुत सुभटाँ माहि[1], [2]बइठउ आवी ग्रही गजगाहि[2]।
माहो-माहि करइ आलोच, सबल हूउ[3] गढ माहि[4] सँकोच ॥ ३५० ॥

एक कहइ[1]–"द्याँ[2] राती वाह", एक कहइ "जूझाँ[3] गढ माहि"।
एक कहइ–"साँमी[4] साँकडइ[5], जूझंताँ किम टाणुं जुडइ" ॥ ३५१ ॥

एक कहइ[1]–"नहि[2] नायक[3] माहि, विण नायक[3] हत सेन कहाइ।
नायक[3] विण सहु[4] आल पंपाल[4], पूलइ[5] वाँध्यउ जिउँ सुसपाल" ॥ ३५२ ॥

एक कहइ[1] "मरवुं[2] छइ[3] सही, मूआँ[4] गरज सरइ[5] का नही।
सवलाँसुं[6] नवि[7] थाइ संग्राम, ‘जिण परि तिण परि न रहइ माँम’ ॥ ३५३ ॥

इम[1] आलोच करइँ भट[1] सहू, [2]मन माहे भय हूउ वहू[2]।
तितरइ[3] आविउ[4] इक[5] परधाँन[6], आलिमसाहि[7] तणउ असमाँन[7] ॥ ३५४ ॥

खबर[1] करावी[2] आविउ[3] माहि[4], एम कहइ[5] छइ[5] आलिमसाहि[6]।
"हमकुं[7] नारि दियउ [9]पदमिणी,[9] [9]जिम हम छोडाँ गढनउ धणी[9] ॥ ३५५ ॥

॥ ३४९ ॥ १ मिलीया A, मिलिया BCD। २ ते दह दिसि BCD। ३ बली BCD। १-३ तेड्या सुहड दसो दस वली E। ४ माहे B, माहि C, माहे D, मांहि E। ५...मानस AB, कटक सजाणो घण हाल कलोल E।

॥ ३५० ॥ १...मौँहि BC, बीरभाँण सुत सुभटज...D, वीरभाण तव करि दरगाह E। २ बइठो...(बयठो D)...गृही गज गाह (गजसाह C) B, तेड्या सुहड सवे गजगाह E। ३ हुवउ B, हूयो C, हुवो D, हूओ E। ४ माहे BD।

लोक कहै कुमति हुवो (°यो E) राय (°इ E), काइ विस्वास कियो असुराय D (असपतिनै आंण्यो गढ माहि E)

राय ग्रही पदमणि पणि ग्रहै, गढ तोडै जण खय जसवहै D।

वलि पहुचावण साथै थया, गढ बाहरि अलगा जो गया E। D ४२३। E ४९७।

तो राजा पडिया तिण पास, असुर तणा केहा विस्वास।

राय ग्रह्यो पद्मिन पणि ग्रहै, गढ चीतोड हवै नवि रहै। E ४९८ ॥

॥ ३५१ ॥ १ कहइ BC, कहै DE। २ घउ BD घो C, दियो E। ३ झूझउ B, झूझो CD, झूंझो E। ४ सामी BCD। ५ सँकडै DE। ६ झूझंताँ...टाणउ...BC, झूझंताँ...टाणौ जुडै D, लडता तेहनै भारी पडै E।

॥ ३५२ ॥ १ कहइ BC, कहै DE। २ नही A। ३ नाइक BC। ४ विन...BCE, विणि...पताल D, एहवो कोइ करो मंत्रणो E। ५...पहिलउ B,...पहिलइ C, कांइ सवै मिल झंखौ आल D, मांन रहै हिंदू भ्रम तणो E।

॥ ३५३ ॥ १ कहइ BC, कहै DE। २ मरिव्यो B, मरिवो CDE। ३ छै DE। ४ मूवां BD, मूयां C। ५ सरै D। ६ स्युं BC। ७ न E। ८ होइ BCD। ९ हारि हुथै तो न रहै मांम E। A ३४१। B ३९३। C ४०३। D ४२८। E ५०२।

॥ ३५४ ॥ १ आलोचइ सामंत BC, आलोचै सामंत DE। २ मन मांहि विघन हुवा (हूया C) अति बहू BCD, चिंता उपजी च्चितमै वहू E। ३ तितरइ BC, तितरै D, तितरे E। ४ भाव्यो BC, आयौ DE। ५ एक BCDE। ६ परधान BCDE। ७ आलमसाह...(तणो D) असमान BCD, हुकम करै छै इम सुरताँण E।

मांहि तेड्यो नीसरणी ठवी, मंत्रि महाबुधि जाणग कवी।
इम जंपै छै आलमसाह, तुम्हे कहो तेहनी धुं वांह ॥ E ५०४ ॥

॥ ३५५ ॥ १ खबरि BCDE। २ कराई C। ३ आवि BCDE। ४ मांहि BCDE। ५ कहै छै D। ६ आलमसाहि BCDE। ७ हमकौं E। ८ दियौ DE। ९ जिम हूँ छोडउ...BCD, जिम मैं छाडों गढका धणी E/१

[1]नही तरि प्राणइं लेशाँ सही[1], [2]जउं तुम्ह इण परि देशउं नही[2] ।
[3]जउं तुम्ह देशउं हम पदमिणी[3], [4]तउं छूटेसी गढनउं धणी[4] ॥ ३५६ ॥
नही[1] तरि गढपति लीधउं[2] ग्रही, गढ पिण[3] हेवइ[4] लेशाँ[5] सही ।
गढ लीधइ[6] लीधी पदमिणी,[7] हठीउं[8] [9]असपति [10]करसी [10]धणी ॥ ३५७ ॥
मरशउं[1] सुभट[2] सहू ससनेह, कइ[3] हम सीख करउं[4] तुम्हि [5]एह" ।
एम कही[6] ऊठिउं [7]परधाँन, [8]तितरइ वोल्या ते ससमाँन[8] ॥ ३५८ ॥
"वात विचारी कहशाँ अम्हे, ताँ लगि पडखउ इक दिन तुम्हे" ।
एम कही राखिउ परधाँन, सुभट करइँ आलोच समाँन ॥ ३५९ ॥
"कहउं[1] हिवइ[2] परि कीजइ[3] किसी, विसमी वात हुई ए इसी ।
[4]जउं ए देशाँ इम पदमिणी[4], [5]तउं पिण माँम रहइ नही चिणी[5] ॥ ३६० ॥
विण दीधइ[1] सहु[2] विणसइ[3] वात, पदमिणि[4] विण का न मिलइ[5] धात ।
प्राँणइ[6] ए तउं [7] लेशइ [8]सही, [9]जे इम आविउं छइ इहाँ वही[9] ॥ ३६१ ॥
प्राँणइ लेताँ विणसइ[2] घणुं[3], [4]न रहइ वाँसइ एको त्रिणुं[4] ।
[5]नही तरि जाशइ इक पदमिणि,[5] [6]अवर विणास हुइ नहु चिणी"[6] ॥ ३६२ ॥
वीरभाँण पिण[1] पदमिणि[2] दिसी, देताँ होवइ[3] मन महि खुशी ।
"इणि मुझ मात तणउं[4] सोहाग, लेई दीधउं[5] दुख दउंहाग[6] ॥ ३६३ ॥

॥ ३५६ ॥ १...लेस्युं...B,...प्राँणे लेसुं...D, नहि तव लेंगे मैं खड प्रांण E। २ जो...देस्यो...BD, गढ गंजिहि गजिहि हिंदूआण E/२। ३...खुसी न थाउं (देउ D)...BD, खुसी होइ चौगे पदमिनी E। ४ खुदा न करइ (करै D) राखउं गढ धणी BD, मैं भी छोडूंगा गटका धणी ॥ E/१। C प्रतिमें यह चौपई नहीं है।

॥ ३५७ ॥ १ नहि BCD। २ लीधो C, लीधौ D। ३ पणि BCD। ४ हेवें B, हिवै D। ५ लेस्यो B, लेस्युं C, लेसुं D। ६ लीधै D। ७ पदिमणि C, पदमणी D। ८ हटियो BCD। ९ आलिम BCD। १० करिसइ C। E प्रतिमें यह चौपई नहीं है।

॥ ३५८ ॥ १ मरउं BC, मरो D २ सेवक D। ३ कै D। ४ करो CD। ५ तुम्ह BCDE, प्रतिमें यह अर्द्धाली नहीं है। ६ कही नइ BC, कही नै DE। ७ गयो BCDE। ८ सुभट करइ (करै D) आलोच समान BCD, सवि आलोच पड्या असमान E/२। B २९८। C ४०७। D ४३३। E ५०६।

॥ ३५९ ॥ BCDE प्रतियोंमें यह चौपई नहीं है। A ३४७।

॥ ३६० ॥ १ कहु A, कहो CDE। २ हिवै DE। ३ कीजे DE। ४ जइ BC, जै D, जो E, आपइ BC, आपै DE, देस्यां BCD, पदिनणी C, पदमणी D, पदमिनी E। ५...पिणि माम...B, तो पणि... आपणी C, तो काइ मास रहै नहि चिणी D, तो पिग वट न रहे आपणी।

॥ ३६१ ॥ १ दीधै D, दीधां E। २ सवि BCDE। ३ विणसै CD। ४ पदमणी D, पदमिनी E। ५ मिलै DE। ६ प्राणइं BC, प्राणै DE। ७ ईं ए BC, ए नो DE। ८ लेसइ BC, लेसौ DE। ९... आव्यो छइ इण परि...(आयौ DE, छै DE) BCDE।

॥ ३६२ ॥ १ प्राणइं BC, प्राणै DE। २ विणसै DE। ३ दाउं BCD, दाव E। ४...रहइं वासइं (रहै वासे D) कोइ त्रिणाउं BCD, गढ न रहै नवि छूटे राव E। ५ नहि तरि जाइ एक पद्रमिणी B, नहि तरि जाए ए कामिणी C, नहि तरि जाइ एक पदमणी D, नहि तरि इक जातां पदमिणी E। ६...न होवइ...BC,...न होवै...D, धरती रहै रहै गढ धणी E।

॥ ३६३ ॥ १ पणि BCD, पिण E। २ पदमणी D, पदमिन E। ३ थ्यौ E। ४ तणो BCDE। ५ दीधौ DE। ६ दोहाग BCDE।

तिणि[1] कारणि देताँ[2] पदमिनी[3], "बलि मुझ मात हुइ सामिनी"[4] ।
वीरभाण समझावी[5] कहइ[6]–"पदमिणि दीधइ[7] सगलुं[8] रहइ"[9] ॥ ३६४ ॥
नाथ पखइ[1] सहु काचउ[2] हाथ, छल-बल-भेद न जाँणइ[3] धात ।
एक समी कहि इक विपरीत, कोई भार न झालइ[4] चीत ॥ ३६५ ॥
सगले सुभटे थापी वात– "पदमिणि[1] देशाँ[2] हिव परभाति"[3] ।
इम आलोची ऊठ्या जिसइ[4], पदमिणि सहु सांभलीउ[5] तिसइ[6] ॥ ३६६ ॥
[1]'पदमिणि हेव हीइ खलभली[1]', "वात बुरी मइँ ए साँभली ।
खंडुं[2] जीभ! दहुं निज देह! पिण[3] नवि जाउं[4] असुराँ गेह ॥ ३६७ ॥
[1]'राजा इणि परि बंधे दीउ[1]', वाँसइ[2] ए आलोचइ[3] कीउ[4] ।
सगला सुभट हूआ सतहीण! हिव[5] किण[6] आगलि भाषु दीण ॥ ३६८ ॥
वखत इसउ[1] मुझ आविउ[2] वही[3], सरणाई को[4] देखुं नही ।
हिव जगदीस[5]! करीजइ 'किसुं[6]' ? देखउ[7] संकट आविउं[8] इसुं[9] ॥ ३६९ ॥
रे जीव! तुं नवि भाषें दीण[1], जीव! म होयो[2] रे सतहीण ।
[3]'मरताँ सहुवइ समरइ सही[3]', [4]'दुख-सुख कर्म लिख्या होइ मही[4]' ॥ ३७० ॥
कर्म हर्त्ता कर्म कर्त्ता, कर्म लील विलास[1] ।
कर्म्मि आगलि को न छूटइ, राउ रंक[2] नइ दास ॥ ३७१ ॥

॥ ३६४ ॥ १ तिण C। २ दीजे E। ३ पदमिणी BCE, पदमणी D। ४ म्हांकुं दुख्य न लागइं (लागैं D) चिणी BCD, यह वात छै सनइथां तणी E। ५ समझावइ BC, समझावैं D, नुहडांनै E। ६ हिवइ BC, हिवै D, कहै E। ७ दीधै D। ८ सगलउ BDE, सगलो C। ९ रहै D। A ३५२।

॥ ३६५ ॥ १ पखै DE। २ काचौं DE। ३ जांणै DE। ४ झाले DE। A प्रतिमें नहीं है। B ४०४। C ४१३। D ४३९। E ५१२।

॥ ३६६ ॥ १ पदमणि D, पदमिन E। २ देस्यां BCD, देसां E। ३ परभात BCDE। ४ जिसै DE। ५ संभलियो BC, सांभली D, सांभलियो E। ६ तिसै DE।

वीरभांण कहि वात, सुनहु उमराव प्रधांनह ।
रखहुं गढकी मांम, धरा रखहुं हींदुआंनह ।
है राजा पर हथ्थ, है बल देखै भल्ली ।
देहुं नारी पदमिनी, साहि फिरि जावै दिल्ली ।
गढि आइ रांण बैठहि तखत, चमर ढुलावहि तुझक धरि ।
सिल हेठि हाथ आयौ सु तो, छल हुकमति कछु सुपरि ॥ ५१३ E ॥

॥ ३६७ ॥ १...हिव हियडइ...BC, पदमणि हिवै हिवडै...D, पदमिन हिव चितमे व्याकुली E। २ खांडूं BCDE। ३ पणि BCDE। ४ जाउं E।

॥ ३६८ ॥ १...बाँधी दीयउ BC, बाँधी दीयौ D, असपति...बाँधी दीयो E। २ वासै D, वंसै E। ३ आलोचज BCDE। ४ कीयउ BC, कीयौ D, कीयो E। ५ हिवै D। ६ किणि BCD।

॥ ३६९ ॥ १ इसो BCD। २ आयो BCD। ३ वही BD। १-३ आज दिवस मुझ एहवो सही E। ४ कोइ BE। ५ जगदीश्वर BD, जगदीस्वर C। ६ कीजइ BC, कीजै D, करीजै E। ७ किसउ BD, किसौ E। ८ देखो BCDE। ९ आयो BDE, आव्यो C। १० इसो BDE। A ३५६।

॥ ३७० ॥ १...दीन BC, अरे जीव मत भाषै दीण E। २...होय्यो...C, हिव मत होजे तू सत्तहीण E। ३...सहुयौ समरै...D, मरण थियां सवि सुधरे वात E। ४ बीजी काइ न पहुचै घात। A में नहीं है। B ४११। C ४१९। D ४४५। E ५१८।

॥ ३७१ ॥ १ लीलवजास C। २ रंग C। ADE में नहीं है। B ४१३। C ४२०।

सीता वाहर रामचँद[१] कीइ, द्रुपदी[२] हरि लेइ पाँडुवा दीइ[३]।
पदमिणि[४] असुराँ छुटइ[५] नही, रे! रे! जीव! मरण तुझ सही ॥ ३७२ ॥

॥ कवित्त ॥

दइ[१] पोलि[२] छिटकाइ[३], भन्या गढ तुरक नभाया[४]।
अउर[५] गई घढ मंडि[५], साथि लसकरी सवाया।
[६]आवत मिलीउं राउं, तव हि कीधी भुंजाई[६]।
[७]त्रीस सहस जुडि गया, साथि लसकरी सवाई[७]।
[८]खाण खाइ ऊठिउं जवहि, पकडि वाँह राजा लीउं[८]।
[९]वात करत लंघाइ पोलि, रतनसैंन काठउं कीउं[९] ॥ ३७३ ॥

[१]करे कटक अलावदी, आइ चीतोडि विलग्गउं[१]।
[२]वाच वंध दे छलिउं, राउं भूलउं मति भग्गउं[२]।
[३]कन्यउं मंत्र मंत्रियाँ, राउं छोडावे लिज्जइ[३]।
[४]झूझण भलउं न होइ, पलटि पदमावति दिज्जइ[४]।
[५]तनु दहुं जीभ खंडवि मरूं, जोगिणिपुरि पति पेखसुं[५]।
पदमिणी[६] नारि इम उच्चरइ[७]– "अव[८] किस सरण उवेखस्युं[८] ॥ ३७४ ॥

"[१]वाइ! सुणी इक वात? हुई वाजार सवारी[१]।
[२]पदमिणि घउं पतिसाह, दुरंगू गढ राउं उवारी[२]।
[३]खीमकर्ण भुज मंत्र, देल्ह पदमसी वयट्ठा[३]।
[४]मिल्या पंच पंचार, सुभट सईंवल्य न दिट्ठा[४]
[५]चीतोड चोरास्या सवि जुड्या, ताँ नवि सरणइ ऊवरूं[५]!
[६]नवि रहुं सेज सुलिताणकी, अवहुँ जीह खंडवि मरूं[६]" ॥ ३७५ ॥

॥ ३७२ ॥ १ रामै D। २ द्रोपती D। ३ पांडव D। ४ पदमणी D। ५ छूटै D। AE प्रतियोंमें नहीं है।

॥ ३७३ ॥ १ देइ BC। २ पउंले BCD। ३ य BCD। ४ निभाया BCD। ५ अवर गए गढ मांहि BCD।
६ खांगा खाइ उठियउ, कोट गढ सहु दिखलायउ आय D, उठीयो C, उठीया D, सब D, दिखलायो C, (दिखलाया D) BCDE।
७ खुसी हुवा (हुया B) पतसा॰ (पतिसाह D), देखि छल (छलि C) व्यासि सिखायउं (सिखायो C, सिखाया D) BCD।
८ सुभट सहू कायर हूवा (हुया B), बांहि (बांइ CD) साहि राजा लियउं (लियो C, लियौ D) BCD।
९ पोलि लंघि बहु वात करि, रतनसेन (॰नि D) काठउं (काठो C, काठौ D) कियउ (कियो C, कियौ D) BCD। E में नहीं हैं।

॥ ३७४ ॥ १ विकल एक..., ...चित्रोडि (चित्रकोटि D) विलग्गउं। २ बोल बंध दे छल्यो, राण भूलउं (भूलो C, भूलौ D)...BCD। ३...(करउं A, करिउं D) मंत्र मंत्रीए राण छोडावी (छुडावि D) लीजइ (लीजै D) BCD। ४...(भलौ D)..., पकडि...दीजइ (दीजै D)। ५ तन दहउ...मरउं, जोगणि हउं पति न पेखु इसुं BC,..., आलम घरि पिख्युं नही D। ६ पदमणि D। ७ उच्चरै D। ८...सरणइ हूं पइसूं BC, मु अब किणि सरणै हुं रही D। A ३५८। B ४१५। C ४२३। D ४४८। E में नहीं है।

॥ ३७५ ॥ १ सखी सुणउ (सुणो C, सुणौ D)..., मंत्री हम वात सवारी (समारी D)। २ (पदिमिणि C, पदमिणि D), (द्यो C, दिउ D)..., पुरंगगढ...उगारी (उव्वारी D)। ३ खीमकरण (खेमकरण D)...,... बइठा (बयठा D)। ४...कोइ सत्त न दीठा। ५ चित्रोडि (चित्तोडि D) चओरास्यां (चौर्‌यांस्यां D) सब मिल्या, त्यां नवि सरणइं (सरणै D) ऊगरूं (ऊबरूं D)। ६...रहउ (चढूं D)...सुलताणकी, अवहि जीभ खंडवि मरउ BCD। E प्रतिमें नहीं है।

॥ चोपई ॥

इण[1] अवसरि हिव[2] हूउ[3] जेह, थिर मनि करि नइ[4] निसणउ[5] तेह ।
तिणि[6] पुरि[7] गोरउ[8] रावत रहइ[9], खित्रवट रीति खरी निरवहइ[10] ॥ ३७६ ॥
तसु[1] भत्रीजउ[2] वादिल[3] वाल, वेरी[4] कंद तणउ कुद्दाल[4] ।
ते बेही वहु वलना धणी[5], बेही राउत वेही गुणी[6] ॥ ३७७ ॥
राउ थकी रीसाणा रहइँ, ग्रास न कांई नृप नउ ग्रहइँ[1] ।
घरे रहइँ न करइँ चाकरी, रतनसेनि मुंक्या परिहरी[2] ॥ ३७८ ॥
ते बेही जाता था जिसइ[1], गढरोहउ मंडाणउ तिसइ[2] ।
रूधइ गढि नवि जाइँ तेह[3], जाताँ लागइ खित्रवटि खेह[4] ॥ ३७९ ॥
तिणि कारणि ते नवि नीसरइँ[1], खरच-वरच पोता नउ करइँ[2] ।
अंग तणउ न तिजइ अभिमाँन[3], माँन विना नवि लाभइ माँन[4] ॥ ३८० ॥
खित्री ते, जे खित्रवट धरइ[1], अपजसथी[2] मन माहे डरइ[3] ।
रूधे[4] जाताँ न रहइ[5] माम, करइ[6] अहो निसि नृपनउ[7] काम ॥ ३८१ ॥
ब्युंही तीरइ अधिकउ त्रेप[1], साँमि-धरम पालइँ[2] सविशेष[3] ।
गढनी लाज घणी निरवहइँ[4], इणि परि[5] ते वे राउत[6] रहइँ[7] ॥ ३८२ ॥
हिव चिंति चिंतइ[1] इम[2] पदमिणी[3]-"गोरा-वादिल[4] बेही[5] गुणी ।
त्याँसुँ जाइ करुँ[6] वीनती, वीजाँ माहि न दीसइ[7] रती" ॥ ३८३ ॥

॥ ३७६ ॥ १ हीण BCE। २ हिवै D। ३ हूवो B, हूयो CE, हूवौ D। ४ करिनै D, करिसवि E। ५ निसुणो C, सुणिज्यौं D, सुणयो E। ६ तिण DE। ७ गढि DE। ८ गोरो C, गौरो D, गोरौ E। ९ रहै DE। १० खित्रवटि...(निति दे D) BCD,...तणा विरद भुज वहै E।
॥ ३७७ ॥ १ तासु BCDE। २ भत्रीजो C, भतीजो DE। ३ वादलराव। ४ वेरी (वैयरी D)...तणो... BCD, सूरातन भरीयो दरियाव E। ५...वे वेई (वेउ D),...BCD, ते वेवै वल छल जांण E। ६ वेई रावत वेई...BCD, वे वै रावत वै कुल भांण E।
॥ ३७८ ॥ १ ते वेई जाता था किसइ (जिसइं D),...कोई...(नृपनो C, त्रपनो D) ग्रसइं BCD। २...(रहै C...करै D)..., रत्तनसेन (BC)...BCD, पणि तेहनें [illegible] गुनेजर सांम, खरच ग्रास नवि कोई ग्रांम, घरे रहे न करे चाकरी, रतनसेन मूक्या परिहरि E। A ३६०। B ४१९। C ४२७। D ४५२। E ५२७।
॥ ३७९ ॥ १...वेई BC (वेउ D, वेये E)...(जिसै DE) जिसइं BCDE। २ गढरो हो (मंडाणो CE, मंडाणौ D) BCDE। ३ रूधइं BC (रूधै DE)...जायइ BC (जाए D, जायै E)...। ४...लागै DE...खेह BC।
॥ ३८० ॥ १...नीसरै D, तिण कारणि रहिया ग्रहि टेक E। २...विरच BCD, पोतानो D (प्रोतानौ D), हिव जासां काइ हूआं एक E। ३...तणो CE (तणौ D)...तजइं BC (तजै DE)...४ सूर सुभट (महाबल E) मूहा सबल (जोध E), जुवान (जुवांन E) BCDE।
॥ ३८१ ॥ १ धरइं BC, धरै D। २ तै D। ३ डरइं BC, डरै D। ४ रूधइं BC, रुधइ BC, रुधै D। ५ रहइं BC, रहै D। ६ करइं B, करे C, करै D। ७ नृपनो C, त्रपनौ D, खित्री सोइज खित्रवट चलै, मरण दियैं पिण नवि नीकलै। मुंहा भला पटंतर नांम, खापां छेह हुवै खग जांम E। D ४५५। E ५३०।
॥ ३८२ ॥ १ बेहूं BC, तीरइं B (तीरे अधिको C, वेउ तीरैं अधिको D) तेप विन्हे सुहड मति अधिको रोष E। २ पाल BC, पालैं DE। ३ सुविशेष BCD, सुविवेक E। ४ निरवहइ BC, निरवहै DE। ५ इण परि BCD, विधि E। ६ रावत BCDE। ७ रहइ BC, रहै DE। D ४५७। E ५३२*।
॥ ३८३ ॥ १ चिंतै DE। २ स्त्री BCD। ३ पदमणी D, पदमिनी E। ४ बादल BCDE। ५ सुणियइ BCD, सुणिजै E। ६ करो BC। ७ दीसै DE।

[1]इम आलोची पद्मिणी नारि[1], चडि चकडोलि[2] पहुंती वारि ।
साथइ[3] लेइ सखी परिवार, आवी गोरिलरइ[4] दरवारि[5] ॥ ३८४ ॥
आगलि[1] गोरउ[2] वेठउ[3] दिट्ठ[4], तव तसु नँयणे अमीय पइट्ठ[5] ।
गोरइ[6] दीठी जव पदमिणी[7], [8]तव ते हरषित हूवो गुणी[8] ॥ ३८५ ॥
गोरउ[1] साँम्हो[2] धायो[3] धसी, विनय करी इम[4] वोलइ[5] हसी ।
"मात! मया वहु कीधी आज, कहउं[6] पधार्‌या केहइ[7] काज[8] ॥ ३८६ ॥
आलसूआँ[1] माहि[2] आवी गंग, [3]पवित्र हूआ मुझ अंगण-अंग"[3] ।
वलती वोलइ[4] इम[5] पदमिणी[6], "हुं आवी तुम्ह मिलवा भणी ॥ ३८७ ॥
सुभटे[1] सगले दीधी सीख, दया धरम[2] नी लीधी[3] दीख ।
सीख दिउं[4] हिव तुम्ह[5] पिण[6] सही, जिम असुराँ घरि जाउं[7] वही[8] ॥ ३८८ ॥
सुभट सहू[1] हूआ[2] सत्त हीण, खिति-पुडि[3] खित्रवटि हूई खीण ।
सुभटे सगले दाखिउं[4] दाउं[5], पदमिणि[6] दे नइ[7] लेशाँ[8] राउं[9] ॥ ३८९ ॥
हिव तुम्ह सीख दिउं[1] छउं किसी[1]? [2]सुभटे सगले कीधी इसी[2]" ।
गोरउ[3] जंपइ[4]-"सुणि मुझ[5] मात! गढ माहे हुं केही मात्र ! ॥ ३९० ॥
[1]खरच न खाआँ राजा तणउ[1], पूछइ[2] कोइ नही मंत्रणउ[3] ।
पिण मनि आरति म करउ[4] मात! [5]भली हुसी हिव सगली वात[5] ॥ ३९१ ॥

॥ ३८४ ॥ १...आलोचि ते पदमिणि (पदमिनि E)...BC । २ चोडोलि E । ३ सार्थे BCD, साथै E । ४ °रै D, °नै E । ५ दुरवारि A । A ३६८ । B ४२५ । C ४३३ । D ४५९ । E ५३४ ।
*तेहने D (पणि E) मतौं D (तेहने E) न D (नवि E) पूछें कोइ DE ।
जै D (जे E) पूछे DE तो इम कांइ होइ ।
जांणहार (DE री एहीं रीति) (धरती हुयै जांम E) ।
साचा सुभट न पूछें नीति D (संकजां दुचिंता राखै सांम । D ४५६ । E ५३१ ।

॥ ३८५ ॥ १ आगइ BC, आगै DE । २ गोरू A, गोरिल BCDE । ३ वेठु A, वइठउ B, वेठो C, वयठो D, वैठो E । ४ दीठ BCDE । ५ पईठ BCDE । ६ गोरे D, गोरै E । ७ पदमणी D, पदमिनी E । ८...हूउं A (हूयो C)..., मनि हरष्यो करि आगति घणी E ।

॥ ३८६ ॥ १ गोरू A, गोरो BCDE । २ साम्हउं B, साम्हो C, साम्हौ D, संम्हो E । ३ धायउं B । ४ करी नइ BC, करीनै DE । ५ बोलै DE । ६ भलइ BC, भलै DE । ७ केहउं B, केहो CDE । ८ काजि A ।

॥ ३८७ ॥ १ आलस्यौं BC, आलसिया D । २ भै E । ३...हुवउ B (हूयो C, हुवो D)... आंगण C (अंगो D)...लहिरे आया मोती नंग E । ४ बोलै DE । ५ ते BCDE । ६ पदमणी D, पदमिनी E । कपूर जाणि आयो लांहणै, कांमधेन पहुती आंगणै E ।

॥ ३८८ ॥ १ सुभटें B, सुभटइं C । २ धर्म्म BC । ३ लेल्ही BC । ४ दियउं B, देउं C, दीयौ D, दियो E । ५ तुम A । ६ पणि BCD । ७ जावुं BC । ८ रही B ।

॥ ३८९ ॥ १ सवे E । २ हूवा BD, हूया C । ३ क्षिति-पुठि BC, पुह्वी D, प्रिथवी E । ४ दाख्यो BCE । ५ दाव DE । ६ पदमणि D । ७ देई DE । ८ लेस्यां BCD, लेसां E । ९ राव DE ।

॥ ३९० ॥ १ देउ C, दियो DE । २ सुभटां...BC, सुभट सहूनी सुधि-बुधि खिसी D, कहो वात छै आधिक तिसी । ३ गोरू A, गोरो CDE । ४ जंपै DE । ५ मुझि BCD, मोरि E । A ३७४ । B ४३० । C ४३९ । D ४६५ । E ५४१ ।

॥ ३९१ ॥ १...खावुं BCD...तणो D, खरच ग्रास नही राजा तणो E । २ पूछइं BC, पूछै DE । ३ मंत्रणो CE, मंत्रणौ D । ४ कर A, करो CE, करौ D । ५ सगली होसी भली (रूडी DE) वात BCDE ।

जइ[१] तुम्हि[२] आव्या[३] मुझ घरि वही, तउ[४] असुराँ घरि जाशउ[५] नही।
सुभट तणउ[६] ए नही संकेत, [७]अंखी देइ नइ लीजइ जेत्र[७] ॥ ३९२ ॥
वरि[१] मरिवउ[२] सुभटाँ नइ[३] भलउ[४], [५]जिणि परि तिणि परि करिवउ किलउ[५]।
अंखी[६] देइ नई[७] लीजइ[८] राउ[९]! सुभट[१०] न थापइँ[११] एहवउ[१२] दाउ[१३] ॥ ३९३ ॥
जाण्या सुभट वडा[१] जूझार, [२]अंखी देइ नइ ल्यइँ भरतार।
ते जीवी नइ करिशइँ[३] किसुं[४], जिगे[५] काम आलोच्युं[६] इसुं" ॥ ३९४ ॥
पदमिणि जंपइ[१]-"गोरा[२]! सुणउ[३], इणि[४] घरि छाजइ ए मत्रंणउ[५]।
सिरिखइ[६]-सिरिखउ[७] सगले[८] थाइ[९], भीत[१०] पखे[११] नवि[१२] चित्र लिखाइ ॥ ३९५ ॥
भीति[१] सदाइ[२] झालइ[३] भार, [४]त्राटी वलिनइ थावइ छार[४]।
वीजा ऊभा मुंक्या[५] सही. तउ[६] हुं तुझ[७] घरि आवी वही ॥ ३९६ ॥

॥ कवित्त ॥

तुं हिज राउ[१] गोरिल्ल[२]! तुं हिज दल माहे[३] वड्डुउ[४]।
तुं हिज राउ[१] गोरिल्ल[२]! तुं हिज मोरा प्रिय अड्डुउ[५]।
तुं हिज राउ गोरिल्ल[२]! तुं हिज दल वीडउ[६] झल्लइ[७]।
सुणि[८] राउंत[९] गोरिल्ल[१०]! नारि पदमावती बुल्लइ[११]।

॥ ३९२ ॥ १ जे BCDE। २ तुम्ह BCDE। ३ आया E। ४ तौ DE। ५ जास्यो BC, जासौ DE। ६ तणो CDE। ७ नारी DE, दे नइ B (देइनि C, देई DE) लेसी BC (लीजै D, कीजै E) जेत्त D (जेत E)।

॥ ३९३ ॥ १ वर BCD, वलि E। २ मरवो CE, मरवौ D। ३ सुभटाँ नइँ BC, सुभटाँ नै D, रजपूताँ E। ४ भलो CE, भलौ D। ५ जिण परि तिण परि BCD करिवो CD..., आंम्हो सांम्हो करिवो किलो। ६ स्त्री BCE। ७ देवै DE। ८ लीजइं B, लेजइं C, लीजै DE। ९ राव E। १० सकज E। ११ थायइ BC, थापै DE। १२ एहवो C, एहवौ D, एह E। १३ कुदाव E। E ५४४ *।

॥ ३९४ ॥ १ भला BCD। २ स्त्री देइं नइ ले भरतार BC, राणी दे लेस्यै भरतार D, राणी दियै लियै सरदार E। ३ करिस्यइँ BC। ४ किस्यउं BC। ५ जेगे BC। ६ आलोच्यउं B, आलोच्यो C। DE में द्वितीय अर्द्धाली नहीं है।

॥ ३९५ ॥ १ जपइं B। २ राउंत BCD। ३ सुणो C। ४ एणि C। ५ मंत्रिणो C। ६ सरिखइ BC, सरिखै D। ७ सरिखो CD। ८ सगलइ B, सगलै D। ९ थाय D। १० भींति BCD। ११ पखइं BD, पखै C। १२ किम BCD। D में प्रथम चरण नहीं है और E में सम्पूर्ण चौपई नहीं है। D ४६९*।

॥ ३९६ ॥ १ भींति BCDE। २ सदाही BCD, सदा लगि E। ३ झालै D। ४ त्राटां वलिनइं (वलिनै थापै D) थावइं...BCD, त्राटी वलि जलि थायै...E। ५ मेल्ह्या B, मेल्या C, मेल्हा D, मेल्ही C। ६ तो CDE। ७ तुम्ह BCDE। A ३८०। B ४३६। C ४४५। D ४७१*। E ५४९*।

* इणि D (इण E) बुधि DE सारु D (सारै E) खोयो DE राय D (राव E)।
दिवै गढ पदमिणि खोसै जाय D (गढ पिणि गमसै एहवे दाव E)।
स्यालु न होय सीहां कांम D (इण परि बोल्यो गोरिल जांम E)।
अपजस पूरौ जासै माम D (जंपै पदमिण नारी तांम E) ॥ D ४७० ॥
सगु नारि [illegible] थाइ, भीत पखै किम चीत्र लखाइ ॥ E ५४८ ॥

"अवर सुहड सत्त हीण हुअ[11]", "जस लीजइ तइँ एकलइ[12]" ।
अल्लावदीन[13] सुं[14] खग्ग बलि, रतनसेंन छोडावि लइ[15]" ॥ ३९७ ॥

॥ चोपई ॥

'गोरउ[1] जंपइ[2] -"सुणि मुझ[3] माइ[4] ! गाजण[5] हुंतउ[6] मुझ[7] वड[8] भाइ[9] ।
तसु सुत वादिल[10] अति[11] बलवंत, तेह लइँ[12] पिण[13] जाइ[14] पूछौं[15] मंत[16]" ॥ ३९८ ॥
'वेही आया वादिल दिसी[1]', 'वादिल साँम्हो धायउ धणीं[2] ।
विनयवंत[3] पग करीय[4] प्रणाम[5]', 'पूछइ वादिल "केहउ काम[6]" ॥ ३९९ ॥
गोरउ[1] जंपइ[2] -"वादिल[3] सुणउ[4], सुभटे[5] कीधउ[6] ए मंत्रणउ[7] ।
पदमिणि[8] देइ नइ[9] लेसाँ[10] राय[11] ! अवर न मंडइ[12] कोइ उपाय[13] ॥ ४०० ॥
पदमिणि[1] आवी[2] आपाँ पासि, हिव[3] तउ कासुं कहइ विमासि ।
तोनइ[4] पूछण आव्या[5] सही, करसाँ[6] वात तुम्हारी[7] कही ॥ ४०१ ॥
सुभट सकोई[1] वेठा[2] फिरी, जूझण[3] वात न लवइं[4] आदरी ।
आपेई[5] पिण[6] अछाँ उदास, राउ[7] तणउ नही ग्रास न वास ॥ ४०२ ॥

॥ ३९७ ॥ १ राय D । २ गोरिल C । ३ नाहि C । ४ बडो C, बडौ D । ५ प्रीअडो C, प्रीयडौ D । ६ बीडो C, बीडौ D । ७ झलइ C, झलै D । ८ तुं । ९ हिज । १० बोलइ B, बोलै D । ११ सहू BCD । १२ अब जस तुम्ह हुं एकल्लां BCD (एकलै D । १३ अल्यावदीन BCD । १४ स्यूं BCD । १५ छुडाई ले D ।

तुं गोरा रजपूत, तुंहि सामंत गढि गाडो ।
तुंहि ढाल हींदुआंन, तुहि गोरा प्रियआडो ।
सुर धीर तुं सकज, तुहिज दल बीड़ो झलै ।
तुं मुझ दीयै सुहाग, नारि पदमनि इम बुलै ।
अवर सुहड सतहीण सब, यह जस तो तुज इकलै ।
अल्लावदीनसुं खगां बलि, हींदूपति छोडावि लै ॥ E ५५० ॥

॥ ३९८ ॥ १ गोरू A, गोरिल C, गौरो D, गोरो E । २ जंपै DE । ३ गोरी BCE । ४ माय CD, मात E । ५ गाजन A । ६ तुमट BCD, हता E । ७ वडउ B, बडो D, वडा E । ८ मुझ BCDE । ९ भाइ D, भ्रात E । १० वद्दल BC, बादल D, वादल E । ११ छै E । १२ तेहनै DE । १३ पणि BCDE । १४ जई A, ए DE । १५ पूछउं B, पूछो C । १६ मंत्र BCDE ।

॥ ३९९ ॥ १ वेई...वादिल...BCD, तब पदमिनी गोरिल ससनेह E । २ वादिल BCD सम्हउ B (साम्हो C, साम्हौ D) धायो BCD (धायु A)..., पहुता जइ वादल नै गेह E । ३ विनैवंत D । ४ करी BCDE । ५ परनांम E । ६...वादल (केहु A, केहो CD)..., काकाने वलि कीध सलाम E । E ५५३/१ ।

॥ ४०० ॥ १ गोरु A, गोरो BCE, गौरो E । २ जंपै DE । ३ वादिल B, वादल CE, बादल D । ४ सुणु A, सुणो C, सुणौ E । ५ सुहडै E । ६ कीधु A, कीधो C, कीधौ D, धाय्यौ E । ७ मंत्रणु A, मंत्रिणो C, मंत्रणौ DE । ८ पदमणि D, पदमिन E । ९ दे नइ B, देस्यां CD, देई E । १० लेस्यां BCD, देसां E । ११ राउ BCD, राव E । १२ मंडै D, चिंतै E । १३ दाव E । A ३८४ । B ४३९ । C ४४९ । D ४७५ । E ५५३/२, ५५४/१ ।

॥ ४०१ ॥ १ पदमणि D, पदमिन E । २ आयां E । ३ हिवि (हिवे D) तूं BCD...कहउं BD (कहो C) विमासि BCD, आंणी आझो मनि विसवास E । ४ तोनै D, तुझने E । ५ आया E । ६ करसां E । ७ तुम्हारी BC ।

॥ ४०२ ॥ १ सहू कोइ B, सहू को CDE । २ बइठा BC, बयठा D, बेठा E । ३ झूझण BCDE । ४ ल्यै BCDE । ५ आपेई A । ६ पणि BCDE । ७ राय E ।

हिव तुं जेम कहइ[1] तिम कराँ, नीचउं[2] देताँ लाजे[3] मराँ।
आँपे[4] डीले[5] छाँ[6] दुइ[7] जणा, आलिम आगलि[8] लसकर घणा ॥ ४०३ ॥

किम जीपेशाँ[1] कहउं[2] एकला, एकला[3] कदेई न हुवइँ भला[3]।
तिणि कारणि तो पूछण भणी, आविउं[4] लेई[5] हुं[6] पदमिणी" ॥ ४०४ ॥

पदमिणि[1] वादिल[2]सुं[3] वलि[4] भणइ[5] – "सरणइ[6] आवी हुं तुम्ह तणइ[7]।
राखि सकउं[8] तउं[9] राखउं[10] सही[11], नही[12] तरि पाछी जाउं वही[12] ॥ ४०५ ॥

खंडु[1] जीभ दहुं[2] निज देह, पिण नवि जाउं[3] असुराँ गेह।
लाखा जमहर करि नइ वलुं, पिणि नवि कोट थकी नीकलुं" ॥ ४०६ ॥

॥ दूहा ॥

इम सुणि वादिल[1] बोलीउं[2], दूठ[3] महा दुरदंत[3]।
जाणि कि[4] गयवर[5] गाजीउं[6], अतुल[7] वली एकंत[7] ॥ ४०७ ॥

॥ ४०३ ॥ १ कहै DE। २ नीची DE। ३ लाजां BCDE। ४ आँपे A। ५ डीलइं BC, डीलै DE। ६ अेछाँ BCDE। ७ दोइ BCDE। ८ आगइ BCD, साथै E।

॥ ४०४ ॥ १ जीपेस्यां BCD, जीपेसां E। २ कहो CDE। ३...होवइ...BC, किला न होई (होवै E) कदेहि भला DE। ४ आव्यउं B, आव्यो CE, आव्यौ D। ५ ले E। ६ साथै E।

॥ ४०५ ॥ १ पदमणि D, पदमिन E। २ बादल BCDE। ३ स्यूं B। ४ इम BCDE। ५ भणै DE। ६ सरणै DE। ७ तणै DE। ८ सको CE, सकै D। ९ तो CE, तौ D। १० राखो CE, राखै D। ११ मुझ E। १२...जावूं...BCD, नहि तर तेहवो दाखो मुझ E। D ४८१*।

॥ ४०६ ॥ १ खांडउं B, खांडो C। २ दहउं B। ३ जावउं B, जावुं C। A ३९०। B ४४५। C ४५५*
सील न खंडु (खाडुं E) देह अखंड। जो फिर (फिरि E) उलटे (उलटै E) ए ब्रह्मंड।
वात लख सम एको वात (सुहड करावे वलि भरतार E)। जीवंतां ए न फिरै घात (मुझ कुल एह नही आचार E)। D ४८२। E ५६१।
सील DE, प्रसादै D (प्रतापै E) तुझ जस होई D (होसी फते E)।
रिपुदल DE गाहौ D (गाहो E) अवसर जोय D (झूबो मते E)।
पदमणि रहै नै छूटे राय D (रहै गढ वलि छूटै राय E)।
गढ राखो जस त्रीभवण थाय D (हुं पिण रहुं सुजस जगि थाय E) D ४८३, E ५६२।
सील DE प्रसादै D (प्रतापै E) सुर D (सुख E) वरदाय D (वरताइ E)।
रिपु जीपै मनि वंछित थाय D (जीपो रिमरिझ वंछित थाय E)।
कलिजुग नाम करुं अखंड D (कलिजुग नांमो करो अखंड E)।
काया अथिर थिर जस नव खंड D (प्रगटै सुजस लगै नव खंड E) D ४८४। E ५६३।
श्रीपति पणि साहस नै साथि D (परमेसर पिण साहस साथि E)।
जयत हथा DE हौज्यौ नरनाथ E (करसी जगनाथ E)।
लहि सोभाग DE देहुं D (दिउँ E) आसीस DE।
जीवो DE वादल D (वादल E) कोडि DE बरीस (वरीस E)। D ४८५। E ५६४॥
कहै पदमिन आसीसी, अखै वादल अजरामर।
तुं मुझ पीहर वीर, धीर चित मेर बराबर।
खगि भांजहु खुरसांण, मांण रखहु हीदूयांनह।
घुरै जैत नीसांन, करें दुनीयांन वखांनह।
सनाह सांम सरणै सुहड, एह विरद तुय मुज लहै।
कर घालि मूंछ ज्यो सब सुहड, तुझ्झ आंक माथै वहै ॥ E ५६५॥

॥ ४०७ ॥ १ वादल BCD, वादल E। २ बोलीयउ BC, बोलियौ D, बोलियो E। ३ दुट्ठ...BCD, मद पोरस-भैमंत E। ४ जाणकि B, जाणिके C, जाणिक D, जांणिकै E। ५ केसर BC, केहरि DE। ६ गाजीयउ BC, गाजियौ DE। ७ अतुली बल...BCD, देख घणां देइ दंत E।

"सुणि बावा[१]!" वादिल[२] कहइ[३], "सुभटाँसुं[४] कुण काँम[४]?
सुभट[५] सहू सूए रहउ[५], ए[६] करिस्युं हुं काँम[६] ॥ ४०८ ॥

काका[१]! थे काँइ खलभलउ[१], अंगि[२] म धरउ उताप[२]।
तउ हुं वादिल[३] ताहरउ[४], सयल[५] हरूं संताप[५] ॥ ४०९ ॥

पदमिणि[१] अंगणि[२] पग दीउ[३], पवित्र हूउ[४] मुझ गेह।
महलि पधारउ[५] माउली[६], दुख म धरउ[७] निज[८] देहि[९] ॥ ४१० ॥

आलिम[१] भांजुं[२] एकलउ[३], जउ[४] वाँसइ जगदीस[४]।
तउ[५] हुं वादिल वहसीउ[५], जउ[६] आणुं अवनीस" ॥ ४११ ॥

बीडउ[१] झालिउ[२] वादिलइ[३], बोलइ[४] इम[५] बलवंत[६]।
"आलिम[७] गंजी आप बलि[७], आणुं[८] नृप एकंत[८] ॥ ४१२ ॥

सुभट सहू सूए[१] रहउ[२], सुभटाँसुं[३] कुण काँम[४]?
ए सगला[५], हुं एकलउ[६], निपट करूं[७] निज[८] नाँम[९]" ॥ ४१३ ॥

वादिल[१] बोलइ- "पदमिणी, मनि म करे[२] ऊचाट[३]।
तउ[४] हुं गाजण[५] जनमीउ[६], जउ[७] भंजुं[८] गज-थाट ॥ ४१४ ॥

अरि[१]-दल गंजुं एकलउ[१], भंजुं[२] नृपनी भीड।
राम काजि[३] हणमति[४] कीउ[५], तिम टालुं[६] तुझ[७] पीड ॥ ४१५ ॥

॥ ४०८ ॥ १ काका E। २ वादल BCD, वादल E। ३ कहै DE। ४...स्युं B...काम BCD, अवरां केहो कांम E। ५...सोई BCD रहौ D, वैसि रहौ सारा सुहड E। ६...काम BCD, एह अम्हीणो नांम।

॥ ४०९ ॥ १...खलभलो C,...खलभलौ D,...काका थे चित मत चलौ। २ अंगि धरउ B (अंगि धरो C, अंगि धरौ D, अंगि धरहुं E) उल्हास BCDE। ३ बादल BCD, वादल E। ४ ताहरो CE, ताहरौ D। ५ मत्रीजो BCDE स्याबासि B (साबासि CD, साबास E)।

॥ ४१० ॥ १ पदमणि D, पदमिन B। २ आंगणि DE। ३ दीयउ BC, दीयौ D, दीयो E। ४ हूवउ BC, हुवौ D, हुयो E। ५ पधारो CE, पधारौ D। ६ मायडली BCD, माइडी E। ७ धरो CE, धरौ D। ८ तिल E। ९ देह BCDE।

॥ ४११ ॥ १ आलम E। २ भंजेउ B, भंजो C, भंजौ D, भांजउ E। ३ एकलो CE, एकलौ D। ४ जे वांसइं (वासै D)...BCD, दिउं प्रिसणां खगरेह E। ५...वादल विहसीउ, कुरवट अजुआलौ किलै E। ६ जे आणउं BC (जैआणुं D)..., आंणुं रतन नरेस E।

॥ ४१२ ॥ १ बीडो CE, बीडौ E। २ झाल्यउ BD, झाल्यो CE। ३ वादिलइं BC, बादलै D, वादलै E। ४ बोलै DE। ५ अति BCD, ई E। ६ बलवांन E। ७ अंगजु हूं आप बलि BC, एहनै गंजु आप बलि D, तू सत सीता दूसरी E। ८ आणउं BCD, हुं दूजो हणमांन E। A ३९६। B ४४५। C ४६१। D ४९१। E ५७१।

॥ ४१३ ॥ १ सोई BC। २ रहो C। ३ स्यूं B। ४ काम BC। ५ सगलउ B, सगलो C। ६ एकलो C। ७ करो BC। ८ तुम्ह BC। ९ नाम BC। DE प्रतियोंमें नहीं है।

॥ ४१४ ॥ १ वादल BC। २ करउ B, करो। ३ उच्चाट BC। ४ जो C। ५ गाजन-घरि BC। ६ जनमीयउ B, जनमियो C। ७ जे BC, ८ भंजउ B, भंजे C। DE प्रतियोंमें नहीं है।

॥ ४१५ ॥ १ आलिम भांजउ...B, आलिम भंजो एकलो C, आलम तोडुं एकलौ D। २ भांजउ BCD। ३ काज BCD। ४ हणमंत BC, हणवंत D। ५ कीयउ B, कियो C, कियौ D। ६ टालउं B, टालो C, टालूं D। ७ ए BCD। E प्रतिमें नहीं है।

सत्ति ! तुहारइ[1] सॉमिणी[2], मली[3] महादल मांन[4] ।
गढ[5] माहे आणुं घरे[5], रतनसेन राजॉन[6] ॥ ४१६ ॥
जीह[1] सडउ ते जण तणी[1], दाखिउं[2] जिणि ए दाउं[2] ।
पदमिणि[3] साटइ[4] पालटे, आणेशॉं[5] घरि राउं[6] ॥ ४१७ ॥
लूण उतारइ[1] पदमिणी, वाला[2] वादिल अंगि[2] ।
बिरद बुलावे[3] वादिला, इम[4] जंपइ कणयंगि[4] ॥ ४१८ ॥
गोरउं हिव अति गहगहिउं[1], सूरिम[2] चडी सरीर ।
कायर[3] पूछ्या कंपवइ[4], धीर[5] वधारइ[6] धीर ॥ ४१९ ॥
"घरे पधारउं[1] पदमिणी[2], आरति म करउं[3] कॉइ[4] ।
वादिल बोल्या बोलडा, ते झूठा[5] नवि थाइ ॥ ४२० ॥
सूर न पश्चिम[1] ऊगमइ[2], मेरु न कंपइ[2] वाइ[3] ।
सापुरस[4] बोल्या नवि टलइ[4], मूवॉं[5] अवर विहाइ[5]" ॥ ४२१ ॥

[नोमो खण्ड]

पदमिणि घरे पधारी जिसइ[1], वादिल[2] माता आवी तिसइ[3] ।
सुणीउं[4] सगलउं[4] तिणि[5] संकेत, हीया[6] माहि[7] न मावइ[8] हेत ॥ ४२२ ॥
नयण झरइँ[1] मुंकइ[2] नींसास, अबला[3] दीसइ[4] अधिक उदास ।
इणि[5] परि आवी दीठी मात, विनय करी सुत पूछइ[6] वात ॥ ४२३ ॥
"किणि कारणि तुं माता इसी ? कहउ[1] वात मन माहे[2] किसी[3] ?
[4]आरति चीत किसी तुझ भणी[4] ? [5]कॉंइ दीसइ आमण-दूमणी[5] "॥ ४२४ ॥

॥ ४१६ ॥ १ तुम्हारइ B, तुमारे C, तुहारै D, तुहारे E । २ स्वामिगी BC, स्वामिनि D, सांमनी E । ३ मलुं E । ४ मांण E । ५...आणउं...BCD, घडी माहि आणुं घरे E । ६ खुंमांण E ।
॥ ४१७ ॥ १ जीभ E, सिडो C (सिडौ E) त्यां E, जन तणी BCD (दुरजगा E) । २ ज्यां ए दाख्यो दाउ । ३ पदमणि D, पदभिण E । ४ साटइं BC, साटै D, साटे E । ५ आणेस्यां BCD, आणेसां E ।
॥ ४१८ ॥ १ उतारइं BC, उतारै D, उतारे E । २...वादल...BCD, मिली मिली भींडै अंग E । ३ बुलाइं सही B, बोलाइ C, बुलाए D, बुलावे E । ४...बोलइं कुगयंगि BC,...बोलै कणयंगि D, तू जीवै रिण जंग E । A ४०२ । B ४५७ । C ४६७ । D ४९६ । E ५७४ ।
॥ ४१९ ॥ १ गोरो...गहिगयो BC, गोरो मनि...गहिगह्यौ D, गोरो संभलि गहिगह्यौ E । २ सूरम E । ३ काइर BC । ४ कंपवइं BC, कंपवै DE । ५ सूर BCDE । ६ धरइं मनि BC, धरै मनि D, धरावै E ।
॥ ४२० ॥ १ पधारो CDE । २ पदमणी D, पदमिनी E । ३ करौ D, करो E । ४ माइ BCE, माय D । ५ फिरे न E ।
॥ ४२१ ॥ १ पश्चम BCDE । २ ऊगमै DE । २ कंपै DE । ३ वाय D । ४ सापुरिस बोल्या बोलडी D, सापुरसांरा बोलडा E । ५...मूयां...C, टलै सु बीजी काय D, फिरै न झूठा थाइ E । A ४०२ । B ४६० । C ४७० । D ४९९ । E ५७७ ।
॥ ४२२ ॥ १ जिसै DE । २ बादल BCD, वादल E । ३ तिसै DE । ४ सुणीयउं सगलउं BCD, सुणियो सगलो E । ५ तिण E । ६ हीयडा BCD, हइडा E ७ मांहि BCDE । ८ मावै DE ।
॥ ४२३ ॥ १ झरइ BC, झरै DE । २ मूकइ BC, मूकै DE । ३ माता BCDE । ४ दीसै DE । ५ इण BCDE । ६ पूछै DE ।
॥ ४२४ ॥ १ कहो CDE । २ मनमइ छइ BC, मननै है DE । ३ तिसी E । ४...चिन्ति...तुम्ह (तुम C) BCD, अरति कहो छै तुम्ह तणे E । ५ काइं...BCD, क्युं छै चित आमण दूमणै E ।

मात कहइ[१]-"सुणि वादिल वाल! माडां[२] कॉइ[३] पडइ[४] जंजालि?
दूध-दही तुं मुझ नइ[५] एक, [६]तो विण काइ न बीजी टेक[६] ॥ ४२५ ॥
तुं[१] मुझ जीवन प्राणाधार[२], तो[३] विण[४] सूनउं[५] सहि[६] संसार।
[७]तइँ ए काँइ कीउं मंत्रणउं[७], '[८]वाँसइ कासुं देखइ घणउं[८] ॥ ४२६ ॥
सुभट घणा गढ माहि[१] समाज[२], त्याँ बेठाँ[३] तो[४] केही लाज?
ग्रास-वास को[५] नही नृप तणउं[६], [७]आपे खरच कराँ आपणउं[७] ॥ ४२७ ॥
घणा जिके[१] खाइं[२] छइँ[३] ग्रास, [४]सुभट रह्या छइ तेइ उदास[४]।
तुं किणि[५] करणि[५] हुइ[६] अझलखउं[७], विणठी वेला का[८] नवि[८] लखउं[९] ॥ ४२८ ॥
[१]रिणवट रीति न जाँणउं अजे[१], [२]वात करी जावउं वजवजे[२]।
कद[३] कीया[४] छइँ[५] तइँ[६] संग्राँम[७]? अण जाण्या[८] किम कीजइँ[९] काँम[१०]? ॥ ४२९ ॥
आलिम[१] किणि परि[२] गंज्यउं[३] जाइ[४]? आटइ[५] लूण किसानइ[६] थाइ[७]।
वादिल[८]! पुत्र[९] अछइ[१०] तुं वाल! [११]मत मुझ दुःख दीइ अणगाल[११] ॥ ४३० ॥
[१]परणिउं अछइ अजे तुं आज[१], [२]कहताँ आवइ मन महि लाज[२]।
पहिली साझउं[३] घरनी वहू, किला करेयो[४] पाछइ[५] सहू[६] ॥ ४३१ ॥

॥ ४२५ ॥ १ कहै DE। २ माडां BC, माडा E। ३ कांय D, काइ E। ४ पडै D, लियो E। ५ मुझनो D, माहरै E। ६ तुझ BCD, तुँझ ED, विणि D, काय D, नही E, वीजी CD, मुझ E, टेक E।

॥ ४२६ ॥ १ तू C। २ प्राण BC, प्रांण E, आधार BC, अधार D। ३ तुझ BCDE। ४ विणि D। ५ सूनौ D, मूनो E। ६ सहु। ७ तइँ BC, तै D, ते E, एकाकी BCD, एहवो E, कीयउं BC, कीयौ D, कीधो E, मंत्रणौ D, मंत्रणो E। ८ वासइं BC, पुठै D, पूठे E,...दिख्यो BC, देखै D, दीठो E, घंणौ D, घणो E।

॥ ४२७ ॥ १ माँहि E। २ सकाज E। ३ वइठाँ B, वइठाँ C, वैठां DE। ४ तुझ BCDE। ५ अन्य प्रतियोंमें नहीं है। ६ तणो DE। ७...खावा आपणौ D, खरच करां छां :निज गाठिनो E। A ४१०। B ४६६। C ४७६। D ५०५। E ५८३।

॥ ४२८ ॥ १ घणा घणी E। २-३ खाई छइ BC, खाए छै D, खाअै छै E। ४ सुहड E...छै DE, तेह BC, तिहाँ D, तिकै E, विमासि E। ५ किण कारणि BCE। ६ होइ BC, हुवै DE। ७ अझंखौ D, अझलखो E। ८ काइ नवि BC, का तू नवि D, कांइ न E। ९ लखौ D, लखो E।

॥ ४२९ ॥ १ रणवट AE...जाणइ B, जाणौ D..., रिण विध किम जाणै सौ सजी E। २...जावंइ BC, जायै D..., घर विध वात न जांणो अजी E। ३ कदे D। ४ कीधा E। ५ छइ BC, छै DE। ६ तइ BC, तै D, ते E। ७ संग्राम BCDE। ८ जाण्यउं BC, जांण्यां D, जांण्या E। ९ कीजे D, कीजै E। १० काम BC।

॥ ४३० ॥ १ आलम E। २ किण परि BC, किणथी E। ३ गंज्यो BCE, गंज्यौ D। ४ जाइं BC, जाय D। ५ आटइं BC, आटै D, आटे E। ६ किसानइं BE, किसानै DE। ७ थाइं BC, थाय DE। ८ वादिल BCD, वादल E। ९ पूत BCDE। १० अछै DE। ११ माइनइ दुख दीयइ अणगाल BC, मायनै दुख दीयौ असराल D, रिण संग्राम तणो नही ताल E।

॥ ४३१ ॥ १ परण्यो BC, परण्यौ D, परण्यां E, अछइं BC, हिवै D, पणि E, हिवइ B, हिव C, अछै D, छो E, तुअ D, हिवडां E, राज E। २ कहितां D, आवइं BC, आवै D, मन माहि BCD..., सेजे जातां आवै लाज E। ३ साधो CE, साधौ D। ४ करेय्यो BC, करज्यो D, करेज्यो E। ५ पाछै DE। ६ बहू AE।

अजे अछइ[१] तुं वादिल[२] वाल, [३]कुसुम कली जिम[३] अति सुकुमाल।
म करसि वात विमास्या[४] पखे[५], अति ऊछंछल[६] थाऊ[७] रखे"[८] ॥ ४३२ ॥

[१]वादिल जंपइ वलतउ हसी[१]–"माता! वात कही तईं[२] किसी?
[३]किणि परि वाल कहिउ मुझ माइ[३]! पहिली मुझ नइ[४] ते[५] समझाइ[६] ॥ ४३३ ॥

धूलि न चुंथुं[१] रोउं[२] नही, आडी[३] न करूं साडी[४] ग्रही।
थाँन न चुंखुं[५] मुखि आपणइ[६], पोढुं[७] नही कदे[८] पालणइ[९] ॥ ४३४ ॥

[१]काँइ कहइ तुं मुझ नइ वाल[१], [२]देखि जेम करूं धकचाल[२]।
[३]राउ घणा ऊथापे थपुं[३], [४]इसडइ काँमि किसुं ऊतपुं[४]? ॥ ४३५ ॥

[१]सीसि उडाडुं सगला सित्र[१], तउ[२] हुं[३] जाणे[४] ताहरउ[५] पुत्र[६]।
गांजन[७] बाप[८] सही गाजवुं[९], मत[१०] मनि[११] जाँणइ[१२] कुल लाजवुं[१३] ॥ ४३६ ॥

खित्रवटि रिणवटि पाछउ[१] खिसुं[२], तउ[३] तुं मात[४] कहे[५] मुझ[५] इसुं[६]।
भिडताँ पाछउ[७] पग जउ[८] दीउं[९], तउ-तउ[१०] माता फाटउ[११] हीउं[१२] ॥ ४३७ ॥

खल-दल[१] खंडि[२] करूं[३] दहवाट? [४]तउ तुं काँइ करइ ऊचाट[४]।
म करसि माता मनि अणदोह[५]! सगले[६] आज वधारूं[७] सोह ॥ ४३८ ॥

॥ ४३२ ॥ १ अछइं C, अछै D। २ वादल BCD। ३...ज्यूं BC, दूध मलन नि D। ४ विचार्‌यां BCD। ५ पखइं BC, पखै D। ६ ऊछांछल BC, उछाछल D। ७ थायइ BC, थाइ D। ८ रखइ B, रखै D।

अलगां डुंगर रलियांमणो, हुंस हुवै अणदीठां तणो।
जुद्ध तणा मुख भला अदीठ, वात करंतां लागै मीठ। E ५८८।

॥ ४३३ ॥ १ वलहो CE जंपइं BC, जंपै DE, वादल हसी BCDE। २ तै DE। ३ क्युं BC, किम हुं DE, हउं BC, बालक कही BCDE, मुझ BCD, मोरी E, माइ BE, माय CD। ४ °नइं BC, °नै DE। ५ ए E। ६ समझाय CD। A ४१६। B ४७२। C ४८३। D ५१२। E ५९०।

॥ ४३४ ॥ १ चुथुं D, चुथौ E। २ रोवउं BC, रोवुं D। ३ आडउ B, आडो CE, आडौ D। ४ साडौ D, साडो E। ५ चूंखूं BC, चूखुं E। ६ आपणइं BC, आपणै DE। ७ पउंढउं BC, पोढो E। ८ कही E। ९ पालणइं BC, BC, पालणै E।

॥ ४३५ ॥ १...कहइं...°नइं...BC,...कहै...°नै...D, क्युं जांण्यो तें मुझनै वाल E। २...करों BC, धगचाल BCD, देखि जिसा मांडुं धकचाल E। ३ राव D, घणां BCD, थयउं BC, उथाप्यौ फिरि थांपुं गाइ E। ४ इसडइं BC, इसडै D, कामि BC, किस्युं BC, ऊभगउं B, ऊभउं C, हु भगुं D, साम सनाह विरह मुझ थाइ E।

॥ ४३६ ॥ १ शीश BC, उडाउं D, सत्र D, राज तणो सवि राखो सूत E। २ तौ D, तो E। ३ माता E। ४ जाणइ B, जाणै D, हुं E। ५ ताहरो CE, ताहरौ D। ६ पूत E। ७ गाजण BCD। ८ पिता E। ९ गाजवउं E, गाजवो C, गाजउं D। १० मति BCD। ११ मन C, इम E। १२ जाणइं B, जाणिइ C, जाणे D, जांणै E। १३ लाजवउं B, लाजवउ C, लाजउं D।

॥ ४३७ ॥ १ पाछो C, पाछौ D। २ खिसउं B। ३ तो CE, तौ D। ४ माता E। ५ कहै मुझ D, कहिजै E। ६ इस्यउं BC, इस्यउ D। ७ पाछो C, पाछौ D। ८ जो C, जौ D। ९ दीयउं B, दीयो C, दीउ D। १० तउ मुझ B, तो मुझ C, तौ मुझ D। ११ फूटइं B, फूटे C, फूटै D। १२ हीयउं B, हीयो C, हीउ D। भिडतां जो तिल पाछौ खिसुं, तो तुं माता कहिजे इसुं E। E में प्रथम अर्द्धाली नहीं है। E ५९३/१।

॥ ४३८ ॥ १ लखदल BCD। २ खोडि BC, खेसि DE। ३ करों B। ४ कांइं करइं करै D, तुं मनि... BCD, माता म धरो मनि ऊचाट E। ५ अंदोह BCDE। ६ सगली BCDE। ७ वधारउं B, वधारो C। A ४२१। B ४७७। C ४८७। D ५१६। E ५९३/२–५९४/१।

गाजन[1] आज[2] करूं गाजतउ[3], [4]रण-रस रंगि रमुं राजतउ[4]।
सीह सिवद[5] सुणि[6] गय घड जाँइ[6]; [7]कायर वचन कहइ मुखि काँइ[7]" ॥ ४३९ ॥

॥ कवित्त ॥

आइ माइ तिणि ठाइ, वइठि वादिल्ल पासि तस।
"तूंय विण पुत्र निरास, तुं हिज चालिउ जूझण कसि?
नयण मोरू वादिल्ल! प्राण वादिल्ल भणावइ।
वयण मोरू वादिल्ल! वारवराँ समझावइ"।
आवती माइ तव पेखि करि, ऊठि वादिल प्रणाम कीय।
"वालक पुत्र! जुगि-जुगि जियो, कवण कुमंत्री मंत्र दीय" ॥ ४४० ॥

रे बादल मुझ[1] बाल[2]! वात तू वदइ[3] करारी।
मनि परिहरि अभिमाँन, बोल बोलउ[4] सुविचारी।
सुभट होवइँ[5] दस वीस, तास वलि रामति[6] कीजइ[7]।
आलिमसाह[8] अथाह[9], [10]तास विढि नवि जीपीजइ[10]।
वालक मति ऊछाँछली, जूझि-वूझि जाणउ[11] नही।
मुझ मानि वचन[12] सुपसाउ[13] करि, [14]जउ मुझ सुत[14] बादल सही ॥ ४४१ ॥

"हुं कित[1] बालउ[2] माइ[3]! धाइ[4] अंचलि नवि लग्गुं।
हुं कित[1] बालउ[2] माइ[3]! रोइ[5] भोजन नवि[6] मग्गुं।
हुं कित[1] बालउ[2] माइ[3]! धूलि[7] लिट्टुं नवि फिट्टुं[7]।
हुं कित[1] बालउ[2] माइ[3]! पाइ पालणइं न लुट्टुं[8]।
'बालउ रि माइ तइँ क्युं कहिउ[9], [10]अवर राइ' रक्खाविउ[10]।
[11]सुलितांण-सेन-विनडुं नही[11], [12]तउ तवहि माइ फुट्टउ हीउ"[12] ॥ ४४२ ॥

॥ ४३९ ॥ १ गाजण DE। २ आजि D। ३ गाजतौ D, गाजतो CE। ४ रिणरसि BC, रणरसि D,... राजतो C, राजतौ D, सुजस पडह निसुणुं वाजतौ E। ५ शब्द BC, सबद DE। ६...घट BC जाइं BC, जाय D, गैंवर घटा E। ७ काइर BC, बचन D, कहइं BC, कहै D, काइं BC, काय D, न्हासै सगला जो पिण कटा E। A ४२२। B ४७८। C ४८८। D ५१७। तिम आलम भाजुं एकलो, गढ चीतोड दिखावुं भलो E ५९५।

॥ ४४० ॥ BCD प्रतियोंमें यह कवित्त नहीं है। E प्रतिमें यह दोहा है। A ४२३।

एक घणाही एकला, इक एकला घणाह।
सीह सहसै वीटीयो, जोखो जणा जणाह ॥ E ५९६ ॥

॥ ४४१ ॥ १ कहि E। २ मात E। ३ वदै D, वदहि E। ४ बोलो CD, बोलहुं E। ५ होवो D, होइ E। ६ बलि आरंभ E। ७ कीजै DE। ८-९ आलम साहि अथाहि E। १०...जीपियइं C, जीपिणै D, गंमंद किम वाहि तरीजै। ११ जाणै DE। १२ वयण E। १३ सुपसाव DE। १४ जो D, तो पूत E। A प्रतिमें नहीं है। B ४७९। C ४८९। D ५१८। E ५९७।

॥ ४४२ ॥ १ किम C। २ बालो CE, बालौ D। ३ माइं BC, माय D। ४ धाय D। ५ रोय D। ६ नहु A, नह BCD। ७ धूलि लोटि नवि पिट्टुं BCD, धूलि ढिग मांहि न लोटूं E। ८ पाइ पालणै न...D, जाइ पालणि नवि पोढूं E। ९ बालो...C,... ते किम कह्यो BCD, जाजुल नाग आलम जवन E। १० अवर राणउ (राणो C, राणौ D) राउ रखावीउ BCD, तास जुधि छोडुं ग्रहै E। ११ रिण खेल मचावहुं बाल जिम E। १२ तयहि BCD...फुट्टइ B, फुटकइ C, फूटै D, हीयउ BC, हीयौ D, तवहि माइ बालो कहै E।

"रे वाला वादिल्ल! मनह[1] आपणउं[2] न वूझसि।
रे वाला वादिल्ल! कुमर, कहि किसि[3] मुहि झूझसि।
गढ वीटिउं[4] चिहुं ठाइ, [5]सूर निवसंति खित्री वसि[5]।
तूअ[6] विण पुत्र निरास, तुं हिज चलिउं[7] झूझण कसि[8]"।
इम कहइ[9] माइ[10]-"वादिल सुणवि, वयणि[11] मोरउं[12] चित्त[13] धरी[14]।
साहण समुंद सुलितांण दल, [15]"केम वच्छ अंगमि सुधरी[15]" ॥ ४४३ ॥

"हुं कित वालउं [1]माइ! मेछ[2] पॉखाँ[3] भरि[4] पिल्लुं।
हुं कित वालउं[1] माइ! सपत पातालहि पिल्लुं[5]।
वालइ[6] वासिग नाग, कान्हि आणीउं[7] भुजाँ वलि।
वालइ[6] जाजइ[8] सूर, सीस जस दीध[9] साँमि[10] छलि[11]।
वालइ[6] वलालि[12] पतउं[13] कीउं[14], दुरयोधन वंधवि लीउं[15]।
सुलितांण[16] सेन विनडुं नही, तवहि माइ फुट्टउं[17] हीउं[18]" ॥ ४४४ ॥

॥ चोपई ॥

सुत नउं[1] सूर पणउं[2] संभली, माता मन महि[3] अति[3] खलभली[4]।
माता[5] वचन न मानइ[6] रती, [7]माता माहि गई[7] विलवती ॥ ४४५ ॥
वात सहू वहूअर[1] नइ[2] कही-"जाई[3] राखउं[4] निज पति ग्रही।
मुझनी[5] सीख न मॉनइ[6] तेह, रहसी नेट[7] तुहारइ[8] नेहि[9] ॥ ४४६ ॥
सहु[1] सिणगार सजे[2] सावता, पहिरी[3] वस्त्र नवा[4] फावता।
हाव भाव करि वचन विलास, जिण परि तिण परि घाले[5] पास" ॥ ४४७ ॥
ऍम सुणी वहूअर[1] नीकली[2], झलकइ कंति[3] जिसी[4] बीजली[5]।
सुकलीणी[6] सजि सोल सिंगार, आवी जिहाँ छइ[7] निज[7] भरतार ॥ ४४८ ॥

॥ ४४३ ॥ १ मनसि OD। २ आपणइं BOE, आपणै D। ३ किस BODE। ४ वींट्यउ BE, वीट्यो O, विंटि D। ५ सूर नवि सुभट खत्रिवस BODE। ६ तो BODE। ७ चाल्या BODE। ८ कस BODE। ९ कहै D। १० माय O। ११ वयण BODE। १२ मोरो BODE। १३ चिति BODE। १४ धरि खरो BODE। १५ केम पूत दूतर तरो BODE।

॥ ४४४ ॥ १ वालो O, वालौ D। २ म्लेछ BOD। ३ पख BO, दल D। ४ ऊभा BOD। ५ असुर सहु (दल D) घाणी पिलुं BOD। ६ वालै D। ७ आणीयउ B, आणियो O, आणियौ D। ८ जगदेव D। ९ दीस B। १० समछि BO, समथि D। ११ वलि BOD। १२ वलि BOD। १३ पतौ D। १४ कीयौ E। १५ लियो O, लीयौ D। १६ सुरताण ABOD। १७ फुट्टइं BO, फूटै D। १८ हीयउ BOD। A ४२६। B ४८२। O ४९२। D ५२१। E में नहीं है।

॥ ४४५ ॥ १ नो OE, नौ D। २ सूरपणो OE, पणौ D। ३ माही BODE। ४ कलमली E। ५ वरज्यो E। ६ मानै D, माने E। ७ तब गइ महिलामै E। E ६०२।

॥ ४४६ ॥ १ बहूयर BOE, बहूवर D। २ नाँ A, ने D, नै E। ३ जाइ नइ BOE, जायनै D। ४ राखो OE, राखौ D। ५ माहरी DE। ६ मानै D, मांने E। ७ नेठि BODE। ८ तुमारै D, तुम्हारे E।

॥ ४४७ ॥ १ सवि E। २ करे BO। ३ पहिरण BODE। ४ भलां BODE। ५ पाडे BO, पाडौं D, पाडो E।

॥ ४४८ ॥ १ बहूयर BOE, बहूवर D। २ नीसरी BOD। ३ झबकंती BODE। ४ जाणे BODE। ५ वीजुली BE। ६ सुकुलीणी BODE। ७ तिहां वैठो D, बैठ जिहां E A ४३०। B ४८७। O ४९७। D ५२६। E ६०६।

रूपइं[1] रंभ जिसी राजती, [2]ललित वचन बोलइ लाजती[2] ।
नयणे निरमल दाखइ[3] नेह, साँमि[4] धरमि साची ससनेह ॥ ४४९ ॥

कोमल कमल-वदन कामिनी, दीपइँ[1] दंत जिसी दामिनी ।
हसित[2] वदन[3] बोलइ[4] हितकरी, "साँमी[5]! वात सुणउ[6] माहरी ॥ ४५० ॥

आलिम दूठ[1] महा दुरदंत, कहि नइ[2] किसी[3] परि झूझसि कंत ।
अरि बहुला नइ[4] तुं एकलउ[5], कहउ[6] किसी परि करिसउ[7] किलउ[8]" ॥ ४५१ ॥

बादिल बोलइ[1]–"सुणि कामिणी[2]! [3]जो ए जंग करूं जामिणी[3] ।
गज बहुला नइं[4] एक ज सीह, तउ[5] पिण[6] नावइ[7] तसु मनि बीह ॥ ४५२ ॥

मयगल[1] माता मद बहु झरइँ[2], सीह थकी किम[3] नाठा[4] फिरइँ[5] ।
सीह[6] सदाई[7] साँम्हो[8] धसइ[9], [10]वाढ्यउ ई नवि पाछउ खिसइ[10] ॥ ४५३ ॥

सुंदरि बोलइ[1]- "साँमी[2]! सुणउ[3], खोटउ[4] म करउ[5] ए मंत्रणउ[6] ।
करताँ वात अछइ[7] सोहिली, पिण[8] ते वेला अति[9] दोहिली" ॥ ४५४ ॥

बादिल बोलइ[1]- "सुंदरि सुणउ[2], भय म दिखाडउ[3] मुझनइ[4] घणउ[5] ।
कायर वात करइ[6] हसि-हसी, वेला पडीयाँ[7] जाइँ[8] खिसी ॥ ४५५ ॥

ते हुं[1] पुरुष नही बादिलउ[2], जो ए जिणपरि झालुं[3] किलउ[4]" ।
[5]वलती बनिता बोलइ वली[5], [6]कंता! वात न जायइ कली[6] ॥ ४५६ ॥

[1]हय हीसारव गज सारसी[1], [2]प्रबल करइँ मुंगल-पारसी[2] ।
[3]गोला-नालि वहइँ ढीकली[3], [4]न सकइ को पेसी नीकली[4] ॥ ४५७ ॥

॥ ४४९ ॥ १ रूपैं DE । २ मृग-लोयणी (नयणी DE) सुंदरि गयगती BODE । ३ दाखे DE । ४ स्वामि BO।

॥ ४५० ॥ १ दीपै DE । २–३ कर जोडै E । ४ बोलै DE । ५ स्वामी BC । ६ सुणौ D, सुणो E ।

॥ ४५१ ॥ १ दुठ्ठ BODE । २ कहि न A, कहिनै DE । ३ किण DE । ४ नै D, ने E । ५ एकलो OE, एकलौ D । ६ कहो, कहौ D । ७ करिस्यो BO, करिस्यौ D । ८ किलु A, किलो BO, किलौ E, इसे मतै नवि दीसै भलौ D ।

॥ ४५२ ॥ १ जंपइ BO, जपै DE । २ त्रिय मूढ E । ३ जौ…D, सूरा तन गुण छे अति गूढ E । ४ नै DE । ५ तो DE । ६ पणि CD । ७ नावै DE ।

॥ ४५३ ॥ १ मइगल BO, मैगल E । २ झरै DE । ३ सवि E । ४ न्हाठा E । ५ फिरै DE । ६ सिंघ BO । ७ सदाही D, सदा लगि E । ८ साम्हउ B । ९ धसै DE । १० वाढ्यो (BOD) ही BOD…पाछो खिसै (D), घणा देखि मन माहे हसै E । D ५३१ ।

॥ ४५४ ॥ १ बोलै DE । २ स्वामी BO । ३ सुणो OE, सुणौ D । ४ खोटो OE, खोटौ E । ५ करो OE, करौ D । ६ मंत्रणो OE, मंत्रणौ D । ७ करै D, सवि E । ८ पिणि BODE । ९ होइ D ।
A ४३६ । B ४९२ । C ५०२ । D ५३१ क । E ६११ ;

कांसुं अटकां बोलीयां, कटकां दूर थयांह ।
भूंडां भलां पटंतरो, खापां छेह गयांह ॥ E ६१२ ॥

॥ ४५५ ॥ १ बोलै DE । २ सुणो OE, सुणौ D । ३ दिखाडे A, दिखाडइ B, दिखाडो O, दिखाडौ D, दिखाडिस E । ४ नै D, रिण E । ५ घणो O, घणौ D, तणो E । ६ कहै DE । ७ वणियाँ E । ८ जायइ BO, जाए D, जायै E ।

॥ ४५६ ॥ १ हउं BO । २ वादिलो O, बादलौ D, वादलो E । ३ माडउं BO, माडुं DE । ४ किलो CE, किलौ D । ५…बोलै…D, वलती अरज करे वलि इसी E । ६…जायै…D, जात नही छे जोदा जिसी E ।

॥ ४५७ ॥ १ है हीसै गैवर सारसी E । २ गुदवद (-वुद D, गल बल E) मुगल बोलइ (बदै D, करै E) पारसी BODE । ३…ढींकुली O,…बहै…D, सोसै खिण इक माहि तलाव E । ४…कोइ…BC,

चउगढ-दा[1] नितु चोकी फिरइ[1], शस्त्र घणा अरि अंगइ[2] धरइ[3] ।
तिहाँ तुं पइसिसि[4] किम एकलउ[5], ए आलोच नही छइ[6] भलउ[7]" ॥ ४५८ ॥
वादिल वोलइ[1] वलतउ[2] हसी, "तइं[3] ए वात कही मुझ किसी ! ।
हयवर[4] गयवर[5] पायक पूर, हेकणि[6] हाकि करूं चकचूर ! ॥ ४५९ ॥
लाख सतावीस लसकर लूटि, केवी सगला नाँखुं[1] कूटि ! ।
माल घणउ[2] आणुं अरि मारि, तउ[3] मुझ माता झेलिउ[4] भार" ! ॥ ४६० ॥
कांता जंपइ[1]-"रहि हो[2] कंत ! मुझ मति माहि[3] न भाजइ[4] भ्रंत ।
अजे[5] न साजी[6] छइ[7] तइं[8] सेज, निज नारी सुं न रमिउ[9] हेजि ॥ ४६१ ॥
काम-युद्ध नवि जाणउ[1] करे[2], [3]निज नारी थी नासउ डरे[3] ।
वालक जेम अजे निकलंक, दे नवि जाणइ[5] अधरे डंक ॥ ४६२ ॥
ते तुं किणी[1] परि झूझसि सहि"? [2]वलतउ वादिल बोलइ नहीं[2] ।
नारी जंपइ[3]-"सुणि मुझ नाथ, मुझ तनि अजे न लायउ[4] हाथ ॥ ४६३ ॥

...सकै कोइ पैसि...D, मुख मंकड त्रित दुष्ट सुभाव E । B ४९५ । C ५०५ । D ५३४ । E ६१५ ।
पाडे वरजि बाथ एकला । मांस-भखी वणै अणपला । D ५३५ ॥
अवंता पंखी आइडे । वड भोथाण भर्यांहण हणै D ५३६ ॥

भुरज ढहावै दे-दे टला, मांस-भखी बाणैं अलपला ।
ऊडंता पंखीआ हणै, वालै वाधी कवडी हणै ॥ D ६१६ ॥

मुख मंकड चख मिरी, जूह काला गिर कंधह ।
भुज जम दूठ दूरंत, वलिठ जांणग जुध वंधह ।
गल वल्ली पारसी वरा, मद भैगल मद छकह ।
अजण बाण भुज भीम, करै मुख हक किलकह ।
असपति सेन अणगंजीयत, तुम्ह नहि मानहुं मगज भर ।
अनुमान कांम आरंभीयै, कहै नारि इम जोरि कर ॥ E ६१७ ॥

॥ ४५८ ॥ १ चो...C, त्रिहुं पाखै जिहां चोकी फिरै D । २ अंगे A, अंगै D । ३ धरै D । ४ पैससि D । ५ एकलौ D । ६ छै D । ७ भलौ D । E प्रतिमें यह नहीं हैं ।

॥ ४५९ ॥ १ वोलै DE । २ वलतो C, वलतौ D । ३ तै D, तें E । ४ हैवर DE । ५ गैवर DE । ६ एकणि BCDE ।

॥ ४६० ॥ १ मारुं E । २ घणा BCDE । ३ तो CDE । ४ झाल्यौ D । A ४४२ । B ४९८ । C ५०८ । D ५३९ । E ६१९ ।

सघण घटा जिम पवन, किरण तप जेम हिमालय ।
अरुण तेज अंधियार, कुंभ पुत्तहि वरुणालय ।
मयंद पिखि पिखि सिघली, वज्र जिम पिख गिरंदह ।
गुरुट पिखि जिम उरग, असुर टंकारव नंदह ।
उद्धभे वाग लगै हणुं, भीम गयंद जिम भ्रमवै ।
अरि-सेन लच्छि दातार जिम, खग्गि उडावहुं विद्रवै ॥ E ६२० ॥

इम त्रिय सुणि वादल वयण, फिरि बोली तजि कांनि ।
त्रीया सेज न गंजिहि, किम गंजहु सुलतांन ॥ E ६२१ ॥

॥ ४६१ ॥ १ जपै DE । २ रहो-रहो E । ३ एह E । ४ भाजै DE । ५ अजी DE । ६ साधी BCDE । ७ छै DE । ८ तै D, तुम्ह E । ९ रम्यउ BC, रम्यौ D, रमिया E ।

॥ ४६२ ॥ १ जाणो CE, जाणौ D । २ करी DE । ३...नासो...C,...ते नास्हौ...D, सुरत विचित्रा नाजे चरी E । ४ अछइ BC, अछै D, अछो E । ५ जाणै D, जाणो E ।

॥ ४६३ ॥ १ किस BC, किण D । २ कूडि रिहाड (रोहाड C, मति D) कीजइ (कीजै D) प्री नही BCD । ३ जंपै D । ४ लागउ BC, लागा D । E प्रतिमें–

खडग-जुद्ध छै विसमो सही, कूडी हुंस न कीजै कही ।
मुझ तन हाथ न घाली सकै [illegible] जे [illegible] ॥ ६२४ ॥

ते तुं अरि-दल भंजसि कॅम"? वलतउ[1] वादिल[2] जंपइ[3] ऍम।
"सुणि सुंदरि! तुं म करे हेज, तिणि दिनि आविसु तुझनी सेज ॥ ४६४ ॥
जिणि दिनि जीपिसुं[1] वयरी[2] एह, तउं[3] हुं रमस्युं रंग सनेह।
ताहरी वात कही तईं[4] सही, पिण[5] हिव रमल करुं ए वही ॥ ४६५ ॥
ताँ लगि सेज न हेज न नेह, आलिम भाँजि करुं नहि खेह।
ताहरइ[1] वचनें भाजउ[2] आज, गाजननंदन आवइ लाज ॥ ४६६ ॥
वलती[1] नारि पयंपइ[2] वली, सूरिम सगलइ[3] तनि ऊछली।
"भलईं! भलईं! सॉंमी स्याबासि[4], भवि-भवि हुं छुं[5] थारी दासि ॥ ४६७ ॥
जिम बोलइ[1] छइ[2] तिम निरवहे[3], मत किणि वातइ[4] जायइ[5] ढहे[6]।
लाज म आणइ[7] कुलि आपणइ, सॉंमी झुंबे[8] साहसि घणइ[9] ॥ ४६८ ॥
नेजइ[1] घाउ करे नरनाथ, [2]देखिसु दिवइ तुहारा हाथ[2]।
खडग प्रहार खरा चालवे, आयुध[3] अंगि घणा झालवे ॥ ४६९ ॥

॥ ४६४ ॥ १ वलतो C, वलतौ D। २ बादलि BCD। ३ जंपै D। E प्रतिमें नहीं है।
॥ ४६५ ॥ १ जीपसी BCD। २ वइरी BC। ३ तो C, तौ D। ४ तैं D। E प्रतिमें नहीं है।
॥ ४६६ ॥ १ ताहरै D। २ भाजुं D। A ४४७। B ५०४। B ५१४। D ५४५।
E प्रतिमें–असपति घडा विसम यींदणी, भमुंह चढावी मेले अणी।
जरह कचुंकी भीडित अंग, विलकुल मुख चख राते अंग ॥ ६२५ ॥
मल्हपै भयमंत नारी जेम, वचन विरस चित न धरे पेम।
अमंगल सींधू नद गावती, छल धरती ढाकुल वावती ॥ ६२६ ॥
असपति गढ छै एहवी रुंस, खोटी मन मै म धरो हुंस।
तेह सरिस रंग रहसी केम, प्रिय बालक त्रिय प्रौढा जेम ॥ ६२७ ॥
भिडसो पिण बलि दाखो तेम, वलतो वादल जंपै ऍम।
सुणि सुंदरि! तुं म करिस खेद, मुज्झ वचन मांनें भ्रू-भेद ॥ ६२८ ॥
पोरस तणो दिखालिस तेज, तिण दिन आविस ताहरी सेज।
जां लगि प्रियजन वखानै नही, गुणीयण विरद न थै उमही ॥ ६२९ ॥
तां लगि केहा सूर सधीर, वल्लभ मांने जेह सरीर।
लोही साटै चाडै नीर, ते कुलदीपक बावन वीर ॥ ६३० ॥
तब नारी जंपै कर जोडि, अवर नही कोइ ताहरी जोडि।
भलो भलो कहसी संसार, सांम-धरम रहसी आचार ॥ ६३१ ॥
॥ ४६७ ॥ १ वलतुं A। २ पयंपै D। ३ सगले D। ४ साबासि BCD। ५ छउं BC, E प्रतिमें नहीं है।
॥ ४६८ ॥ १ बोलै DE। २ छै DE। ३ निरवाहि BCD। ४ वातै DE। ५ जायै DE। ६ ढाहि BCD। ७ आंपणै DE। ८ झूझै BCDE। ९ घणै DE। E ६३३/१ ॥
॥ ४६९ ॥ १ नेजै DE। २...हिवै...D, जिम हुं देखूं ताहरा हाथ E। ३ आउध BCD। द्वितीय अर्द्धाली E में नहीं है। इसके आगे BCD प्रतियोंमें–

कुंडलिया

कंता जूझसि कवणि परि, किम करवार गहंति।
देखसि दृढ मनि अंगरी, किम तुं प्री चाहंति।
किम तुं प्री चाहंति, तिख्य खग्गल रिण छूटइ।
खग्ग-ताल वाजंति, तेज अंधाधड तूटइ।
मनप्रिय कायर होइ तुं, देखि मयगल मयमंतः।
तव मुझ लज्जा होइ, जूझि जव भाजइ कंता ॥

पाछा पाउ रखे[1] रणि दीइ[3], मरण तणउं[4] भय माऽऽणे[5] हीइ[6] ।
भलउं[7] भवाडे खित्री[8]-वंस, पुहवि करावे सबल प्रसंस ॥ ४७० ॥

खलदल खेत्र थकी खेसवे, आयुध अंगइ[1] राखे सवे ।
सुभटाँ माहि वधारे सोह, वाहे विकट छछोहा[2] लोह ॥ ४७१ ॥

नाम करे नव खंडे[1] नाथ, वाहि सकइ[2] तिम वाहे हाथ ।
सुभट सहू कहीइँ[3] सारिखा, परगट लाभइ[4] इम[5] पारिखा ॥ ४७२ ॥

जीवण मरणि तुहारउं[1] साथ[2], हुं नवि मुंकुं[3] जीवन-नाथ[4] ! ।
घणुं घणुं[5] हिव कासुं[6] कहुं[7] ! तेम[8] करे[9] जिम हुं गहगहुं[10] ॥ ४७३ ॥

भिडताँ[1] भाजइ[2] नासे[3] मूउं[4], कायर कंपि हूउं[5] जूजूउं[6] ।
एहवा[7] वचन 'सुण्या मइ[8] काँनि, तउं[9] मुझ लाज हुसी असमाँनि" ॥ ४७४ ॥

कंत कहइ[1]-"संभलि, कामिनी[2] ! [3]हिवइ सही तुं मुझ सामिनी[3] ।
बोल्या बोल भला तईं[4] एह, [4]निज कुलवट नी राखी रेह[4]" ॥ ४७५ ॥

अस्त्री[1] आणि दिया हथियार, [2]साझिउं सुभट तणउं सिणगार[2] ।
[3]मिली गली[3] माता-पग वंदि, [4]असि चढि चालिउं वादिल भंदि[4] ॥ ४७६ ॥

॥ ४७० ॥ १ रखै DE । २ प्रिय BCDE । ३ दीयइ BC, दियै DE । ४ तणो CE, घणो D । ५ माणिसि BCD, मांणै E । ६ हीयइ BC, हियै DE (E ६३३/२) । ७ भलो CE, भलौ D । ८ क्षत्री BC । A ४५१ । B ५०९ । C ५२१ । D ५५० । E ६३४/१ ।

॥ ४७१ ॥ १ अंगै D । २ सछोहा BC । E प्रतिमें प्रथम अर्धाली नहीं है । E ६३४/२ ।

॥ ४७२ ॥ १ खंडै DE । २ सकै DE । ३ कहइ BC, कहीयै DE । ४ लाभै DE । ५ हिव BCD, रिण E । A ४५३ । B ५११ । C ५२२ । D ५५२ । E ६३५ ।

॥ ४७३ ॥ १ तुहारो D, सदा तुं E । २ नाथ E । ३ मूक्यउं BC, मूंकौ DE । ४ प्रीतम-नाथ BCD, प्रीतम साथ E । ५ घणउ-घणउ B, घणो C, घणौ D । ६ कास्यूं B । ७ कहउं B । ८ तिम E । ९ करजे E । १० गहिगहउं BC ।

॥ ४७४ ॥ १ भिडतउं B, भिडतौ D । २ भाजी A, भाजै D । ३ निश्वइ BC, निसचै D । ४ मूवउं B, मूयो C, मूवौ D । ५ हूवउं B, हुवो C, हुवौ D । ६ जूजूवउं B, जूजवो C, जूजवौ D । ७ एह BCD । ८ जउं (जो C, जौ D) सुणीया BCD । ९ तो C, तौ D । A ४५५ । B ५१३ । C ५२४ । D ५५४ । E प्रति में नहीं है । इससे आगे D प्रतिमें—

धीरज नारि वधारै नेह, खित्रवटि माहि राखण रेह ।
उत्तमराय तणी कुंवरी, खिसती मति किम आपै खरी ॥ ५५५ D ॥
भूखा घरनी आवै नार, कुमति घणी सुपै भरतार ।
पूछी ऊछी मति साजवै, तिणि सगला माहे लाजवै ॥ ५५६ D ॥

॥ ४७५ ॥ १ कहै (DE) । २ सुंदरी E । ३ हिवै (D)..., मोटा वंस तणी कुंयरी E । ४ तै D, तें E । ४...खेह BCD, हित वांछै सोइ ज ससनेह E । A ४५६ । B ५१४ । C ५२५ । D ५५७ । E ६३७ । E प्रतिमें इससे आगे—

ऊछा घरनी आवै नारी, कुमति दियै पूछ्यां भरतार ।
तै कुलवंती नारी तणो, महियल सुजस वधार्‌यो घणो ॥ ६३८ ॥
ताहरा सत्त तणौ परसाद, आलम तणो उतारुं नाद ।
सांम धरम नै कुलवट रीत, अजुआली निसुंणु निज क्रीत ॥ ६३९ ॥

॥ ४७६ ॥ १ नारी DE । २ साज्यो BC...तणो C ..., साज्यौ...तणो...D, सझि आयुध ऊठ्यौ तिणवार E । ३ हिलिगली BCD, विनय करी E । ४ अश्व BCD...चाल्यो BC, चाल्यौ D, वाद्‌ल BCD..., अस्व चढी-चाल्यो वादिं A ४५७ । B ५१५ । C ५२६ । D ५५८ । E ६४० ।

गोरउ[1] रावत[2] आव्यउ[3] वही, "काका! हिव तुम्ह रहयो[4] सही[5]।
एक वार जोवुं[6] पतिसाह, "[7]जोवुं आलिम कुं मनमाह[7]" ॥ ४७७ ॥
गोरउ[1] कहइ[1]- "बादल सुणि वात, मुझ तुझ एक अछइ[2] संघात।
[3]तु जावइ हुं पाछउ रहुं[3], "[4]तउ हुं रावत पणउ निज दहुं[4] ॥ ४७८ ॥
काका! कीजइँ काची वात, हुं जाऊं छुं मेलण घात।
रिणवटि अम्ह-तुम्ह[3] एको[4]साथ, "[5]जे विहडइँ तसु दक्षण हाथ[5]" ॥ ४७९ ॥
गोरइ रावत पूछी[1] करी[2], चालिउ[3] बादिल साहस धरी[4]।
सुभट सहू मिलिया छइँ[5] जिहाँ, बादिल चाली[6] आविउ[7] तिहाँ ॥ ४८० ॥
बादिल बोलइ[1] '[2]बहसे[2] इसुं[3]-, "कहउ[4] तुम्हे आलोचिउँ[5] किसुं[6]।
सुभट कहइ-"बादिल! सांभलउ[7], सबल मँडाणउ एकल किलउ[8]" ॥ ४८१ ॥

॥ ४७७ ॥ १ गोरो BCD, गोरा E। २ पासै D। ३ आव्यो CE, आव्यौ D। ४ रहिज्यो C, रहज्यौ D, खमियो E। ५ रही E। ६ जोवो C, देखुं E। ७ जोवों...को...C, जोउं...कौ...D, देखुं कुअर तणो पणि माह E।

॥ ४७८ ॥ १ कहि C, कहै DE। २ अछै DE। ३ ...जावै...पाछो रहो C, ...जायइ...पाछौ रहुं D। ४ तो...पणो...दहो C, तौ...पण...दहु D। द्वितीय अर्द्धाली E प्रति में नहीं है।

॥ ४७९ ॥ १ कीजै D। २ छउं BC। ३ तुझ-मुझ E। ४ एकौ D। ५ ...विहडै... D, इण वातैं मुझ दक्षिण हाथ E। प्रथम अर्द्धाली E प्रति में नहीं है। E ६४३।

॥ ४८० ॥ १ राखी E। २ धरे E। ३ चाल्यो BCE, चाल्यौ D। ४ धरे E। ५ छै DE। ६ रावत BCDE। ७ आव्यो BC, आवै DE।

॥ ४८१ ॥ १ बोलै DE। २ बहसइ B, बइसे C, बिहसे D, बहसी E। ३ इसउं B, इसो CDE। ४ कहो C, कहौ DE। ५ तुहे...A, आलोच्यउं B, आलोच्यो C, आलोच्यौ DE। ६ किसउं B, किसो CE, किसौ D। ७ सांभलउं B, सांभलो CE, सांभलौ D। ८ एकिल किलउ B(किलो C)किलौ DE। A ४५९। B ५२०। C ५३१। D ५६८। E ६४९।

D प्रतिमें-

साजि साजि स हुवौ असवार, रिप-दल गाहण सब झुझार।
बोलै बीर सम बालण बयर, गढमढ रखवालो जखु सयर ॥ ५६३ ॥
जाणे कुल-कीरति तनु धर्‌यौ, तेज-पुंज जिम रवि अवतर्‌यौ।
साहसीक स्वामी ध्रम धीर, बाचा पालण सरण सुबीर ॥ ५६४ ॥
सहू सुभट सुर देखी भली, सुरातन सांमंत अटकली।
कदे न आवै बादल सभा, अचिरज आज हुवौ दरलभा ॥ ५६५ ॥
सकै तो काई बिमासी बात, गाजण-सुत ए सुर बिख्यात।
सुभट राय-सुत बैठा जिहां, आव्यौ धाव्यौ बादल तिहां ॥ ५६६ ॥
उठी सभा सहु आसण दीयौ, तिहीं बयठो बादल द्रिढहीयौ।
पूछे सभा पयौजन आजि, कहौ बादल पधार्‌या किणि काजि ॥ ५६७ ॥

E प्रतिमें-

सांम धरम सरणै साधार, रिप-दल गाहण सबल झूझार।
जांणे कुल-कीरति तन धर्‌यो, तेज-पुंज सूरज अवतर्‌यो ॥ ६४५ ॥
सभा सहू देखी खलभली, सुरातन सांमंत अटकली।
बादल कद ही न आवै सभा, ग्रास न लाभै नहि घर बिभा ॥ ६४६ ॥
सके त काइ बिमासी वात, गाजण-सुत ए सुर विख्यात।
सुभट-राइ सुत बैठा जिहां, कीयो जुहार आवीनै तिहां ॥ ६४७ ॥
उठी सभा बहु आदर दियै, बैठो बादल तब द्रिंढ हियै।
पूछै सभी प्रयोजन आज, कहो पधार्‌या काहे काज ॥ ६४८ ॥

हठीउ[1] आलिम अमली माँण, राजा साही·लीधउ[2] प्राँणि ।
गढ पिण हेवईं[3] लेसी[4] सही, [5]जे इहाँ आविउं छइ इम वही[5] ॥ ४८२ ॥
पदमिणि द्याँ तउ[1] छूटइ[2] पास, नही तरि गढ नी केही आस ।
गढि जात'ईं[3] काँई नवि रहइ[4], वली कराँ हिव ज्युं तुं कहइ[5]" ॥ ४८३ ॥
बादिल बोलइ[1]- "भलउं[2] मंत्रणउं[3], कीउं[4] तुम्हे[5] आलोचिउं[6] घणउं[7] ।
पदमिणि देशाँ 'आपे सही, पिण इक[9] वात सुणउं[10] मुझ कही ॥ ४८४ ॥
छाडुं पडसी सगलइ देसि, मस्तकि कोइ न रहसी केस ।
खित्रवट सहू लोपासी खरी, आ थें वात भली नादरी ॥ ४८५ ॥
[1]मांडा सुभट भरईं गहगही[1], [2]पिण निज माँण न मेल्हईं सही[2] ।
माँण पखइ[3] नर कहीइ[4] किसउं[5], कण विण ठाला[6] कूकस जिसउं[7] ॥ ४८६ ॥
काया-माया बे कारिमी, घडी एक[1] वाँकी घडी एक[1] समी ।
कायर हुउं अथवा हुइ[2] सूर, मरण किणइ[3] थी न टलइ[4] दूर ॥ ४८७ ॥
तउ[1] ते मरण समारी मरउं[2], [3]ढाँढा होई किसुं[3] ऊगरउं[4] ।
पदमिणि दीधी कहीइ[5] केम, पति[6] राखणसुं[7] जउं[8] छइ[9] प्रेम" ॥ ४८८ ॥
वीरभाण इम निसुणी भणइ[1]- "बादिल! बोलिउं[2] तुं वलि घणइ[3] ।
भाषी सहू भली तईं[4] वात, पिण नवि प्रीछइ[5] तुं तिल मात्र ॥ ४८९ ॥

॥ ४८२ ॥ १ हठिओ CD, हठियौ E । २ लीधो CE, लीधौ D । ३ हिवडै D, हिवडां E । ४ लेस्यइं BC, लेसां DE । ५...आव्यउं B...,जेह मुगल दल आव्यौ वही D, दिली-पती बैठो हठ ग्रही E । A ४६० । B ५२१ । C ५३३ । D ५७० । E ६५१ ।

॥ ४८३ ॥ १ तो CE, तौ D । २ छूटे C, छूटै DE । ३ जातां BCDE । ४ रहै DE । ५ कहै DE ।

॥ ४८४ ॥ १ बोले C, बोलै DE । २ भलो CE, भलौ D । ३ मंत्रिणो C, मंत्रणो DE । ४ कियो CE, कियौ D । ५ तुहे A । ६ आलोच्यो BC, आलोच्यौ D, आलोचज E । ७ घणो CE, घणौ D । ८ देस्यां BCD, देसां E । ९ एकु BCDE । १० सुणो CE, सुणौ D ।

॥ ४८५ ॥ BCDE प्रतियोंमें यह नहीं है ।

॥ ४८६ ॥ १...मरै...D, सुहड मरे आंणी उच्छाह । २ पणि...बही BC, पणि...मुंकै बही B, पणि...मुंकै राह E । ३ पखे A, पखै DE । ४ कहीयइ BC, कहियै DE । ५ किसो C, किसौ DE । ६ ठालउं B, ठालै CD । ७ जिसो C, जिसौ DE ।

॥ ४८७ ॥ १ इक C, घडीयै-घडीय E । २ होइ BC, होय D, हुइ-हुयै E । ३ किणी BC, किणै D, किण E । ४ टलै DE ।

॥ ४८८ ॥ १ तो C, तौ D, तो पिण E । २ मरो CE, मरौ D । ३-४ किस्युं ऊबरउं B, उधरै-उधरो C, किस्युं उबरौ D, असत हुयां थी नवि ऊबरो E । ५ कहीयइ BC, कहीयै DE । ६ कुलवट E । ७ स्युं BCDE । ८ जौ D, जो E । ९ छै DE । A ४६६ । B ५२६ । C ५३७ । D ५७४ । E ६५६ ।
इसके आगे DE प्रतियोंमें–

होसी वातां देस प्रदेस, माथै कोइ न रहसी केस ।
छांट पड़ै सगले संसार, राय छुडायो देइ नार ॥ D५७५, E६५७ ॥

॥ ४८९ ॥ १ भणै DE । २ बोल्यो C, बोल्यौ D, बोलै E । ३ घणै DE । ४ तै D, यै E । ५ प्रीछो BC, प्रीछै D, प्रीछलो E ।

आलिम ईस तणउ[1] अवतार, लसकर लाख ‘सतावीस लार।
यवनी[2] सुभट वडा झूझार, हणइ[3] हेकीकउ[4] हेलि हजार ॥ ४९० ॥
साही लीधउ[1] वलि सिरदार[2], झूझंता आवइ[3] तसु भार[4]।
काई परि हिव[5] पुहचइ[6] नही, नही तरि म्हे वलि[7] झूझत सही" ॥ ४९१ ॥
वादिल बोलइ[1]- "कुंअर[2]! सुणउ[3], ए आलोच नही आपणउ[4]।
किसा आलोच करइ[5] केसरी[6]? मारईं[7] मयगल[8] माथइ[9] धरी ॥ ४९२॥
इम करतां जे[1] मूआ[2] वली[3], [4]तउ पिण कीरति हुइ निरमली[4]।
काया साठइ[5] कीरति जुडइ[6], [7]तउ नवि मोलईं मुंहगी पडइ[7] ॥ ४९३ ॥
काया चांबतणी[1] कोथली, [2]खिण इक मेली खिण ऊजली[2]।
तिण साठइ जउ कीरति मिलइ, तउ लेतां कुण पाछउ टलइ" ॥ ४९४ ॥
वीरभांण हिव बोलइ वली "वादिल! तुझ मति अतिनिरमली।
[1]अरजुण ते जे वालइ गाइ[1], करि जिम हिव तुझ आवइ दाइ[2] ॥ ४९५ ॥
राजा छूटइ[1] पदमिणि रहइ[2], इणि वातईं[3] कुण नवि गहगहइ[4]"।
बादिल बोलइ[5]- "कुंअर! सुणउ[6]! करयो[7] ऊपर वांसईं[8] घणउ[9] ॥ ४९६ ॥
हुं जाउं छुं लसकर माहि, आवुं[2] वात सहू अवगाहि"।
करि जुहार बादिल असि चडिउ[3], [4]साहसि सुरपति सांसईं पडिउ[4] ॥ ४९७ ॥

॥ ४९० ॥ १ तणो CE, तणौ D। २ जुवनी BCD, मूंगल E। ३ हणै DE। ४ एकेकी BCD, एकीको E।
॥ ४९१ ॥ १ लीधो C, लीधौ D, लीया E। २ रतनसी रांण BCDE। ३ आवै DE। ४ प्राण BCDE। ५ तिण E। ६ पहुंचै DE। ७ परि BCD।
॥ ४९२ ॥ १ कहै DE। २ कुमरजी BCD, कुअरजी E। ३ सुणौ D, सुणो BCE,। ४ आपणो CE, आपणौ D। ५ करे CE, करै D। ६ केहरी D। ७ मारै D, मारे E। ८ मइंगल BC, मैगल D। ९ माथै D, पोरस E।
॥ ४९३ ॥ १ जै D, जो E। २ मूवा BD, आवां E। ३ कांम E। ४ कुलवट रहसी रहसी नांम E। ५ साटै DE। ६ जुडै DE। ७ तो...पडै D, तो ते मोल न महुंगी पडै E।
॥ ४९४ ॥ १ वाय C, सांस E। २ माहे मइली (मैली DE) ऊपरि उजली BCDE। BCDE प्रतियोंमें द्वितीय अर्द्धाली नहीं है।
॥ ४९५ ॥ BCD प्रतियोंमें प्रथम अर्द्धाली नहीं है। E प्रतिमें यह अर्द्धाली ऊपर की द्वितीय अर्द्धाली इस रूपमें बनी है- कहै कुंयर सुणि बादल राइ, जो इम तुम्हनें आवै दाइ॥ E ६६२। १ आजण BCD,...वाले DE। २ करउ तेम जिम आवइ दाइ BCD, करो विचार जे रूडो थाइ E ६६३, १।
॥ ४९६ ॥ १ छूटै DE। २ रहै DE। ३ वातै DE। ४ गहगहै D, ऊगहै E। ६६३, २। ५ कहै DE। ६ कुमारजी BCDE, सुणो CE, सुणौ D। ७ करिज्यो B, करिजो C, करिज्यो D, करियो E। ८ वांसै DE। ९ घणो CE, घणौ D। पहिली मति सवि (उंधी करी। आलम तेड्यो बांहि C माहे D) धरी D ५८३, १। E ६६४। इसके पश्चात् DE प्रतियोंमें–

मारण तणो न खेल्या दाव, गढ पणि दीठो बांध्यो राउ ॥ D ५८३, २ ॥

केवल D में (जहर कहर आलम असवार, आया माहे तीन हजार)।

छलिबलि दूध न पायौ बही, तो हिव सोच करी सही ॥ D ५८४। E ६६५।

केवल E प्रतिमें–

सूरातन चित धीरज ज्यांह, परमेसर त्यां आवै बांह।
हिव आदर्यो सत भ्रम तणो, मुहडां धीरज देयो घणो ॥ ६६६ ॥

॥ ४९७ ॥ १ जावुं BC। २ आउं D। ३ चढ्यो E। ४ सासै पड्यौ D, साहसनूर सूरातन चढ्यो E। A ४७५। B ५३४। C ५४५। D ५८५। E ६६७॥

इसके पश्चात् BCDE प्रतियों में–

सीहन जोवइं (जोवै DE) चंद बल, ना जोवइं (जोवै DE) घरि रिद्धि।

[दसमो खण्ड]

गढनी पोलि हुंति ऊतरिउं[1], वुद्धिवंत वहु[2] साहसि भरिउं[3] ।
निलवटि दीपइ[4] अधिकउं[5] नूर, प्रतपइ[6] तेज तणउं[7] घटि पूर ॥ ४९८ ॥
आयुध अंगि सह्यू[1] सावता, पहिरणि[2] वस्त्र नवा[3] फाबता ।
आवइ[4] एकलमल असवार, जाणे[5] अभिनव अगनि-कुमार[6] ॥ ४९९ ॥
आलिम दीठउं[1] ते आवतउं[2], सुभट घणउं[3] दीसइ[4] सावतउं[5] ।
आलिम मेल्ह्या सांम्हा[6] दूत, "पूछउं[7], आवइ[8] किम रजपूत ॥ ५०० ॥
दूते जाई[1] पूछिउं[2] तेह, वोलइ[3] वादिल अति ससनेह ।
"[4]हुं अविउं छुं करवा वात[4], पदमिणि आणि दीउं[5] परभाति ॥ ५०१ ॥
आलिम मांनइ[1] मुझ मंत्रणउं[2], तउं[3] उपगार करूं हुं घणउं[4]" ।
दूते जाइ[5] धणी नइ[6] कहिउं[7], इम सुणि आलिम अति[8] गहगहिउं[9] ॥ ५०२ ॥
माहि तेडाविउं दे वहु मांन, दीठउं असपति अति असमांन ।
[3]तेज तपइ ब्यउं ही तनि घणउं[3], [4]आलिमसाहि दीउं वेसणउं[4] ॥ ५०३ ॥
वइठउं[1] वादिल वुद्धि-निधांन, असपति पूछइ[2] दे वहु मांन ।
"क्या तुझ नाम किणइका[3] पूत, अव किसका हइ[4] तूं रजपूत ॥ ५०४ ॥

एकल्लउं (एकलो CD, इकलो E) भंजइं (भाजइ C, भंजै D, भांजै E) गयघटा,
जिहँ साहस तहँ सिद्धि ॥ B ५३५ । C ५४६ । D ५८६ । E ६६८ ॥
केवल BCD प्रतियोंमें–
सीह सपुरिसां सत्तवल, वोलइं (वोलै D) ते परमांण (परिमांण D) ।
हरि हर ब्रह्मा नवि खिसइं (खिसै D), ते पुरिसां सुविहांण ॥ B५३६ । C५४७ । D५८७ ॥

॥ ४९८ ॥ १ ऊतर्‌यो C, ऊतर्‌यौ D, नीसर्‌यो E । २ नइं BC, नै D, ने E । ३ भर्‌यो CE, भर्‌यौ D । ४ दीसइ C, दीपै D । ५ अधिको CE, अधिकौ D । ६ प्रतपै DE । ७ तणो CE, तणौ D ।

॥ ४९९ ॥ १ सज्या E । २ पहिर्‌या E । ३ सह्य BCDE । ५ जाणिक BC, जांणै DE । ६ कुवार D, कुआर E ।

॥ ५०० ॥ १ दीठो CE, दीठौ D । २ आवतो C, आवतौ D । ३ घणुं AD, घणो C । ४ दीसै D । ५ सावतो C, सावतौ D । ६ मेल्ह्यौ साम्हौ D । ७ पूछइ C, पूछौ D । ८ आवै D । A ४७८ । B ५३९ । C ५५० । D ५९० ।
E प्रतिमें – आवत दीठो आलिम जिसै, ए आवै छै कारण किसै ॥
पूछण सांम्हा मूक्या दूत, क्युं आवत है ए रजपूत ॥ E ६७१ ॥

॥ ५०१ ॥ १ आई E । २ पूछ्या BCD, पूछ्यो E । ३ बोलै D, बोले E । ४...आव्यौ ...D, आयो छै इक कहवा वात E । ५ दीयउं BC ।

॥ ५०२ ॥ १ मांनै C, मांनै DE । २ मंत्रणो CE, मंत्रणौ D । ३ तो CE, तो D । ४ घणो CE, घणौ D । ५ जाय D । ६ ते CE, ने D । ७ कह्यउं B, कह्यो CE, कह्यौ D । ८ मनि BCDE । ९ गहगह्यउ B, गहगह्यो CE, गहगह्यौ D ।

॥ ५०३ ॥ १ तेडाव्यउं BC, तेडाव्यौ D, तेडाव्यो E । २ दीठो CE, दीठौ E । ३...(तपै D) तेहनउं BC (तेहनो D) अति (घणो C, घणौ D), तेज देख दिनकरथी घणो E । ४...दीयउं B (दियो C, दियौ D), (बेसणो C बैसणौ D), हुकम कियौ खुस बैसण तणो E ।

॥ ५०४ ॥ १ बैठो DE । २ पूछै DE । ३ किसका तूं BCDE । ४ है DE ।

"क्युं अब आया हइ हम पासि, क्या हइ तुझ कुं गढ महि ग्रास"।
बोलइ बादिल वलतउ हसी, गोभ गइ म्हु घटि ऊलसी ॥ ५०५ ॥
अवसरि बोली जाणइ जेह, माणस माहिं गुंथाइ तेह।
"तिणपरि बादिल तब बोलीउ", "हरखिउ जिम आलिमनउ हीउ" ॥ ५०६ ॥
नाम ठांम सहु निरतां कह्या, माहोमाहि बिहो गहगह्या।
बादिल बोलइ आदर करी, "सांमी! बात सुणउ माहरी ॥ ५०७ ॥
पदमिणि मेल्हिउ हुं परधान, सुभट न मेल्हइं निज अभिमान।
"पदमिणि दीठो जब तुम्ह द्रेठि", "जीमंतउ निज जालां हेठि ॥ ५०८ ॥
तिणि दिन थी ते चिंतइ इसुं कामदेव ए कहीइ किसुं।
धनि ते नारि तणउ अवतार, जेहनइ आलिम छइ भरतार ॥ ५०९ ॥
विरह-वियाकुल बेठी रहइ, निसि-दिन सुहिणे तुझनइं लहइ।
"कर ऊपरि मुख मेल्ही रहइ", नयणे नीर घणुं तसु वहइ ॥ ५१० ॥
निपट घणा मेल्हइ नीसास, अबला दीसइ अधिक उदास।
तुझ सुं कोइ हुउ अनुराग, "रातउ जाणी प्रवाली राग" ॥ ५११ ॥
पदमिणि नइ मनि अधिकउ प्रेम, ते कहवाइ मई मुखि केम।

॥ ५०५ ॥ १ क्यों DE। २ है DE। ३ बोलै DE। ४ वलतौ D, वलतो E। ५ राय BCDE। ६ उल्हसी BCDE। A४८२। B५४६। C ५५५। D५९५। E६७६ ॥

॥ ५०६ ॥ १ जाणै DE। २ मुंह A। ३ गुंथायइ BC, गिणावै D, गिणयै E। ४...अति...BC, बोलियौ D। ५ हरख्यो हीयउ BC, आलमनौ हियौ D।
४-५ विनय करी कहे जोडी पांण, करहुं आज पावुं फुरमांण E।
इसके पश्चात् BCD प्रतियोंमें—
बलथी बुधि अधकी कही, जे उपजइं ततकालि।
वानिर वाघ विगोइयो (विणासियो D,) एकलडइ (डै D) सीयालि ॥ B५४७। C५५८। D५९७।

॥ ५०७ ॥ १ सवि BCE। २ विगते E। ३ ते सुणि आलिम मनि...BCD, महरवांन तब आलम थया B। ४ बोलै DE। ५ साहस E। ६ धरी E। ७ सुणोCE, सुणौ D।

॥ ५०८ ॥ १ मेल्ह्यउ BC, मुंक्यौ DE। २ मुहड E। ३ मुझ DE। ४...तुं...A, पदमिन देख्या तुम-कुं द्रेठि E। ५ भोजन करतां E।

॥ ५०९ ॥ १ इसउ B। २ कहियइ BC, कहियै DE। ३ किसउ B, किसो E। ४ तिस D। ५ तणो C, तणौ D, तणा E। ६ जेहनै D, जिसके E। ७ छै D, है E।

॥ ५१० ॥ १ बइठी BC, बैठी DE। २ रहै DE। ३ अहनिश BCDE। ४ सुहनइ BC। ५ तुझनै D, तुम्हकौ E। ६ लहै DE। ७ मुख ऊपरि कर देई रहई BCD। ८ घणउं BC, घणौ D। द्वितीय अर्द्धाली E में नहीं है।

॥ ५११ ॥ १ मूंकै DE। २ दीसै DE। ३ तुम्हसुं D, तुम्हसे E। ४ हुवौ D, हूयो CE। ५ रातो जेम पटोली BCDE। A ४८९। B ५५२। C ५६३। D ६०२। E ६८२/१।

॥ ५१२ ॥ १ नै D, कै E। २ अधिको CE, अधिकौ D। ३ कहवायइ BC, कहवाये DE। ४ मुखसुं (सै E) BCDE। ५ रहै DE। ६ मुखस्युं बात (कहै D)...BCD, मुख करि वात न तिण से कहै E। मुझ तेडी ए दाख्यो भेद। मूक्यो करवा विरह निवेद ॥ E६८३ ॥
इसके आगे E प्रति में—सुणि साहिब आलम! अरज, मैं पदमिनका दास।
यह रुक्का तुम्हकुं दिया, है इसमे अरदास ॥ E६८४ ॥
ले रुक्का आलम सुहथ, वाचत धरत उछाह।
तावी छाती विरहतें, मेटत हित-जल दाह ॥ E६८५ ॥

आलिम! आलिम! करती रहइ[२], 'मुझ सुं वात सहू ते कहइ' ॥ ५१२ ॥

BC प्रतियोमें फारसी मिश्रित भाषा के ये 'बेत' हैं—

अजार दर्द बदिल मेर, खिज्र दूर यार।
चि कुनम् सबुर कुनम् दिल एक औ दर्द हजार।
तनरा रबाब साजिम् रगहा सितार तार।
दीगर सरोज नेस्त व झूझुआर यार॥

इसके आगे BCDE प्रतियोंमें–जोखि (मैं E) देखूं वदनछवि, हुं (मैं E) वैकुंठ न जाउ (चाहिE)। इंद्रपुरी किह काजिइ (किहि कामकी DE), तुय सीह नही जिह ठाम (मीत नही जिस माहि E)।

इसके आगे BCD प्रतियों में–

सोरठा– मइं (मैं D) मन दीन्हउ (दीन्होC, दीनो D) तोहि, जा दिन ते दरसन भया।
अब दोइ जिय नहि मोहि, प्रेम लाज तुम्हरी बहू (बही D)॥ B ५५७। C ५६८। D ६०७॥
मइं मन दीन्हउ तोहि, सकइ तउ निरवाहियो।
ना तरि कहियउ (-यौ D) मोहि,
मइं (हुं D), मन बरजउं (-ज D) आपणउं (णौ D)॥ B ५५८। C ५६४। D ६०८।

इसके आगे BCDE में–

निस वासर आठों पहुर, छिन नहि विसरत (बिसरै E) मोहि।
जिह जिह (जहाँ E) नयन (नैन E) पसारिहुं, तिह तिह (तहाँ E) देखुं तोहि॥ E ६८७॥

इसके आगे BCD में–

धनि धनि आलमसाह तूं, काम तणउं (तणो C, तणौ D) अवतार।
मन मोह्यो पदमिणि तणउं, अब करि हमरी सार॥ B ५६०। C ५७१। D ६१०॥

इसके आगे D प्रतिमें–

मन हुंतो सो तुम्ह लियो, सुक्ख गयो तजि गाम।
अब तो हम पै नाहि कछु, छोडि तुहारौ नाम॥ ६११॥

DE प्रतियोंमें–

साहि तुम्हारे (तुहारे D) दरकुं, अधर रह्यो जिय आइ।
कहो क्या आग्या देत हो, फिरि तन रहे कि जाइ॥ D ६१२। E ६८८॥

D प्रतिमें–

प्रीतम प्रीत न कीजियो, काहुं सुं चितलाय।
अलप मिलण बहु बीछरण, सोचत ही जिय जाय॥ ६१३॥
प्रीतम कुं पतियाँ लिखुं, जो कछु अंतर होय।
हम तुम्ह जिवडा एक है, देखणकुं तंन दोय॥ ६१४॥

E प्रतिमें–

प्रीत करी सुख लहनको, सो सुख गयो हराइ।
जैसे खदरि छछुंदरी, पकरि सांप पछिताइ॥ ६८९॥

DE प्रतियोंमें–

वाती ताती विरह की, साहिब जरत सरीर।
छाती जाती छार हुइ, जो न बहत द्रग नीर॥ D ६१५ E ६९०॥

D प्रतिमें–

मुझ प्राणी तुझ पासि, तुझ प्राणी जाणुं नही।
जो कोइ विरहो नासि, पंजरको विरहो नही॥ ६१६॥
जिम मन पसरै चिहुं दिसां, तिम जो कर पसरंति।
दूर थकी ही साननां, कंठा ग्रहण करंति॥ ६१७॥

E प्रतिमें–

कहै पदमिन सुनि साह, वाह तुम्ह रूप बडाई।
अहो काम अवतार! अहो तेरी ठकुराई।
मुझ कारण हठि चडे, लडे ग्रहि खग्गउ नंगे।
पकर्यो रांण रतंन, वचन [illegible]

‘तुझ नउ[1] आविउ[1] सुणि परधांन[1], तेह प्रतइं[2] दीधउ[3] बहु मांन ।
सुभट कहइ[4] म्हे[5] मरस्यां[6] सही, पिण म्हे[5] पदमिणि देस्यां[7] नही ॥ ५१३ ॥

समझाया मइं[1] ‘सुभट समेत, वीरभांण राजा जग-जेत ।
क्युं-क्युं[2] आज ढवइ छइ[3] वात[4], ‘तिणि जाणां छां मिलसी धात[5] ॥ ५१४ ॥

पदमिणि मेल्हिउं[1] हुं तुम भणी, विनय भगति[2] वीनववा घणी ।
वली जिका होइ[3] छइ वात, कहिस्यु आवी ते परभाति ॥ ५१५ ॥

सीख दीउं[1] हिव मुझनइं[2] सही, पदमिणि पासइ[3] जाउं[4] वही ।
जोती होसी[5] मुझनी[6] वाट, करती होसी[5] अति ऊचाट[7] ॥ ५१६ ॥

विरह-विथा न सहइ[1] विरहणी, काम पीड घटि[2] चालइ[3] घणी ।
तुझ[4] संदेस सुधा-रस जिसा, पाउं तु जाइ सुणाउं[5] जिसा" ॥ ५१७ ॥

॥ दूहा ॥

असपति[1] इणिपरि संभली[2], पदमिणि प्रेम-प्रकास ।
वयण बाणि वीध्यउं[3] घणउं[4], ‘मनि मेल्हइ नीसास[5] ॥ ५१८ ॥

. . . .

अब वैठि रहे करि मौन तुम, कहा तुम्हारे दिल वसी ।
जिहि काम काज एते किये, सो क्यों न करहुं अब है खुसी ॥ ६९१ ॥
मैं तेरी पग-दास, मैं हुं तेरी गुन-वंदी ।
तुम रहिमान रहीम, मैं हुं त्रिय आदम गिंदी ।
मैं तो यह पग किया, सेज आलिम सुख माणुं ।
नां तरि तजि हुं प्रांण, अवर नर निजरि न आणुं ।
अब करहुं गिहिर नानहुं अरज, हुकम होइ दरहाल यह ।
मैं आइ रहुं हाजिर खडी, छोडि देहुं हिंदुवांन पह ॥ ६९२ ॥

BCD प्रतियोंमें–
पंच (दस D) दुहा नइ (नै D) वेई वेत । मांहीं लिखियउं (-यां D) छइ (छै D) संकेत ।
लिखि ए पत्रि दीइं (दइं D) अम्ह साहि । पढि तुम्ह देखउ (देखो D) क्या हइ (है D) माहि ॥
B ५६१ । C ५७२ । D ६१८ ।

॥ ५१३ ॥ १ तुम्हनउं आयउं जव...B, तुम्हनो आयो जव...C, जव आयौ आलम...D, जब भेजे आलम... E । २ प्रतै D । ३ दीधो CD । २-३ यौ पदमनि छोडै राजान E । ४ कहै D, सुहड कहै B । ५ अम BC, हम D, वलि E । ६ परिस्यां E । ७ आपां A, देसां E ।

॥ ५१४ ॥ १ मै D । २ किहुं-किहुं BCD । ३ छै DE । ४ कांन E । ५...जाणीज्युं मेलसे भाति B, (तिण E) जाणुं छुं विणिसै वांन (वान D) DE ।

॥ ५१५ ॥ १ मेल्ह्यउ हूं B । २ वीनवी छइं घणी B । ३ होवइं छइ वात, आवी कहिस्युं ते B ।

॥ ५१६ ॥ १ दियौ DE । २ पत्री पढी BCDE । ३ पासै D, पदमिन पासे E । ४ जावउं BC, जावौ D । ५ होस्यइं BC, होसै E । ६ माहरी DE । ७ औचाट D । A ४९४ । B ५६५ । C ५७५ । D६२० । E६९६ ।

॥ ५१७ ॥ १ सहै D, खमै E । २ घडि B, अति E । ३ चालै DE । ४ तुम्ह E । ५ पाउं जाइ कहूं तिहां तिसा BCDE ।

॥ ५१८ ॥ १ असिपति A, असुपति B । २ सांभली E । ३ वेध्यउ B, वेध्यो CDE । ४ घणो CE, घणी D । ५ प्रबल मेल्हइं...CD, मूकै सबल...E । इसके आगे BCDE प्रतियोंमें–
पत्री वांची प्रेम करि (सुं E), चतुराई सुविचार ।
कागल (कागद E) करि मेल्हइ (मेल्हे C, मूकै E) नही, नैणा लग्गी (नयण लिगाई E) तार ॥
B ५६८ । C ५७८ । D ६२३ । E ६९९।

अलजउ[1] तनि[2] अति ऊपनउ[3], विलली[4] विरह विराल ।
अवसर देखी आपणउ[5], जागिउ[6] काम जटाल ॥ ५१९ ॥

काम-बाण कुण संहि सकइ[1], दाझइ[2] सगली[3] देह ।
सुंदरि तणा सँदेसडा, निपट वधारयउ[4] नेह ॥ ५२० ॥

विरह-विथा सहि नवि सकइ[1], अलजउ[2] अंगि न माइ[3] ।
प्रेम सुणी पद्मिणि तणउ[4], घट गलहल ज्यूं जाइ[5] ॥ ५२१ ॥

असपति थउ[1] अहि सारिखउ[2], साहि न सकतउ[3] कोइ ।
खीलिउ[4] बादिल गारुडी, पद्मिणि मंत्र[5] परोइ ॥ ५२२ ॥

॥ चोपई ॥

असपति[1] बोलइ[2]- "बादिल, सुणउ[3], तुं अम्ह[4] आज[5] घरे [6]प्राहुणउ ।
भगति जुगति[8] तुझ[9] केही करां, [10]तइं दीठइ मनमाहे ठरां[10] ॥ ५२३ ॥

पद्मिणि सुं[1] हम[2] करयो[3] प्रीति, रूडी परि सहु[4] भाखे[5] रीति ।
जइ[6] हम हाथि चडी[7] पद्मिणि, '[8]तउ मुझ घरि तुं होइसि धणी[8]' ॥ ५२४ ॥

सुभट सहू समझावे[1] घणउ[2], थिर करि थापे ए मंत्रणउ[3] ।
दूध डांग दिखलावे घणी, वात विहांणी[4] आवे वणी" ॥ ५२५ ॥

ऐम कही निज करसुं[1] साहि, पहिराविउ[2] बादिल पतिसाहि ।
लाख सुनइया दीधा सार, हयवर[3] गयवर[4] वस्त्र अपार ॥ ५२६ ॥

॥ ५१९ ॥ १ अजलउ B, अलजो C, अलिजौ D । २ तिणि BCD । ३ E ऊपनो C, ऊपनौ D । ४ विलती C, बिलल D । ५ आपणौ D । ६ जाग्यौ D । E में नहीं है ।

॥ ५२० ॥ १ सकै DE । २ दाझै DE । ३ सगलउ A । ४ वधारइं A, वधार्‌यो BC, वधारै DE ।

॥ ५२१ ॥ १ सकै DE । २ अजलउ B, अलजो C, अलिजो D । ३ माय D । ४ तणो C, तणौ D । ५ थलहलियो BC, (-यौ D) । E में नहीं है । इसके आगे BCDE प्रतियोंमें–

बार बार चुंबन करइं (करै D, करे E), रुक्के (-का DE) कुं (कौं E) मुखि लाइं ।
इलम (अजब E) पढी बहु (है E) पद्मिणी (-नी E), खूब लिख्या इह (है E) माहि ॥
B ५७२ । C.५८२ । D ६२७ । E ७०१ ।

॥ ५२२ ॥ १ थो A, थौ DE । २ सारिखो ACD, सारिखौ E । ३ सकतो CE, सकतौ D । ४ खील्यो BCDE । ५ प्रेम A ।

॥ ५२३ ॥ १ असुपति BC । २ बोलै C, बोले D । ३ सुणो CE, सुणौ D । ४ हंम D, मेरे E । ५ आजु BC, आजि D । ५-६ वल्लम E । ६ प्राहुणो C, प्राहुणौ D, पांहुंणौ E । ८ युगति B । ९ तुम्ह D, कितियक कीजियै E । १० तौ दीठै...D, तेरी अकल वसी मुझ हीयै E । A५०१ । B ५७४ । C ५८४ । D ६२९ । E ७०३ ॥

॥ ५२४ ॥ १ स्युं BC, सौं E । २ अम्ह BC । ३ करिज्यो BC, करज्यौ D, कहियौ E । ४ स्युं BC । ५ राखे BCD । ६ जे BC, जै D, जो E । ७ चडही E । ८ तउ (तो C, तौ D) तुझ घरि होइ धरती धणी BCD, तो तुझकुं हुं धरती धणी E ।

॥ ५२५ ॥ १ समझाए BCE । २ घणुं AE, घणौ D । ३ मंत्रणौ D (-णो E) । ४ सवाहे BCD, सुधारे E ।

॥ ५२६ ॥ १ करस्युं BD । २ पहिराव्यो BCE, पहिराव्यौ D । ३ हैवर DE । ४ गेवर DE ।
इसके आगे BCDE प्रतियोंमें–

रुक्का लिखि देवउ (देउं D, देहुं E) तुम्ह हाथ,
माहि लिखउं (-हुं E) निज वंदगी वात (प्रीतिसु वात D, प्रीतम गाथ E) ।
रुक्का ल्यउं (ल्युं D, लिउं E) नही आलिम तणउ (तणो C, तणौ D, तणी E),
वांचस (वांचै DE) [illegible] (मंत्रणो C, मंत्रणौ D, मंत्रणा E) ॥

ते लेई वादिल आवीउ[1], हरखिउ[2] माइ तणउं[3] तव हीउ[4] ।
निज नारी रूलियाइत थई, "दिन आजूणउ[5] दीधउ[6] दई" ॥ ५२७ ॥
गोरउ[1] रावत[2] मनि गहगहिउ[3], "करसी वादिल सगलउं[4] कहिउ"[5] ।
हरषित नारि हुई पदमिणि, "औं मेल्हेसी[6] सही मुझ धणी" ॥ ५२८ ॥
सुभट सहू संक्या[1] मन माहि, वादिल आगइं[2] अधिकी[3] आहि ।
सिगति[4] न छांनी राखी रहइ,[5] वाँधी अगनि हुई[6] तउ[7] दहइ ॥ ५२९ ॥
वादिल वइसी[1] किउ[2] मंत्रणउ[3], "कहुं वात ते सगला सुणउ[4] ।
वि सहस सज्ज करउ[5] पालखी, [6]वात न जाणइ जिम को लखी[6] ॥ ५३० ॥
ऊपरि अधिक धरउ[1] ओंछाड[2], पागथियां[3] वांधउ[4] पटवाडि ।
दुइ-दुइ सुभट रहउ[5] त्यां माहि, [6]सहि संजूह घटे संवाहि[6] ॥ ५३१ ॥
साचा शस्त्र[1] घणा आदरी, वइसउ[2] मन महि साहस धरी ।
लारोलारि करउ[3] पालखी, कहिस्यां[4] माहे छइं[5] तसु सखी ॥ ५३२ ॥
विचि[1] पालंखी पदमिणि तणी, परठी सोभ करउ[2] तिणि घणी ।
साचउ[3] पदमिणि तणउं[4] सिंगार[5], ऊपरि थापउ[6] भमर गुंजार ॥ ५३३ ॥

मुखस्युं (सुं D, सै E) वात कहुंगा धणी,
विरह विथा सहु आलिम तणी ।
मुझकुं दीजइं (दीजै DE) अवइ (अबहिं E) रजाइ,
आलिम ऊठि (साहि E) दिया पहुंचाइ । B ५७९ । C ५८९ । D ६३४ । E ७०८ ॥

॥ ५२७ ॥ १ आवियो C, आवियौ D । २ हरख्यउं B, हरख्यो C, हरख्यौ D । ३ तणो C, तणौ D । ४ हीयउं B, हियो C, हियौ D । ५ आजूणो C (-णौ D) । ६ दीधो C, दीधौ D ।
E प्रतिमें–सोवन-पोट हमालां सिरे, है हींसै गै सारव करै ।
इण परि आयो चित्रगढ माहि, पूछै वात सहू परचाइ ॥ ७०९ ॥
रीझ मोकली निज घर ज्यार, माता हरषित थई ति वार ।
देखी साह तणो सिरपाव, देखी सूरातन दरियाव ॥ ७१० ॥

॥ ५२८ ॥ १ गोरो CE, गोरौ D । २ राउत B । ३ गहगयो BC, गहगह्यौ DE । ४ सगलो CE, सगलौ D । ५ कह्यो C, कह्यौ DE । ६ ए मेल्हेस्यइ BC, (मेलवसी D, मेलवसै E) । A ५०६ । B५८१ । C५९१ । D६३५ । E७११ ।

॥ ५२९ ॥ १ चमक्या E । २ आगै D । ३ इधकी D । ४ सक्ति BC, सकति D, सगति E । ५ रहै DE । ६ होइ BCDE । ७ तौ D, तो E । इसके आगे BCDE प्रतियोंमें–
जिहि घटि (ज्यां बुधि E) गुण दियउं (दियो CE, दियौ D),
निंदउं (निंदो DE) मत मति (मिलि E) मंद ।
ले कूंडउं (कूंडो C, जौ कुंडै DE) जे ढांकियइ (करि छाइयै DE),
छिप्यो रहइं (रहै CDE) किम (कित E) चंद ॥ B५८३ । C५९३ । D६३७ । E७१३ ॥

॥ ५३० ॥ १ वैसि DE । २ कियउं BC, कियौ D, कियो E । ३ मंत्रणो CE, मंत्रणौ D । ४ सुणो CE, सुणौ D । ५ करो CE, करौ D । ६...जाणे C, (जाणै D)...वात न जाये किण ही लिखी E ।

॥ ५३१ ॥ १ करउं B, करो CE, करौ D । २ ऊछाड BCD । ३ पाखतियां E । ४ बांधो CE, बांधौ D । ५ रहो CE, रहौ D । ६ सहु संजोथ...BC, सहु संजोव...D, वांधीं वस्त्र सिलह सन्नाहि E ।

॥ ५३२ ॥ १ सस्त्र CD, । २ बइसो C, बैसो D, ३ करौ D, धरौ E । ४ कहिसां E । ५ छै DE ।
E प्रतिमें प्रथम अर्द्धाली नहीं है ।

॥ ५३३ ॥ १ विचमइ पालखी C, बीचि पालखी D, विचै पालखी E । २ करो C, करौ D, धरौ E । ३ साचो CE, साचौ D । ४ नउं B, नो C, नौ D । ५ सिणगार BCD । ६ थापो CE, थापौ D ।

तिणि[1] महि[2] गोरउं[3] रावत रहइ[4], वात रखे को वाहरि[5] कहइ[6] ।
"[7]इक प्रतिबिंबउं पदमिणि माहि", 'आलिम सकइ न जिम अवगाहि'[8] ॥ ५३४ ॥
छेती[1] विचि[2] न राखउं[3] छती, लारोलारि करउं[4] लागती ।
गढनी पउलि[5] लिगावउं[6] लार, सेन समीपइ[7] आणउं[8] पार ॥ ५३५ ॥
ऍम करी हिव तुम्हि आवयो[1], वेला वहुली[2] पडखावयो[3] ।
हुं विचि जाइ करेसुं[4] वात, मेल्हिसु[5] सगली[6] घातइँ-धात[7] ॥ ५३६ ॥
हुं जाई[1] आणिसुँ[2] राजान, पुहचाडेस्यां[3] नृप निज थांन ।
पछइ करेस्यां[4] सबलउं[5] किलउं[6], ए आलोच अछइ[7] अति भलउं[8]" ॥ ५३७ ॥
सगले सुभटे थापी[1] वात, परठउं[2] करतां[3] हूउं[4] प्रभात ।
सीख सहू समझावी करी, चालिउं[5] वादिल चंचल चडी ॥ ५३८ ॥
पहुतउ[1] तिमइ ज[2] लसकर माहि, जिहां वइठउं[3] छइ[4] आलिमसाहि ।
जाई वादिल कीउं[5] सिलांम, हरषित हूउं[6] असपति तांम ॥ ५३९ ॥
"वादिल, साचा कहि संदेस, दिउं[1] घणा जिम[2] तुझनइ[3] देस ।"
वादिल वात[4] कहइ[5] परगडी, "साँमी! वात सिराडइ[6] चडी ॥ ५४० ॥
सुभट सहू समझाव्या[1] नीठ, पदमिणि आणी गढनी पीठि ।
सुभट सहू भाषइ[2] छइ[2] ऍम, निसुणउं[3] साँमी विनती तैंम ॥ ५४१ ॥
पदमिणि सुं[1] जउं[2] छइ[3] तुम्ह कांम, तउं[4] हिव राखउं[5] मामउं माम[6] ।
ऊपावउं[7] अम्हनिं[8] वेसास[9], पदमिणि आणाँ जिम तुम्ह[11] पासि" ॥ ५४२ ॥

॥ ५३४ ॥ १ तिणि BCD। २ मै E। ३ गोरो CDE। ४ रहउं B, रहो C, रहौ D, रहै E। ५ बाहिरि C, बारै E। ६ कहउं B, कहो C, कहौ D, कहै E। ७...प्रतिठ्यवउं B, एक प्रतिठ्यावो C, एक प्रतिबिंबो D। ८ आलम न सकै...D। E प्रतिमें द्वितीय अर्द्धाली नही है। A५१२। B ५८८। C ५९९। D ६४२। E ७१७।

॥ ५३५ ॥ १ छेकी A। २ विचइ A। ३ राखो CE, राखौ D। ४ करो CE, करौं D। ५ पोलि CE, पौलि D। ६ लगाडो BC, लगाडौ D, लगाडो E। ७ समीपै DE। ८ आणो CE, आणौ D।

॥ ५३६ ॥ १ आवज्यो BC, आवज्यौ DE। २ बहुती BCDE। ३ पडखापिज्यो BC, पडखावज्यौ DE। ४ करेशुं A, करेस्युं B। ५ मेल्हसि BC, मेलसि D, मेलिस E। ६ धांगडि B, जिमतिम DE। ७ धाता-धात BC, धातौ धात DE।

॥ ५३७ ॥ १ लेई E। २ आणिसि BC, आविस E। ३ पहुंचाडेसुं BCD, पहुंचावेसुं E। ४ करेसां AE। ५ सबलो CE, सबलौ D। ६ किलो CE, किलौ D। ७ अछै DE। ८ भलो CE, भलौ D।

॥ ५३८ ॥ १ मानी BCDE। २ परठ DE। ३ करंता DE। ४ थयो BCDE। ५ चाल्यउं BC, चाल्यो DE

॥ ५३९ ॥ १ पहुतौ DE। २ तिमैज D, जाई E। ३ बेठो AC, बयठो D, बैठो E। ४ छै DE ५ कियउं BC, कियौ DE। ६ हूयो C, हूयौ D, बोलै E।

॥ ५४० ॥ १ घउं BC, देउं D, बगसुं E। २ ज्युं BC, जुं D, बहुला E। ३ तुझने C, तुझनै D। ४ अरज E। ५ कहै D, करे E। ६ सराडै D, सिराडै E।

॥ ५४१ ॥ १ कटक सहू समझावी E। २ भाखे छे DE। ३ निसुणो DE। A ५१८। B ५९४। C ६०४। D ६४८। E ७२२।

॥ ५४२ ॥ १ स्युं B। २ जो CDE। ३ छै DE। ४ तो CDE। ५ राखे B, राखां E। ६ मांमोमांम BCDE। ७ [illegible] B, [illegible] CDE। ८ [illegible] B, हमने D, हमनुं E। ९ विसवास E। १० आंणउ B, आणुं DE। ११ तुझ A।

असपति[१] बोलइ[२] वलतउं[३] ऍम, "कहु वेसास[४] हूइ[५] तुम्ह कैंम"।
[६]बादिल बोलइ- "साहिब सुणउं[६], [७]चलवउं लसकर सहु तुम्हतणउं[७] ॥ ५४३ ॥
[१]जउं वलि बीहउं तउं असवार[१], तीरइ[२] राखउं[३] सहस बि-च्यार[४]।
अवर सहू आघा चालवउं[५], [६]जिम वेसास हूइ अभिनवउं[६] ॥ ५४४ ॥
ऍम सुणीनइ[१] ऊतावलउं[२], बोलइ[३] आलिम अति बावलउं[४]।
"हमे हिवईं[५] बीहाँ[६] किण[७] थकी, बादिल वात[८] भली[८] तईं[८] वकी" ॥ ५४५ ॥
हुकम कीउं[१] असपति हुसियार, कूच करायउं[२] लसकर सार।
सहस बि-च्यारि रहुउं[३] हम पास, हिँदुआंनइ[४] जिम हुइ[५] वेसास ॥ ५४६ ॥
लसकरिए[१] जब लाधउं[२] दूअउं[३], हरष घणउं[४] मन माहे हूउं[५]।
लसकर कूच कीउं[६] ततकाल, चाल्या सुभट सहू[७] समकाल[७] ॥ ५४७ ॥
साऊ-साऊ सहस बि-च्यार[१], असपति[२] पासि रह्या असवार।
बोलइ आलिम-"बादिल[३], सुणउं, कहिउं[४] कीउं[५] हुइ हमि तुम्ह[६] तणउं ॥ ५४८ ॥
वेगि अणावउं[१] हिव पद्मिणि, पालउं[२] वाचा आपापणी[३]।
[४]लाख सुनइया वलि तसु दिया[४], [५]पहिराव्या वलि वागा विया[५] ॥ ५४९ ॥
ते लेई बादिल आवीउं[१], [२]हरपिउं माइ तणउं वलि हीउं[२]।
[३]निज सुभटांसुं कीउं सँकेत[३], "हिव जगदीसइँ दीधउं[४] जेत्र[४] ॥ ५५० ॥

॥ ५४३ ॥ १ असुपति BC। २ बोलै DE। ३ वलतो CE, वलतौ D। ४ विसवास E। ५ हुवइ BC, होइ D, हुयै E। ६ ...वलतो C,...बोलै...सुणो D,...कहै श्री आलम सुंणो E। ७ चलावउं...तुम्हा...BC, लसकर विदा होइ तुम्हतणौ D, विदाकरो लसकर आपणो E।

॥ ५४४ ॥ १ जो वलि (वलि BDE) बीहो तो CDE। २ तीरे C, पासै DE। ३ राखो CE, राखौ E। ४ बे च्यार D। ५ चालवो C, आगै चालवौ D, अवर दियो सहु आगे चलाइ E। ६...हुवइ (BC)अति भलो C, ...हुवै अभिनवौ D, जिम विसवास अम्हां मनि थाइ E।

॥ ५४५ ॥ १ नै DE। २ ऊतावलो C, ऊतावलौ DE। ३ बोलै DE। ४ बावलो C, बावलौ D, बाउलो E। ५ हम अबीह BCDE। ६ बीहै E। ७ किस E। ८ ऐसी तै क्या E।

॥ ५४६ ॥ १ कीयउं B, कियो CE, कियौ D। २ करावउं B, करावो CDE। ३ रहो CDE। ४ हिंदुवानइ BC, नै D, हिंदूकौ E। ५ हुवइ B, होइ CE होयै विसवास E। A ५२४। B ६०१। C ६११। D ६५५। E ७३०।

॥ ५४७ ॥ १ लसकरियां BE, लसकरियै C। २ लाधो CE, लाधौ D। ३ दूयो CE, दुवौ D। ४ घणो CE, घणौ D। ५ हूयो CE, हुवौ D। ६ कीयउं B, कियो CE, कियौ D। ७ विकटविकराल E। इसके आगे E प्रतिमें :—

मीर मलक कोइ खांन निवाब। मुगल पठाण धणी जस आब।
पदमिन सनस करे जेह भणी। आगै चलाए दिल्ली धणी ॥ E ७३२ ॥

॥ ५४८ ॥ १ बिचार B, बिचारि E। २ असुपति E। ३ बादल सुणो B। ४ कह्यो हमे B। ५ कीयो B, कीयउ E। ६ तम तणो B।

॥ ५४९ ॥ १ अणावो CE, अणावौ D। २ पालो CE, पालौ D। ३ आपां- E। ४ लाखमोहर तसु (महुर तव E) रोकड दिया DE। ५ पहिरावणि BCD...किया C (लिया D), पहिरामणि वागा समपिया E।

॥ ५५० ॥ १ आवियो CE, आवियौ D। २ हरख्यो BCD...तणो तव हियो CE (हीयउं B), हरख्यौ माय तणौ तव हियौ D। ३ वलि...कीयउं...B...(कियो CD), तव सुहडांसुं...E। ४ कीयउं छइ जेत्र B, कियो...C, कियौ छै D, दियौ छै E।

ले[1] पालंखी[2] तुम्हे आवयो[3], लारोलारि खरी राखयो[4] ।
मत किणि वातइँ हूउं[5] आखता, 'खित्रवटि काँइ न आँणिसु खता[6]' ॥ ५५१ ॥
ऍम कही आघउं[1] संचरिउं[2], पालंखिए[3] पूठि[4] परिवरिउं[5] ।
दीठउं[6] असपति आविउं[7] वली, वादिल वात कहइ[8] निरमली ॥ ५५२ ॥
"साहिब ! संभलि[1] मुझ वीनती, पदमिणि ऍम कहइ[2] हितवती[3] ।
[4]हुं आवी हिव सही तुम्ह गेह[4], [5]साहिब हिव तुं हुए ससनेह[5] ॥ ५५३ ॥
साचउं[1] राखे मुझ सोहाग, मागुं मान मुहतसुं[2] राग ।
तुझ[3] घरि हरम हजाराँ गमे, त्याँसुं पिण[4] तु रंगइ[5] रमे ॥ ५५४ ॥
पिण[1] सोहागिणि[2] मुझनइ करे, जउ[3] आणइ[4] छइ[5] पदमिणि घरे" ।
[6]ऍम सुणी वलि आलिम कहइ[6], "पदमिणि आपे[7] आदर लहइ[8] ॥ ५५५ ॥
पदमिणि नारि तणउं[1] नख एक, ते[2] सम[3] नावइ[4] नारि अनेक ।
पदमिणि कारणि मइँ[5] हठ कीउं[6], वाच[7] लोपि राजा ग्रहि लीउं[8] ॥ ५५६ ॥
मुझ मनि पाँति[1] अछइ[2] अति घणी, [3]साँमिणि होसी मुझ पदमिणी[3] ।
अवर[4] हरम सहु[5] करसी सेव, पदमिणि जइ[6] पधरावउं[7] हेव" ॥ ५५७ ॥
ऍम कही वलि वादिल भणी, परिघल दीधी पहिरावणी[1] ।
ते लेवी[2] वादिल आवीउं[3], हरषिउं[4] माइ[5] तणउं[6] वलि हिउं[7] ॥ ५५८ ॥

॥ ५५१ ॥ १ लेईं E । २ पालखी । ३ आवज्यौ D । ४ लावयो B, लावज्यो CE, लावज्यौ D । ५ हूवउं B, हुवो CE, हुओ D । ६...नाणिसु...BC,...नाणसि...D, रखे लिगावो काइ खता E ।

॥ ५५२ ॥ १ आघो CE । २ संचरयउं B, संचरयो C, संचरयौ DE । ३ पालंखी BCD, पालखियां E । ४ पूठइ BC, पूठै DE । ५ परिवरयउं BC, परवरयौ DE । इसके आगे E प्रतिमें:-

राघव व्यास हुता बुधिवान। सांमद्रोहथी नाठौ ग्यांन ।
छल कल ए न लिखाणी कांइ । लूंणहरांम तणै परमाइ ॥

६ दीठो CE, दीठौ D । ७ आवै BCD, आवह E । ८ कहे C, कहै D, कहो E । A ५३० । B ६०७ । C ६१७ । D ६६१ । E ६३८ ।

॥ ५५३ ॥ १ सांभलि E । २ कहै DE । ३ गुणवती DE । ४ हुं आवी सही तुम्ही गेह BC, आवी हुं अबही तुम्ह गेह D, आवुं छुं हजरत तुम्ह गेह E । ५ आलम धरयो अधिक सनेह E ।

॥ ५५४ ॥ १ साचो C, साचौ DE । २ मुहतस्युं BCD, महत अनुराग E । ३ तुम्ह BCDE । ४ पणि BCDE । ५ रंगै DE ।

॥ ५५५ ॥ १ पणि BCDE । २ सोहागनि BC, सोहागणि D, सोहागिण E । ३ जइ BCD । ४ आणौ D । ५ तुं BCD । ३-५ एह अरज मन माहि धरे E । ६...कहै D,...सुणीनै आलम कहै E । ७ आपै E । ८ लहै DE । इसके आगे E प्रति में :-

यदुक्तं—क्युं कांमण क्युं करम गति, क्युं पुरबलो लेख ।
मांरो साहिब मां बलुं, क्युं माहि मांहि बसेख ॥ ७४२ ॥

॥ ५५६ ॥ १ तणौ D, तणा E । २ तिण E । ३ समान BCD, सारिखी E । ४ नही BCDE । ५ मैं E । ६ कीयउं B, कियो CE, कियौ D । ७ वयण E । ८ लीयउं B, लियो CE, लियौ D ।

॥ ५५७ ॥ १ खंति BCD । २ अछै DE । ३...होसइ...B,...होसी...CD, मानीवी करडुं पदमिनी E । ४ अउर BC । ५ हम BCD, सहु E । ६ जाइ BC, जाय D, कुं E । ७ पधरावो DE ।

॥ ५५८ ॥ १ पहिरामणी BE । २ लेईं BCDE । ३ आवियउं B, आवियो CE, आवियौ D । ४ हरख्यो BC, हरख्यौ D । ५ गोरा BCD । ६ तणौ D । ७ हियो C, हियौ D । ८-९ पदमिणि नारी वाधा-वीयो E । A ५३६ । B ६१३ । C ६२३ । D ६६८ । E ७४५ ।

सुभटाँसुं[1] वलि भापी वात, "[2]जइ मेल्हुं छुं धातइँ धात[2] ।
तुम्ह सहु थाहरि[3] रहयो[4] इहाँ, वात रखे को[5] काढउ[6] किहाँ" ॥ ५५९ ॥
आविउ[1] वादिल वलि असि[2] चडी[3], नव-नव[4] वात कहइ[5] मनि घडी ।
होठें[6] वुद्धि वसइ[7] जेहनई[8], किसुं[9] दुहेलुं[10] छइ[11] तेहनइ[12] ॥ ५६० ॥
वाता करतां लावइ[1] वार, [2]फिरीउ वादिल वार वि-च्यार[2] ।
वोल वंध सहि साचा किया, लाख वि-च्यार सुनइया लिया ॥ ५६१ ॥
असपति अति ऊतावलि करइ, वादिल तिम-तिम मन महि ठरइ ।
परगट आणि धरी पालखी, आलिम देखइ[1] सहु सारिखी ॥ ५६२ ॥
वादिल वलि-वलि विच महि[1] फिरइ[2], पदमिणिं नइ[3] मिस वातां करइ[4] ।
रहिउ[5] पुहर दिन इक पाछिलउ[6], लसकर आघउ[7] गउ[8] आगिलउ[9] ॥ ५६३ ॥
किला तणी हिव[1] वेला थई, तव वलि[2] वादिल वोलइ[3] जई ।
"साँमी[4] ऍम कहइ[5] पदमिणी, मुझ ऊभां हुइ[6] वेला घणी ॥ ५६४ ॥
मुझनी[1] एक सुणउ[2] अरदास, ज्युं[3] हुं आवुं[4] तुझ[5] आवास ।
रतनसैंन मेलउं[6] इकवार[7], तिससुं[8] वात करां[9] दो-च्यार[10] ॥ ५६५ ॥
लेइ राजा आवुं[1] दरवारि, ज्युं[2] मुझ[3] अधिक[4] रहइ[5] आचार" ।
आलिम वोलइ[6]-"सुणि वादिला!, पदमिणि वोल कहावइ[7] भला ॥ ५६६ ॥
इणि[1] वोलइँ[2] हम हूआ[3] खुसी, पदमिणि न्याइ[4] कहीजइ[5] इसी" ।
हुकम कीउ[6] आलिम ततकाल, "छोडउ[7] रतनसैंन भूपाल" ॥ ५६७ ॥

॥ ५५९ ॥ १ नइ BC, नै DE । २ जाइं मेलविसि धाता धात B (मेलवस्यां C, जाय मेलवी D, मेलविसुं E ।) ३ वाहरि E । ४ रहय्यो B, रहिय्यो C, रहैज्यो D, रहियो E । ५ कोइ E । ६ काढो D, काढौ E ।

॥ ५६० ॥ १ आव्यो BC, आव्यौ D, आयो E । २ अश्वि B, अश्व CD । ३ चढी B, चढही E । ४ वलि-वलि BCD । ५ करइ BC, करै D, करे E । ६ होठै E । ७ वसै DE । ८ जेहनै DE । ९ किसउं BC, किसी E । १० दुहेलो BC, उणारत E । ११ छै DE । १२ तेहनै DE ।

॥ ५६१ ॥ १ लागइ BC, लागै DE । २ फिरि तव वादल आव्यउ मनि ठार B (आव्यो C), फिरतो वादल आव्यौ त्यार D, फिर वलि वादल आयौ तार E । द्वितीय अर्द्धाली BCDE प्रतियों में नहीं है ।

॥ ५६२ ॥ प्रथम अर्द्धाली BCDE प्रतियों में नहीं है । १ देखे C, देखै DE ।

॥ ५६३ ॥ १ मां E । २ फिरै DE । ३ नै DE । ४ करै DE । ५ रह्यउ B, रहयो C, रहयौ DE । ६ एक CD, पाछलो C, पाछिलै DE । ७ दूरि BCDE । ८ गयो BC, गयौ DE । ९ आगलो C, आगिलौ DE ।

॥ ५६४ ॥ १ तव BC, जव DE । २ तिहां BCDE । ३ वोलै DE । ४ हजरत E । ५ कही BC, कहै DE । ६ थई E । A ५४२ । B ६१४ । C ६२४ । D ६६९ । E ७४७ ।

॥ ५६५ ॥ १ माहरी DE । २ सुणो C, सुणौ DE । ३ जो C, जिम E । ४ आउं D । ५ तुम्ह BCDE । ६ मेल्हइं B, मेलो C, मूको DE । ७ एकवार CD । ८ -स्युं B, तिणसुं D, तिणसै E । ९ करुं E । १० दोइच्यारि CDE ।

॥ ५६६ ॥ १ आवउं B, आवो C, आउं D । २ ज्यउं B, जूं C, जिम E । ३ हम BCDE । ४ कुलवट E । ५ रहै DE । ६ वोलै DE । ७ कहावै DE ।

॥ ५६७ ॥ १ यह E । २ वोलै DE । ३ हूवा BD, हूयें E । ४ नारि E । ५ कहावइ C, कहीजे DE । ६ हुकउ B, किओ C, कियौ D, दियौ E । ७ छोडौ DE ।

बादिल माहि छोडावण[1] गयउ[2], राजा रूसि[3] अपूठउ[4] थयउ[5] ।
"फिट रे बादिल! मुह म दिखालि, सवल लिगाडी[6] तइँ[7] मुझ[8] गालि ॥ ५६८ ॥
वयरी[1] वयर[2] घणउं[3] तइँ[4] कीउं[5], पदमिणि साटइ[6] मुझ नइ[7] लीउं[8] ।
खित्रवट माथइ[9] घाली[10] खेह, "निसत सुभट हूआ निसनेह[11]" ॥ ५६९ ॥
बादिल बोलइ[1]- "सांमी सुणउं[2], अवर कीउं[3] छइ[4] ए मंत्रणउं[5] ।
मुष्टि करीनइ[6] आघा[7] चलउं[8], भागि तुहारइ[9] होसी[10] भलउं[11]" ॥ ५७० ॥

॥ ५६८ ॥ १ छुडावण BODE । २ गयो ODE । ३ रूठि BOD । ४ अपूठो OE, अपूठौ D । ५ थयो OE, थयौ D । ६ लगाडी BO, लगावी D, लिगाइ E । ७ ते O, तै D । ८ E मुझि D । ७-८ मुझनै ।

॥ ५६९ ॥ १ वइरी O, वयरी D । २ वइर O, वैर D । ३ घणो OE, घणौ D । ४ ते C, तै DE । ५ कियो O, कियौ DE । ६ साटै DE । ७-नै D E । ८ लियो O लियौ DE । ९ माथै DE । १० नाखी E । ११ खित्री निसत थया सविसेह E ।

॥ ५७० ॥ १ बोलै D । २ सुणो O, सुणौ D । ३ कियउ B, कियो C, कियौ D । ४ छै D । ५ मंत्रणो B, मंत्रणौ D । ६ -नै D । ७ अब तुम्हि BD, तमे O । ८ चलो BO, चलौ D । ९ तुम्हारइ BO, तुहारै D । १० होसइ B, होस्यइ O । ११ भलो DE । A ५४८ । B ६२६ । O ६३६ । D ७८१ । E प्रतिमें नही है । इसके आगे A प्रतिमें चो. सं. ५६१ के बाद तथा BOD प्रतियों में-

कवित्त-कीउं क्रूढ बादिल्ल, लेइ पालिखी पहुत्तउं, तसु महि राखिउं बाल, नाम पदमिणि दियत्तउं ॥
हूउं हरप सुरतांण, जबहि सुणि आवत नारी । गोरी तब पूछीउं, बोल बोलइ बिचारी ॥
"अल्लावदीन सुणि वीनती, एक बात मोरी कलइं" ।
पदमिणि नारि इम उच्चरइं "एकवार राजा मिलइं" ॥ A ५४९ । B ६२२ । O ६३२ । D६७७ ।

पाठान्तर—कीयउं B, कियो O, कियौ D । पालखी BD, पालंखी O । पहूतो C, पहूतौ D ॥ तसु मांहि गोरो राउ BOD, दित्तउं BO, दीतो D ॥ हुवउं B, हुयो O, हुवो D । आवती राणी BOD ॥ पदमिणि तव BOD, बोलि सुललित वाणी BOD ॥ कलै D ॥ ऊचरै D । मुझ रतनसेन राजा मिलइं (मिलै D) BOD ॥

कवित्त-बादिल तिहां आविउं, राउ जिहां बंधणि बद्धउं । ले मस्तक आपणउं, चरण ऊपरि तसु दिद्धउं ॥
हूउं कोप राजान, वइर तइं सारिउं वेरी । एह दई न लोभिउ, नारि आणी क्युं मेरी ॥
बादिल्ल तांम मनिमहि हसिउं, कृपा करउं सांमी सही ।
बाल रूपि पदमावती, राउं नारि तोरी नही ॥ A ५५० । B ६२६ । O ६३६ D । ६८० ।

पाठान्तर—आवियो OD । बांधण O । बांधियउं B । बांध्यो O, बंध्यौ D ॥ आपणो OD, चरण राज लेइ दीधउं B । (दीधो O, दीधौ D) ॥ हूवउं B, हूयो O, हुवौ D, तै D, वयरी D ॥ मुझ वचन लोपियउं (लोपियो OD) BOD ॥ हसउं B, हस्यो O, हस्यौ D, करो O करौ D, बालिका BOD, राव D । यह कवित्त BOD प्रतियों में चो. सं. ५६३ के बाद दिया गया है । E प्रतिमें ।

कवित्त—फिट बादल कहि राव, वाच चुक्को हिंदुवानह । खित्री भ्रम लज्जयौ, मिट्यौ भडमांन गुमांनह ॥
साम भ्रम लुप्पियौ, लूण तासीर न किन्ही । जी तव प्यारौ कीयौ, नारि असपतिकुं दिन्ही ॥
कहा करुं मैं त'परवस परथौ, वाच लोप आलम भयो ।
सत छोडि किती अब जीवि हैं, जब ही नीर उतरि गयो ॥ ६५६ ॥
कहै बादल सुणि राव, वाच हिंदुवान न चुक्कहिं । खित्री भ्रम्म उज्जलौ, सुहडन न धीरज मुक्कहिं ॥
साम भ्रम्म रखि है सदा, जस्स सब ही कौं प्यारौ । मुगतहुं गढ चीत्तोड, इला जस वास उवारौ ॥
मैं करहुं सेव अस सांभि की, असपति सहि लहि मैं लह्यौ ।
महिमांन मान दिज्जै सदा, करहुं यादि पुव्वहि कह्यौ ॥ ६५७ ॥
दूहा-महिल अगंजित गढ सधर, भ्रहि सत राज गहिल्ल । उस आलिमकी महिर सौं, सब ही होहि सहिल्ल ॥ ६५८ ॥
राखि रजा सिर रांमकी, धरि मन उमँग उछाह । राज पधारहुं चित्रगढि, सबविधि होहि भलाह ॥ ६५९ ॥
कवित्त-राव करहु मनि ध्यांन, जवनपति हट्ट हमीरह । गमर किये रस नाहि, ढलकि है अंजलि नीरह ॥
परा लेख जो कछू, धाता ध्रिम्यौ निस छट्टी । रोस मोस बिनु न क्युं, लोक वाइक नहु छुट्टी ॥
हजरत रजा सिरि परि धरहु, उत्तम रीत न छांडीये ।
डाव बिन घाव हु है नहीं, बांचहु पढहु मरम होये ॥ ६६० ॥

[1]'प्रीछिउ भूप चलि ततकाल'[1], [2]'आलिम बोलइ इम असराल'[2]।
"पदमिणि नइं[3] मिलि आवउं जाइ"[4], [5]'जिम तुझ सीख दिउं सदभाइ'[5]" ॥ ५७१ ॥

राजा चालिउ[1] पदमिणि भणी, [2]'सिबका श्रेणि घणी साँघणी'[2]।
राजा पेठउ[3] महि पालिखी[4], वात सहू तव साची लखी ॥ ५७२ ॥

बादिल बोलइ[1]- "साँमी सुणउ[2], अवसर नहि ए वातां तणउ[3]।
एक थकी बीजी अवगाहि, गढि लगि जावउ[4] सिबका माहि ॥ ५७३ ॥

साँमी थावउ[1] हीइ[2] सचेत[3], माहि जई करयो[4] संकेत।
साचउ[5] करयो ए सहिनाण, [6]'वाजावेयो ढोल-निसाण'[6]" ॥ ५७४ ॥

ऍम सुणी राजा रंजीउ[1], [2]'हरष संपूरित हूउ हीउ'[2]।
कुसले-खेमे पुहतउ[3] माहि, जाणि क[4] सूरिज[5] मुंकीउ[6] राहि ॥ ५७५ ॥

कुसल तणा वाजा वाजिया, तव ते सुभट सहू गाजिया।
नीकलिया[1] नव हत्था जोध[2], [3]'वड दूसासण वहइँ विरोध'[3] ॥ ५७६ ॥

साँमि-काँमि[1] समरथ अति सूर,[2] गोरउ रावत अतिहि करूर[2]।
अरि-दल देखी अति[3] ऊससइँ[4], सुभट सहू मन माहे हँसइँ[5] ॥ ५७७ ॥

सूरिम सगलइ[1] तनि ऊछली, सोहइ सुभट तणी मंडली।
साचा पहिरया सुघट[2] सनाह, रुक-हत्था दीसइँ[3] रिम राह ॥ ५७८ ॥

॥ ५७१ ॥ १ प्रीछ्यउ...चल्यउ···B, प्रीछ्यो···C, प्रीछि भूपति चलौ···D, भूप प्रीछि ऊठ्या तिण वार E। २···मनि···BC,···बोलै ननि···D, असपति बोलैं अति चितप्यार E। ३ नै E। ४ आवौ DE। ५ जाय D। ६···तुम्ह···दीयउं B, दियो CD, पीछै सीख दियै सतभाइ E। A ५५१। B ६२८। C ६३८। D ६८२। E ७६१।

॥ ५७२ ॥ १ चाल्यो BC, चाल्यौ D, चाल्या E। २···सेण घणुं सांघणी B, घणास्युंघणी C, श्रेणि घणी स्यांघणी D, सुखपालां देखी घणघणी E। ३ पइठा BC, पयठो D, पैठा माहि जिसे E। ४ पालखी BODE।

॥ ५७३ ॥ १ बोलै DE। २ सुणो C, सुणौ DE। ३ तणो CDE। ४ जाए BCD, पहुंचौ E।

॥ ५७४ ॥ १ थाज्यो BC, थाइज्यो D, थाज्यौ E। २ हिवइ BC, हिवै D, घणुं E। ३ सजेत E। ४ करिज्यो BC, करज्यौ D, कीयौ E। ५ साचो C, साचो DE। ६ वजाडी ढोल अनइ···BC, ढोल वजाय अनै नीसाण D, दीजौ डंका जैत निसांण E। इसके आगे DE प्रतियोंमें–

D—एक चरित देखहुं सविचार, मंत्रभेद नवि हुयो लगार।
स्वामि-धरम नो ए सुपसाय, गढ राख्यौ नै छूटो राय ॥ D ६८६ ॥

E—रतन तुहारै वखतै सही, मंत्रभेद पिण हूयौ नही।
सांम-धरम नै सत परमांण, गढ रहियौ नै छूटा राण ॥ E ७६५ ॥

॥ ५७५ ॥ १ रंजियउ B, रंजियो C, रजियौ DE। २ हरखि हवउं हीयउं BC, हरिख संपूरित हूयो हियो D, सांई सफल मनोरथ कियौ E। ३ कुशल-खेम पहुतउ गढ माहि B (पहुतो C, पहुतौ D, पहुता E।) ४ कि E। ५ सूरज E। ६ मूंक्यउ B, मूक्यो C, मूक्यौ DE।

॥ ५७६ ॥ १ नीसरिया BCDE। २ योध B। ३ वडदूसासण B, बहै D, मांण दुसासण वैर विरोध E। A ५५५। B ६३३। C ६४१। D ६८८। E ७६७। इसके बाद DE प्रतियों में:-

DE—राघव तणो (चेतन D) हुयौ मुख स्यांम। कूड कियौ पणि सक्यौ न काम ॥
D—पातिसाहि नै पासै रह्यौ। नां कांइ जाण्यौ नां काइ कह्यौ ॥ ६८९ ॥
E—सांम-द्रोह पातिग परगट्यौ। अकलि गई पोरस पिण मिट्यौ ॥ ७३८ ॥

॥ ५७७ ॥ १ सांम-कांम E। २ गोरो C, गोरौ D, गोरो रावत चढहीयौ नूर E। ३ तनि DE। ४ ऊससै D, उलहसै E। ५ माहै हसै DE।

॥ ५७८ ॥ १ सगलै D। २ सबल D। ३ दीसै D।

E प्रतिमें—सूरातन चडिया सिरदार, डंडा पग झलहल झुंझार ॥
[illegible] ॥

च्यारि[1] सहस नीसरिया सूर, एक एक थी[2] अधिक[3] करूर।
आगलि[4] गोरउ बादिल बेउ[5], [6]पूठइं चाल्या सुभट सवेउ[6] ॥ ५७९ ॥
घाघरटइँ[1] दीसइँ[2] भट[3] घणा, पार न लाभइँ[4] पुरुषाँ[5] तणा।
तूट्या[6] धाया ले तरवारि, हलकारे लागा हलकार ॥ ५८० ॥
"रे! रे! आलिम[1] ऊभउ[2] रहे[3], हिव नासी[4] मत जाइ[5] वहे[6]।
पदमिणि आणी छइँ[7] अम्हि[8] जिका, तोनइ[9] हिवइ[10] दिखाडाँ तिका ॥ ५८१ ॥
तोनइ[1] खांति[2] अछइ[3] अति घणी, [4]अम्ह ऊभाँ ते देवा तणी[4]।
हठीउ छइ तउ करि हथियार[5], [6]हिव आलिम मनि हुइ हुसियार[6]" ॥ ५८२ ॥
ऍम कहीनइ[1] आव्या जिसइँ[2], दीठा आलिम अरीयण तिसइँ[3]।
रण-रसीउ[4] ऊठिउ[5] रिम राह, विणठी वात करइ[6] पतिसाह ॥ ५८३ ॥
"रे! रे! कूड कीउ[1] बादिलइँ[2], [3]आवउ सुभट सहू हिव किलइँ[3]"।
हलकारया असपति निज जोध, धाया किलली करताँ[4] क्रोध ॥ ५८४ ॥
माहोमाहि मँडाणउ[1] किलउ[2], [3]बडवी बोलइ इम बादिलउ[3]।
"पातिसाह! मति छंडइ[4] पाउ[5], [6]जउ तुं अधिरु अछइ रणराउ[6] ॥ ५८५ ॥

॥ ५७९ ॥ १ च्यार E। २ तै D। ३ अतिहि DE। ४ आगल C, आगै D। ५ बेइ BCD, बेह E। ६...सवेय B,...सवेह C, पूठै...D, पूठिं सामंत थाट सवेह E।
॥ ५८० ॥ १ घाघरटे BCDE। २ दीसै DE। ३ भड BCDE। ४ लाभै D, सिलह-टोप करि रूद्रांमणा E। ५ सुभटां BCD। ६ तूटी D, धाया छूटी...E।
॥ ५८१ ॥ १ असपति BE। २ ऊभो CE, ऊभौ D। ३ रहइ B, रहै E। ४ न्हासी E। ५ जायइ BCD, जायै E। ६ वहइ BCD, वहै E। ७ छै DE। ८ अम्हे BCD, मै E। ९ तौ नै D, तोइ नै E। १० हिवै D, हिवैं E।
॥ ५८२ ॥ १ नै DE। २ खंति BC। ३ अछै DE। ४...लेवा...ABCD, पदमिणि नारि निहालण तणी E। ५ हठियौ छै...D, हठी हमीर जाणां तुझ सही E। ६...होई...BC, होज्यो D, लडै अम्हांसुं असमर ग्रही E। A। ५६२। B ६३९। C ६४७। D ६९५। E ७७४।
॥ ५८३ ॥ १ कहीनै D, कहंता E। २ जिसै DE। ३ तिसै DE। ४ रसियो CE, रसियौ D। ५ ऊठ्यो C E, ऊठ्यौ D। ६ कहइ BC, कहै DE।
॥ ५८४ ॥ १ कियउ B, कियो C, कियौ DE। २ वादिलै D, वादलै E। ३ आवो मुगल सहू को मिलइं BCD, हींदू आय वाल्या सांकडै E। ४ करि धरि E।
॥ ५८५ ॥ १ मंडाणो CE, मंडाणौ D। किलो C, किलौ DE। ३ पिहसी...B, बोलै...बादिलौ D, बोलै असुपति सुं वादिलो E। ४ छंडौ D, छंडिस E। ५ पाव DE। ६ जे...B, तेरा कूड अम्हीणा घाव E। इसके आगे E प्रतिमें

कवित्त – सुणि कहि साह, वाह तुम्ह बोल भलाई। मुख मीठा दिल कूड, इहै हींदू न कराई ॥
पदमिन करी कबूल, तुझै सिरपाव दिवाया। छोड्या राण रतंन, सवै दल दूरि चलाया ॥
अब लडहुं खग्गि बुल्लहुं अकथ, काफर गुंडाई धरहुं।
हम सरिस चूक देखहु सु तौ, मूरिख अणखुट्टी मरहुं ॥ ७७८ ॥
कहै बादल सुणि साह, राह तुम पहिल हि चुक्के। दे वाचा गढ देखि, बहुरि तुम राव हि रुक्के ॥
हम हींदू के मीर, नीरखत हीं कुलवट्टह। पदमिन दै लै धणी, इहै हम लाज विपट्टह ॥
अब करहुं सुष्टि झूठा नि कहुं, कहां रह्यो रस हम तुम्हहि।
ग्रहि खग्ग लडहुं म धरहुं ग्रब्ब, वत्त-रस नहि अवसान इहि ॥ ७७९ ॥
दूहा – कहै बादल असपति सुनहुं, कहा बहुत बकवाद। सांम-धरम अरु द्रिढ चित, [illegible] रिणस्वाद ॥ ७८० ॥
तुम दिल [illegible] पदमिनी, हम लालच रिणवट्ट। साई न्याव निवेरि है, खेलहु रिण खग झट्ट ॥ ७८१ ॥

तुं आयउ ढीली थी[1] धसी, हिव मत जाईं पाछउ[2] खिसी ।
सूर अछइ[3] तउ[4] करि संग्रॉम, [5]नहि तरि रहसी नहि तुझ मॉम[5] ॥ ५८६ ॥
[1]आलिमना चडिया असवार[1], [2]जिम-दल सरिखा जोध झुझार[2] ।
[3]भिडईं भली परि भारथ भीम[3], सुभट न चापईं पाछी सीम[3] ॥ ५८७ ॥
धसबस धूलि विधूसइँ[1] धरा, माहोमाहि भिडइँ[2] आकरा ।
खेहा डंबर ऊडिउ[3] खरउ[4], [5]सूझइ सूर नही पाधरउ[5] ॥ ५८८ ॥
बाण विछूटइँ[1] विहुं[2] दिसि घणा, [3]वाजइं लोह घणा सॉंधिणा[3] ।
खडग[4] विछूटइ[5] करता खीज, जाणि कि[6] वादलि झबकइ[7] बीज ॥ ५८९ ॥

॥ ५८६ ॥ १ सै D । २ पाछो C, पाछौ D । ३ अछैं D । ४ तो CD । ५'''तुझ धिप मांम BC, नहीत जासी ताहरी मांम D । E प्रतिमें नहीं है ।
॥ ५८७ ॥ १ आलिम इम चढियो असिधार BCD, आलम ताम हुआ असवार E । २ जिमिदिमि'''BCD, जम जेहा मूगल झूंझार E । ३ भिड्या खाग रिण मचियौ दूठ, सुभट न दाखै कोई पूठ E
॥ ५८८ ॥ १ विधसै D । २ मिलइ BC, मिलै D । ३ ऊड्यउ B, उड्यो C, उड्यौ E । ४ खरो C, खरौ D, इसौ E । ५...पाधरो C, सूझै...पाधरौ D, सूरिज पान वधूल्या जिसौ (?) E । A ५६८। B ६४५ । C ६५३ । D ७०१ । E ७८३/१ ॥
॥ ५८९ ॥ १ विछूटै DE । २ चिहुं C । ३ वाजें...D, रूडै नगारा सींधू तणा E ७८३/२ । ४ खगा C । ५ विछूटै D । ६ वि B । ७ चमकीCD ।

E प्रतिमें:—खडग भलक्कै ऊजलधार, जाणिक बीजुल घण अधार ।
सन्नाहे तूटै तरवार, जागै जाल-अगनि अणपार ॥ ७८४ ॥
कुंत अणी फूटै कुंसरा, तूटै कालिज ने फीफरा ।
ऊडैं बूर वहै रत-खाल, गूंजै सींगणि गुण असराल ॥ ७८५ ॥
वहै तीर चणणाट पंखाल, झडमातौ तातौ रिणकाल ।
पडै मारि गूरज गोफणी, फोजां फूटै तूटै अणी ॥ ७८६ ॥
मारि मारि कहि वाहै लोह, रिणलूधा सामंत सछोह ।
खांन निवाब गडूथल खाइ, हजरत करै खुदाइ खुदाइ ॥ ७८७ ॥
नारद किलकै करि करि हास, गिरझणि मांस तणा ले ग्रास ।
धड ऊपरि धड ऊथलि पडै, किता कमंध कंध विण लडै ॥ ७८८ ॥
रिणचाचरि नाचै रजपूत, धुंकल नाचवियौ रिणधूत ।
धनि-धनि कहि सूरिज धीरवै, अपछर वरमाल कंठ ठवै ॥ ७८९ ॥
ऊपरि सुर तेत्रीसां साथ, देखे रांणीजायां हाथ ।
सांमंत सांम्है लोहै लडै, असपति हाथै नवि ऊपडै ॥ ७९० ॥
वलि कहै बादिल,-"सुणि पतिसाह ! तुम्हकौं पदमिणकी है चाह ।
सो तो रतनसेनके हाथ, हमसै दी नहि जाये नाथ ॥ ७९१ ॥
देखो झिलमिल खग-दामिनी, हाथ हमारे ए पदमिनी ।
अहनिस तुम्हकुं करती याद, चाखण अमुर-रगतका स्वाद ॥ ७९२ ॥
सो तो हाजर कीवी आंणि, कही हती मैं तुम्हसै वांणि ।
इस पदमिणका इहै सुभाव, पहिली मारै विप-कन्याव ॥ ७९३ ॥
पछै अमरपुर हाजर करै, जहां अपछरा सेवा करै ।
उस पदमिनथैं इह पदमिनी, हमकौं प्यारी लागै घणी ॥ ७९४ ॥
जिस खातर तुम्ह आए अही, सो तो पदमिण गढमें रही ।
ऐसा क्या तुम्ह महुरत लिया, कहँ ओ बांभण जिग तुम्ह दिया ॥ ७९५ ॥
पूछौ फिरि कहँ राघव व्यास, उसने किया तुम्हारा नास ।
तुम्ह हो अल्लाके फिरस्ते, पांच निवाजुं गुदारावस्ते ॥ ७९६ ॥
सेवा समरण करते सही, अब खुदाई कहँ छिपि रही ।
राघव कहां गया सैतान, उसके घर पदमिण असमांन ॥ ७९७ ॥

वहोत रूप खूब बंभणी, उह सिंघलकी है पदमिणी ।
उसकुं रक्खहुं तुम्ह अवास, हजरत चेला ह्वैगा व्यास" ॥ ७९८ ॥
इण परि मोसा बोलै घणा, हलकारे सामंत आपणा ।
कोटि चढ्या जोवै राजांन, पदमिण थै आसीस प्रधान ॥ ७९९ ॥
कोटि चढ्या जोवै सब लोइ, जैत जैत भाषै सहु कोइ ।
मुंगल सुहड लथोबथ होय, गज जेठी नवि भाजै कोइ ॥ ८०० ॥
अपछर हूर करै आरती, जोगिण पत्र भरैं मदमती ।
रुद्र करै गूंथी रुंडमाल, रथ-थंभ्यौ देखे किरणाल ॥ ८०१ ॥
धड वेहड करि मुंगल तणा, ढीग करंकड मचिया घणा ।
आवट कूट हूयौ रिण इसौ, असुरां प्रलैकाल सारिसौ ॥ ८०२ ॥
वादलडो है रिण दरियाव, मांड्या वासिग नै सिर पाव ।
जीभ वही जिणपरि रिणकाज, वाहै हाथ दुणा तिण लाज ॥ ८०३ ॥
वडा पूर मद सेर जुवाण, पोरस रस भरियो अभिमांण ।
वाहै इसो निचीतौ रूक, हेके घात करे दोइ टूक ॥ ८०४ ॥

दूहा—उत आलम तोवा कहै, इत हलकारै रांण । त्यां वेला वादल तणा, अडिया भुज असमांण ॥ ८०५ ॥
करि सींधू दूहा कहै, तिण वेला कवि 'पात' । सूरां सुरातन चडै, वदै विन्है दल वात ॥ ८०६ ॥
कुण तोलै जल साइरां, कुण ऊपाडै मेर । वादल तो विण साहसिर्ड, कुण झालै समसेर ॥ ८०७ ॥
दलां विभाडण साहरां, ऊपाडण गयदंत । तुज्झ भुजां गाजणतणा, वलिहारी वलवंत ॥ ८०८ ॥
जावै असपति रीझियौ, सुहडां खमी सबाव । खागै खान निबाबरी, तैं ऊतारी आव ॥ ८०९ ॥
हसियौ आलम जाब सुणि, खग खसियो खित्रखार । तुं वेधालग वादला, अंगदरो अवतार ॥ ८१० ॥
बाका खान निवाबरा, फाटा ऊबा केह । वाका सुणिया जगसिरे, वाजंते डाकेह ॥ ८११ ॥
महि डोलै सायर सुखै, पच्छिम ऊगै भांण । वादल जेहा सूरमा, क्युं चुक्कै अवसांण ॥ ८१२ ॥
रिणडोहै फिरि फिरि खलां, धडां भपावै धार । पारीखै पडिहार परि, न भूलै मनुहारि ॥ ८१३ ॥
तब गोरो रावत कहै, "सुणि, वादल भत्रीन । खागै खडियौ खेतरिण, हिव वावां जस-बीज ॥ ८१४ ॥
गढपति साही वींदणी, मद जोवण मैमंत । मुझ मन परणेवातणी, खरी विलग्गी खंत" ॥ ८१५ ॥
"सुणि गोरा !" वादल कहै, "तुं सामंत सकाज । तुं दल-नायक हींदुआं, तुज्झ भुझै रिणलाज ॥ ८१६ ॥
तुं सिंघ चाहण सूरिमा, अजुआलण कुलवट्ट । तुं वांधै पतिसाहसुं, पै तौडर रिणवट्ट ॥ ८१७ ॥
बांधौ मौड महावली, बांधौ असि गजगाह । सिर तुलछीदल घालियां, डहियां खाग दुवाह" ॥ ८१८ ॥
केसरियां वागा कियां, भुज डंबाणै खाग । जांणि क भूखो केहरी, झुंडमा न्हांखै झाग ॥ ८१९ ॥
सूरिज हूंत सलाम करि, वलि वलि मूछां घालि । सुरपति साहां समचडै, आयौ झडलग झालि ॥ ८२० ॥
मरै डांण दाइ बाण भति, रांम रांम मुखि रट्ट । ऊकलते रिण ओपियौ, माझी लोह मरट्ट ॥ ८२१ ॥
रुडै नगारा सींधुआ, रिडै सुरातन रस्स । मदि आयो गोरो मरद, अडियौ सीस अरस्स ॥ ८२२ ॥
आवै असपति आगलैं, इसो उढायौ खाग । पाथरि पाखल पाथरै, जांणि क हणमंत वाग ॥ ८२३ ॥
करि हाका किलकै हसै, डसै रिमां जिम नाग । तिण वेलां त्रिजडा हथौ, दीयै अदंगा दाग ॥ ८२४ ॥
पक्कै दीहै गोरिलौ, दियै रिण पक्का दाव । पक्का खांन निवाव सिर, परै पकंदा घाव ॥ ८२५ ॥
क्यां घटि सुरातन नही, त्यां जोवन अप्रमाण । केहरि पंचासै हुयै, तौ ही सेर जुवाण ॥ ८२६ ॥
आडा खल भांजै अनड, फुरलंतो गज भार । आयौ असपति ऊपरै, मुख कहतौ हुसियार ॥ ८२७ ॥
तो लै खग तारां लगै, गोरै कीधौ घाव । असपतिजीव उवेलवा, पाछा दीधा पाव ॥ ८२८ ॥
कहै वादल "गोरा सुणौ, सकजां एह सुभाव । आपा आंगमी आप छै, कुण राजा कुण राव ॥ ८२९ ॥
तोनै रिणवाही घणौ, वदसी जगत वसेख । दीलेसर परमेसवर, त्यां सुं केहो तेप" ॥ ८३० ॥
घट घट नै जै घाव करि, लडै भिडै ले वोह । गोरो रिणवट पोढियौ, वाहि वहावै लोह ॥ ८३१ ॥
खमा-खमा कहि अपछरा, हरि औडै सिर हाथ । मिलै हला भल भीषणी, भुजां वदै दिन नाथ ॥ ८३२ ॥
आवै वादल ऊपरै, करै हथाली छांह । दिलिपति साहै डोहिया, भांगी तुज्झ भुजांह ॥ ८३३ ॥
भइयौ सुरातन तणौ, अजै अंतमांग अथाग । भुज वेवे रूंध्या भला, इक मूछां इक खाग ॥ ८३४ ॥
मुख देखे काका तणौ, वांदै मूछां वाल । वादल आयौ साहसुं, चौरंग वांधै चाल ॥ ८३५ ॥
हलकारे भड आपरा, वाकारे रिम थाट । पडियाँ कांसै वीज परि, झाडंतो खग झाट ॥ ८३६ ॥
लोह चकारी ऊडवै, इसा लगाया हाथ । पाघ रखै तव छाडियां, सारो असपति साथ ॥ ८३७ ॥
रहया वे [illegible] असपति आप । जाणि विखरयाँ वानरे, करि गुंजाहल ताप ॥ ८३८ ॥

सनाहे तूटइं[1] तरवारि, तिणगा ऊडइ[2] अधिक[3] अपार।
अगनि-झाल झलकइ[4] असिधार, घण जिमि हूउ[5] घोर अंधार ॥ ५९० ॥
खलक्या खलहल लोही-खाल, पावस जेम वहइ[1] परनाल[2]।
रज रुंधाणी थयउ[3] प्रगास, गिरझणि मंस तणाँ ले ग्रास ॥ ५९१ ॥
पूरइ पत्र रुहिर जोगिणी, मुण्ड माल ले ईसर घणी।
झडवड झडप[1] भरइ[2] सींचाण, अंवर[3] जोवइँ[4] अमर विमाण ॥ ५९२ ॥
सूरिज निज रथ खंची रहइ[1], रगति-विगति नवि कांई लहइ[2]।
इणि अवसरि गोरउ[3] गजगाहि[4], धाई आविउ[5] जिहाँ पतिसाह ॥ ५९३ ॥
मेल्यउ[1] खडग महावलि जिसइँ[2], असपति अलगउ[3] नाठउ[4] तिसइँ[5]।
वोलइ[1] वादिल-"बे कर जोडि, नासंताँ मारयाँ छइँ[2] खोडि" ॥ ५९४ ॥

खलि गलिया वादलि खगै, खूरह सम खुरसांण। सामंद जाणिउ तांण सुत, पीधा चल्ल प्रमांण ॥ ८३९ ॥
पकड्यौ असपति वादलै, एकलमछ अबीह। मैगल हंदा मद गलै, गाल वजाडै सीह ॥ ८४० ॥
फिरि छोडै पकडै फिरै, नाच नचावै तेम। रस लागौ रांमति रमै, भोला बालक जेम ॥ ८४१ ॥
कवित्त-"सुणि वादल"-कहै साह, "राह हींदु भ्रम रक्खौ। सांम धरम सुरतांन, अकलि उसताद परक्खौ ॥
तुं सामंत समृत्थ, बुधि बल अकल दुवाहौ। तुं ही ढाल हिंदुआंन, तुंही रावत खग वाहौ ॥
गोरिल सरग-अपछर वरी, तुम्ह दुनियां महि जस सुनहुं।
पतिसाह दलां लाई धरा, बहुत हुई अब बस करहुं" ॥ ८४२ ॥
दूहा-"भ्रम राख्यौ राख्यौ धणी, पदमिण रक्खी पुट्ठ।
अब रक्खहुं मेरी अदब", कहै आलम सुणि "दुट्ठ" ॥ ८४३ ॥
मरै लाज झूंझै खरो, इह दुनियां न डकत्ति।
भत्रीजै-काकै मिडै, दीधो न्याव विगत्ति ॥ ८४४ ॥

॥ ५९० ॥ १ तूटै D। २ ऊडै D। ३ झाल D। ४ झलकै D। ५ होवइ BCD।

॥ ५९१ ॥ १ वहै D। २ पडनाल D। ३ थयो C, थयौ D। E में नही है।

D प्रतिमें-तूटै धड सिरि फूटै फार, जरकै फेफर हाड दुधार।
कडकै कंध महा विकराल, बडकै जोसण जोध कपाल ॥ ७०५ ॥
हाकि हाकि धावै नर धसी, तूटै जो बड मुगला दिसी।
इला-विला क्या किया खुदाय, कहर दिया वादल वहकाय ॥ ७०६ ॥
किहां डेरा किहां बीबी साथ, लागा राणीजाया हाथ।
भड ऊपरि धड ऊथलि पडै, ग्रहि करवाल मुंड विणु लडै ॥ ७०७ ॥
रिणचाचरि नाचे रजपूत, पाडै पडै विहाडै भूत।
नवि चीतारै घर सुख-सोह, वाहै बहकि छछोहा लोह ॥ ७०८ ॥
"रे! रे! मुंगल अंधा ढोर", इम कहि वाहै खग्ग अघोर।
पदमणि ले करमै करवाल, किहां दिलीधर धन संभालि ॥ ७०९ ॥
कित ते बांभणि बुद्धि विहीण, जिणि ए वाट दिखाडी खीण।
पदमणि विणि आघौ मति जाय, ढाहे ढीच सु आलमसाहि ॥ ७१० ॥
कोटि चढ्यौ जोवै राजान, पदमणि दे आसीस प्रधान।
कोटि चढ्या जोवै सब लोय, मुगल सुहड सब लथबथ होय ॥ ७११ ॥

॥ ५९२ ॥ १ झडफ BD, झडपि C। २ भरै D। ३ अंबरि D। ४ योवइं B, जोवै D। E में नहीं है

॥ ५९३ ॥ १ रह्यौ D। २ लह्यौ D। ३ गोरो BCD। ४ गजगाह BC। ५ आयो BCD। A ५७३। B ६५०। C ६५८। D ७१३। E में नही है।

॥ ५९४ ॥ १ मेल्खो BC, मूक्यौ D। २ घणइं BC, घणै D। ३ अलगो C, अलगौ D। ४ नाठो CD। ५ पणइ BC, पणै D। ६ बोलै D। ७ छै D। E में नही है।

'रतनसैंन राजा अति भलउ'[1], 'गढ ऊपरथी देखइ किलउ'[2]।
जोवइ[3] बादिल गोरा तणाँ, हाथ महाबल अरिगंजणाँ ॥ ५९५ ॥
पदमिणि ऊभी द्यइ[1] आसीस, 'जीवे[2] बादिल कोडि[3] वरीस।
धन्य! धन्य बलिहारी तूझ, "तइँ मुझ राखिउं सगलुं गूझ"[4] ॥ ५९६ ॥
सुभट घणा छइं[1] ऊभा एह, ते सगला नीसत निसनेह।
बादिल एक महाबल सही, सत्य थकी[2] जो चूकइ[3] नही ॥ ५९७ ॥
साँमि-धरम[1] साचउ 'ससनेह[3], राखी बादिल रणवट[4] रेह।'
गोरउ[5] रावत रणमहि[6] रहिउ[7], आलम-सैंन सहू[8] लहु[9] वहिउ[10] ॥ ५९८ ॥
'लूटी लीधुं लसकर सहू'[1], 'के नाठ्या के मारया बहू'[2]।
इणपरि अरियण सहु एकलइ[3], बहसि करे जीता बादिलइ[4] ॥ ५९९ ॥
पातिसाह साही मुंकीउ'[1], 'इक वलि मोटउ ए जस लीउ'[2]।
साहि कहइ[3]-"संभलि[5] बादिला, किया पवाडा तइँ[6] अति भला ॥ ६०० ॥

॥ ५९५ ॥ १...भलो C,...भलौ D, ऊभै रतनसैंन राजान E। २...देखै किलौ D, दीठो जुद्ध महा असमान E। ३ जोवै D, जोया E। A ५७५ । B ६५२ । C ६६० । D ७१५ । E ८४४।

॥ ५९६ ॥ १ दै D, दियै E। २ जीवउ B, जीवो C, जीवौ DE। ३ घणा D। ४...राख्यो...B,...सगलो...C, तै मुझि राख्यौ सगलौ गूझ D। E प्रतिमें द्वितीय अर्द्धाली नहीं है।

॥ ५९७ ॥ १ छै C। २ थकउ BC, थकी D। ३ चकै D। E प्रतिमें नहीं है।

॥ ५९८ ॥ १-३ सामि-धरम साचव्यो सनेह BC, साचव्यौ DE, सनेह BCD, सवेह E। ४ खित्रवट BCDE। ५ गोरो BCDE। ६ मांहि BCD, मै E। ७ रह्या BCD, रह्यो C, रह्यौ E। ८ सवे E। ९ लहि D, खग E। १० बह्या BD, वह्यो C, वह्यौ E।

॥ ५९९ ॥ १...लीधउ...BC, लीधौ D, लूंटाणौ लसकर जूजूयौ E। २...नाठा...D, साकावंधी भारथ हुयौ E। ३ एकलै D। ४ बादिलै DE।

॥ ६०० ॥ १ मूंकीयउ B, मूंकीयो C, मूकीयौ D, मुंकीयौ E। २ एक वली मोटउ जस लीयउ B (मोटो CDE, लीयौ DE)। ३ कहै DE। ५ सांभलि E। ६ तै DE । A ५८१ । B ६५७ । C ६६५ । D ७२० । E ८४७ ॥

कवित्त-बादिल तिहां ले चलिउ, राव अरि राव बत्तीसह। खडग काढि सनमूख, भिडिउ सुरतांण सरीसह॥
करि पारसी मुगल्ल, तेण तहां कूड कमायउ। लंका मणि उद्धरिउ, तुरक अर तुरक सवायउ।
हाइ-हाइ करतां ऊठिया, बादिल तहां सइं मुह सरिउ।
जब लगइ जूझदल विहुं हुउ, तब लगि हयवर पाखरिउ ॥ A ५८३ । B ६५९ । C ६६७ । D ७२२ ॥

पाठान्तर:-चल्यो BC, चलियो D, प्रगटि डोला सुं वीसह BCD। वधउ B, वधो C, बधौ D, सुलतांण D। तेणि तण कूड उपायो B (कूडो पायो C, पायौ D)। सुभट सेन (-नि C) ऊधरयउ B (ऊधर्यो C, ऊधर्यौ D), 'तुरक वलि हिंदु सवायो (-यौ C) BCD। मार करंता ऊठिया BCD, तिहां BCD, मुखि कर्यो BCD। लगै D, व्यहु BC, हुवउ B, हुवौ CD, हैवर D, पाखरयउ B, पाखर्यो C, पाखर्यौ D। E में नही है। इसके आगे B प्रतिमें ६६० से ६७१ तक, C में ६६८ से ६७९ तक, D में ७२३ से ७३४ तक और E में ८४९ से ८६५ क्षेपक हैं-

आलिम एक अनइ जु खवासि, दिन दुहु पहुता लसकर पासि।
निमां सांम जब वेला थई, खबरि कराई लसकरि जई ॥ B ६६० । C ६६८ । D ७२३ । E ८४८।

पाठ०-जो C, अनै दु खवास D, आलम साथै एक खवासि E। हुई E। करावै D। दिराई E।

मुगल पठाण अनइ उमराउ, ततखिण आइ नम्या पतिसाहु।
ऊभा खोजा खान तफीम, तसलीमें लागी तसलीम ॥ B ६६१ । C ६६९ । D ७२४ । E ८५०।

पाठ०-मुंगल E, अनै DE, उमराव DE। आयि D, साहिपाद D, पतिसाहि E। तसलीमैं E।

"आलिम बीबी पदमिणि किहां, तुम्ह इकले आये क्युं इहां।
किहां लसकर किहां सहु साथ, किणपरि बात हुई धरनाथ" ॥
B ६६२। C ६७०। D ७२५। E ८५१।

पाठा०–एकलो DE। किहां भड जोधा साथ E। किस विधि...कहौ नाथ E।

"खुदाई करू वडा हिंदुराण, लसकर मारि किया कचघाण।
हम हइयाति खुदाई दई, मुसकल बहुत हमांकुं भई॥
B ६६३। C ६७१। D ७२६। E ८५२।

पाठा०–खुदाय E। घमसाण DE। खुदानै E। मुसकलि D, बोहोत D।

बादल राघो निपट वडा सइंतान, हम पणि भूलै बडइ गुमानि।
हमस्युं कूड किया परपंच, पदमिणि मिस मेल्या सहु संच॥
B ६६४। C ६७२। D ७२७। E ८५३।

पाठा०–सैतान DE। बडै D, हमकुं भूलाए करि तान E, कियो D, रूका दिखाया करि परपंच E।

डोला मांहथी कहरि गुमानि, दोई निकल्या सेर जुवान।
बहुत लडाई हमस्युं किई, हमकुं पनह खुदाई दिई॥
B ६६५। C ६७३। D ७२८। E ८५४।

पाठा०–महिथी DE, बडे असमान E। दोदो CE, दोइ-दोइ D। हमसूं C, अैसे E, भई DE। दई D, जीत पणांह खुदानै दई E।

हमकुं पदमिणि किया कछु टोण, नहि हम आगलि हींदू कोण।
करो कूच नहु लावउं वार, अब हम सइ होवइ असवार"॥
B ६६६। C ६७४। D ७२९। E ८५५।

पाठा०–पदमिन हम सै कीन्हा टौंण E। हींदू हम आगै है कौन E। करहु E, लावो C, लावहु E। इस य कहि साह हुआ असवार E।

लसकरि कूच कियउं तिह थकी, अनुक्रमि पहुता दिली ढकी।
रातें पहुतउं महल मझारि, लसकर सहू गया घरबारि॥
B ६६७। C ६७५। D ७३०। E ८५६।

पाठा०–कियो C, कियौ D। थकी D। राति CD, पुहंता C, पहुतो D।

बडे पयांणै लांघी मही; अनुक्रमि आए दिल्ली वही।
लसकर सबै विदा करि तार, रातैं आए महल मझार॥ E
बीबी बहुत आइ बेगमा, "पदमिणिको दिखलावो हमां"।
"पदमिणिका मुहु काला किया, हमकुं जीवु खुदाई दिया" ॥
B ६६८। C ६७६। D ७३१। E ८५७।

पाठा०–हुं D, कुं E, दिखलावी DE। जी तब हमे खुदानै दिया E।

"खिमा कीजइ, तुझ कुं पतिसाह, लागइ तुम्हकी हमां बलाइ"।
"बेटा तुझ कुं बहुत गुमान, बातां मा तूं नही सुजान॥
B ६६९। C ६७७। D ७३२। E ८५८।

पाठा०–कीजें तुम्ह कुं D, खमाखमा E। लागै तुमारी D, लगै तुम्हारी हमैं E। एता कीजे नहि अभिमान E।

मिहरी कारण कलमथ हूआ, राणा राउण सहु खय गया।
काहे पूत कहीं कुं फिरउं, बइठा जउंखि दिली महि करउं॥
B ६७०। C ६८८। D ७३३। E ८५९।

पाठा०–मिहरीकुं बहु D, किया E। राणा रावण बहु कुल गया D, उस खातर रांमण सिर दिया E। वौं E, फिरो C, फिरौ DE। बयठा D, बैठा E, जौखि DE। इसके आगे E प्रतिमें:–

करि आरती उतारै लौण, पदमिनका है गया टोण।
लैर करैगा आलमपनां, क्या है कमी इक पदमिन विना॥ E ८६०॥
दूहा–करि कागद बादल लिखी, हजरत रखहि पास।
इक तेरे मुख मूंछ है, अई हींदू साबास॥ E ८६१॥

आगे BCDE प्रतियोंमें–

पातसाह दिली गया, बादल की सुणो बात।
बादिल रिण सोध्यो तिहां, जइ जइ हुवउं विख्यात॥
B ६७१। C ६७९। D ७३४। E ८६२।

जीवि[1] दान दीयउ [2]मुझ भणी, किसी[3] करौं हिव कीरति घणी" ।
"[4]आलिम साहि गयउ एकलउ[4]", गोरइ[5] बादिल जीत्यउ[6] किलउ[7] ॥ ६०१ ॥
जयजयकार[1] हुउ[2] जस लीध, करणी बादिल अधिकी कीध ।
ऊघडीया[3] गढना बारणा, विरद हूआ[4] वादिलनइ[5] घणा ॥ ६०२ ॥
राजा साँम्हउ[1] आविउ[2] रंगि, मिलिया बेही अंगोअंगि ।
महामहोछवि माहे[3] लीउ[4], अरध देस[5] वादिल नइ दीउ ॥ ६०३ ॥
[1]पदमिणि वली पयंपइ ऍम[1], [2]"न करइ वादिल को तो जेम[2]? ।
[3]तइँ दीधउ मुझनइ अहिवात[3], [4]सीतल कीधा तइँ मुझ गात[4] ॥ ६०४ ॥
[1]धन्य! धन्य! तो माता सार[1], [2]तुज्झ तणउ जिणि झेलिउ भार[2] ।
[3]धन्य! धन्य! ते नारी सार[3], जेहनइ[4] वादिल छइ[5] भरतार" ॥ ६०५ ॥
मस्तकि तिलक करी[1] सुविसाल, वद्धावइ[2] मोती भरि थाल ।
निज भाई[3] करि थाप्यउ[4] तेह, पुहचाडिउ[5] वादिल निज गेह ॥ ६०६ ॥
सुभटौं[1] माहि चिहुं पाखती, देखण नारि मिली[2] आखती ।
ठउडि-ठउडि[3] मोती ऊछलइँ[4], सगा सणीजा आवी मिलइँ[5] ॥ ६०७ ॥

पाठा०–गए E, सुणि CD, भई दुनी सिर वात E । सोध्यौ D, बादल भंड रिण सोझियौ E, जय जय हूयो C (हुवौ D), ऊवारी अखियात E । इससे आगे E प्रतिमें :–
हसम खजांना लूटिया, ग्रही मुंक्यौ पतिसाह । वोल्यौ त्युं निरवाहियौ, अइयौ भीछ दुवाह ॥ E ८६३ ॥
॥ ६०१ ॥ १ जीवत E । २ दियो C, दियौ D । ३ किसुं D । ४···गयो एकलो C (एकलौ D), आलम नीसरियौ एकलो E । ५ गोरै D । ६ जीतउ B, जीतो C, जीतौ DE । ७ किलो C, किलौ DE । इसके आगे ABCD प्रतियों में:–
ऊघाड्यौ चित्रकोट गढ, साम्हा आया रांण । मिलिया वादल रतनसी, करै वखाण खुमांण ॥ E ८६४ ॥
साम्है लै आया सकल, घुरिया जैत निसांण । वाधायौ गजमोतियां, गुणियण करै वखांण ॥ E ८६५ ॥
॥ ६०२ ॥ १ जइजइकार B । २ हूवउ B, हूयो C, हुवौ D । ३ ऊघाड्या B, ऊघाडा D । ४ हूवउ B, हूयो C, हुवौ D । ५ नै C, नै D । E में नहीं है ।
॥ ६०३ ॥ १ साह्मो C, साम्हौ D । २ आयो BCDE । ३ माहै D । ४ लीयउ B, लियो C, लियौ DE । ५ राज E ।
॥ ६०४ ॥ १...पयंपै...D, पदमिणि नारि लियै वारणा E । २...करै तइं कियउ...B (कीयो C, करै...तै कियौ D), हरपित आंमू छूटै घणा E । ३...दीधो...D तै दीधौ मुझिनै अहिवात DE । ४...कीधउ...B (कीयो C, कीधो ते D), तू माहरौ भव भव नौ भ्रात E ।
॥ ६०५ ॥ १ धनि-धनि तुझ माता जगि सार BCDE । २...झाल्यउ...B (तणो झाल्यो C), जिणि झाल्यो वादल भौ (नौ) भार DE ३ (धनि-धनि ते नारी अवतार BCDE) ४ चेहनै D । ५ छै D ।
॥ ६०६ ॥ १ कियउ B, कियो C, कियौ DE । २ वाधावइं BC, वाधावै D, वाधाव्यौ E । ३ बंधव BCDE । ४ थाप्यो BC, थाप्यौ DE । ५ पुहचाव्यो B, पहुचाव्यो C, पहुचाडौ D, पहुचावौ E । A ५८८ । B ६७६ । C ६८४ । D ७३९ । E । ८६८ ।
॥ ६०७ ॥ १ चउहुटइं BC, चहुटा D । २ मिलइ B । ३ ठोडि-ठोडि C, ठाम-ठाम D । ४ उछलै D । ५ मिलै D ।
E प्रतिमें :–मोती-हार सींघल-गै तणो । पीहर दीधो मुहगौ घणो ।
सो पदमणि वादल नै दियौ । माथै चाढी नै तिण लियौ ॥ ८६९ ॥
घोडा हाथी दे सिरपाय । खडग कटारा ढाल जटाव ।
घोडवहिल सुखपालां घणी । करे मुद्रडी जवहर तणी ॥ ८७० ॥
इण परि परिघल पहिरामणी । कुंची अरथभंडारह तणी ।
सूपीनै पहुचवीया घरै । वाजित्र धंमल मंगल वहु करै ॥ ८७१ ॥
चहुटा मांहिं गली-ए-गली । देखै नर-नारी बहु मिली ।
सुभट सहू आवीने मिले । करि जुहार मुंह आगलि पुले ॥ ८७२ ॥

इणिपरि आविउ[१] महल[२] मझारि, [३]वइरी-वरग घणा संघारि[३] ।
[४]जइ लागउ मातानइ पाइ[४], [५]माता द्यइ आसीस सुभाइ[५] ॥ ६०८ ॥
निज नारी ओढी[१] नव घाट, लांबु[२] ताणी तिलक ललाटि[३] ।
अरघ अभोखउ[४] लेई[५] करी, [६]थाल भरी सौंम्ही[६] संचरी ॥ ६०९ ॥
कीया[१] विविध वधावा घणा, कुसले-खेमे आव्या तणा ।
हिव गोरानी[२] अस्त्री कहइ[३], "काकउ[४] कैंम[५] रणंगणिं[६] रहइ[७]" ॥ ६१० ॥
कहउ,[१] कितीपरि वाह्या हाथ, किम[२] संघारिउ[३] सत्रुसँघात[४]" ।
बादिल बोलइ[५]-"माता सुणउ[६] । किसउ[७] वखाण करुं[८] ते तणउ[९] ॥ ६११ ॥
[१]गोरइ ढाह्या गयवर घणा[१], [२]पार न पामुं सुभटाँ तणा[२] ।
आलिम साहि कीउ[३] एकलउ[४], इणिपरि गोरइ[५] कीउ[६] किलउ[७] ॥ ६१२ ॥
तिल-तिल छेदी तनु आपणउ[१], अमरपुरी पुहतउ[२] प्राँहुणउ[३] ।
कुल अजुआलिउं[४] गोरइ[५] आज, सुभटाँ तणी उतारी लाज" ॥ ६१३ ॥

॥ ६०८ ॥ १ आयउ B, आयो C, आयौ DE । २ महिल DE । ३...सिंहार BC, सिघारि D, बदीजण बोलै जयकार E । ४ जाय लागौ मातानै पाय D, आवी लागो माता पाइ E । ५...सवाइ BC, दे...सवाय D, मात दियै...सवाइ E ।
॥ ६०९ ॥ १ उनठी D । २ लांबउ BC, लांबो D, सजि सिंगार करि तिलक E । ३ निलाट BCDE । ४ अभोंखो BCD, अभोखौ E । ५ देई E । ६ मोती थाल भरी E ।
॥ ६१० ॥ १ कीधा BCDE । २ गोरिलरी E । ३ कहै DE । ४ काको CD, काकौ E । ५ किम BCD, किणविध E । ६ रण अंगणि B, रिण अंगणि CD, रिण भै E । ७ रहै DE ।
॥ ६११ ॥ १ कहो CD, कहौ E । २ किता E । ३ सिंहारया BC, संघारथा DE । ४ अरियण साथ BCDE । ५ बोलै DE । ६ सुणौ DE । ७ किसो C, किसुं D । ८ करौ B । ९ तणो C, तणौ D । ७-९ किसुं वखाणुं काकातणौ । इसके आगे E प्रति में :-
भिडते इसौ उडायौ रीठ, अंबर ऊडी सघलै दीठ ।
चौडै खेत वजायौ सार, ढाया मुंगल बडा जुंझार ॥ ८७७ ॥
चूरै फौजां गैदल तणी, आलम लगै गयौ तुझ धणी ।
खाग वजाडि करंतौ खंड, पड़ा पोरसिया भुजडंड ॥ ८७८ ॥
पणि असपति पग पाछा दिया, जैत तणा डाका वाजिया ।
किता विछाया खांन निवाब, कै औसीकै कै पयताव ॥ ८७९ ॥
ऊपर गोरिल भट पोढियौ, अंबर सुजस तणौ ओढियौ ।
तन बीखरियो तिल तिल होय, मूछां-मरट न मिटियो तोय ॥ ८८० ॥
आलमसाहि कियौ एकलौ, गोरै इण परि कीधो कीलौ ।
तिल-तिल तंन करै आपणौ, सरगापुर हूयौ प्राहुणौ ॥ ८८१ ॥
कुल अजुआल्यौ गोरै आज, सुहडां सींघ चडावी राज ।
रिण खेती गोरे भोगवी, मैं तो किलो कियौ पूठि थी ॥ ८८२ ॥
घडां वींदणी गोरै वरी, बांधे मोड महारिण करी ।
मै तौ जानी थकी झूबिया, विरद भुजां बल गोरिल लिया ॥ ८८३ ॥
॥ ६१२ ॥ १ गोरे...C, काकै ढाया गैवर घणा । २...पामइं...BCD, मुगल जोध संघारया घण्या D । ३ कीयउ B, कियो C, कियौ D । ४ एकलो C, एकलौ D । ५ गोरे D । ६ कीयो C, कीधो D । ७ किलो C, किलौ D । A ५९४ । B ६८२ । C ६९० । D ७४५ । E में नहीं है ।
॥ ६१३ ॥ १ आपणो C, आपणौ D । २ हूवउ B, हूयो C, हुतौ D । ३ पाहुणौ D । ४ ओजवाल्या B, उजवाल्यो CD । ५ गोरै D । E में नहीं है । इसके आगे BCDE प्रतियोंमें :-
कुंडलिया- गोरिल त्रिय इम उच्चरइ, "सुणि बादिल समरत्थ ।
मोर पिय रण मांहि जूझतउ, कहि किम बाह्या हत्थ ॥

ऍम सुणीनइ[1] अस्त्री[2] तेह, विकसित वदन हुई ससनेह।
रोमि-रोमि[3] सूरिम ऊछली, मुलकी महिला बोलइ[4] वली ॥ ६१४ ॥

"संभलि[1] बेटा हिव[2] बादिला! ठाकुर दोह्रा[3] हुई[4] एकला।
पथइँ[5] विचइँ[6] छेटी[7] हुइ घणी, रीस करेसी मुझनइँ[8] धणी ॥ ६१५ ॥

'[1]वहिलउ हो हिव वार म लाइँ[1], '[2]काकीनइ पुहचाडउ ठाइँ[2]"।
ऍम सुणी बादिल हरखिउ[3], "धन्य! धन्य! माता तुझ हीउ[4]" ॥ ६१६ ॥

'[1]घणउ वित्त ते विहची करी[1], करि शृँगार चढि तीखइँ[2] तुरी।
'जय-जय[3] राम' करी[4] नीसरी, '[5]अगनिसनानं कीउ सुंदरी[5]' ॥ ६१७ ॥

पति पासइ[1] जइ[2] पुहती जिसइ[3], '[4]अरधासण दीउ इंद्रइँ तिसइ[4]'।
अमरपुरी पुहुता[5] अवगाहि, जयजयकार हुउ[6] जगमाहि ॥ ६१८ ॥

कहि किम वाह्या हत्थ, वत्थ दे सुहड पछाडिउ।
भांजिउ गय घडघट्ट, पाउ दे सीस विमाडिउ॥
सुहड सूर संहारि, जोध बहु कीधा धोरिल।
बादल कहि-"सुणि मात, रणहि इम पडिउ गोरिल"॥

पाठान्तर-उचरइं B, ऊचरइ C, उच्चरै DE, ससमत्थ BCDE। रिणमइं BC, मे CE, झूझतां BC, झूझतै DE, किणपरि BCDE। वछ तुझ सुहड सपुच्छउ BCD, बथभरि सुहड पछाड्या E। भांजे है गै थट्ट DE, रोस भरि सहु रिण मूछउ BCD, जाइ नेजे असि चाड्या E। रूंड-मुंड भड मारि D, गलिया खांन निवाव E, सीस असपति खग झोरिल E। कहै DE, झूझ्या E। A ५९६। B ६८४। C ६९२। D ७४७। E ८८४।

॥ ६१४ ॥ १ नै DE, २ कामिनि BC, कांमणि DE। ३ रोम E। बोलै DE।

॥ ६१५ ॥ १ सांभलि E। २ रिण BCDE। ३ दुहिला B, दुहेला C, दोहिला DE। ४ होइ BCD, है E। ५ पाछइं BC, पाछै D, पडै E। ६ विचि BCD, विचै E। ७ छेती BC। ८ अम्हनइ B, अमने C, अम्हनै DE।

॥ ६१६ ॥ १ वहिलौ होजे बार म लाय D, वहिला हुऔ म लावो वार E। २...नै पहुचाडौ ठाय D, भेला करि काकी भरतार E। ३ हरखियउ B, हरखियो C, हरखियौ DE। ४ धन-धन मात तुम्हारो हीयो B (हियो C, हियौ DE)

॥ ६१७ ॥ १ घणो...BCD, दान पुन्य तब बहुला करी E। २ तीखै D, चडी भल E। ३ जइं-जइं B, जै-जै E। ४ कही E। ५ कियो BCD, श्रीफल लेइं हाथै धरी E। इससे आगे E प्रतिमें :-

ढोल धुरै गूंजै चीतौड। बाधो सुजस तणो सिर मोड।
इण परि आखा ऊछालती। आवी खेते रिण मल्हपती ॥ ८८९ ॥
पूजि गवरि वलि करिय सनान। पहिरी धवल वस्त्र परिधान।
'खमा खमा' कहि धनि भरतार। रिणसामंद्र हिलोलणहार ॥ ८९० ॥
कठमंदिर प्रिय खोहले धरी। अगनिसरण कीधो सुंदरी।
पति पासै जइ पहुती जिसै। अर्द्ध सिंघासण दीधो तिसै ॥ ८९१ ॥

॥ ६१८ ॥ १ पासै DE। २ जाय D,। ३ जिसै D। ४ अर्धासन दीधउ इंद्रें...B (दीधो CD, तिसै D)। ५ पुहुती BC, पुहती D। ६ हुवउ B, हूयो C, हूयौ D। A ६०२। B ६८९। C ६९७। D ७५२। E प्रतिमें :-

अमरापुर वसिया उच्छाहि, जै जै कार हुयौ जगमाहि।
चंद सुरिज वे कीधा साखि, गढ चीतोड दिली-दल साखि ॥ ८९२ ॥
करि मृतकृत देई संसकार, आयौ बादल निज घरबार।
रजपूतां ए रीत सदाइ, मरणै मंगल हरषित थाई ॥ ८९३ ॥

यथोक्तं—रिण [illegible]

मरणै मंगल होइ, इण परि आगां ही लगै ॥ ८९४ ॥

बिरद बुलावइ[1] वादिल घणा, [2]साँमि-धरम सतवंताँ तणा[2] ।
इसउ[3] न कोइ हूउ[4] सूर, [5]त्रिहुं भवणे कीधउ जसपूर[5] ॥ ६१९ ॥
पदमिणि राखी राजा लीउ[1], गढनउ[2] भार घणउ[3] झीलीउ[4] ।
[5]रिणवट करीनइ राखी रेह[5], नमो नमो वादिल गुण-गेह ॥ ६२० ॥

* * *

॥ ६१९ ॥ १ बुलावै DE । २ स्वामि…BCD, सांम सनाह सुहडांइ तणा E । ३ इसो BCDE । ४ हूवउ B, हूयो CE, हूवौ D । ५ कीधो CD, त्रिंहुं भवने प्रगट्यौ…E ।

॥ ६२० ॥ १ लीयउ B, लीयो C, लीयौ DE । २ नो CD, नौ E । ३ घणो CD, भुजै E । ४ झालियो CD, झालियौ E । ५ ने C, नै D, रिण भिडतां राखी सवि रेह E । A ६०४ । B ६९१ । C ६९९ । D ७५४ । E ८९६ ॥ इसके आगे BCDE प्रतियोंमें :-

कवित्त—"जय बादल जय पत्ति, बिरद बादिल अरिगंजण ।
संकट सांमि सनाह, तै ज मोड्यो गय बंधण ॥
मल्लिउ गयंदां मांण, हण्या हत्थी मयमत्तह ।
आणिउ मोरउ कंत, तुहि ज दीधउ अहिवत्तह" ॥
पदमिणि नारि इम उच्चरइ, "तुम्ह सरिस नहु अवर हुस ।"
आरति उतारहि वर तरुणि, जय बाद्दल जय पत्ति तुय ॥

पाठान्तर—जै E, जय पत्त BCD, जैवंत E । संकटि D, संगटि E, भंजण BCD, भिडै पतिसाहा भंजण E । मुल्यउ मल्लकां B, मिल्यो मल्लको C, मिलियो मिलकां D, मलल मल्लिकां E । आण्यो मोरयो B, आण्यौ मोरो D, सांम-बंद छोडावण E, तै ज दीधो D, दियण बहिनी E । ऊचरै D, श्रीमुख कहै E, तुझ सरिखउ नहि B (सरिखो…हूअ CD), इसो अवर नह कोइ हूअ E । उतारे C, उतारै DE । A ६०५ । B ६९२ । C ७०० । D ७५५ । E ८९७ ।

कवित्त—करि प्रपंच बादिल्ल, नारि ऊगारी बलि छलि ।
सहि न सक्यउ सुरिताणि, काजि जस एह भुजां बलि ॥
मलिउ गयंदां मांण, सांमि आणिय उवेल्यिउ ।
भंजि ढाल पाडीय सिलार, मल्लिकां दल मेलिउ ॥
इम सुणवि माय आणंद कीउ, पुत्रइं परदल पेलीउ ।
उच्चरी बात बादिल्ल की, पदमिणि-कंत उवेलीउ ॥

पाठान्तर—बाद्दल C, सक्यो BC, सक्यौ D, मल्यो BC, मल्यौ D, स्वामी आणीयो उवेलीय BCD । पाडिया BCD । सिलार सकंदल मेलीय BCD । सुणिवि माइ आणंद हियइ BC (हिय D) पुत्र परद्दल पउलीयउ BC (पोलीयो D) । बादलतणी BCD, उवेलीयउ BC, ऊबोलीयो D

E प्रति में :-

कवित्त—कहै मात-"बादला, भलै मुझ उयरि उपंनौ ।
कुलदीपक कुल-तिलक, रंक-घरि रयण सपंनौ ॥
ग्रहियो खल पतिसाह, रुक बलि गंजण अरिदल ।
जैत हत्थ जग जेठ, तुझ बलिहार भुज्ज-बल ॥
मुख मुंछ तुहि ज कुल-लाज, तुहि भारी छै लोकीय भडां ।
चीतोडमोड बांध्यो सिरै, दिल्लीपति चाडै तडां ॥ ८९८ ॥
चौपई—रांम तणै भाई हणमांन, तिम बादल रतनसी रांण ।
पदमिणि सती सीता सारिखे, वादल भड लंगा आरिखे ॥ ८९९ ॥
सेवा कीधी अवसर तणी, तिण सोभा वाधी घणघणी ।
करि दिखाले इसी इक कोइ, अवरांइ सुहडां आधार होइ ॥ ९०० ॥

A ६०६ । B ६९३ । C ७०१ । D ७५६ । E ९०० ।

ग्रन्थान्त

---

[1]A प्रतिकी प्रशस्ति–

वादल राउतनी ए कथा, सुणतां नावइ निज घटि व्यथा।
रोग सोग दुख दोहग टलइ, मनना सयल मनोरथ फलइ ॥ १ ॥
पूनिम गछि गिरूआ गणधार, देवतिलक सूरीसर सार।
ग्यानतिलक सूरीसर तास, प्रतपइ पाटइं बुद्धिनिवास ॥ २ ॥
पदमराज वाचक परधांन, पुहवी परगट बुद्धिनिधांन।
तास सीस सेवक इम भणइ, हेमरतन मनि हरषइ घणइ ॥ ३ ॥
संवत सोलइ सइं पणयाल, श्रावण सुदि पंचमि सुविसाल।
पुहवी पीठि घणुं परगडी, सबल पुरी सोहइ सादडी ॥ ४ ॥
पृथवी परगट राण प्रताप, प्रतपइ दिन दिन अधिक प्रताप।
तस मंत्रीसर बुद्धिनिधांन, कावेड्या कुलतिलक निधांन ॥ ५ ॥
सांमि धरमि धुरि भामुं साह, वयरी वंस विधुंसण राह।
तसु लघु भाई ताराचंद, अवनि जाणि अवतरिउ इंद्र ॥ ६ ॥
भूय जिम अविचल पालइ धरा, शत्रु सहू कीधा पाधरा।
तसु आदेश लही सुभ भाई, सभा सहित पांमी सुपसाइ ॥ ७ ॥
वात रची ए वादिल तणी, सांमि धरमि ए सोहामणी।
वीरारस सिणगार विशेष, रस वेरस अछइ सविसेष ॥ ८ ॥
सुणता सवि सुख संपद मिलइ, भणतां भावटि दूरइं टलइ।
ऊजम अंगि हुई अति घणउं, मुहकम जाणइ करि मंत्रणउं ॥ ९ ॥
षटसित षोडस गाथा बंधि, सुणिउं तिसु भाष्यउं संबंधि।
अधिक ऊन जे हुइ उच्चरिउं, सयण सुणी ते करयो खरुं ॥ १० ॥
सांमि रम पालंतां सदा, सगली आवइ घरि संपदा।
सुर नर सहू प्रसंसा करइ, वरमाला ले लखमी वरइ ॥ ११ ॥

॥ इति श्री गोराबादिलचरित्रे, बादिलजयलक्ष्मीवर्णनो नाम प्रथमखंडः। संवत १६४६ वर्षे मगशिर सुदि १५ ॥

---

1 यह प्रशस्ति A प्रतिकी है जो संवत् १६४६ में लिखी गई है।

BC प्रतियोंमें उपलब्ध प्रशस्तिका पाठ–

गोरा वादिल तणी ए कथा, सुणतां नासइ निज घरि वृथा।
मनना सयल मनोरथ फलइ, रोग-सोग-दुख-दोहग टलइ ॥ १ ॥
पूनिम गछ गरुवा गणधार, देवतिलक सूरीसर सार।
न्यानतिलक सूरीसर तासु, प्रतपइ पाटइ बुद्धिनिवास ॥ २ ॥
पदमराज वाचक परधान, पुहवी प्रगटा बुद्धिनिधान।
तासु सीस वाचक इम भणइ, हेमरतन मन रंगइ घणइ ॥ ३ ॥
संवत सोलइ सइ पणयाल, श्रावणधुरि पंचमि सुविशाल।
पुहवी पीठ घणी परगडी, सबल पुरी सोहइ सादडी ॥ ४ ॥
पृथ्वी प्रगटा राण प्रताप, प्रतपइ दिन दिन अधिक प्रताप।
तसु मंत्रीश्वर बुद्धिनिधान, कावेड्याकुल तिलक समान ॥ ५ ॥
स्वामि धरम धुरि भामउ साह, वइरी वंसि विधूसण राह।
तसु लघु भाई ताराचंद, अवनि जाणि अवतरिउ इंद ॥ ६ ॥
भ्र जिस अविचल पालइ धरा, सित्रु सबे कीधा पाधरा।
तसु आदेस लही सुभ भाउ, सभा सहित पामियउ पसाउ ॥ ७ ॥
वात रची ए वादिल तणी, सामि धरम अति सोहावणी।
वीरा रस सिणगार विसेष, अउर रस अछइ सविशेष ॥ ८ ॥
सुणतां सुख सवि संपद मिलइ, भणतां भावठि दूरइ टलइ।
उज्जम घटि होवइ अति घणउ, मुहकम जाणइ करि मंत्रणउ ॥ ९ ॥
षट सित षोडस अंके बंधि, सुण्यउ तिसउ भाष्यउ परबंध।
अधिकउ ऊछउ जे उच्चरयो, सयण सुणी ते करिय्यो खरो ॥ १० ॥
स्वामि धरम पालंता सदा, सयली आवइ घरि संपदा।
सुर नर सई प्रशंसा करइ, वरमाला ले लक्ष्मी वरइ ॥ ११ ॥

॥ इति श्री पदमिणी गोराबादल कथा चतुष्पदी समाप्तः ॥

D प्रतिकी प्रशस्तिका पाठ ।

गोरा वादलनी ए कथा, सुणतां नासै घटनी व्रथा ।
रोग-सोग-दुख-दोहग टलै, मनना सदा मनोरथ फलै ॥ १ ॥
सीलधरम सुणतां सुख होय, स्वामिधरम सुणतां जस लोय ।
सीलै मन वंछित फल लहै, स्वामिधरम सापुरिसा वहै ॥ २ ॥
धनि धनि पदमणि नारि सुसील, जिणि पाम्यौ संकट महि सील ।
सील प्रसादै छूटो राय, गढ राख्यौ जस हुवौ सवाय ॥ ३ ॥
स्वामिधरम यिणि सँपुरणाचरी, तिणि सांभलतां सहु सुख वरी ।
उत्तिम पुरिसां चरित सुव्रंद, सुणतां लहियै परमाणंद ॥ ४ ॥
पूनिम गछ गिरुवा गणधार, देवतिलक सूरीसर सार ।
न्यानतिलक सूरीसर तास, प्रतपै पाटै वुद्धिनिवास ॥ ५ ॥
पदमराज वाचक परधांन, पोहवी प्रगटा बुधिनीधांन ।
तासु सीस इम वाचक भणै, हेमरतन मंन रंगै घणै ॥ ६ ॥
बात रची ए बादलतणी, स्वामि धरम अति सोहांमणी ।
बीरा रस सिणगार बिसेष, सील सबल पदमणिनो बेष ॥ ७ ॥
सुणतां सुख-चतुराई मिलै, भणतां भावटि दूरी टलै ।
ऊजम घटि होवै अति घणौ, मोहोकम जांणै करि मंत्रणौ ॥ ८ ॥
स्वामिधरम पालंता सदा, सबली आवै घरि संपदा ।
सुरनर सहू प्रसंसा करै, बरमाला लै लिखमी वरै ॥ ९ ॥

॥ इति श्री रांणा रतनसी तसु प्रिया पदमनी चोपई संपूर्णम् ॥